कर्नल रंजीत

बदले की आग

बदले की आग

"तो फिर तुमपर किसने गोली चलाई ? सुना है, वह अजीब आदमी था—टेढ़ी टांगें, टेढ़े हाथ—सीने पर कूबड़ !"

"मैं उसे नहीं जानती, लेकिन मुझे पता है कि हत्यारा कौन हो सकता है।"

"कौन हो सकता है ?"

"वह···वह···," उसके होंठ फड़फड़ाए, होंठों के किनारों से झाग निकलने लगी और उसकी आंखें मुंद गईं।

बदले की आग में जलकर किए गए नृशंस हत्याकाण्डों की दिल दहला देने वाली भयंकर कहानी।

जासूसी लेखकों के सम्राट कर्नल रंजीत का नवीनतम उपन्यास।

बदले की आग में जलकर किए गए
नृशंस हत्याकाण्डों की दिल दहला
देने वाली भयंकर कहानी

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

कर्नल रंजीत

बदले की आग

बदले की आग

१. दुर्ग-प्राचीर

शाम के धुंधलके धरती पर उतरने की तैयारी कर रहे थे। एक छोटी नाव मुर्शिदाबाद से मुंगेर की ओर तेज़ी से बढ़ी चली जा रही थी। उस नाव में केवल एक ही व्यक्ति बैठा था, जिसका कद छः फुट दो इंच था। उसका रंग गेहुआं था। उसने लम्बा कोट पहन रखा था। उस कोट की पीठ में एक लम्बा चाक था। कोट का रंग सलेटी था। उसकी पतलून भूरी थी, जिसमें काली धारियां थीं। उसके जूते ऊंची एड़ी के थे, जिनको उसने चमड़े के स्ट्रेपों से बांध रखा था। उसकी कमीज़ का रंग हलका हरा था। गले में टाई के स्थान पर बड़े फुंदने जैसा हरा रूमाल था। वह नाव बारह फुट लम्बी और तीन फुट चौड़ी थी।

उसके पास ही काले चमड़े का एक लम्बा सूटकेस रखा था। नाव नदी की धारा के साथ-साथ तेज़ी से बही चली जा रही थी। उसे पतवार चलाने में कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। मुर्शिदाबाद और मुंगेर के बीच लगभग एक सौ बीस किलोमीटर की दूरी थी। नदी के किनारे, दूर छोटी-छोटी पहाड़ियां थीं। उनपर पुराने महलों, हवेलियों और किलों के खण्डहर थे।

मुंगेर की विशेषता यह थी कि वह प्लासी के युद्ध के नायक नवाब सिराजुद्दौला की राजधानी थी। चारों ओर का दृश्य बहुत ही सुन्दर और आकर्षक था। वह व्यक्ति सुबह साढ़े ग्यारह बजे

उस छोटी-सी नाव में सवार होकर मुर्शिदाबाद से चला था। उसकी नाव नदी की धारा के साथ बीस किलोमीटर प्रति घण्टा की रफ्तार से अधिक तेज़ नहीं चल रही थी। सुबह साढ़े ग्यारह बजे से तीसरे पहर के ढाई बजे तक वह केवल साठ किलोमीटर की यात्रा कर पाया था। इसके बाद उसने नाव रोक दी थी। आती-जाती नावों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया था। ढाई बजे से साढ़े तीन बजे तक खाना खाने के बाद वह आराम करता रहा था। आराम करते-करते उसने एक गुलाबी पत्र तीन बार पढ़ा था। उस पत्र में से उसे रसीला और चांदी की घण्टियों जैसा एक स्वर सुनाई दे रहा था :

'डार्लिंग ! मुझे किले में एक तरह से कैद कर दिया गया है। वे जान गए हैं कि मेरे इरादे क्या हैं। किले की बाईं दीवार के पीछे दो कमरे हैं। एक छोटा-सा हौज़ है। कमरों में संगमरमर की जालियां हैं, जो लाख से भर दी गई हैं, जिससे कि बाहर न देख सकूं। मेरे कमरे के आगे चौड़ा परकोटा है। इस परकोटे में मेरे कमरे के ठीक सामने एक खिड़की है, जिसमें किवाड़ नहीं हैं। इस खिड़की में एक पहरेदार राइफल लिए खड़ा रहता है। छः-छः घण्टे के बाद पहरा बदलता रहता है। इस पहरेदार को रास्ते से हटाए बिना मुझ तक पहुंचना और मुक्त कराना कठिन है। मैं नहीं जानती कि तुम यह कठिन काम कर सकोगे या नहीं, लेकिन तुम्हीं मेरी आशा और आकांक्षा हो सर्वेश ! मैं प्रगतिशील विचारों की हूं। पढ़ी-लिखी हूं। धर्म-निरपेक्षता और समानता को मानती हूं। मैं इस घुटन में कैसे रह सकती हूं ! सीमित और घिरे हुए वातावरण में कैसे सांस ले सकती हूं ! इसी चारदीवारी में मेरा विवाह कर दिया जाएगा और इस प्रकार इस चारदीवारी में मुझे जीते-जी दफन कर दिया जाएगा। जैसी इस दुनिया में आई, वैसी न आई। मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हें तुम्हारा वचन याद दिलाऊं, लेकिन विवश हूं। सर्वेश, तुमने कहा था, 'इंसान पूरे देश

को दूसरों की गुलामी से आजाद कर सकता है। क्या वह एक नारी को मुक्ति नहीं दिला सकता ?' मैं कितनी खुश हुई थी सर्वेश ! तुम नहीं जानते कि मैंने यह पत्र तुम तक कितनी कठिनाइयों से पहुंचाया है। मेरी खातिर पत्र मिलते ही चल पड़ना। कैद के ये दिन भार बनते जा रहे हैं।

तुम्हारी सर्वीना

जो बेचैनी से तुम्हारी बाट जोह रही है'

सर्वेश ने गुलाबी पत्र तह करके फिर जेब में रख लिया।

तीसरे पहर साढ़े तीन बजे उसने फिर पतवारें संभाल लीं और शाम के साढ़े पांच बजे तक एक सौ बीस किलोमीटर की यात्रा तय कर ली। अब वह उस विशाल दुर्ग से केवल एक किलोमीटर दूर था।

उसने नाव में रखा हुआ एक ऊंचा बक्स खोला। फिर इत्मीनान की सांस ली कि उसने कोई भूल नहीं की थी। फिर उसने अपना लम्बा बक्स खोला। उसमें से उसने एक आधुनिक राइफल निकाली। उस राइफल की नली पर साइलेंसर चढ़ा हुआ था और साइलेंसर के ऊपर एक दूरबीन फिट थी। उसने राइफल से किले की ओर निशाना लगाकर देखा। राइफल में लगी दूरबीन से उस किले का काफी बड़ा भाग दिखाई दे रहा था।

शाम का अंधेरा फैलने लगा था। नावें घाटों की ओर लौटने लगी थीं। उसे अभी और अंधेरा बढ़ने की प्रतीक्षा करनी थी।

साढ़े सात बज गए। अंधेरा खूब गहरा हो गया। वह नाव को किले की बाईं दीवार की ओर ले गया। उसने अनुमान लगाया, किले की बाईं दीवार नदी के पानी से लगभग छब्बीस फुट ऊंची थी।

उसने किले के परकोटे की खिड़की में एक सशस्त्र सैनिक को पहरा देते हुए देखा। वह मुस्कराया। उस पहरेदार को निशाना बनाना कठिन न था, लेकिन छब्बीस फुट की ऊंचाई चढ़ना एक टेढ़ी समस्या थी; लेकिन उसे कोशिश करनी थी और कोशिश भी उस समय करनी थी, जब बाईं दीवार के आसपास कोई न हो।

उसने थोड़ी देर और प्रतीक्षा की। बाईं दीवार की ओर सूनापन छा गया तो वह नदी में खड़े एक पेड़ के पीछे अपनी नाव ले गया। उसने अपनी राइफल उठाई और पेड़ की दो डालों के बीच राइफल की नाल छिपा ली। दूरबीन में देखते हुए उसने राइफल के ट्रेगर पर उंगली रख दी और फिर बड़ी सावधानी से ट्रेगर दबा दिया। राइफल की नाल से सफेद धुआं निकला और परकोटे की खिड़की में खड़ा पहरेदार धम से गिर पड़ा। सर्वेश की शक्तिशाली राइफल की गोली ने पहरेदार के सीने में घुसकर उसे ज़ोर का झटका दिया था और पहरेदार पीछे की ओर गिर गया था। सर्वेश जानता था कि राइफल की लम्बी गोली ने पहरेदार को चीखने तक का मौका न दिया होगा। हां, उसके धम से गिरने और उसकी राइफल के उसके हाथ से छूटकर गिरने पर जरूर हलका-सा धमाका हुआ होगा।

सर्वेश परकोटे की खिड़की की ओर देखता रहा। दो मिनट के बाद उसने रंग और रेशम में लिपटी हुई संगमरमर के रंग जैसी एक लड़की को उस खिड़की के सिरे पर देखा। सर्वेश ने रूमाल लहराकर उस लड़की को सिगनल दिए। उत्तर में लड़की ने भी रूमाल लहराकर सिगनल दिए। लड़की के सिगनलों का अर्थ था कि रास्ता साफ है।

सर्वेश ने पेड़ के पीछे से नाव निकाली। वह लड़की परकोटे की खिड़की में से हट गई थी और शायद तैयारी करने के लिए अपने कमरे में चली गई थी।

सर्वेश अपनी नाव परकोटे की खिड़की के नीचे ले आया। उसने ऊंचे बक्स में से एक चर्खी निकाली, जिसपर रस्सियों की तरह बटा हुआ मोटा तार लिपटा था। चर्खी घुमाने से रस्सी की तरह बटा हुआ मोटा तार सीधा ऊपर की ओर उठने लगा। उस तार के सिरे पर फौलाद का एक मजबूत हुक था।

सर्वेश दीवार के साथ चर्खी का तार ऊपर उठाता रहा। तार किले की छब्बीस फुट ऊंची दीवार से डेढ़ फुट नीचे रह गया। सर्वेश बहुत परेशान हुआ, लेकिन सहसा उसे एक तरकीब सूझ गई।

उसके होंठों पर मुस्कराहट नाच उठी। दीवार में दो फुट की ऊंचाई पर एक पत्थर अपनी जगह से खिसका हुआ था। सर्वेश सोचने लगा कि यदि वह किसी तरह इस तार के हुक को उस पत्थर के पीछे फंसा दे तो दीवार के ऊपर से नीचे तक की दूरी और परकोटे की खिड़की से नीचे तक टांग फैलाकर और खिसके हुए पत्थर को फुट-पैड बनाकर तय कर लेगा।

सर्वेश मोटे तार को उस खिसके हुए पत्थर के पीछे डालने में तो सफल हो गया, मगर हुक पत्थर के पीछे मजबूती से नहीं फंस रहा था। उसने फिर कोशिश की। उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलक आईं। अन्त में वह हुक को पत्थर के पीछे फंसाने में सफल हो गया। वह मुस्कराया। उसने परकोटे की खिड़की की ओर देखा। थोड़ी देर पहले जो लड़की रेशम में लिपटी खड़ी थी, अब उसके बदन पर सादे कपड़े थे। उसने पहरेदार की लाश खिड़की में से हटा दी थी।

सर्वेश ने दस्ताने पहने और मोटे तार की सहायता से किले की दीवार पर चढ़ने लगा। यह बहुत ही कठिन काम था। वह उस खिसके हुए पत्थर तक पहुंच गया। वह पसीने में नहा रहा था। उसने खिसके हुए पत्थर पर पांव टिकाए और परकोटे की खिड़की की चौखट पर हाथ जमाकर खिसकता हुआ खिड़की में पहुंच गया।

उस रूपवती युवती ने उसे बांहों में भर लिया। उसके होंठों पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। फिर उससे अलग होकर बोली, "इससे बढ़कर संसार में और कोई मूल्यवान वस्तु नहीं।"

"तुम्हें अधिक सामान ले चलने की आवश्यकता नहीं है सर्वीना!" सर्वेश ने कहा।

"मेरे पास सफेद कैनवेस का केवल एक किट-बैग है।"

"कहां है किट-बैग?"

"लाती हूं।"

"जल्दी से ले आओ।"

सर्वीना दो मिनट में किट-बैग लेकर आ गई। इस बीच सर्वेश

ने अपनी पतलून की लम्बी पेटी खोल ली थी।

"किट-बैग भारी तो नहीं है ?" सर्वेश ने पूछा।

"नहीं।" सर्वीना ने उत्तर दिया।

"सर्वीना, मेरी पीठ से लगकर खड़ी हो जाओ।"

सर्वीना सर्वेश की पीठ से लगकर खड़ी हो गई। सर्वेश ने पीछे हाथ डालकर लम्बी पेटी से सर्वीना की पीठ और अपनी पीठ कसकर बांध ली और बोला, "सर्वीना, किट-बैग अपने हाथों में ले लो। मैं तुम्हें पीठ पर बांधे हुए नीचे ले चलूंगा।" यह कहकर सर्वेश ने अपना दायां पांव नीचे खिसके हुए पत्थर पर रख दिया और फिर दीवार से दो फुट नीचे खिसककर उस तार को दस्ताने वाले हाथों से मजबूती से पकड़ लिया। फिर सर्वीना को लिए हुए नीचे उतरने लगा।

अभी वे अपनी नाव से तीन फुट ऊपर थे कि दीवार का पत्थर पूरी तरह खिसक गया और सर्वेश सर्वीना को लिए-लिए नाव में जा गिरा। नदी में पत्थर गिरने का ज़ोरदार धमाका हुआ।

सर्वेश घबराकर जल्दी-जल्दी तार को चर्खी पर लपेटने लगा। सर्वीना अभी तक उसकी पीठ से बंधी हुई थी। तार लपेटकर उसने अपनी पेटी खोल दी और सर्वीना से पूछा, "चोट तो नहीं लगी ?"

"टांग में ज़रा-सी चोट आ गई है, ज्यादा नहीं।"

सर्वेश नाव को फिर उसी पेड़ के पीछे ले आया, "मुझे अपना पांव दिखाओ सर्वीना !"

सर्वीना ने अपना सफेद कमल जैसा पांव सर्वेश के आगे कर दिया।

"हलकी-सी मोच आ गई है। पांव मसकर बैठाए देता हूं। दर्द नहीं होगा।" सर्वेश ने कहा और सर्वीना का पांव मलकर खिसकी हुई हड्डी अपनी जगह बैठा दी।

सर्वीना को आराम महसूस हुआ। वह सर्वेश के गाल पर चुटकी भरकर बोली, "तुम्हें क्या कुछ नहीं आता !"

सर्वेश मुस्कराने लगा, "सर्वीना, मोटरों के मैकेनिक तो बहुत

मिलते हैं, लेकिन औरतों का मैकेनिक कोई-कोई होता है।"

"तुम औरतों के मैकेनिक नहीं, इन्जीनियर हो। मुझे मेरी जैल से अब दूर ले चलो। कुछ भी हो, हमें रात के एक बजे तक मुर्शिदाबाद पहुंच जाना चाहिए। मैं तुम्हारी सहायता करूंगी।" सर्वीना ने कहा।

सर्वेश ने नाव पेड़ के पीछे से निकाली और मुर्शिदाबाद की ओर मोड़ दी।

रास्ते में सर्वीना ने कहा, "तुमने अपने वचन के अनुसार मुझे मुक्ति तो दिला दी, लेकिन अब मैं किस मुक्त वातावरण में रह सकूंगी ?"

"तुम मुक्त वातावरण की बात कर रही हो और मैं सोच रहा हूं कि हम रात के एक बजे मुर्शिदाबाद पहुंचेंगे। वहां रात बिताने के लिए हमें कोई ठिकाना नहीं मिलेगा।"

"हां, यह भी एक टेढ़ा प्रश्न है।" सर्वीना ने कहा, "किसी बीच के दर्जे के होटल में तो जगह मिल ही जाएगी।"

सर्वेश बहुत थक गया था। वह तेजी से पतवार नहीं चला पा रहा था।

सर्वीना सुकुमार युवती थी। वह आधे घंटे पतवार चलाने में ही थक गई।

"मुर्शिदाबाद पहुंचते-पहुंचते रात के दो बज जाएंगे।" सर्वेश ने कहा।

अचानक सर्वीना का हाथ उसके मुंह पर चला गया और उसकी हलकी-सी चीख निकल गई।

"क्यों, क्या बात है सर्वीना ?"

"मुझे ऐसा लग रहा है कि दो नावें हमारी नाव का तेजी से पीछा करती चली आ रही हैं।"

सर्वेश ने मुड़कर देखा। लगभग छः फर्लांग दूर दो नावें उनकी नाव की ओर तेजी से बढ़ी चली आ रही थीं। उनमें लालटेनें जल रही थीं। दोनों नावों में छः-सात आदमी थे।

"सर्वीना, तुम पतवार चलाओ। बस, आधे घंटे। मुझे आशा

है कि मैं इन नावों को नष्ट कर दूंगा या इन्हें वापस भागने पर विवश कर दूंगा।"

सर्वीना सर्वेश की जगह आ बैठी। सर्वेश ने नाव में रखी राइफल उठाई और ऊंचे बक्स पर आ बैठा। उसकी राइफल बहुत ही बढ़िया क्वालिटी की थी। उसकी रेंज एक मील तक थी, यानी उसकी गोली एक मील तक मार कर सकती थी। मामूली राइफल की रेंज तो आधे मील से भी कम होती है।

सर्वेश जानता था कि उसे तो अभी नावों में सवार लोगों से कोई खतरा नहीं है, लेकिन उन लोगों को उससे खतरा हो सकता है।

सर्वेश खून-खराबी पसन्द नहीं करता था। उसने सोचा कि अपनी शक्तिशाली राइफल के फायरों से दोनों नावों में छेद कर दे। राइफल पर लगी दूरबीन उसे सही निशाना लगाने में सहायता देगी।

सर्वेश की राइफल में बारह गोलियां पड़ती थीं। एक गोली वह किले के परकोटे की खिड़की में खड़े पहरेदार पर चला चुका था। अब चार-चार गोलियां दोनों नावों पर इस्तेमाल करना चाहता था और तीन गोलियां बचाकर रखना चाहता था।

उसने ताबड़तोड़ पहली नाव पर चार फायर किए। नाव में चार छेद हो गए। इसी तरह उसने दूसरी नाव में भी चार छेद कर दिए। दोनों नावों में धीरे-धीरे पानी भरने लगा।

सर्वेश ने राइफल नाव में रख दी। दोनों नावों की ओर से बहुत-सी गोलियां उनकी नाव की ओर आईं, लेकिन उनकी नाव तक नहीं पहुंच पाईं।

"अब कोई खतरा नहीं। हम आराम से मुर्शिदाबाद पहुंच जाएंगे।" सर्वेश ने कहा।

सर्वेश और सर्वीना रात के ढाई बजे मुर्शिदाबाद पहुंचे। उन्हें अपने अनुमान के अनुसार एक बीच के दर्जे के होटल में एक कमरा मिल गया।

वे दोनों सोए पड़े थे। सुबह के पौने सात बजे थे कि सरताज होटल के सामने एक फायर हुआ और उन दोनों की आंख खुल गई।

"पकड़ो!" दो-चार आवाज़ें आईं।

"दिमाग खराब है! उसके पास राइफल है। भूनकर रख देगा। मौत को दावत देनी है तो जाओ उसे पकड़ने।" दो-तीन आदमी बोल उठे।

"मैं नीचे जाकर देखता हूं।" सर्वेश बोला।

"मैं भी चलती हूं।" सर्वीना ने कहा।

दोनों होटल से बाहर आए तो उन्होंने लोगों की भीड़ देखी। भीड़ एक टैक्सी को घेरे हुए थी। टैक्सी का ड्राइवर पत्थर की मूर्ति बना हुआ था। एक औरत टैक्सी ड्राइवर के आगे बाईं करवट गिरी हुई थी। उसके बदन पर नीली साटन का गाउन था। उसकी पीठ के नीचे से खून रिस रहा था। उसके बाल हलके सुर्ख और सुनहरे थे। उसकी आंखें बन्द थीं। उसके सीने का उभार बहुत अधिक था। वह एक सुन्दर औरत थी। वह विदेशी दिखाई दे रही थी।

सर्वीना की नज़रें उस औरत पर जमकर रह गईं। फिर उसके मुंह से निकला, "सोज़ीन!"

अचानक सर्वेश ने सोज़ीन की आंखें हलकी-सी फड़कती हुई देखीं। वह बोला, "सोज़ीन अभी ज़िन्दा है। फौरन किसी डॉक्टर को बुलाना चाहिए।"

कुछ आदमी डॉक्टर को बुलाने दौड़ पड़े।

"सोज़ीन को गोली किसने मारी थी?" सर्वेश ने पूछा।

टैक्सी ड्राइवर ने कहा, "कोई बात ही नहीं हुई। यह इस होटल के सामने टैक्सी रुकवाकर उतरीं। पर्स में से इन्होंने दस रुपये का नोट निकालकर मुझे दिया। ठीक उसी समय इन पेड़ों के पीछे से गोली चली और यह चीखे बिना गिर पड़ीं।"

"तुम मिसेज सोज़ीन को कहां से लाए थे?" सर्वेश ने पूछा।

इतने में एक पुलिस सार्जेण्ट आ गया।

"मैं इनको नदी के किनारे से लाया था। यह पहले 'शेवार' गईं। फिर 'बारहदरी' होटल में गईं। फिर इन्होंने मुझे सरताज होटल चलने के लिए कहा। बस, यहां पहुंचते ही किसीने इन्हें गोली मार दी।"

"क्या हत्यारे को किसीने देखा था ?" सार्जेण्ट ने पूछा।

"नहीं। हत्यारा इन पेड़ों के पीछे था।" एक आदमी बोला।

तभी डॉक्टर दो नर्सों के साथ स्ट्रेचर लिए हुए आ गया। उसने सोज़ीन की नब्ज़ टटोली। उसके दिल की धड़कन महसूस की और फिर बोला, "इन्हें क्लीनिक में ले जाना होगा, तभी पता चलेगा कि इनकी हालत किस हद तक खराब है।"

सार्जेण्ट पेड़ों की ओर जाकर लौट आया और बोला, "दो आदमियों ने हत्यारे को देखा था। अजीब आदमी था—टेढ़ी टांगें, टेढ़े हाथ। सिर पर खाकी पगड़ी। पीठ की बजाय सीने की ओर कूबड़ निकला हुआ। भयानक आदमी था।"

"डॉक्टर साहब, हम भी आपके साथ क्लीनिक में चलते हैं। मैं मिसेज़ सोज़ीन को जानती हूं। अगर इन्हें ज़रा-सा भी होश आ गया तो मैं इनसे बात करना चाहूंगी।" सर्वीना ने कहा।

"आइए।"

डॉक्टर और नर्सों ने सोज़ीन को स्ट्रेचर पर लिटा दिया और क्लीनिक की ओर चल दिए। सर्वेश और सर्वीना उनके साथ थे।

२. पीठ में गोली

डॉक्टर ने क्लीनिक में पहुंचकर मिसेज़ सोज़ीन के घाव को देखा। उन्हें इन्जेक्शन दिया। थोड़ी देर के लिए उन्हें होश आ गया।

"मिस सर्वीना यहां क्लीनिक में हैं या सरताज होटल में ?" मिसेज़ सोज़ीन ने पूछा।

"क्लीनिक के रिसेप्शन रूम में हैं।" डॉक्टर ने बताया।

"उन्हें फौरन मेरे पास भेज दीजिए।" सोज़ीन ने अनुरोध

किया।

डॉक्टर ने रिसेप्शन रूम में पहुंचकर सर्वीना से कहा, "मिस सर्वीना, आपको मिसेज़ सोज़ीन याद कर रही हैं। वह छः नम्बर कमरे में हैं।"

"डॉक्टर साहब, मिसेज़ सोज़ीन के बचने की कोई आशा है?" सर्वीना ने डरते-डरते पूछा।

"मैं अभी कुछ नहीं कह सकता। बत्तीस प्वॉइंट की राइफल की गोली भी ताकतवर होती है। जहां गर्दन और कंधा मिलता है, उसके तीन इंच नीचे रीढ़ की हड्डी को तोड़कर गोली दो इंच बदन में धंस गई है। हो सकता है, गोली दूर तक धंस गई हो। इन्हें ऑपरेशन के लिए अस्पताल भेजना होगा। आप जल्दी से जाइए। शायद उनके पास अधिक समय न हो।"

"मैं भी चलूं?" सर्वेश ने पूछा।

"आ जाओ।"

सर्वेश और सर्वीना छः नम्बर कमरे में पहुंचे। मिसेज़ सोज़ीन की आंखें खुली थीं, लेकिन उनका रंग सफेद पड़ गया था। माथा पसीने से भरा हुआ था।

"सर्वीना, मुझे भी आज़ाद होने का मौका मिल गया था। तुम्हारे किले से फरार होने की खबर फौरन फैल गई थी। दो नावें फौरन तैयार की गई थीं। बारह आदमियों को लैस करके भेज दिया गया था। सब हैरान थे कि पहरेदार को गोली कैसे मारी गई। तुम बताओ, तुम कैसे फरार हुईं और तुम्हारा साथी कौन था?" सोज़ीन ने पूछा।

"यह, सर्वेश बाबू।" सर्वीना ने उत्तर दिया।

सोज़ीन ने सर्वेश की ओर देखा और फिर सर्वीना से बोलीं, "मैंने कहा कि मुझे इस चारदीवारी में छोड़कर सर्वीना कहीं भी नहीं जाती। मुझे जाने दीजिए, मैं उसकी चुटिया पकड़कर ले आऊंगी। मेरी बात मान ली गई और मुझे आज़ाद होने का मौका मिल गया। हमारी नावों में जब पानी भर गया तो हम आने वाली दूसरी नावों में जा बैठे। संयोग से मैं एक नाव में अकेली थी।

हमारे कई साथी वापस जा चुके थे। मुर्शिदाबाद पहुंचकर मैंने तुम्हें होटलों में तलाश किया। दो-तीन होटलों में तुम्हें तलाश करने क बाद मैं सरताज होटल में आ रही थी और सोच रही थी कि तुम आज़ाद होकर मुझे भी आज़ादी दिला दोगी, लेकिन मुझे क्या पता था कि मुझे गोली मार दी जाएगी।"

"क्या उन लोगों में से ही किसीने गोली मारी है तुम्हें?" सर्वीना ने पूछा।

"सर्वीना, तुम जानती नहीं हो, वे लोग हत्यारे नहीं हैं। उनको बस एक ही शौक है कि वे सुन्दर औरतों को पकड़कर लाएं और किले की चारदीवारी में बंद कर दें। उन्हें बांदी बनाकर रखें। वे प्यार भी करते हैं। वे हत्यारे नहीं हैं। उनका रास्ता हमेशा निर्दोष रहा है।"

"तो फिर तुमपर गोली किसने चलाई? सुना है, वह अजीब आदमी था—टेढ़ी टांगें, टेढ़े हाथ! सीने पर कूबड़!" सर्वीना बोली।

"मैं उसे नहीं जानती, लेकिन मुझे पता है कि हत्यारा कौन हो सकता है!"

"कौन हो सकता है?" सर्वेश ने पूछा।

"वह...वह...।" सोज़ीन के होंठ फड़फड़ाए। फिर होंठों के किनारों से झाग निकलने लगे और उनकी आंखें मुंद गईं।

डॉक्टर ने सोज़ीन को फौरन जनरल अस्पताल पहुंचा दिया। वहां पहुंचते ही डॉक्टरों ने सोज़ीन को मृत घोषित कर दिया।

सर्वीना फूट-फूटकर रोने लगी। उस चारदीवारी में सोज़ीन ही उसे तसल्ली देती रहती थीं।

सर्वेश और सर्वीना सरताज होटल में लौट आए।

"सर्वेश, मेरा विचार है कि हम पहली ट्रेन से बम्बई रवाना हो जाएं। वहां बांदरा के ग्रीन मेंशन में मेरी बहन रहती है। मुझे देखकर वह बहुत खुश होगी। हम वहां साल-छः महीने भी रहें तो मेरी बहन मर्जीना को कोई असुविधा न होगी।"

"तुम्हारी खुशी ही मेरी खुशी है सर्वीना, लेकिन मैं अभी तक

यह सोच रहा हूं कि मिसेज़ सोज़ीन ने यह क्या कहा था कि किले के लोग सच्चरित्र और दयावान हैं। सोज़ीन का यह बयान और भी आश्चर्यजनक है कि जिसने उन्हें गोली मारी है, उसे वह जानती हैं। उनका हत्यारा कौन हो सकता है ? काश, उन्हें एक-दो मिनट और होश रहता !" सर्वेश ने कहा।

"मेरा जी चाहता है कि मैं सोज़ीन के हत्यारे को ढूंढू।" सर्वीना बोली।

"सर्वीना, तुमने किले में तीन महीने कैद में बिताए हैं। क्य अभी तक किसीने तुमसे शादी नहीं की थी ?"

"मुझे इतना बेवकूफ मत समझो सर्वेश ! मैं अपनी बहन मर्जीना की एक आवश्यकता-पूर्ति के लिए जब किले में पहुंची तो मर्जीना ने उन लोगों के आग्रह पर कहा कि तुम सर्वीना को ले जा सकते हो, लेकिन इसकी शादी चार महीने सात दिन के बाद होगी। मर्जीना ने इस तरह मेरे विवाह की तिथि निश्चित कर दी थी। उसने कहा था कि आज १८ मई है। शादी २५ सितम्बर को ही हो सकती है, वरना दूल्हा-दुल्हन में से एक की मृत्यु हो जाएगी। मेरी बहन मर्जीना का उद्देश्य यह था कि उनको सवा चार महीने के लिए टाल दिया जाए। तब तक रुपया इकट्ठा करके उन्हें वापस कर दिया जाए और मुझे बुला लिया जाए।"

"क्या तुम्हारी बहन मर्जीना ने तुम्हें बेच दिया था ?"

"हां। मैं अपनी बहन के लिए कोठे पर भी बिकने के लिए तैयार थी।"

"तुम्हारी बहन ने तुम्हें कितने रुपयों में बेचा था ?"

"दो लाख में। मेरे बहनोई देवगुण को दुकान में एक लाख का घाटा हो गया था, और एक लाख रुपया उन्हें दोबारा अपनी साख बनाने के लिए चाहिए था। दो लाख रुपयों में उन्होंने अपना व्यवसाय फिर जमा लिया है।"

बम्बई के लिए ट्रेन एक घंटे बाद जाती थी, सो वे समय पर पहुंच गए और बम्बई रवाना हो गए।

ट्रेन आसनसोल स्टेशन पर रुकी तो सर्वेश और सर्वीना ने

देखा कि एक फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट पर सैकड़ों लोगों की भीड़ टूटी पड़ रही थी। बहुत-से लोगों के हाथों में मिठाई के डिब्बे और फूलों के हार थे।

"क्या इस ट्रेन में कोई मिनिस्टर सफर कर रहा है?" सर्वीना ने पूछा।

"आओ, चलकर देखें।"

जब वे उस कम्पार्टमेंट के पास पहुंचे तो लोगों ने बताया कि उस कम्पार्टमेंट में एक प्रसिद्ध जासूस मेजर बलवन्त अपनी टीम के साथ यात्रा कर रहा है। वह धनबाद की कोयले की खानों की तहकीकात करके बम्बई जा रहा है। कोयला खान में धमाका तोड़फोड़ करने वालों के कारण हुआ था। मेजर बलवन्त ने इस गुत्थी को बड़ी आसानी से सुलझा दिया था, इसलिए हर स्टेशन पर मेजर बलवन्त और उसके साथियों के दर्शन के लिए भीड़ उमड़ आती थी।

सर्वेश और सर्वीना अपने कम्पार्टमेण्ट में लौट आए।

"हम एक विख्यात जासूस के साथ यात्रा कर रहे हैं। क्यों न बम्बई पहुंचकर मेजर बलवन्त से मिलें और सोज़ीन की हत्या का केस उनको सौंप दें। सर्वेश, अगर सोज़ीन के हत्यारे का पता न चला तो मुझे जीवन-भर चैन न मिलेगा।" सर्वीना ने कहा।

"बम्बई सकुशल पहुंच जाएं, फिर मेजर बलवन्त से मिलेंगे।" सर्वेश ने कहा।

ट्रेन अगले दिन रात के साढ़े बारह बजे बम्बई पहुंच गई। वह साढ़े तीन घण्टे लेट हो गई थी।

सर्वीना और सर्वेश विक्टोरिया टर्मिनस से टैक्सी लेकर बांद्रा के ग्रीन मेंशन के सामने पहुंचे और टैक्सी का किराया चुकाकर टैक्सी से उतर आए।

दोनों हैरान थे कि मेंशन के आगे टैक्सी काफी शोर मचाकर रुकी थी, लेकिन बरामदे का दरवाज़ा अभी तक किसीने खोला नहीं था। बंगले में रोशनी थी और उस रोशनी में दो साये चलते-फिरते दिखाई दे रहे थे। सर्वीना ने सोचा कि उसकी बहन के यहां

शायद मेहमान आ गए है, इसलिए वे इतने व्यस्त हैं।

लेकिन मामला कुछ और ही था।

सर्वेश और सर्वीना दबे पांव बरामदे में पहुंचे। सर्वीना ने दरवाज़े की घण्टी बजाई।

अन्दर बहुत हलके कदमों की आवाज़ आई। किसीने बड़ी सावधानी से चटकनी खोलकर एक इंच दरवाज़ा खोल दिया। सर्वीना ने अपनी बहन मर्जीना की आंखें पहचान लीं, जो भय से फटी हुई थीं।

"तुम और इस समय ? तुमको वहां से किसने आने दिया ?" मर्जीना ने पूछा, लेकिन उसने दरवाजा एक इंच से अधिक नहीं खोला।

"क्या बात है दीदी ! मुझे देखकर तुम्हें खुशी नहीं हुई ?" सर्वीना ने कहा।

"खुश हुई हूं। बहुत खुश हुई हूं। तुम दोनों जल्दी से अंदर आ जाओ, ताकि मैं दरवाज़ा बंद कर दूं।"

"तुम घबरा क्यों रही हो ? डर क्यों रही हो ?" सर्वीना ने सर्वेश के साथ दरवाज़े में कदम रखते हुए पूछा।

मर्जीना ने दरवाज़ा जल्दी से बंद कर दिया।

"वह···वह !" मर्जीना के मुंह से निकला।

"वह कौन ? भैया ?" सर्वीना बोली।

"नहीं, आर्टिस्ट रावेल !" मर्जीना के मुंह से निकला।

"रावेल दादा ! क्यों, उन्हें क्या हुआ ? वह तो हमारे शुभचिन्तक हैं। संकट के प्रारम्भिक दिनों में उन्होंने ही तो मेरी सहायता की थी। क्या कुछ नहीं किया था उन्होंने हमारे लिए ! क्या आज वह तुम्हारे मेहमान हैं ?"

"हां, आज वह हमारे ऐसे मेहमान बने हैं, जो आने के बाद कभी जाते नहीं हैं।" मर्जीना ने कहा।

"क्या कह रही हो दीदी ?" सर्वीना ने कहा।

"आओ, तुम भी अपनी आंखों से देख लो।" मर्जीना ने कहा।

सर्वीना और सर्वेश को मर्जीना पिछले कमरे में ले गई। पैंसठ वर्ष के आर्टिस्ट रावेल सोफे पर बांहें फैलाए और टांगें खोले लेटे

हुए थे । उनकी पैन्ट आगे की ओर खिसकी हुई थी । बैल्ट खुली हुई थी । उनकी आखें अधखुली थीं ।

सर्वीना का बहनोई देवगुण पानी में नीबू मिलाए उनके पास बैठा था और रावेल के होंठों में पानी उड़ेल रहा था, लेकिन पानी होंठों से बाहर आ जाता था और उनकी कमीज को भिगो देता था।

सर्वेश आगे बढ़ा । उसने रावेल के दिल की धड़कन महसूस की और फिर नब्ज़ देखने लगा । फिर उठकर बोला, "आप बेकार मेहनत कर रहे हैं । आर्टिस्ट रावेल दूसरी दुनिया में पहुंच चुके हैं।"

"ओह !" मर्जीना और देवगुण के मुंह से निकला ।

"क्या मिस्टर रावेल ज़्यादा शराब पीते थे ?" सर्वेश ने पूछा।

"अल्कोहिक हो चुके थे ; लेकिन आज तो इन्होंने बहुत कम पी थी । खाना खाने के बाद इन्होंने आइसक्रीम खाने की इच्छा प्रकट की थी । घर में पेठे का हलवा था, लेकिन इन्होंने हलवा खाने से इन्कार कर दिया था । मैं और देवगुण स्टोर से आइसक्रीम लेने गए । जिस समय हम घर से गए, दादा रावेल कोई पुराना गीत लहक-लहककर गा रहे थे । हम आइसक्रीम लेकर आए तो इनको इस हालत में देखा ।" मर्जीना ने कहा ।

"आपको स्टोर से आइसक्रीम लाने में कितनी देर लगी ?" सर्वेश ने पूछा ।

"पच्चीस-तीस मिनट तो लग ही गए होंगे ।" मर्जीना बोली ।

"आपको कोई संदेह तो नहीं हुआ कि आपके बंगले में कोई आया था ?" सर्वेश ने पूछा ।

"नहीं । इस कमरे में ऐसी कोई चीज़ भी नहीं थी, जिससे पता चलता कि यहां कोई आया था । व्हिस्की की बोतल में इतनी ही व्हिस्की पड़ी थी । प्लेट में आधा कबाब पड़ा था । कमरे में कोई खुशबू नहीं थी ।" मर्जीना बोली ।

"किसीकी किसीके घर आने पर मृत्यु हो जाए तो वह उस घर में रहने वालों को कितनी बड़ी परेशानी में डाल देता है ।" देवगुण ने कहा ।

"रात बहुत जा चुकी है । इस समय पुलिस को सूचना दी तो

रात-भर जागना पड़ेगा। शायद वह हमें पुलिस स्टेशन भी ले जाए।" मर्जीना बोली।

"मेरा विचार है कि अत्यधिक शराब पीने के कारण मृत्यु हुई है। दादा रावेल पहले ही अल्कोहिक थे। आज इनका पीने का अन्तिम दिन था। मेरे विचार से हम रावेल दादा की मृत्यु की सूचना पुलिस को सुबह दें।" सर्वेश ने कहा।

सर्वेश की सलाह मान ली गई।

वे रात को सोए तो, लेकिन देर तक जागते रहे। मर्जीना और देवगुण को अपने बंगले में रावेल की मृत्यु हो जाने के कारण चिन्ता लगी हुई थी। उधर सर्वीना और सर्वेश परेशान थे कि सर्वेश सर्वीना को किले में से निकाल तो लाया था, लेकिन मिसेज़ सोज़ीन को मुर्शिदाबाद में उनके सरताज होटल के ठीक सामने गोली मार दी गई थी। जिस आदमी ने सोज़ीन को गोली मारी थी, वह उसे तो नहीं जानती थीं, लेकिन उसे अवश्य जानती थीं, जिसके कहने पर उन्हें गोली मारी गई थी; लेकिन वह उसका नाम नहीं बता सकी थीं।

इन्हीं परेशानियों के कारण वे सब देर से सोए।

सुबह दरवाज़े की घण्टी बजी तो सबने देखा कि दिन निकल आया था, हालांकि धूप अभी खिली नहीं थी।

मर्जीना का कलेजा तो घण्टी की आवाज़ सुनते ही धक् से रह गया। देवगुण में उठने का साहस नहीं था।

सर्वेश ने जाकर बरामदे का दरवाज़ा खोला। वह अपने सामने धान-पान-सी एक अल्ट्रा मॉडर्न लड़की को देखकर दंग रह गया। लड़की के हाथ में आर्टिस्ट बुक देखकर वह और भी हैरान हो उठा। वह सोचने लगा कि क्या यह लड़की रावेल दादा की बेटी है?

अपने सामने खड़े नौजवान को चुप देखकर वह बोली, "गुड मॉनिंग! मैं अचपला हूं। रावेल दादा की अप्रेण्टिस हूं। क्या वह जाग रहे हैं?"

सर्वेश को एक लड़की से बात करते देख सर्वीना भी आ गई।

फिर मर्जीना और देवगुण भी आ गए।

"मिस अचपला, अंदर आ जाइए।" सर्वेश ने दरवाज़े में से हटते हुए कहा।

अचपला दरवाज़े के अंदर आ गई। उसने अपना हाथ उठाकर सबको नमस्ते की।

"मिस अचपला, आपको कैसे मालूम हुआ कि रावेल दादा कल रात यहां रहे?" सर्वेश ने पूछा।

"मिस्टर···!" अचपला कहते-कहते रुक गई।

"सर्वेश।"

"मिस्टर सर्वेश, मैं रावेल दादा की अप्रेण्टिस ही नहीं, उनकी पर्सनल सेक्रेटरी भी हूं। मैंने उनसे आर्ट सीखने के लिए अपना पूरा जीवन उन्हीं के नाम कर दिया है। मैं उनकी बेल्ट भी हूं, बावर्चिन और नौकरानी भी हूं। दादा रावेल काफी बूढ़े हो चुके हैं। बहुत अधिक शराब पीते हैं। उन्हें चौबीस घण्टे मेरी देखरेख की आवश्यकता होती है। कल शाम सात बजे उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं मिसेज मर्जीना के यहां जा रहा हूं। वह बांदरा में ग्रीन मेंशन में रहती हैं। मैंने उनसे कहा कि मैं भी उनके साथ चलती हूं, लेकिन उन्होंने कहा, 'नहीं, आज मैं अकेला ही जाऊंगा और ग्यारह साढ़े ग्यारह बजे लौट आऊंगा।' मैं चुप हो गई।"

"आइए, ड्राइंगरूम में चलकर बैठिए। कॉफी पीजिए।" सर्वेश ने कहा।

"लेकिन रावेल दादा कहां हैं?" अचपला ने इधर-उधर देखते हुए पूछा।

"आपको उनसे मिला दिया जाएगा।" सर्वेश ने कहा।

मर्जीना अचपला के लिए कॉफी बनाने के लिए चली गई।

"जब रावेल दादा रात के सवा बारह बजे तक न लौटे तो मैं यहां आई। घर में मिसेज़ मर्जीना और मिस्टर देवगुण नहीं थे। मैंने रावेल दादा को गाते सुना तो बहुत खुश हुई। मैं भीतर वाले कमरे में पहुंची तो दादा ने गाना बंद कर दिया और उनकी त्योरी चढ़ गई। मैंने कहा, 'आप तो साढ़े ग्यारह बजे लौटने वाले थे?'

वह अप्रसन्नता-भरे स्वर में बोले, 'मैंने अपना इरादा बदल दिया। मुझे परसों रात से अपने फ्लैट में डर लग रहा है। मैं यहीं सोऊंगा। तुम वापस चली जाओ। किसी को तुम्हारे यहां आने का कारण मालूम नहीं होना चाहिए कि मैं इस बंगले में हूं। जाओ अचपला, उलटे पांव लौट जाओ। सुबह आकर मुझे यहां से ले जाना।' मैं उनके आदेश की अवहेलना न कर सकी और चली गई। उस समय रात के बारह बजकर चालीस मिनट हुए थे। मैंने वायदा किया कि मैं सुबह आऊंगी। उन्होंने स्वीकृति दे दी। अगर वह जाग रहे हों तो मैं उनसे मिलना चाहूंगी।" अचपला ने कहा।

मर्जीना कॉफी ले आई।

"आप पहले कॉफी पीजिए, फिर हम आपको उनसे मिला देंगे।" सर्वेश ने कहा।

मर्जीना ने कॉफी का प्याला अचपला के हाथ में दे दिया।

"मिस अचपला, क्या आप बता सकती हैं कि उन्हें परसों रात से अपने फ्लैट में क्यों डर लग रहा था?" सर्वेश ने पूछा।

"आर्टिस्ट के वहमों की कोई सीमा नहीं होती। उनको किसका डर था? लेकिन मैंने परसों रात देखा कि वह सारी रात किसी को एक लम्बा पत्र लिखते रहे थे। पत्र लिखने के बाद उसे उन्होंने लिफाफे में बंद किया और उसपर टिकट चिपका दिए।"

"क्या आपको मालूम है कि उन्होंने वह पत्र किसको लिखा था?" सर्वेश ने पूछा।

"वह जब कभी कुछ लिखते हैं तो किसीको अपने पास नहीं आने देते। सुबह उठते ही वह उस पत्र को लेटरबक्स में डालने चले गए।" अचपला बोली। उसने कॉफी का प्याला खत्म कर दिया और कुर्सी से उठते हुए बोली, "अब आप मुझे उनसे मिला दीजिए।"

"मिस अचपला, एक प्रश्न का उत्तर और दीजिए। आप कहती हैं कि आप इस बंगले में मिस्टर रावेल को वापस ले जाने के लिए रात के लगभग बारह बजकर पैंतीस मिनट पर आई थीं और बारह बजकर चालीस मिनट पर चली गई थीं। क्या आपने

उस समय बंगले के अन्दर या बंगले के आसपास किसीको देखा था ?"

"नहीं, मैंने किसीको नहीं देखा; लेकिन मिस्टर सर्वेश, आप मुझसे इस तरह के प्रश्न क्यों कर रहे हैं ? आप मुझे मिस्टर रावेल से मिलाते क्यों नहीं ?" अचपला ने झल्लाकर कहा।

३. अप्रेण्टिस लड़की

"आइए !" सर्वेश ने कहा और उठकर चल दिया। सर्वीना, मर्जीना और देवगुण भी उसके साथ थे। अचपला उन सबके पीछे थी। वे उसे पिछले कमरे में ले गए और अचपला के आगे से हट गए। अचपला की नज़र रावेल पर पड़ी तो उसके मुंह से चीख निकल गई। उसने रावेल का अकड़ा हुआ बदन देखकर सब कुछ समझ लिया।

"मैं इनसे रोज़ कहा करती थी कि अब शराब की एक बूंद भी इनके लिए ज़हर है, लेकिन यह नहीं मानते थे। मेरा आर्ट अधूरा रह गया। मैं इन्हींके निर्देशन में अपनी कला को आगे बढ़ा रही थी। मैं अपने गुरु के मार्गदर्शन से वंचित हो गई।" अचपला ने कहा और सिसकियां भरने लगी। फिर सिसकियां भरते हुए बोली, "यह रात को मेरे साथ चले चलते तो ऐसा न होता।"

"मिस अचपला, ऐसा मालूम होता है कि रात को आपके सिवा इनके पास और कोई नहीं आया। हम आइसक्रीम लेने गए थे। वापस आए तो इनको मुर्दा पाया।" देवगुण बोला।

"ओह, क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मैंने अपने गुरु की हत्या की ? ऐसा घोर पाप—मेरे वश में होता तो मैं अपनी जिन्दगी भी उनको दे देती।"

"अच्छा, यह बताइए कि आपको जब रावेल दादा ने यहां से फौरन वापस भेज दिया तो क्या आपने बंगले के आसपास किसी को देखा था ?" सर्वेश ने फिर अपना प्रश्न दोहराया।

"अगर कोई होगा तो छिपा हुआ होगा। मैंने उसे देखा नहीं।"

अचपला ने उत्तर दिया।

"देखिए मिस अचपला, रावेल दादा की मृत्यु बंगले से हमारी अनुपस्थिति के बीच हुई। आपके बयान के अनुसार आप हमारी अनुपस्थिति में रात के बारह बजकर पैंतीस मिनट पर आईं और बारह बजकर चालीस मिनट पर वापस चली गईं। हम एक बजने में पांच मिनट पर स्टोर से आइसक्रीम लेकर लौटे थे, यानी आपके जाने के पन्द्रह मिनट बाद हम वापस आ गए थे। जो भी घटना हुई, वह हमारी पच्चीस-तीस मिनट की अनुपस्थिति में हुई। केवल आप ही हमारी अनुपस्थिति में आई थीं। मिस अचपला, आपको पुलिस के आने तक यहीं रहना पड़ेगा।" सर्वेश बोला और फिर उसने देवगुण से कहा, "पुलिस को सूचना देने का समय हो चुका है।"

"हां. विलम्ब हमारे लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।" देवगुण बोला, "मुझे दो जगह फोन करने हैं।"

"दो जगह ?" सर्वेश ने पूछा।

"जी हां। पुलिस को और प्रसिद्ध जासूस मेजर बलवन्त को।"

"आपने खूब याद दिलाया। हम मेजर बलवन्त से मिलने वाले थे।" सर्वेश बोला।

"क्यों ?" देवगुण ने आश्चर्य से कहा।

"सर्वीना अपनी सहेली सोज़ीन की हत्या के सिलसिले में उनसे मिलना चाहती है। हम जिस ट्रेन से मुर्शिदाबाद से लौट रहे थे, मेजर बलवन्त उसी ट्रेन में सफर कर रहे थे। आसनसोल स्टेशन पर हमने उन्हें देखा था। वह धनबाद की कोयले की खान में हुए विस्फोट की छानबीन करके लौट रहे थे।" सर्वेश ने बताया।

"तुमने सुबह का अखबार नहीं पढ़ा सर्वेश! सारा अखबार मेजर बलवन्त की जासूसी के अद्भुत कारनामों की प्रशंसा से भरा हुआ है।" सर्वीना बोली।

अचपला गुमसुम बैठी हुई थी। वह सोच रही थी, 'यह क्या हुआ ? और आगे चलकर क्या होगा ? पुलिस और जासूस—मुझपर संदेह न किया जाए।'

देवगुण ड्राइंगरूम में इंस्पेक्टर रामनारायण सक्सेना को फोन करने चला गया। इंस्पेक्टर सक्सेना को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कलाकार रावेल दादा की मृत्यु का बहुत दुःख हुआ। उसने जल्दी से जल्दी ग्रीन मेंशन पहुंचने का वायदा कर लिया।

इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन करने के बाद देवगुण ने डायरेक्टरी से मेजर बलवन्त का फोन-नम्बर देखकर मिलाया। कुछ पल रुककर बोला, "हैलो, मैं मेजर बलवन्त से बात करना चाहता हूं।"

"मैं बोल रहा हूं। कौन साहब हैं ?" दूसरी ओर से मेजर ने उत्तर दिया। वह शायद शेव कर रहा था।

"मेजर साहब, मैं 'फैंसी आर्ट' दुकान का मालिक हूं। इस समय बांदरा के ग्रीन मेंशन से बोल रहा हूं। कल रात प्रसिद्ध आर्टिस्ट रावेल मेरे यहां आए थे। वह बिलकुल ठीक थे। खाना खाने के बाद उन्होंने आइसक्रीम खाने की इच्छा प्रकट की। मैं अपनी पत्नी के साथ पास के स्टोर में आइसक्रीम लेने चला गया। उस समय वह बिलकुल ठीक थे और कोई पुराना गीत गा रहे थे, लेकिन जब हम आइसक्रीम लेकर लौटे तो उनकी पुतलियां घूम चुकी थीं। दिल की धड़कन बंद हो चुकी थी। हमारे आइसक्रीम लेने के लिए जाने और आइसक्रीम लेकर लौटने के बीच उनकी एक अप्रेण्टिस मिस अचपला उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आई थी, लेकिन वह उसके साथ नहीं गए थे। उनके इनकार कर देने पर अप्रेण्टिस अचपला फौरन वहां से चली गई थी।"

"आपकी अनुपस्थिति में क्या अचपला के अतिरिक्त और भी कोई आपके बंगले में आया था ?" मेजर ने पूछा।

"मैं कुछ नहीं कह सकता।" देवगुण ने उत्तर दिया।

"मिस्टर रावेल महान कलाकार थे। शराब अंधाधुन्ध पीते थे। उनका परिणाम एक न एक दिन यही होना था। क्या उन्होंने कल रात आपके यहां ज़्यादा शराब पी थी ?" मेजर ने पूछा।

"जी नहीं। कल तो उन्होंने बहुत कम पी थी। उनकी अप्रेण्टिस अचपला का कहना है कि वह परसों से कुछ डरे-डरे-से थे।"

"डरे-डरे-से थे ? क्यों ?" मेजर ने पूछा।

"अचपला का कहना है कि परसों रात उन्होंने किसीको पत्र लिखा था। मेजर साहब, मेरा विचार है कि उनकी मृत्यु स्वाभाविक मृत्यु नहीं है; लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि उनके बदन पर घाव का कोई निशान नहीं है। न चेहरे पर जहर के चिह्न है। बदन पर एक खराश तक नहीं है। देखने में तो उनकी मृत्यु का कोई कारण दिखाई नहीं देता, लेकिन उनकी मृत्यु हमारे बंगले में हुई है, इस बात से हम बहुत परेशान हैं। मैं इंस्पेक्टर सक्सेना को सूचना दे चुका हूं, लेकिन मैंने यह भी अपना कर्तव्य समझा कि आपको भी सूचना दे दूं।"

"रावेल महान कलाकार थे। मैं उनका बहुत सम्मान करता था। उनका प्रशंसक था। मैं थोड़ी देर में आपके पास पहुंच रहा हूं।" मेजर ने कहा।

कुछ मिनट के बाद इंस्पेक्टर सक्सेना बांदरा के ग्रीन मेंशन में अपने स्टाफ के साथ पहुंच गया। इंस्पेक्टर और उसके स्टाफ ने लाश का भली भांति निरीक्षण किया, लेकिन वे मृत्यु का कारण न खोज पाए।

थोड़ी देर के बाद मेजर बलवन्त भी अपने स्टाफ के साथ वहां पहुंच गया।

इंस्पेक्टर सक्सेना ने मेजर का स्वागत किया। उसके स्टाफ के सदस्य भी बहुत खुश हुए। वे धनबाद केस की सफलता पर मेजर को बधाई देने लगे।

"मैं सबसे पहले मिस्टर देवगुण और मिस अचपला के बयान सुनना चाहता हूं। इसके बाद लाश को देखूंगा।" मेजर बोला।

पहले देवगुण ने और फिर अचपला ने विस्तार से अपना-अपना बयान दोहरा दिया।

"मेरा विचार है, मिस्टर रावेल मुर्शिदाबाद के रहने वाले थे और आज से छः वर्ष पूर्व मुर्शिदाबाद छोड़कर बम्बई में आकर रहने लगे थे। मालाबार हिल पर उनका फ्लैट है।" मेजर ने कहा।

"जी हां। मैं भी मुर्शिदाबाद की ही रहने वाली हूं। मैं भी अपने गुरु के साथ ही बम्बई आ गई थी।" अचपला ने बताया।

"मिस अचपला, आपका कहना है कि आप बारह बजकर पैंतीस मिनट पर मिस्टर रावेल को अपने साथ ले जाने के लिए आई थीं और उनके जाने से इनकार कर देने पर बारह बजकर चालीस मिनट पर आप यहां से चली गई थीं। मिसेज़ मर्जीना और मिस्टर देवगुण आपके जाने के पन्द्रह मिनट के बाद आइसक्रीम लेकर लौटे थे। मिस अचपला, आपने अगर इस बंगले में या बंगले के बाहर किसीको नहीं देखा था तो आने वाला या आने वाले बारह बजकर चालीस मिनट से बारह बजकर पचपन मिनट के बीच इस बंगले में आए और फिर कोई घटना हुई।"

यह कहकर मेजर ने क्रोकोडायल की दुम हिलाई और उसे छोड़ दिया। क्रोकोडायल ने वह कमरा सूंघा। पहले वह मिसेज़ मर्जीना, देवगुण और अचपला के पास थोड़ी-थोड़ी देर रुका और फिर न जाने क्यों उस सोफे को सूंघने लगा, जिसपर रावेल कुछ देर बैठे थे। वह सोफे को सूंघकर बंगले से बाहर निकल गया। डोरा और मालती उसके पीछे-पीछे चली गईं। क्रोकोडायल बंगले के बाहर एक पेड़ के पास पहुंचकर रुक गया। डोरा और मालती ने पेड़ के पास कार के पहियों के निशान देखे। कार पीछे मुड़कर सीधी हुई थी और जिस जगह कार सीधी होकर चली थी, वहां च्विइंग-गम की दो-चार चूसी हुई टिकियां पड़ी थीं।

क्रोकोडायल वहां से आगे नहीं बढ़ा।

डोरा और मालती क्रोकोडायल को लेकर वापस आ गईं।

डोरा ने कहा, "ऐसा मालूम होता है कि कोई कार में आया और तत्काल वापस चला गया। मेरा विचार है कि वह कोई औरत थी। कार में उसका कोई साथी भी हो सकता है।"

"अगर मिस अचपला के जाने के बाद कोई आया तो यहां वह दस-बारह मिनट से अधिक नहीं रहा। उसके आने से संदेह होता है कि वह निरुद्देश्य नहीं आया था। खैर, अब मैं मिस्टर रावेल की लाश देखना चाहूंगा।" मेजर ने कहा।

देवगुण मेजर को पिछले कमरे में ले गया। मेजर पांच मिनट तक लाश का निरीक्षण करता रहा। उसे लगा कि रावेल की मृत्यु स्वाभाविक मृत्यु थी। फिर उसने लाश पर से कुछ कपड़े उतार दिए। वह रावेल की बाईं बांह की ओर देखने लगा। बांह जहां से कुहनी मुड़ती है, वहां एक नस फूली हुई दिखाई दी। वह नस नीली पड़ी हुई थी। मेजर झुककर उसे देखने लगा। फिर उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"मिस्टर रावेल की मृत्यु स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी। इनकी एक बहुत ही विचित्र ढंग से हत्या की गई। यह वह तरीका है, जिसमें हत्यारे को छुरी, खंजर, गोली, दम घोंटने, गला घोंटने और जहर देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।" मेजर बोला।

"ऐसा कौन-सा तरीका है ?" इंस्पेक्टर सक्सेना ने पूछा।

"नस के अन्दर इंजेक्शन लगाना बहुत ही खतरनाक हुआ करता है। नस में इंजेक्शन लगाते समय एक कुशल डॉक्टर ही रोगी के प्राणों को सुरक्षित रख पाता है, वरना रोगी की मृत्यु हो जाती है। अगर खाली सिरिंज में आप पानी का सिर्फ एक बुल-बुला डाल दें और सिरिंज के द्वारा पानी के उस बुलबुले को आदमी की नस में प्रविष्ट कर दें तो उस आदमी की आंख झप-कते ही मृत्यु हो सकती है। हत्यारे ने यही तरीका अपनाया।"

सब लोग भौचक्के रह गए।

"अच्छा, तो यह हत्या का केस है ?" इंस्पेक्टर सक्सेना ने कहा।

"जी हां।" मेजर ने कहा, "मिस्टर रावेल के कपड़ों की तलाशी लीजिए।"

इंस्पेक्टर सक्सेना ने अपने दो सार्जेण्टों को तलाशी लेने का आदेश दिया। रावेल की जेब में से व्हिस्की का एक खाली पौवा, दो सौ चौंतीस रुपये, पैंतालीस पैसे और फ्लैट की चाबी निकली। इनके अतिरिक्त उनकी जेबों में और कुछ नहीं था। उनके पर्स में कोई फोटो तक न था। कलाई पर एक चौड़े डायल की घड़ी थी। घड़ी खोल ली गई। एक सार्जेण्ट ने घड़ी का डायल खोल-

कर देखा। घड़ी के केस के निचले हिस्से में बड़े डाक टिकट साइज का एक फोटो चिपका हुआ था। वह फोटो किसी लड़की का था।

मेजर ने घड़ी का केस ले लिया और फोटो को देखने लगा, लेकिन वह उसे पहचान नहीं पाया।

सहसा सर्वीना ने उसके हाथ से घड़ी ले ली और उस लड़की के फोटो को देखकर बोली, "सोजीन।"

"हां, रावेलजी सोज़ीन का फोटो अपनी घड़ी के केस में लगाए रहते थे।" अंचपला ने कहा।

"सोज़ीन! कौन सोज़ीन?" मेजर ने आश्चर्य से पूछा।

"सोज़ीन रावेलजी की दत्तक पुत्री थी। वह अनाथ थी। रावेलजी को उसमें एक महान आर्टिस्ट बनने के गुण दिखाई दिए थे। उन्होंने ही उसका पालन-पोषण किया था और उसे अपनी बेटी से बढ़कर प्यार करते थे। बचपन से ही उन्होंने उसे आर्ट की शिक्षा दी थी, लेकिन आर्ट में सोज़ीन का मन नहीं लगता था। वह बहुत सुन्दर थी। थोड़ा-सा परिश्रम करके सुखी जीवन व्यतीत करना चाहती थी।" अंचपला ने बताया।

"खूब!" मेजर बोला।

"आज से छः वर्ष पहले रावेलजी एक संकट में फंस गए थे।"

"कैसे संकट में?" मेजर ने पूछा।

"एक मॉडल लड़की अंगदा से उनके शारीरिक सम्बन्ध हो गए थे। वह गर्भवती हो गई। वह बहुत ही खुर्राट थी। उसने गर्भवती होना अपने लिए वरदान समझा और गर्भपात नहीं कराया। रावेलजी ने उसके आगे विवाह का प्रस्ताव रखा, लेकिन वह विवाह करने के लिए तैयार नहीं हुई। उसने कहा कि वह विवाह नहीं करेगी, बल्कि रावेलजी के बच्चे को पालेगी और रावेलजी उसे दो हज़ार रुपये माहवार दिया करेंगे। रावेलजी आर्टिस्ट थे। उन्होंने अंगदा की शर्त मान ली, लेकिन अंगदा की मांगें दिन पर दिन बढ़ती चली गईं। उन्हीं दिनों मुंगेर के किले से एक प्रस्ताव आया कि यदि सोज़ीन विवाहित जीवन व्यतीत करे और

मुंगेर के किले में रहने को तैयार हो तो उसे पांच लाख रुपये दिए जा सकते है। सोज़ीन रावेलजी को अपने पिता के समान समझती थी। वह उन्हें इस संकट से मुक्ति दिलाना चाहती थी। अंगदा ने कहा था कि अगर उसे एकसाथ तीन लाख रुपये दे दिए जाएं तो वह फिर कभी कुछ नहीं मांगेगी। सोज़ीन ने रावेलजी को बताए बिना किले का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और पांच लाख रुपये लाकर अपने पिता रावेलजी को दे दिए। रावेलजी वास्तविक अर्थों में कलाकार थे। उनकी आत्मा इस प्रकार की सहायता को स्वीकार नहीं कर सकती थी। वह बहुत नाराज़ हुए और बोले, 'सोज़ीन, यह रुपया तुम कहां से लाई हो?' सोज़ीन अपने पिता के स्वभाव से परिचित थी। उसने कहा, 'मैंने अपने विवाह के लिए अपने-आपको पांच लाख रुपयों में बेच दिया है। जिससे मैंने विवाह किया है, वह मुझे पसन्द है।' रावेलजी ने पूछा, 'तुमने किससे विवाह किया है?' सोज़ीन ने उत्तर दिया, 'मुंगेर के किले के तीन जागीरदारों में से एक के बेटे के साथ दादा! मुझे अपनी मनपसंद जिन्दगी मिल गई है। मैं जो रुपया लाई हूं, नाजायज नहीं है।' रावेलजी विवश हो गए। तीन लाख रुपयों से उन्होंने अपना संकट टाल दिया और दो लाख रुपये लेकर मेरे साथ बम्बई में स्टुडियो खोलने के लिए चले आए।"

"क्यूबिज़्म के अद्वितीय कलाकार को अपना नियम भंग करना पड़ा। कभी-कभी इंसान कितना विवश हो जाता है!" मेजर ने कहा।

"दादा ने सोज़ीन का विरोध करते हुए कहा था कि उसे उस किले में नहीं जाना चाहिए था और यह रकम ठुकरा देनी चाहिए थी। सोज़ीन का मुंगेर के किले में जाकर रहना रावेलजी को बिलकुल पसंद नहीं था। वह उसे वहां से लाने का उपाय सोचते रहते थे।"

"सोज़ीन किले में मेरे साथ थी। सर्वेश ने मुझे किले से मुक्त किया तो सोज़ीन को भी वहां से फरार होने का मौका मिल गया, लेकिन मुर्शिदाबाद में हमारे होटल 'सरताज' के आगे उसे गोली

मार दी गई।" सर्वीना ने बताया।

"सोज़ीन को गोली मार दी गई ?" अचपला के मुंह से निकला।

सर्वेश ने कहा, "सोज़ीन हमें खोजती हुई हमारे होटल में आ रही थी। गोली खाने के बाद वह कुछ मिनट ही जिन्दा रह पाई थी। जब हमने उससे यह पूछा कि किसने उसे गोली मारी थी तो वह बोली कि वह गोली मारने वाले व्यक्ति को तो नहीं जानती, लेकिन उस व्यक्ति को जानती है, जिसके कहने पर उसे गोली मारी गई है। लेकिन वह वास्तविक हत्यारे का नाम हमें नहीं बता सकी। नाम बताने से पहले ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। यह केस बम्बई का नहीं है। हालांकि रावेल दादा की हत्या बम्बई में की गई है। यह केस मुर्शिदाबाद और मुंगेर के किले से सम्बन्धित है।"

"हां, इस केस को हल करने के लिए मुर्शिदाबाद और मुंगेर जाना पड़ेगा।" मेजर ने कहा।

"आप कब चल सकेंगे ?" सर्वेश ने पूछा।

"कल।"

"हम आपके साथ चलेंगे।" सर्वेश और सर्वीना ने कहा, "हम वहां आपके गाइड के रूप में काम करेंगे।"

"मैं भी चलूंगी। शायद वहां मैं आपके किसी काम आ सकूं।" अचपला ने कहा।

"हम सब चलेंगे।" मेजर ने कहा और अपने साथियों के साथ वहां से चल पड़ा।

इंस्पेक्टर सक्सेना को अभी आवश्यक कार्रवाई पूरी करनी थी, सो वह वहीं रुक गया।

शाम के अखबार में क्यूबिज़्म के विख्यात कलाकार रावेल और उनकी पुत्री सोज़ीन की हत्या का समाचार प्रकाशित हुआ।

मेजर अपने साथियों के साथ इस विचित्र ढंग के केस पर विचार-विनिमय कर रहा था। अचानक साइकल पर एक लड़का

आया। उसके हाथ में एक पत्र था। वह सलाम करके दरवाज़े में खड़ा हो गया।

"कहो!" मेजर ने कहा।

"मैं मेजर बलवन्त के लिए एक पत्र लाया हूं।" लड़का बोला।

"आ जाओ। पत्र दे जाओ।" मेजर ने उसे अंदर आने का इशारा करते हुए कहा।

उस लड़के ने अंदर आकर पत्र मेजर के सामने मेज पर रख दिया। वह सादा लिफाफा था, जिसपर मेजर बलवन्त का केवल नाम लिखा हुआ था।

लड़का पत्र देकर जाने लगा तो मेजर ने उससे कहा, "ज़रा रुको।"

लड़का रुक गया।

मेजर ने बड़ी सावधानी से लिफाफा खोलकर पत्र निकाला। वह पत्र श्रीधर गायकवाड़ नाम के किसी व्यक्ति ने लिखा था, जो मेजर के लिए सर्वथा अपरिचित था। उस पत्र में न तो उसने अपना पता ही लिखा था और न तारीख ही लिखी थी:

'मेजर साहब! मैं आर्टिस्ट रावेल का मित्र श्रीधर गायकवाड़ हूं। आज सुबह मुझे रावेल का एक लम्बा पत्र मिला है। पत्र पढ़कर कलेजा दहल उठता है। रावेल ने उस पत्र में कुछ बातों पर प्रकाश डाला है, जिनसे बहुत-से आदमियों की चालबाज़ियों और बड़े पैमाने पर षड्यंत्रों का पता चलता है। रावेल ने अपने पत्र में उन लोगों के नाम नहीं लिए हैं, लेकिन एक नाम लिया है, पर मैं इस पत्र में लिख नहीं सकता। रावेल ने मुझे हिदायत की है कि मैं इस पत्र को तब प्रकाश में लाऊं, जब इन सभी आदमियों के सम्बन्ध में स्वयं अच्छी तरह छानबीन न कर लूं। रावेल ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि एक आदमी की हत्या कर दी गई है। रावेल ने उस आदमी के हत्यारे का नाम और पता लिखा है, पर साथ ही हिदायत की है कि बिना प्रमाण के कोई

१०१९

कदम न उठाया जाए। मेजर साहब, मैं जासूस नहीं हूं। रावेल मुझे जासूसी का काम सौंप गया है। मैं यह केस आपको सौंपता हूं। रावेल ने मुझे यह भी हिदायत की है कि मैं स्वयं जाकर किसी पुलिस अफसर या किसी जासूस से सम्पर्क स्थापित न करूं। क्या आप शाम के पांच बजे मुझे कालिंगटन होटल के रिसेप्शन रूम में मिल सकते हैं? मेरे कोट के बटनहोल में गुलाब का फूल लगा होगा। आप अपने हाथ में बम्बई क्रानिकल अखबार लाइएगा।

—श्रीधर गायकवाड़'

मेजर ने पत्र पढ़कर सुनाया तो मालती बोल उठी, "यह कोई चाल न हो।"

"चाल है तो हुआ करे! यह भी तो हो सकता है कि हमें कोई महत्त्वपूर्ण रहस्य मिल जाए। हम सब चलेंगे और एक-दूसरे की निगरानी करेंगे। हमें शाम पांच बजे कालिंगटन होटल में ज़रूर पहुंचना चाहिए। देखते हैं कि गायकवाड़ किस सीमा तक सच बोल रहा है। इस समय चार बजे हैं। हम साढ़े चार बजे यहां से चलेंगे। पूरी तरह लैस होकर।" मेजर ने कहा।

४. कालिंगटन होटल

ठीक साढ़े चार बजे मेजर और उसके साथी सुनील और मेजर की कारों में सवार होकर कालिंगटन होटल की ओर चल पड़े।

पौने पांच बजे थे और वे कालिंगटन होटल से दो किलोमीटर दूर रह गए थे।

जब वे कालिंगटन होटल से एक किलोमीटर दूर थे तो मेजर को अपनी कार की ओर एक चमकती हुई चीज सरसराती हुई आती दिखाई दी और अचानक उसकी कार के अगले दोनों टायर फट गए। ज़बर्दस्त धमाका हुआ। कार रुक गई और उलटते-उलटते बची। यही दुर्घटना सुनील की कार के साथ भी हुई, लेकिन

सौभाग्य से किसीके चोट नहीं आई।

मेजर और उसके साथियों ने दूर-दूर तक देखा, लेकिन आक्रमणकारी कहीं दिखाई न दिया।

एक बात स्पष्ट थी कि आक्रमणकारी दो थे और दोनों के पास साइलेंसर-चढ़ी राइफलें थीं। उन दोनों ने मेजर और उसके साथियों को कार्लिंगटन होटल तक पहुंचने से रोकने की कोशिश की थी।

मेजर ने कहा, "अगर हमें रोका गया है तो बहुत सम्भव है कि गायकवाड़ पर भी कोई आफत आई हो या आने वाली हो। मैं और मालती टैक्सी लेकर होटल पहुंचते हैं।"

मालती ने पूछा, "मगर गोली किधर से आई ?"

"मेरे खयाल में किसी बिल्डिंग की छत से ओट में होकर गोलियां चलाई गईं। गायकवाड़ ने जिस लड़के को पत्र देकर भेजा था, शायद उसे पहचानकर रास्ते में रोक लिया गया हो और उससे पूछ-ताछ की गई हो कि वह वह पत्र किसे देकर आया है।" मेजर बोला।

तभी डोरा ने एक टैक्सी रुकवा ली। मेजर और मालती टैक्सी में जा बैठे। मेजर ने अपने अन्य साथियों से कहा कि वे दूसरी टैक्सी में बैठकर आ जाएं।

जब मेजर की टैक्सी कार्लिंगटन होटल के सदर दरवाज़े पर रुकी तो उसने देखा कि एक टेढ़ी टांगों वाला आदमी होटल के सदर दरवाज़े की ओर बढ़ रहा था। उसके सीने की ओर कूबड़ निकला हुआ था। उसका एक हाथ पतलून की जेब में था। उसके बदन पर ढीले-ढाले कपड़े थे।

"मेजर साहब, क्या यह वह आदमी नहीं है, जिसने मुर्शिदाबाद में सर्वेश और सबीना के होटल 'सरताज' के सामने सोज़ीन को गोली से उड़ा दिया था ?" मालती ने पूछा।

"तुमने खूब पहचाना मालती ! दाल में कुछ काला है। कहीं यह गायकवाड़ की प्रतीक्षा न कर रहा हो। दुर्भाग्य से अगर गायकवाड़ हमें देखने होटल के सदर दरवाज़ पर आ गया तो यह

आव देखेगा न ताव, उसे गोली मारकर फरार होने की कोशिश करेगा।" मेजर बोला।

"हमारे होते हुए ऐसा नहीं होगा। यह गायकवाड़ को कैसे गोली मार सकेगा?" मालती ने कहा और उसने अपना पर्स खोल लिया।

संयोग से उसी समय कोट के बटनहोल में गुलाब लगाए गायकवाड़ हॉल में से रिसेप्शन रूम में आ रहा था।

"मेजर साहब, उस टेढ़े-मेढ़े आदमी ने जेब में से रिवॉल्वर निकाल लिया है।" यह कहते हुए मालती ने उसके रिवॉल्वर वाले हाथ पर गोली चला दी। वह आदमी एक पल चीखा और उसके हाथ से रिवॉल्वर छूटकर फर्श पर जा गिरा, लेकिन वह बहुत ही साहसी था। उसने जल्दी से अपना बायां हाथ अपनी पतलून की बाईं जेब में डाल लिया। उसके बायें हाथ में रिवॉल्वर था। मेजर ने उसके बायें हाथ का निशाना बांधकर गोली चला दी। मेजर के साथ-साथ मालती भी गोली चला चुकी थी। मेजर की गोली तो उस टेढ़े-मेढ़े आदमी के हाथ में लगी, लेकिन मालती की गोली उसकी पीठ में लगी और वह आदमी चारों खाने चित्त गिर पड़ा।

"मालती, तुम्हें गोली नहीं चलानी चाहिए थी।" मेजर ने अप्रसन्न होकर कहा।

"मेजर साहब, कभी-कभी निशाना चूक भी जाता है। एक से दो भले होते हैं। मैंने भी गोली चला दी।"

कार्लिगटन होटल के बाहर लोगों की भीड़ लग गई। पुलिस वाले भी दौड़ पड़े।

गायकवाड़ इस तरह खड़ा था, जैसे उसके बदन का लहू सूख गया हो। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हुआ।

मेजर ने आगे बढ़कर मालती से कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि इस केस का सम्बन्ध मुर्शिदाबाद और मुंगेर से है, लेकिन इसका कुछ हिस्सा यहां भी मौजूद है। गायकवाड़ से मिलने पर

ही वास्तविक रहस्य मालूम होगा।"

"इस आदमी और इस औरत ने गोली मारकर इस आदमी की हत्या की है।" बहुत-से लोग मालती और मेजर की ओर इशारा करके कहने लगे।

एक सार्जेण्ट गुस्से से भरकर आगे बढ़ा, लेकिन मेजर को देखते ही एड़ियां जोड़कर सलाम करके बोला, "मेजर साहब, यह क्या हुआ ?"

"सार्जेण्ट, यह आदमी जो खून में लथपथ पड़ा है, मिस्टर गायकवाड़ की हत्या करने आया था। हमें रास्ते में रोकने की कोशिश की गई, ताकि हम निश्चित समय पर मिस्टर गायकवाड़ से मिलने न पाएं और ये लोग उन्हें मार डालें। यह मुर्दा आदमी पहले भी एक औरत की हत्या कर चुका है।" मेजर बोला।

"ओह !"

सार्जेण्ट ने मेजर को बड़े अफसर की तरह सैल्यूट दिया तो लोगों को बहुत हैरानी हुई। गायकवाड़ ने मेजर को देखा तो वह दौड़कर मेजर के पास आ गया। उसने हांफते हुए कहा, "अगर दो मिनट की देर हो जाती तो मैं गोलियों से छलनी बना पड़ा होता। मामला मेरे अनुमान से अधिक गम्भीर है। हमें विलम्ब नहीं करना चाहिए।"

मेजर ने सार्जेण्ट से कहा, "सार्जेण्ट, मृत आदमी के दोनों रिवॉल्वर संभाल लो और इंस्पेक्टर सक्सेना को मेरी ओर से फोन कर दो। लाश कोई छेड़ने न पाए। मुझे मिस्टर गायकवाड़ से ज़रूरी काम है।"

"बहुत अच्छा हुज़ूर, मैं इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन किए देता हूं।"

गायकवाड़ ने मेजर से कहा, "मैं कुछ बातें आपको रास्ते में वता दूंगा। अब विलम्ब करने से कोई लाभ नहीं। मैं रावेल के पत्र के अनुसार आपको उस आदमी के पास लिए चलता हूं, जिसके बारे में रावेल ने अपने पत्र में लिखा है कि वह एक आदमी का हत्यारा है। रावेल ने मृतक का नाम कोडवर्ड में लिखा है, लेकिन

हत्यारे का नाम और पता साफ लिखा है। रावेल ने लिखा है कि मृतक उसका गहरा मित्र था और उसके पास रावेल की श्रेष्ठ पेंटिंग्स का एक संग्रह था। उसकी पेंटिंग्स के संग्रह का क्या हुआ, मालूम नहीं; लेकिन रावेल को विश्वास था कि वह उस संग्रह को किसी सुरक्षित स्थान में रख गया होगा। ये बदमाश और चालबाज़ उस संग्रह को प्राप्त करने के लिए पूरा ज़ोर लगाएंगे। आइए, मैं आपको ले चलूं। मेरी अपनी कार है।"

मेजर के बाकी साथी भी वहां आ गए थे। मेजर ने उनकी टैक्सी रोकी हुई थी।

"वह आदमी कहां रहता है ?" मेजर ने पूछा।

"वह माउण्ट रोड पर टैंक चौक के पीछे आकाश मेंशन में रहता है। उसका नाम अरविन्द दीक्षित है।" गायकवाड़ ने बताया।

"आइए, चलें।" मेजर ने कहा।

गायकवाड़ लॉन में से अपनी कार ले आया। मेजर के साथ मालती और सुधीर उस कार में बैठ गए। सुनील, डोरा और सोनिया टैक्सी में जा बैठे।

वे माउण्ट रोड की ओर चल पड़े।

उस समय शाम के छः बजे थे। माउण्ट रोड पर पहुंचकर उन्होंने कार और टैक्सी रुकवा दीं। वे टैंक चौक के पीछे आकाश मेंशन को ढूंढ़ने लगे। थोड़ी देर में उन्हें आकाश मेंशन मिल गया। वहां खामोशी छाई हुई थी। केवल पहले कमरे की बत्ती जल रही थी।

"क्या मिस्टर अरविन्द दीक्षित का परिवार नहीं है ? बंगले में से किसी तरह की भी आवाज़ नहीं आ रही है।" मेजर ने कहा।

"शायद घर के लोग अपने कामों में व्यस्त हैं।" गायकवाड़ ने कहा।

वे बरामदे में पहुंच गए। दरवाज़ा बन्द था। गायकवाड़ ने दरवाज़े में लगी घण्टी बजा दी।

अंदर से किसीकी आवाज़ न आई।

"अरविन्दजी !" गायकवाड़ ने पुकारा।

फिर भी कोई उत्तर न मिला।

मेजर को एक खयाल आया। उसने दरवाज़े पर जाकर हाथ रख दिया। उसे दरवाज़ा भिड़ा हुआ दिखाई दिया। वह अंदर से बंद नहीं था।

मेजर ने दरवाज़ा खोल दिया। सब लोग अंदर चले गए। पहला कमरा ड्राइंगरूम था। जसे ही उन्होंने ड्राइंगरूम में कदम रखा, उनकी आंखें मिची की मिची रह गईं।

अरविन्द दीक्षित गलीचे पर चित पड़ा था। वह नहीं, उसकी लाश पड़ी हुई थी। लाश इतनी भोंड़ी और बदशक्ल थी कि देखने पर घिन आ रही थी। आज तक किसी हत्यारे ने अपने शिकार की इतनी बुरी तरह हत्या नहीं की थी। यह एक वर्बरतापूर्ण कार्य था। अरविन्द दीक्षित ने मरने से पहले असह्य पीड़ा झेली थी।

अरविन्द की हत्या छुरी, खंजर या पिस्तौल से नहीं की गई थी, बल्कि उसे बड़ी बेरहमी से पीटा गया था। नाक तो बिलकुल मलीदा बना दी गई थी। आंखें सुजाकर काली कर दी गई थीं। अगले सारे दांत तोड़ दिए गए थे। कनपटियों पर गूमड़ पड़े हुए थे। गाल सूजकर नीले पड़ गए थे। खून केवल कनपटियों और दांतों से बह रहा था।

"मेरे अनुमान से इस हत्या को पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं हुए हैं। यहां कौन आया था? घर के लोग कहां थे? क्या कोई नौकर भी नहीं था?" मेजर बोला।

"वास्तव में यह हत्या अपने ढंग की अनोखी है।" गायकवाड़ ने कहा।

"इस प्रकार की हत्या से एक परिणाम निकलता है। हत्यारे अरविन्द दीक्षित से कोई रहस्य उगलवाना चाहते थे, इसलिए वे इसे मारते-पीटते रहे। उनका विचार था कि मारने-पीटने और इतनी यंत्रणा देने पर यह मुंह खोल देगा। मेरा अनुमान है, शायद वे लोग अरविन्द दीक्षित से पूछते रहे कि रावेल की पेंटिंग्स का संग्रह कहां है और यह इनकार करता रहा। मिस्टर गायकवाड़, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मारने-पीटने वालों को अपनी

ताकत का अंदाज़ा नहीं होता। वे समझते हैं कि उनकी चोट हलकी पड़ रही है, जबकि कोई चोट घातक सिद्ध हो जाती है।"

गायकवाड़ हैरान रह गया।

"मिस्टर गायकवाड़, हत्यारे अपनी भूल पर पछता रहे होंगे। वे अरविन्द दीक्षित की जान नहीं लेना चाहते थे, क्योंकि यही एक ऐसा आदमी था, जो उन्हें रावेल की सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग्स तक ले जा सकता था।" मेजर ने कहा।

"जी हां।" गायकवाड़ बोला, "हमारा यहां आना बेकार ही हुआ। अब अरविन्द है ही नहीं, जो आपकी उससे बातचीत कराई जाए।"

"मिस्टर गायकवाड़, आप मुझे वह पत्र दे दीजिए, जो रावेल ने आपको लिखा था और जिसमें उसने मृतक का नाम कोडवर्ड में लिखा है।" मेजर ने कहा।

गायकवाड़ ने जेब में से पत्र निकालकर मेजर को दे दिया।

मेजर ने अपने साथियों से कहा कि वे बंगले में जाकर देखें कि कोई है तो नहीं और बंगले की तलाशी तो नहीं ली गई है।

मेजर के साथी बंगले के अंदर चले गए।

वे दस मिनट बाद लौट आए।

"बंगले की तलाशी नहीं ली गई है। किचन में चाय का पानी खौल रहा है, लेकिन बंगले में कोई नहीं है।" डोरा बोली।

तभी बरामदे में कदमों की आहट सुनाई दी। सोनिया दौड़कर दरवाज़े पर पहुंच गई। उसने देखा, एक नौकर प्लास्टिक की टोकरी में बीयर की छः बोतलें लिए आ रहा था। उसके दूसरे हाथ में टिफिन कैरियर था।

सोनिया को देखकर नौकर बोला, "ओह, मालिक के और मेहमान आ गए! मुझे फिर जाना पड़ेगा।"

"तुम्हारे मालिक के मेहमान जा चुके हैं। हम तुम्हारे मालिक के मेहमान नहीं हैं। तुम्हारे मालिक के पास कितने मेहमान आए थे?" सोनिया ने पूछा।

"दो।"

"वे कौन थे ?"

"एक औरत और एक मर्द था। वे अकसर यहां आते रहते थे।" नौकर ने उत्तर दिया।

"मालिक का परिवार कहां है ?"

"मालकिन अपने दो बच्चों और दो नौकरों के साथ इलाहाबाद में त्रिवेणी-स्नान करने गई हुई हैं। चार दिन हो चुके हैं। बस, मैं ही मालिक के पास हूं।" यह कहकर नौकर ने टिफिन कैरियर और बीयर की बोतलों से भरी हुई टोकरी उठाई और ड्राइंगरूम की ओर बढ़ गया।

ड्राइंगरूम में क़दम रखते ही उसके हाथ से टोकरी और टिफिन कैरियर छूटकर गिर गए। वह चित पड़े अपने मालिक की भोंड़ी सूरत देखकर भय से कांपने लगा।

फिर उसकी नज़र गायकवाड़ पर पड़ी। वह हकलाते हुए बोला, "गायकवाड़जी···मालिक की हत्या किसने की ? मेरे विचार से उस औरत और उसके साथी ने। वे मालिक से झगड़ रहे थे। कह रहे थे—'जब हम तुम्हें बराबर का हिस्सा देंगे तो तुम इनकार क्यों कर रहे हो ! अपना दिमाग खराब मत करो। हमारी बात मान लो।'"

"वह औरत और उसका साथी किस चीज़ में तुम्हारे मालिक को बराबर का हिस्सा दे रहे थे ?" मेजर ने पूछा।

"यह मुझे मालूम नहीं। फिर वे मालिक को धमकी देने लगे कि हिस्सा भी नहीं मिलेगा और जान से हाथ भी धो बैठोगे। मालिक ने कुछ सोचकर कहा, 'अच्छा, पहले बीयर पियो और कबाब खाओ। फिर सोचूंगा।' मालिक ने मुझे बीयर और कबाब लाने के लिए भेज दिया। मेरा विचार है कि मेरे जाने के बाद झगड़ा बढ़ गया।" नौकर ने कहा।

"उस औरत का हुलिया क्या है ?" मेजर ने पूछा।

"इकतीस-बत्तीस बरस की उम्र होगी, लेकिन बहुत नटखट है। अंग्रेज़ औरतों जैसा मेकअप करती है। वह आदमी हमेशा उसके साथ होता है। वह बहुत ही ताकतवर है। लगता है, जैसे

किसी सर्कस में काम करता रहा हो।"

मेजर ने दोनों के हुलिये नोट कर लिए और फोन की मेज़ की ओर बढ़ गया। उसने कालिंगटन होटल का नम्बर मिलाया और एक मिनट बाद बोला, "हैलो !"

"गुड मॉर्निंग सर ! कालिंगटन होटल रिसेप्शन रूम—मिस डाली स्पीकिंग।" दूसरी ओर से आवाज़ आई।

"मिस डाली, मेजर दिस एण्ड।" मेजर ने कहा, "मेरा खयाल है कि इन्स्पेक्टर सक्सेना अभी कालिंगटन होटल में ही अपनी कार्रवाई पूरी करने में व्यस्त होंगे।"

"जी हां। वह अभी तक यहीं हैं।"

"कष्ट न हो तो उनको फोन पर बुला दीजिए।"

"अभी लीजिए।"

तीन मिनट के बाद फोन पर इंस्पेक्टर सक्सेना की आवाज़ आई, "मेजर साहब, क्या कुछ और हुआ ?"

"जी हां। माउण्ट रोड पर टैंक चौक के पीछे आकाश मेंशन में सेठ अरविन्द दीक्षित को मार-मारकर जान से मार डाला गया है। अरविन्द दीक्षित के सम्बन्ध में कलाकार रावेल ने अपने मित्र मिस्टर गायकवाड़ को अपने पत्र में लिखा था कि अरविन्द दीक्षित ने एक आदमी की हत्या की है। रावेल ने उस आदमी का नाम और पता पत्र में नहीं लिखा, जिसकी हत्या हुई थी। यह विचित्र-सा मामला है। पहले हमें गायकवाड़ के पास जाने से रोका गया और फिर अरविन्द दीक्षित को मार डाला गया। अरविन्द दीक्षित से एक यूरोपियन ढंग की औरत अपने साथी के साथ मिलने के लिए आती रहती थी। उस औरत के शक्तिशाली साथी ने ही अरविन्द दीक्षित को पीट-पीटकर मार डाला है। वे शायद अरविन्द दीक्षित से कोई रहस्य उगलवाना चाहते थे। आप वहां की कार्रवाई पूरी करके यहां आ जाइए।"

"मैं बहुत जल्द आ रहा हूं। यह केस तो जटिल घटनाओं का जाल बनता जा रहा है।"

मेजर ने डोरा से कहा, "डोरा, सुधीर के साथ जाकर क्रोको-

डायल को ले आओ। तब तक मैं रावेल का लिखा पत्र पढ़ता हूं। मेरा विचार है, इस पत्र से इस केस पर कुछ न कुछ प्रकाश अवश्य पड़ेगा।"

सुधीर और डोरा क्रोकोडायल को लाने चले गए।

मेजर ने गायकवाड़ का दिया हुआ पत्र चुपचाप पढ़ा और फिर उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

५. गाल पर पांच उंगलियां

"आप सीटी बजा रहे हैं! हमें भी तो यह पत्र पढ़कर सुनाइए।" सोनिया बोली।

मेजर मुस्कराकर सोनिया की ओर देखने लगा, जो उसकी सीटी सुनकर सबसे पहले चौंकी थी।

"यूं तो यह पत्र अरविन्द दीक्षित के नाम है, लेकिन भेजा गया है मिस्टर गायकवाड़ को। लो, तुम भी सुन लो।" मेजर ने कहा और पत्र पढ़ने लगा :

"प्रिय अरविन्द दीक्षित!

हमारी-तुम्हारी मित्रता की कहानी बहुत लम्बी है, निःस्वार्थ भी, जो इस युग में देखने में नहीं आती। तुम मेरे छः साल के बेटे की जान बचाने के लिए हत्यारे बने। यह ठीक है कि हत्यारे तुम नहीं थे, लेकिन किसीसे किसीकी हत्या कराने वाला भी तो हत्यारा ही होता है। मैं जानता हूं कि तुम्हारा अन्तःकरण तुम्हें हत्यारा कहता रहा, लेकिन मेरे मित्र, तुमने अन्तःकरण की आवाज़ का भी गला घोंट दिया। कौन जान जोखिम में डालता है? कौन सांप के मुंह में उंगली देता है? लेकिन तुमने ऐसा किया। तुमने दुनिया की नज़रों में मेरे बेटे की हत्या कराकर उसे साफ बचा लिया। छः वर्ष से निरन्तर बीमार रहने वाला बच्चा तुम न जाने कहां से ढूंढ़ लाए, जिसके मां-बाप उसे स्वयं दो बार कुएं और जंगल में फेंक आए थे। तुमने उस बीमार बच्चे को मेरे बच्चे का रूप

देकर मार डाला। उसे रोग से मुक्ति दिला दी और मेरे बेटे को ज़ालिमों और मक्कारों के हाथों से मरने से बचा लिया। तुमने उस बीमार बच्चे के, जिसे तुमने मेरे बेटे का रूप दिया था, फोटो अखबारों में प्रकाशित कराए। मैंने भी अपने बेटे की हत्या पर पुलिस को बयान दिया, जिससे उन स्मगलरों का कलेजा ठण्डा हो गया। वे मेरे बच्चे को भूल गए। आज मेरा बच्चा २४ वर्ष का हो चुका है। मैं अपने बच्चे को मृत नहीं लिख सकता, इसलिए उसका नाम कोडवर्ड में लिख रहा हूं—शेवर्स। अगर तुम अपने दिमाग पर ज़रा-सा ज़ोर दोगे तो वास्तविक नाम जान लोगे।"

"अरविन्द दीक्षित के नाम रावेल का यह पत्र मैंने भी पढ़ा है, लेकिन मैं कोडवर्ड से असली नाम नहीं जान सका।" गायकवाड़ ने कहा।

"यह कोडवर्ड अधिक पेचीदा नहीं है। अगर आप इसे उलटा करके पढ़ें तो शेवर्स से असली नाम सर्वेश बन जाता है।"

"सर्वेश! आर्टिस्ट रावेल का बेटा है, जो सर्वीना को मुंगेर के किले से निकालकर लाया है?" मालती के मुंह से निकला।

"हां।" मेजर ने कहा।

इस रहस्योद्घाटन पर सभी भौचक्के-से रह गए थे।

"खैर, आप पत्र आगे सुनिए। आर्टिस्ट रावेल लिखते हैं: 'क्योंकि मैं अपने जीवित बेटे शेवर्स को मृत घोषित कर चुका था, इसलिए उसे अपने पास नहीं रख सकता था। मैंने उसे कॉन्वेण्ट स्कूल में भर्ती करा दिया। मैंने उसके पिता के स्थान पर अपना नाम नहीं लिखवाया। शेवर्स बहुत ही कुशाग्रबुद्धि छात्र था। खिलाड़ी और निशानेबाज़ भी, लेकिन वह न जान सका कि मैं उसका पिता हूं। यह ट्रेजडी क्यों हुई! जिस दिन शेवर्स का जन्म हुआ था, उसी दिन अस्पताल के उस वार्ड में दो औरतें थीं। मेरी पत्नी ने शेवर्स को जन्म दिया और दूसरी स्त्री ने एक मृत शिशु को। वह बड़ी चाण्डाल औरत थी। उसने शोर मचा दिया कि मेरी पत्नी

ने अपना मृत शिशु उसकी गोद में डालकर उसका बच्चा स्वयं उठा लिया है। डॉक्टरों और नर्सों ने उस चुड़ैल औरत और उसके रिश्तेदारों को बहुत समझाया, लेकिन उन्होंने हंगामा कर दिया। डॉक्टर बहुत ही न्यायप्रिय था। वह सही को गलत कैसे कर सकता था! उसने पुलिस बुलाकर हंगामा मचाने वालों को तितर-बितर करा दिया। हम बच्चे को घर ले आए। लेकिन वे बहुत ही क्रूर और पत्थरदिल लोग थे। उन्होंने शेवर्स का अपहरण करने की बहुत कोशिशें कीं। उसे मार डालने की धमकियां दीं। उन्होंने हमारा पीछा न छोड़ा। मेरी पत्नी इसी दुःख में घुलकर मर गई। लेकिन अरविन्द, तुमने मुझे एक उपाय सुझाया, जो सफल सिद्ध हुआ। तुम हत्यारे नहीं, जीवनदाता हो। इसलिए मैंने अपने जीवन-भर की बहुत सारी पूंजी तुम्हें सुरक्षित रखने के लिए दे दी है। इसमें से आधा तुम्हारा होगा और आधा शेवर्स का, लेकिन आज मैं यह पत्र लिखते हुए डर रहा हूं। तीन-चार दिन हुए मुझे अपनी बेटी सोज़ीन का पत्र मिला था कि शेवर्स तुमसे मेरी संचित सम्पत्ति लेकर मुर्शिदाबाद चला गया है। तुमने यह भूल की है। तुम नहीं जानते कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर में क्या होने वाला है। ये दोनों नगर प्लासी के हीरो सिराजुद्दौला की महानता, वीरता और शान-शौकत के अमर स्मृतिचिह्न हैं। इनको नष्ट करने की योजनाएं बनाई जा रही हैं। दोनों शहरों को नष्ट करने के उपाय खोजे जा रहे हैं। तुम शेवर्स को वापस बुला लो। मैं डरते हुए तुमसे अनुरोध कर रहा हूं। मेरा यह पत्र मेरे मित्र गायकवाड़ तुम तक पहुंचा देंगे।

तुम्हारा
रावेल"

"क्या अरविन्द दीक्षित भी मुंगेर या मुर्शिदाबाद के रहने वाले थे?" मेजर ने गायकवाड़ से पूछा।

"जी हां।"

"क्या सर्वेश को आपने भी नहीं बताया कि वह विख्यात कलाकार रावेल का बेटा है ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं।"

"क्या आपके और अरविन्द दीक्षित के मिलने वाले लोग भी इस बात को नहीं जानते ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं।" गायकवाड़ ने उत्तर दिया।

"यह मानवीय ट्रेजडी और बेटे को बाप से अलग करने की दुखद कहानी है।" मालती बोली।

"और वह सामने पड़ी अरविन्द दीक्षित की लाश देखिए। यह मानवीय महानता, मानवीय स्नेह और मानव के लिए मानव की सेवाओं की अमर गाथा है। अब प्रश्न पैदा होता है कि सर्वेश को यह बताया जाए या न बताया जाए कि वह रावेल का बेटा है।"

"मेरे विचार में अभी इस रहस्य को रहस्य ही रखा जाए, क्योंकि रावेल का पत्र बता रहा है कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर के इलाके में कोई अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र होने वाला है।" मालती बोली।

"हमें अपना हैडक्वार्टर फौरन बम्बई से मुर्शिदाबाद ले जाना चाहिए।" मेजर ने कहा।

"हमें इसी समय मिस अचपला से मिलना चाहिए। वह रावेल की सेक्रेटरी थी। शायद रावेल ने उससे भी इस अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र की चर्चा की हो।" मेजर ने कहा और फोन की मेज़ के पास जाकर मिसेज़ मर्जीना का फोन-नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो, मिसेज़ मर्जीना, मैं मेजर बलवन्त बोल रहा हूं। क्या आप बता सकती हैं कि मिस्टर रावेल का स्टुडियो कहां है ?"

"मास्टर रोड, फ़्लैट-नम्बर २, ग्राउण्ड फ्लोर। उनके स्टुडियो का नाम रावेल आर्ट हाउस है।" मर्जीना ने बताया और फिर कुछ सोचते हुए बोली, "आप उनके स्टुडियो क्यों जाना चाहते हैं ?"

"क्या मिस अचपला रावेल स्टुडियो में रहती हैं ?" मेजर ने पूछा।

"वहीं रहती होंगी, क्योंकि उनका कहना है कि वह दिन-रात

रावेल दादा की देखरेख किया करती थीं। क्यों, आप उनसे क्यों मिलना चाहते हैं ?"

"मिसेज़ मर्जीना, एक नई घटना हुई है। मिस्टर रावेल के घनिष्ठ मित्र अरविन्द दीक्षित को पीट-पीटकर मार डाला गया है। अरविन्द दीक्षित ने रावेल की सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग्स का संग्रह कहीं छिपा रखा है। हत्यारों ने उससे पूछा तो उसने बताने से इन्कार कर दिया। इसपर हत्यारों ने उसे रूई की तरह धुनककर मौत के घाट उतार दिया।"

"मेजर साहब, यह क्या हो रहा है ?" मर्जीना ने पूछा।

"जितनी भी घटनाएं हुई हैं, आपके सामने हुई हैं।" मेजर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

कालिंगटन होटल में कार्रवाई पूरी करने के बाद इंस्पेक्टर सक्सेना माउण्ट रोड पर टैंक चौक के पीछे आकाश मेंशन में पहुंच गया।

वहां पहुंचते ही इंस्पेक्टर सक्सेना ने मेजर से कहा, "मेजर साहब, कुछ ऐसा दिखाई देता है कि कोई लहू का बहुत ज़्यादा प्यासा है। वह बहुत ही तेज़ी से अपने काम में जुटा हुआ है। आप कालिंगटन होटल में और फिर वहां से यहां कैसे पहुंचे ?"

मेजर ने इंस्पेक्टर को सारी कहानी सुनाने के बाद रावेल के पत्र के सम्बन्ध में भी बता दिया। फिर बोला, "इंस्पेक्टर साहब, आप आवश्यक कार्रवाई पूरी कीजिए। हमें एक आवश्यक काम से किसीसे मिलना है। सुबह भेंट होगी।"

उसी समय डोरा क्रोकोडायल को लेकर आ गई। मेजर ने क्रोकोडायल को पुचकारकर छोड़ दिया। पहले तो वह एक छोटे-से सोफे की ओर गया। उसे कुछ देर सूंघता रहा और फिर पास वाले बड़े सोफे को सूंघने लगा। वह सोफे को बार-बार सूंघता और फिर अरविन्द दीक्षित की ओर जाकर लौट आता। वह बंगले के अन्दर नहीं गया।

कुछ मिनट के बाद क्रोकोडायल बंगले से निकलकर लॉन में चला गया। लॉन में अरविन्द दीक्षित की कार खड़ी थी। वह

उसकी ओर नहीं गया। वह कार के पीछे खाली जगह को सूंघता रहा और फिर गेट की ओर चल पड़ा। मेजर और उसके साथी मेजर और सुनील की कारों में बैठ गए। कारें क्रोकोडायल के पीछे-पीछे चल पड़ीं।

क्रोकोडायल बिभिन्न सड़कों से होता हुआ उन्हें मास्टर रोड पर ले गया और फिर एक बिल्डिग के सामने कार पार्किंग पर रुक गया। वहां कोई कार नहीं थी। वहां फूलों का एक गजरा पड़ा हुआ था।

मेजर और उसके साथी सामने की ओर देखने लगे। ग्राउण्ड फ्लोर की एक दुकान के ऊपरी भाग में बहुत ही सुन्दर शब्दों में लिखा एक साइन बोर्ड लगा था, जिसपर लिखा था—'रावेल आर्ट हाउस।'

"ओह, क्रोकोडायल हमें वहीं ले आया, जहां हम आना चाहते थे।" मेजर बोला।

"इसका क्या मतलब हो सकता है ?" मालती ने पूछा।

"इसका मतलब स्पष्ट है। पश्चिमी फैशन वाली वह औरत और उसका ताकतवर साथी अरविन्द दीक्षित को पीट-पीटकर हत्या करने के बाद सीधे यहां शायद मिस अचपला से मिलने के लिए आए। स्टुडियो में रोशनी है, लेकिन कुछ कहा नहीं जा सकता कि उन्होंने अचपला की क्या हालत की होगी। आओ, अंदर चलें।"

मेजर और उसके साथी बिल्डिग की ओर बढ़ गए।

स्टुडियो के दरवाज़े शीशे के थे। बीच का दरवाज़ा डबल डोर था। शीशों के दरवाज़ों के पीछे परदे लगे थे।

जब वे डबल डोर की ओर बढ़े तो उन्होंने दरवाज़े के साथ रेशमी फुंदने वाली एक रेशमी डोर लटकी हुई देखी, जो घण्टी का काम करती थी। मेजर ने डोर खींचकर घण्टी बजाई।

अंदर एक लम्बी सिसकी की आवाज़ उभरी।

"कौन ?" अंदर से अचपला ने रुआंसे स्वर में पूछा।

"मेजर बलवन्त। मिस अचपला, आप सकुशल तो हैं न ?"

"ओह मेजर साहब !" अंदर से अचपला ने इस तरह कहा, जैसे उसमें जान पड़ गई हो।

फिर दबे-दबे कदमों की आहट सुनाई दी और फिर अचपला ने दरवाज़ा खोल दिया।

मेजर ने देखा, वह अपने दायें गाल पर हाथ रखे हुए थी।

"तुमने अपना गाल क्यों दबा रखा है ?" मेजर ने पूछा।

अचपला ने एक लम्बी सिसकी ली और गाल पर से हाथ हटा लिया।

मेजर और उसके साथी अचपला का दायां गाल देखकर बुरी तरह उछल पड़े।

अचपला का दायां गाल सूजा हुआ था। गाल पर पांच उंगलियों के मोटे-मोटे निशान थे, जो उभरे हुए थे और लहसुन की तरह हलके नीले पड़ गए थे।

"मिस अचपला, यह क्या हुआ ? तुम्हारे गाल पर थप्पड़ किसने मारा ?"

"मॉडल गर्ल अंगदा के प्रेमी जयद्रथ ने।" अचपला ने उत्तर दिया।

"ओह !" मेजर बोला और उसे याद आ गया कि मॉडल गर्ल अंगदा के प्रेमी जयद्रथ ने ही अरविन्द दीक्षित को पीट-पीटकर मार डाला है। वे वहां से सीधे कार में अचपला के पास चले आए थे। इसीलिए क्रोकोडायल उनको अचपला के पास ले आया था।

"जयद्रथ ने तुम्हारे थप्पड़ क्यों मारा ?" मेजर ने पूछा।

"आप बैठ जाइए। मामला और अधिक गम्भीर होता जा रहा है। रावेलजी ने मॉडल गर्ल अंगदा को तीन लाख रुपये देकर यह समझ लिया था कि अब उससे छुटकारा मिल गया। बेचारी सोज़ीन ने अपने धर्मपिता के लिए कितना बड़ा बलिदान किया; लेकिन ऐसा लगता है, सोज़ीन का त्याग और रावेलजी की उदारता का अंगदा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आज वह एक नई मांग लेकर आई थी।"

"कैसी मांग ?" मेजर ने पूछा।

"उसने आकर पहले तो मुझसे चिकनी-चुपड़ी बातें कीं, फिर पूछने लगी, 'मिस अचपला, यह बताओ कि रावेल की सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग्स किसके पास हैं ? रावेल ने वे पेंटिंग्स तुम्हारे होते हुए बनाई थीं। वे पेंटिंग्स कैसी थीं और किसकी थीं ?' मैंने उससे कहा कि मैं उन पेंटिंग्स के बारे में कुछ नहीं जानती। मुझे मालूम नहीं कि वे पेंटिंग्स कैसी थीं और किसकी थीं। उन्होंने लगभग एक दर्जन पेंटिंग्स मुझसे मुलाकात होने से पहले बनाई थीं। वे पेंटिंग्स कहां गईं, मुझे पता नहीं।"

"क्या अंगदा ने यह नहीं पूछा कि वे पेंटिंग्स सुरक्षित रखने के लिए किसे दे दी थीं ?"

"पूछा था, लेकिन उन पेंटिंग्स के बारे में मुझे कुछ मालूम ही नहीं। उन पेंटिंग्स के बारे में रावेलजी ने एक बार थोड़ी-सी चर्चा की थी। उन्होंने बस इतना कहा था कि उन्होंने जो पेंटिंग्स बनाई हैं, वे उन्होंने किसीके पास सुरक्षित रख दी हैं। शायद वे लोग उनकी कलाकृतियों को सुरक्षित रख सकें। उन्होंने यह भी बताया था कि उन पेंटिंग्स को अगर कोई समझता है तो वह मुंगेर के आसफगंज मुहल्ले में रहने वाला फोटोग्राफर मुहम्मद सईद ही समझता है, और वही मुंगेर के सम्मान, प्रतिष्ठा और महानता की सुरक्षा कर सकता है।"

"मुहम्मद सईद कौन है ?" मेजर ने पूछा।

"मुहम्मद सईद नवाब सिराजुद्दौला के उत्तराधिकारियों में से है। उसीने मुंगेर का किला भटखण्डे जागीरदार परिवार के हाथों बेचा है। रावेलजी ने बताया था कि भटखण्डे जागीरदारों के पास अपार सम्पत्ति है, पर उनका खानदान बहुत ही बदसूरत है। वे अपनी नस्ल को सुन्दर बनाने के लिए सुन्दर औरतों को लाखों रुपयों में खरीदकर उनसे विवाह कर लेते हैं, लेकिन उन्हें किले से बाहर पांव नहीं रखने देते हैं।"

"तुमने हमें ये जो बातें बताई हैं, क्या अंगदा और उसके प्रेमी जयद्रथ को भी बताई थीं ?"

"नहीं, वरना मुझे मेरे गाल पर यह इनाम क्यों मिलता, जिसका दाग एक महीने से पहले नहीं जाएगा।" अचपला बोली, "मैं तो मुंगेर जाने की सोच रही हूं।"

"मिस अचपला, आप कल हमारे साथ मुंगेर चलिए। हम कल अपना हैडक्वार्टर बम्बई से हटाकर मुंगेर ले जा रहे हैं।"

"मुझे आपके साथ चलने में बड़ी खुशी होगी। मेरा भय कम हो जाएगा, क्योंकि जयद्रथ मुझे धमकी दे गया है कि अगर मैंने कोई बात छिपाई और उसे मालूम हो गई तो वह मुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ेगा।"

"कल ग्यारह बजे तैयार रहिएगा। मैं प्लेन में आपके लिए भी सीट बुक कराए लेता हूं। कल शाम को हम पटना पहुंच जाएंगे और कुछ देर आराम करने के बाद रात की ट्रेन से ही मुंगेर रवाना हो जाएंगे और दूसरे दिन सुबह मुंगेर पहुच जाएंगे। हम वहां पर्यटकों के रूप में रहेंगे। मुंगेर में सबसे अच्छा होटल कौन-सा है?"

"दिलाराम।" अचपला ने बताया।

"पटना पहुंचकर हम उस होटल में दो सूट रिज़र्व करा लेंगे। अच्छा, गुडनाइट मिस अचपला!" मेजर ने कहा।

"गुडनाइट।"

मेजर अपने साथियों के साथ स्टुडियो से निकल आया। अचपला उनको दरवाज़े तक छोड़ने आई।

"मिस अचपला, क्या तुम सर्वेश को जानती हो?"

"सिर्फ उस सर्वेश को जानती हूं, जिससे आज सुबह मिसेज़ मर्जीना के यहां मुलाकात हुई थी।"

"क्या मिस्टर रावेल अपने किसी बेटे की चर्चा किया करते थे?"

"कभी-कभी वह बहुत उदास हो जाया करते थे और कहने लगते थे, 'कभी-कभी भगवान बेटा इस तरह देता है कि बाप अपने उस बेटे से मिल नहीं पाता। उसे अपना बेटा तक नहीं कह पाता।'"

मेजर और उसके साथी अपनी कारों की ओर चल पड़े।

जब मेजर और उसके साथी अपने ऑफिस में पहुंचे तो थकान से उनका बुरा हाल था।

"व्हिस्की होनी चाहिए।" मेजर ने कहा।

मालती ने बड़ी फुर्ती दिखाई। उसने कुछ मिनट में ही व्हिस्की की व्यवस्था कर दी।

"हमने इस केस का अभी तक आरम्भ से विश्लेषण नहीं किया कि यह केस परस्पर कहां तक सम्बद्ध है और उनका सम्बन्ध किस सीमा तक महत्त्वपूर्ण है।" मालती बोली।

"हम मुंगेर कल जा रहे हैं। उससे पहले हमें आज तक की घटनाओं पर एक गहरी नज़र डाल लेनी चाहिए। आखिर इन घटनाओं का उद्देश्य क्या है? यह केस मुंगेर के किले से सर्वीना के फरार होने से आरम्भ होता है। सर्वेश सर्वीना को उस किले के बन्दी जीवन से मुक्त होने में सहायता देता है। सर्वीना को उस बन्दीगृह से मुक्ति दिलाने के लिए पहले पहरेदार को मारना आवश्यक हो जाता है। सर्वीना को मुक्ति दिलाना सर्वेश की निर्भीकता, साहस, शौर्य और बुद्धिमत्ता का प्रमाण है। सर्वीना की मुक्ति के साथ एक अप्रिय घटना आ जुड़ती है। सोज़ीन, जिसे कलाकार रावेल ने बेटी की तरह पाला था, सरताज नाम के उस होटल के सामने गोली से उड़ा दी जाती है, जिसमें सर्वेश और सर्वीना ठहरे हुए थे। क्यों?" मेजर बोला।

"शायद किले वालों को उसकी नीयत पर संदेह हो गया था।" मालती बोली।

"मालती, भटखण्डे जागीरदारों के परिवार की प्रसिद्धि की ओर ध्यान दो। सभीका यह कहना है कि भटखण्डे परिवार क्रूर नहीं है। हत्यारा नहीं है। न उन्होंने आज तक कोई और अपराध ही किया है। वे केवल सुन्दर स्त्रियों को खरीदते हैं। मेरा विचार है कि सोज़ीन की हत्या किसी ऐसे व्यक्ति ने की, जो यह नहीं चाहता था कि सोज़ीन किले की चारदीवारी से बाहर आए।

वह व्यक्ति भटखण्डे परिवार का नहीं है। वह कोई और ही है, जो सोज़ीन का किले से निकलना अपने लिए घातक या हानिकारक समझता था।" मेजर बोला।

"क्यों ? क्या सोज़ीन को कोई ऐसा रहस्य मालूम था ?" डोरा ने पूछा।

"यही हो सकता है। सोज़ीन के अन्तिम शब्दों पर विचार करो। जब उससे यह पूछा गया कि उसे गोली किसने मारी है तो उसने कहा था कि वह गोली मारने वाले को तो नहीं जानती, लेकिन उस व्यक्ति को अवश्य जानती है, जिसके आदेश पर उसे गोली मारी गई है। यहां यह भी पता चलता है कि शायद सोज़ीन ने ही अपने पिता को पत्र लिखा हो कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर को नष्ट करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र रचा जा रहा है।" मेजर बोला।

"आपका यह अनुमान सही मालूम होता है।" सोनिया ने कहा।

"अब हम सर्वेश और सर्वीना की ओर आते हैं। सोज़ीन की हत्या के बाद वे दोनों फौरन मुर्शिदाबाद से बम्बई चले आते हैं। उनको दो ही खतरे हो सकते थे। एक तो सर्वीना की किले में वापसी या सर्वेश को पकड़कर किले में ले जाकर यंत्रणाएं देना और फिर उसे किसी कालकोठरी में धकेल देना। रावेल के पत्र से यह भी पता चलता है कि अरविन्द दीक्षित ने रावेल की पेंटिंग्स का संग्रह सर्वेश को दे दिया था। रावेल ने इस बात पर अप्रसन्नता भी प्रकट की थी कि उसने पेंटिंग्स सर्वेश को क्यों दे दीं। यदि यह सच है तो वे पेंटिंग्स सर्वेश के पास होंगी। इसलिए सर्वेश के प्राणों के लिए हमेशा खतरा बना रहेगा। अगर सर्वेश उन पेंटिंग्स को मुंगेर या मुर्शिदाबाद में छोड़ आया है तो वह बम्बई में अधिक दिन नहीं ठहरेगा और जल्द ही मुंगेर या मुर्शिदाबाद चला जाएगा।" मेजर बोला।

"इसके साथ ही साथ यह प्रश्न उठता है कि हमें गायकवाड़ के पास पहुंचने से क्यों रोका गया ? वह टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाला

आदमी कौन था, जो सोज़ीन को गोली से उड़ा देने के बाद बम्बई पहुंच गया ? उसे यहां कौन लाया ? क्या उसके द्वारा हत्याएं कराई जाती थीं ?" सुधीर ने कहा।

"गायकवाड़ शायद स्पष्ट रूप से दुश्मन के सामने न आता, अगर वह उस लड़के को पत्र देकर मेरे पास न भेजता। अब गायकवाड़ पर संदेह किया ज़ाएगा कि उसने लड़के को पत्र देकर मुझे सूचना दी।"

"अब रह जाता है रावेल की हत्या का प्रश्न। रावेल की हत्या क्यों की गई ?" सुनील ने पूछा।

"इसका केवल एक ही कारण हो सकता है। दुश्मन को मालूम हो चुका था कि रावेल ने कुछ ऐसी पेंटिंग्स भी बनाई हैं, जो दुश्मन के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं।" मेजर बोला।

"वे पेंटिंग्स क्या हो सकती हैं ?" डोरा ने पूछा।

"इसका पता तो सर्वेश को ही होगा। मेरा विचार है कि ये पेंटिंग्स किसी अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र से सम्बन्धित हैं। बहुत सम्भव है कि वे पेंटिंग्स न हों और अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र की योजना की रूपरेखा हों।"

"बहरहाल अभी पहेली हल नहीं हुई है। पहेली को हल करने का एक ही उपाय है—शे'र।" मालती बोली।

मेजर हंसने लगा। फिर बोला, "शे'र तो मुझे सुनाना ही था। शे'र सुनिए :

देखकर कब नाज़नीं को आंख अपनी दब गई।
गाल पर थप्पड़ पड़ा और टांट पर चप्पल पड़ी।"

"मेजर साहब, आपके सुनाने का ढंग दिन पर दिन निखरता चला जा रहा है। शे'र और अधिक अर्थपूर्ण होते जा रहे हैं।" मालती ने दाद दी।

मेजर ने प्यार से मालती की ओर देखा।

मेजर के अन्य साथी शे'र की विशेषता पर दबे-दबे हंस रहे थे।

"इस समय हमारे सामने चार व्यक्ति हैं। एक तो मॉडल गर्ल

अंगदा। दूसरा उसका प्रेमी जयद्रथ। और दो व्यक्ति वे हैं, जिन्होंने हमारे कालिंगटन होटल जाते समय फायर करके हमारी कारों के टायर फाड़ दिए थे। एक आदमी और भी था, जिसने सोज़ीन को गोली मारने वाले टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाले आदमी का मार्गदर्शन किया था। यही नहीं, और भी बहुत-से आदमी इस रंगमंच पर दिखाई दे रहे हैं। वे सभी खून के प्यासे हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि वे किसके खून के प्यासे हैं, और क्यों प्यासे हैं ? इस खून-खराबी का उद्देश्य क्या है ?" मेजर बोला।

रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

गायकवाड़ खाना खाकर अपनी बीमार पत्नी का माथा चूमकर अपने कमरे में आ गया था। वह कपड़े बदलने ही लगा था कि उसके कमरे के दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"कौन ?" गायकवाड़ ने पूछा।

"मिसेज़ सल्पना।" दरवाज़े के बाहर से किसी स्त्री ने कहा।

"कौन मिसेज़ सल्पना ?" अन्दर से गायकवाड़ ने पूछा।

"आपकी फर्म के एजेण्ट बाला सुन्दरम की पत्नी।" दरवाज़े के बाहर से उत्तर मिला।

गायकवाड़ ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा, "आपसे पहले कभी मुलाकात नहीं हुई। आप इस समय कैसे आई हैं ?"

दरवाज़े में लम्बे कद की सांवली औरत खड़ी थी। तीखे नाक-नक्श। घुंघराले बाल। बदन पर मद्रासी साड़ी। हाथ में सफेद हैण्डबैग।

"आइए।" गायकवाड़ ने कहा।

"बैठने का समय नहीं है। उनकी तबीयत बहुत खराब है। फोन पर आपसे बात नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने मुझे भेजा है। वह बिज़नेस के सम्बन्ध में आपसे कुछ बातें करना चाहते हैं। आप फौरन मेरे साथ चलिए।" उस औरत ने दरवाज़े में खड़े-खड़े ही कहा।

बाला सुन्दरम गायकवाड़ की फर्म का सबसे बढ़िया एजेण्ट

था। वह लगभग डेढ़ लाख रुपये का माल लेकर टूर पर गया था। गायकवाड़ को संदेह हुआ कि कहीं माल के सम्बन्ध में कोई गड़बड़ घोटाला न हो गया हो। गायकवाड़ ने अभी कपड़े बदले नहीं थे।

"मैं कार निकाल लूं।" गायकवाड़ ने कहा।

"नहीं, मैं टैक्सी लेकर आई हूं।" मिसेज़ सल्पना बोली।

"अच्छा, चलिए।"

गायकवाड़ टैक्सी की पिछली सीट पर मिसेज़ सल्पना के साथ आ बैठा।

टैक्सी चल पड़ी।

६. रमाबाई रोड

टैक्सी मास्टर रोड पर पहुंच गई।

"बाला सुन्दरम की तबीयत अचानक कैसे खराब हो गई?" गायकवाड़ ने पूछा।

"आपने इस बार उन्हें उत्तर भारत के दौरे पर भेजा था। वापस आते हुए उन्हें सर्दी लग गई। निमोनिया और सरसाम। डॉक्टर ने दवा दी है तो कुछ संभले हैं। ट्रेन में ही सर्दी लग गई थी। ब्रेक वान में उनका बहुत-सा सामान चोरी हो गया। इस माल के बारे में वह आपको कुछ मशवरा देना चाहते हैं।" मिसेज़ सल्पना ने कहा।

गायकवाड़ को लगा कि मिसेज़ सल्पना की बोलचाल का ढंग मद्रासी स्त्रियों जैसा नहीं है। उसके लहजे में उत्तर भारतीय रंग है। अब वह विशुद्ध हिन्दुस्तानी बोल रही थी।

मिसेज़ सल्पना ने अपना हैण्डबैग खोला, और जब उसने अपना हाथ हैण्डबैग में से निकाला तो गायकवाड़ चौंक पड़ा। मिसेज़ सल्पना के हाथ में साइलेंसर-चढ़ा रिवॉल्वर था।

गायकवाड़ भय से कांप उठा, "यह क्या?" उसके मुंह से आश्चर्य से निकला।

"मिस्टर गायकवाड़, रावेल ने तुम्हें अरविन्द दीक्षित तक

पहुंचाने के लिए जो पत्र लिखा था, वह मुझे दे दो।"

"वह पत्र मेरे पास नहीं है।" गायकवाड़ ने उत्तर दिया।

"फिर किसके पास है ?" सल्पना ने पूछा।

"आप···आप, बाला सुन्दरम की पत्नी नहीं हैं ?" गायकवाड़ के मुंह से निकला। वह बहुत परेशान था।

सल्पना हंसने लगी। उसने अपना प्रश्न फिर दोहराया, "रावेल का पत्र किसके पास है ?"

"मेजर बलवन्त के पास है।"

"तुमने अरविन्द दीक्षित का पत्र मेजर बलवन्त को क्यों दिया ? अरविन्द दीक्षित का पत्र उसीको क्यों नहीं दिया ?"

"अरविन्द दीक्षित की हत्या हो गई थी। उसे पत्र कैसे देता ?"

"पत्र लेने वाला अगर मर चुका था तो तुम्हें वह पत्र अपने पास रखना चाहिए था।" सल्पना बोली।

"मेजर बलवन्त ने वह पत्र मुझसे ले लिया था।"

"अरविन्द दीक्षित को पत्र पहुंचाने से पहले तुमने मेजर को मिलने के लिए क्यों बुलाया था ?"

"रावेल ने हिदायत की थी कि मैं वह पत्र किसी पुलिस अफसर या जासूस के साथ जाकर अरविन्द दीक्षित को दूं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। अच्छा, यह बताओ कि रावेल ने अरविन्द दीक्षित के नाम जो पत्र लिखा था, वह तुमने पढ़ा था ?"

"नहीं।"

"तुम फिर झूठ बोल रहे हो। तुमने हमारा बहुत बड़ा नुकसान किया है। तुम्हारे साथ एक ही सुलूक किया जा सकता है।" सल्पना बोली।

"वह क्या ?"

सल्पना मुस्कराई और रिवॉल्वर की नली गायकवाड़ के सीने की ओर उठाकर ट्रेगर दबा दिया। बेचारा गायकवाड़ चीख तक न सका। सल्पना ने टैक्सी का दरवाज़ा खोला और गायकवाड़ को चलती टैक्सी से बाहर फेंक दिया।

टैक्सी ड्राइवर चुपचाप यह सब देखता रहा, क्योंकि सल्पना

के रिवॉल्वर की नाल उसकी पीठ की ओर थी।

"चलो, मुझे रमाबाई रोड पर छोड़ दो।" सल्पना ने आदेश दिया।

आधे घण्टे बाद टैक्सी रमाबाई रोड पहुंच गई।

सल्पना ने किराये के अलावा दस रुपये टिप दी।

जब टैक्सी मुड़कर आंख से ओझल हो गई तो सल्पना रमाबाई रोड पर आगे बढ़ी और फिर दुकानों की ओर मुड़ गई। वह दुकानों के पीछे एक लेन में घुस गई। गली के मकानों की बत्तियां बुझ चुकी थीं।

केवल एक मकान में रोशनी थी। उस मकान के छज्जे पर एक गोरा आदमी खड़ा था। उसके बाल सुनहरी थे। वह यूरोपियन था। वह गली की ओर देख रहा था। उसने सल्पना को आते देखा तो हाथ लहराकर इशारा किया। सल्पना ने भी हाथ हिलाकर उसके इशारे का उत्तर दिया।

सल्पना सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंच गई। गोरी नस्ल के आदमी ने उसे गले से लगा लिया, लेकिन वह फौरन ही पीछे हट गया।

"तुमने तो मुझे भी कालिख लगा दी। मैं तुम्हारा चुम्बन तक नहीं ले सकता। जल्दी से बाथरूम में जाकर फिर से पहले जैसी सुन्दर बनकर आ जाओ। फ्रेज़र भी आ गया है। हम दोनों तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे थे। तुम स्वयं ही उससे पूछताछ करके तसल्ली कर लो। रावेल का पत्र मिला?"

"रावेल का पत्र मेजर बलवन्त के पास है। हमारे लिए यह एक खतरनाक बात हुई है। मैंने गुस्से में गायकवाड़ को गोली का निशाना बनाकर टैक्सी से बाहर फेंक दिया।" सल्पना ने कहा।

"अच्छा किया। मेरे अनुमान से बम्बई में हमें जिन लोगों से खतरा हो सकता था, हमने उनका सफाया कर दिया है। अब मुर्शिदाबाद और मुंगेर चलकर देखना है कि वहां कौन-कौन हमारी योजना से परिचित हैं। जाओ, बाथरूम में अधिक देर मत लगाना। बेडरूम में आ जाना। मैं और फ्रेज़र वहीं व्हिस्की पी रहे हैं।"

"मैं अभी आई मैकडानेल्ड !" सल्पना ने गोरी नस्ल के आदमी से कहा।

दस मिनट के बाद सल्पना बाथरूम से निकली तो वह संगमरमर की तरह चमक रही थी। उसने कसा हुआ स्वेटर और मिनी स्कर्ट पहन रखी थी।

"यू आर ए ब्यूटी क्वीन। उस मेकअप में तो तुम एकदम नीग्रो दिखाई दे रही थीं।"

"हैलो सल्पना, गुड ईवनिंग। आओ, हममें शामिल हो जाओ। गाउन पहन लो। मैं तुम्हारे रूप की चकाचौंध सहन न कर पाऊंगा।" फ्रेज़र बोला।

सल्पना ने पलंग पर से गाउन उठाकर पहन लिया। फिर बोली, "मेरे लिए व्हिस्की का बड़ा पेग बनाओ। सोडा बहुत कम।"

मकडानेल्ड ने सल्पना के लिए व्हिस्की का पेग बनाया। सल्पना ने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया, "वन मोर प्लीज़ !"

मैकडानेल्ड उसके लिए दूसरा पेग बनाने लगा।

सल्पना के गाल और भी लाल हो उठे।

"फ्रेज़र, तुमने लैसर प्राप्त कर लिया ?" सल्पना ने पूछा।

"हां !" फ्रेज़र बोला।

"यह तो बताओ, लैसर क्या होता है ?" सल्पना ने व्हिस्की का दूसरा गिलास होंठों से लगाने से पहले पूछा।

"मिसेज़ सल्पना, वैज्ञानिक प्रकाश की जुड़ी हुई लहरों को लैसर कहते हैं। प्रकाश की लहरें जब आपस में जुड़ जाती हैं और एक-दूसरे का अंग बन जाती हैं तो वे लैसर का रूप ले लेती हैं। वैसे ये सामान्य प्रकाश ही दिखाई देती हैं, लेकिन एक स्थान पर केन्द्रित और संगठित हो जाने के कारण यह प्रकाश शक्तिशाली बन जाता है। इसकी एक किरण हीरे को काट सकती है। फौलाद को काट सकती है। चट्टान को काट सकती है। लैसर बड़े भी होते हैं, लेकिन उन्हें मशीनों से ही उठाया जा सकता है। हमें तो हाथ में उठाकर काम आने वाले लैसर चाहिए। इस प्रकार के दो

लैसर प्राप्त करने में सफल हो गया हूं।"

"हम अपना काम कितने दिन में पूरा कर लेंगे ?" सल्पना ने पूछा।

"पन्द्रह-बीस दिन तो लग ही जाएंगे।" फ्रेज़र ने उत्तर दिया।

"तीन किले हैं। क्या पन्द्रह-बीस दिन में तीन किले तहस-नहस हो सकते हैं ?" सल्पना ने व्हिस्की का गिलास खत्म करते हुए पूछा।

"अधिक से अधिक अट्ठाइस दिन लग जाएंगे; लेकिन दो आदमियों को चौबीसों घण्टे काम करना पड़ेगा।" फ्रेज़र ने कहा, "हमें कब चलना है ?"

"हम परसों यहां से चल पड़ेंगे।" सल्पना ने कहा।

वे व्हिस्की पीने लगे।

मेजर बलवन्त और उसके साथी व्हिस्की पीने के बाद खाना खाकर सोने की तैयारियां कर रहे थे कि टेलीफोन की घण्टी बज उठी। मेजर फोन की मेज़ के पास चला गया और बोला, "हैलो!"

"मेजर साहब, इंस्पेक्टर सक्सेना—एक और हत्या। एक टैक्सी ड्राइवर मेरे ऑफिस में खड़ा है। वह मुझे बता रहा है कि मास्टर रोड पर एक लम्बे कद की और बहुत ही सांवली औरत ने उसकी टैक्सी में एक आदमी को गोली मारकर टैक्सी से बाहर फेंक दिया। फिर वह औरत उसे रमाबाई रोड पर ले गई और टैक्सी से उतर गई।"

"लम्बे कद की सांवली औरत ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां। टैक्सी ड्राइवर अजीब-सा किस्सा सुना रहा है। वह सांवली औरत टैक्सी में बैठे यात्री से बार-बार कह रही थी कि मिस्टर रावेल का पत्र उसे दे दे। वह आदमी उस औरत को यही उत्तर दे रहा था कि रावेल का पत्र मेजर बलवन्त के पास है। इसपर वह औरत बहुत नाराज़ हुई और उसने उस

आदमी को गोली मार दी। टैक्सी ड्राइवर ने उस आदमी का जो हुलिया बताया है, वह गायकवाड़ से मिलता-जुलता है।"

"गायकवाड़! शायद इनका अन्तिम शिकार।" मेजर ने कहा।

"आप मेरे ऑफिस आ जाइए। टैक्सी ड्राइवर हमें मास्टर रोड पर ले चलेगा।" इंस्पेक्टर सक्सेना ने कहा।

"मैं आ रहा हूं।" मेजर बोला और उसने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

मेजर ने अपने साथियों को इंस्पेक्टर सक्सेना के फोन के सम्बन्ध में बताया।

"चलिए, मैं आपके साथ चलती हूं।" मालती बोली।

"चलो।"

मेजर मालती के साथ इंस्पेक्टर सक्सेना के ऑफिस में पहुंचा। वहां गठीले बदन का एक ड्राइवर बैठा हुआ था।

मेजर ने टैक्सी ड्राइवर से पूछा, "तुम उस सांवली औरत को कहां से कहां तक ले गए थे?"

"मैं उस औरत को प्रेक्ट रोड से शर्ले रोड ले गया था। वहां वह उस आदमी को लेकर आई।" यह कहकर टैक्सी ड्राइवर ने जिस आदमी का हुलिया बताया, वह गायकवाड़ से मिलता-जुलता था। "शर्ले रोड से चलने पर उस औरत ने मास्टर रोड चलने के लिए कहा। वहां उस औरत ने उस आदमी को गोली मारकर टैक्सी से बाहर फेंक दिया और मुझे धमकाकर रमाबाई रोड पर ले गई और वहां टैक्सी से उतर गई।"

"तुमने उस औरत को रमाबाई रोड की किस ओर जाते हुए देखा?" मेजर ने पूछा।

"नहीं। वह औरत टैक्सी से उतरकर फुटपाथ पर खड़ी हो गई और सिगरेट पीने लगी, और जब मेरी टैक्सी आंख से ओझल हो गई, तब वह किसी ओर चली गई। हुजूर, मैंने उस औरत में एक अजीब बात भी देखी।"

"वह क्या ?" मेजर ने पूछा ।

"वह साफ हिन्दुस्तानी बोलती थी, लेकिन कभी-कभी अंग्रेजों की तरह बोलने लगती थी ।"

"ओह !" मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा, "अच्छा, चलो, मास्टर रोड चलें ।" मेजर ने टैक्सी ड्राइवर से कहा ।

"हुजूर, हम मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालते हैं । ऐसी बातों से बहुत डरते हैं । हम लोगों पर ही अकसर आरोप लगाया जाता है कि हम अपने यात्रियों को लूट लेते हैं और कभी-कभी उन्हें मार भी डालते हैं ।"

"घबराओ मत । तुम्हारा सीधे पुलिस स्टेशन में आना तुम्हारे निर्दोष होने का प्रमाण है ।" मेजर ने कहा ।

इंस्पेक्टर ने अपनी जीप निकाली । मेजर और मालती इंस्पेक्टर की जीप में जा बैठे । टैक्सी जीप के आगे-आगे चल पड़ी । इंस्पेक्टर ने टॉर्च ले ली थी ।

थोड़ी देर में वे घटनास्थल पर पहुंच गए । वहां कोई भी नहीं था । गायकवाड़ की लाश किसीने शायद देखी भी नहीं थी ।

इंस्पेक्टर ने लाश पर टॉर्च की रोशनी फेंकी ।

"यह तो गायकवाड़ ही है ।" मेजर बोला । उसने झुककर गायकवाड़ की जेबों की तलाशी ली और फिर उठकर बोला, "गोली ठीक सीने में मारी गई है । उस औरत के पास इतना समय नहीं था कि वह गायकवाड़ की तलाशी लेती । आइए इंस्पेक्टर साहब, लाश को जीप में डालकर ले चलें ।" मेजर ने कहा और फिर टैक्सी ड्राइवर से बोला, "तुम निश्चित होकर जा सकते हो। तुम्हें कोई नहीं पूछेगा ।"

"धन्यवाद हुजूर ! गरीब के तो भगवान ही मददगार होते हैं ।" टैक्सी ड्राइवर खुशी-खुशी चला गया ।

रास्ते में मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा, "रावेल का जो पत्र मेरे पास है, दुश्मन के लिए वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । मुझे आशा है कि मेरी दुश्मन से जबर्दस्त टक्कर होगी । लेकिन मैं तो कल मुंगेर

जा रहा हूं।"

"आप मुझे परिस्थिति से सूचित करते रहिएगा। अगर मेरी आवश्यकता अनुभव करें तो मुझे बुला लीजिएगा।" इंस्पेक्टर बोला।

"ज़रूर।" मेजर बोला और नई घटना पर विचार करने लगा।

७. सर्वनाश और सर्वनाश का इलाज

अभी दिन पूरी तरह निकला न था। मेजर बांदरा रोड पर ग्रीन मेंशन के दरवाज़े पर पहुंचा। उसने दरवाजे पर लगी घण्टी बजाई। दरवाज़ा सर्वीना ने खोला।

"अरे, मेजर साहब, आप! और इतने सवेरे?" सर्वीना ने कहा।

"क्या सर्वेश जाग रहा है?" मेजर ने पूछा।

"हां, बेड-टी पी रहा है। आइए, आप भी चाय पीजिए। क्या आपको सर्वेश से काम है?"

"हां।"

"आइए।" सर्वीना ने कहा।

वह उसे बेडरूम में ले गई। मेजर को देखते ही सर्वेश ने चौंक-कर उठते हुए कहा, "आप—नमस्ते!"

"बैठो सर्वेश!" मेजर बोला।

"मेजर साहब, बैठिए। मैं आपके लिए चाय लाती हूं।" सर्वीना ने कहा और चाय बनाने के लिए किचन में चली गई।

"कौन है सर्वीना?" मर्जीना ने अपने बेडरूम में से आवाज़ दी।

"मेजर साहब हैं। सर्वेश से मिलने आए हैं।" सर्वीना ने किचन में से उत्तर दिया।

मेजर ने सर्वेश से कहा, "सर्वेश, मैं तुमसे तीन-चार बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछने आया हूं। तुम्हारे सही उत्तरों से इतनी बड़ी खून-खराबी की पहेली हल हो सकती है।"

"इतनी बड़ी खून-खराबी?" सर्वेश ने आश्चर्य से कहा।

"सर्वेश, तुम केवल सोज़ीन और आर्टिस्ट रावेल की हत्या के ही सम्बन्ध में जानते हो, लेकिन इसी सिलसिले में बम्बई में तीन हत्याएं और हो चुकी हैं—सेठ अविनाश दीक्षित, सेठ गायकवाड़ और टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाला एक आदमी मारा जा चुका है।"

"टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाला आदमी, जिसने सोज़ीन को मुर्शिदाबाद में गोली मार दी थी?" सर्वेश ने हैरान होकर पूछा।

"हां।"

"लेकिन सेठ अरविन्द दीक्षित की हत्या समझ में नहीं आती। वह तो बहुत ही भले आदमी थे। मुझे उनकी मौत का बहुत दुःख है। गायकवाड़ को तो मैं जानता नहीं। अरविन्द दीक्षित तो बचपन से ही मुझपर बहुत मेहरबान थे। जब मैं कॉन्वेण्ट में पढ़ रहा था, वह अकसर मुझसे मिलने जाते रहते थे और मेरे पिता जुगल आनन्द की ओर से रुपये, कपड़े और उपहार दे जाया करते थे।"

"क्या तुम्हारे पिता का नाम जुगल आनन्द था?"

"कॉन्वेण्ट में मेरे पिता का नाम जुगल आनन्द ही लिखवाया गया था और उनका पता था—२८, छतरी वाला बिल्डिंग, लेमिंग्टन रोड, बम्बई लिखवाया गया था। मेरे पिता शायद छतरियों के थोक व्यापारी थे।"

"क्या तुम अपने पिता से कभी मिले थे?"

"मैंने तो आज तक अपने पिता की सूरत नहीं देखी। एक बार क्रिसमस की छुट्टियों में बम्बई गया, लेकिन छतरी वाला बिल्डिंग, लेमिंग्टन रोड पर जुगल आनन्द नाम का कोई आदमी रहता ही नहीं था। इसके बाद जब अरविन्द दीक्षित मेरे पिता की ओर से रुपये देने आए तो मैंने उनसे पूछा कि मेरे पिता जुगल आनन्द कहां रहते हैं तो उन्होंने यह कहकर मेरा मुंह बन्द कर दिया था कि मैं अगर यह प्रश्न न करूं तो इसीमें मेरी भलाई है। मैं कितना अभागा हूं मेजर साहब! मैं आज तक अपने पिता की सूरत नहीं देख पाया हूं।"

"हां, यह इन्सान का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है; लेकिन जीवन में भाग्य बहुत-से खेल खेलता है।" मेजर ने सर्वेश से वास्तविक रहस्य

छिपाते हुए कहा।

"मेजर साहब, कभी-कभी ऐसा दुर्भाग्य मानव के लिए वरदान बन जाता है। मैं अपने पांव पर खड़ा हो गया। मैंने केवल अपने साहस पर भरोसा किया। मुझे निर्भीकता, निडरता मिली।" सर्वेश बोला।

सर्वीना मेजर के लिए चाय और बिस्कुट ले आई।

"सर्वेश, मुझे मालूम हुआ है कि सेठ अरविन्द दीक्षित ने तुम्हें कुछ पेंटिंग्स सुरक्षित स्थान में रखने के लिए दी थीं ?" मेजर ने कहा।

"मैं तो उन पेंटिंग्स को रखने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन अरविन्द दीक्षित ने मुझसे कहा कि उन पेंटिंग्स को रखकर उनकी ज़िन्दगी खतरे में पड़ गई है। किसी भी समय उन्हें जान के लाले पड़ सकते हैं। उनके मुझपर अनेक अहसान थे। मैंने उनसे वायदा कर लिया कि मैं उन पेंटिंग्स को ले जाकर किसी ऐसे सुरक्षित स्थान में रख दूंगा, जहां चिड़िया भी पर न मार सकेगी। मैं उनकी जान बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाने के लिए तैयार था। एक रात के अंधेरे में उन पेंटिंग्स को एक बक्स में भरकर मैं मुंगेर पहुंच गया। वे पेंटिंग्स वहीं सुरक्षित रखी हैं।"

"क्या तुम्हें अरविन्द दीक्षित ने यह बताया था कि वे पेंटिंग्स किसकी बनाई हुई हैं ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं। वे कुल ग्यारह पेंटिंग्स थीं। उनके फ्रेमों पर प्लाईवुड जड़ी हुई थी। हर पेंटिंग की प्लाईवुड पर लिखा था—'कोई भी पेंटिंग अप्रैल, १९७८ से पहले खोलकर न देखी जाए। अगर इससे पहले किसी पेंटिंग्स खोलकर देखीं तो वह चौबीस घण्टे से अधिक ज़िन्दा नहीं रह सकेगा।' मैंने स्टेनलेस स्टील का एक केस बनवाया और पेंटिंग्स उसमें बन्द करके एक किले की दीवार के नीचे गाड़ दीं।"

"अच्छा, यह बताओ, क्या अरविन्द दीक्षित ने यह बताया था कि ये पेंटिंग्स किसकी बनाई हुई हैं ?" मेजर ने अपना प्रश्न दोहराया।

"बस, उन्होंने इतना ही बताया था कि ये पेंटिंग्स उनके और मेरे किसी सम्बन्धी ने बनाई हैं। उन पेंटिंग्स से सर्वनाश भी सम्बद्ध

है और सर्वनाश का प्रतिकार और उपचार भी सम्बद्ध है। जिस व्यक्ति ने पेंटिंग्स बनाई थीं, उसने यह भी कहा था कि मैं ही शायद उस सर्वनाश को टाल सकूंगा, जो मुर्शिदाबाद और मुंगेर पर टूटेगा।"

"खूब, आपका मुंगेर कब जाने का इरादा है ?"

"परसों।" सर्वेश ने उत्तर दिया।

"आप मुंगेर में कहां रहते हैं ?" मेजर ने पूछा।

"बेलापुर के डी-२२२ नम्बर मकान में रहता हूं।" सर्वेश ने उत्तर दिया।

"आप यहां से परसों रवाना होंगे। चौथे दिन मैं आपसे मिलूंगा। मैं आज मुंगेर के लिए रवाना हो रहा हूं।"

"ओह, आप मुंगेर जा रहे हैं ?" सर्वेश ने आश्चर्य से पूछा, "और मेजर साहब, आपने मुझसे ऐसे जटिल प्रश्न क्यों पूछे हैं ?"

सर्वीना भी मेजर के प्रश्नों पर आश्चर्यचकित थी।

"सर्वेश, तुम्हारी जान हर समय खतरे में है। बम्बई में तुम्हारा अधिक दिन रहना बहुत ही खतरनाक है। अच्छा यही होगा कि तुम भी आज हमारे साथ मुंगेर चलो।"

"अगर आप कहते हैं तो हम अभी से तैयारी शुरू कर देते हैं। आशा है, ग्यारह बजे की फ्लाइट में सीट मिल जाएगी।"

"मैं और मेरे साथी मुंगेर के दिलाराम होटल में ठहरेंगे। पटना पहुंचकर हम आज रात की ट्रेन से ही मुंगेर रवाना हो जाएंगे और कल सुबह मुंगेर पहुंच जाएंगे। तुम थोड़ी देर होटल में हमारे साथ रहना और फिर मैं अपने दो असिस्टेण्टों को तुम्हारे साथ तुम्हारे मकान की निगरानी के लिए भेज दूंगा।"

"मेजर साहब, मुझसे इतनी हमदर्दी क्यों ?"

"क्या हमदर्दी बुरी चीज़ होती है ?" मेजर ने चाय का खाली प्याला तिपाई पर रख दिया और कहा, "मैं पौने ग्यारह बजे एअरपार्ट पर आपकी प्रतीक्षा करूंगा।"

"हम पहुंच जाएंगे।"

मेजर अपने साथियों, अचपला और क्रोकोडायल के साथ सुबह साढ़े दस बजे ही एअरपोर्ट पर पहुंच गया। पन्द्रह-बीस मिनट में आवश्यक कार्यवाही समाप्त हो गई।

सर्वेश और सर्वीना भी ठीक समय पर पहुंच गए।

प्लेन ठीक ग्यारह बजे रवाना हो गया। शाम के साढ़े पांच बजे वे पटना एअरपोर्ट पर थे।

मुंगेर के लिए ट्रेन रात के साढ़े सात बजे जाती थी। वे एअर-पोर्ट से सीधे रेलवे स्टेशन पहुंच गए और अगले दिन सुबह साढ़े आठ बजे वे मुंगेर में थे। आधे घण्टे में वे दिलाराम होटल में पहुंच गए। वहां उनके लिए दो सूट रिजर्व कर दिए गए थे।

सर्वेश और सर्वीना आधे घण्टे दिलाराम होटल में रहे। फिर मेजर ने डोरा और सुधीर को उनके साथ बेलापुर भेज दिया।

मेजर ने अचपला से कहा, "मिस अचपला, आपने बताया था कि अगर आर्टिस्ट रावेल की पेंटिंग्स को कोई समझता है तो वह नवाब सिराजुद्दौला का उत्तराधिकारी मुहम्मद सईद समझता है, जो आसफगंज में फोटोग्राफर की दुकान करता है। और आर्टिस्ट रावेल का यह विचार था कि अगर मुर्शिदाबाद और मुंगेर के गौरव की कोई रक्षा कर सकता है तो वह फोटोग्राफर मुहम्मद सईद है। तुम मुझे मुहम्मद सईद के पास ले चलो।"

"चलिए।" अचपला ने कहा।

"हम भी चलते हैं।" मालती, सुनील और सोनिया ने कहा।

"तुम भी चलो। टैक्सी लेनी होगी। अभी दिन-भर कार पास रखने का कोई प्रबन्ध नहीं हो सका है।" मेजर ने कहा।

वे एक टैक्सी में बैठकर आसफगंज की ओर चल पड़े।

मुहम्मद सईद फोटोग्राफर चालीस-बयालीस वर्ष का गोरा-चिट्टा आदमी था। उसकी दुकान बहुत सजी हुई थी। वह धन-सम्पन्न दिखाई देता था।

उसने टैक्सी में से अचपला को उतरते देखा तो उठकर खड़ा हो गया, "आख्खाह, मिस अचपला! मेरे लिए यह अचम्भे से कम

नहो। क्या रावलजी भी आए हैं ? आदाब !"

"आदाब अंकल !" अचपला ने कहा, "रावेलजी नहीं आ सके।"

इतने में मेजर, सुनील, मालती और सोनिया भी टैक्सी से निकल आए। टैक्सी ड्राइवर ने दो रुपये अधिक लेकर एक सवारी और अधिक बैठा ली थी।

"अंकल, इनसे मिलिए। यह मेजर बलवन्त हैं, प्रसिद्ध जासूस। और यह मिस मालती, मिस सोनिया और मिस्टर सुनील हैं—मेजर साहब के असिस्टेण्ट।"

"आइए, इस समय मेरे पास कोई काम नहीं है।" मुहम्मद सईद ने कहा और सबको बारी-बारी आदाब करके बोला, "आपके लिए क्या मंगवाया जाए ?"

"कुछ नहीं, धन्यवाद। हमें मालूम हुआ है कि आप आर्टिस्ट रावेल की उन बारह पेंटिंग्स के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जो कहीं सुरक्षित रखी हुई हैं।" मेजर ने कहा।

"आपने रावेल दादा का नाम लिया है। ज़बान पर अपने-आप ही सम्मानजनक शब्द आ जाते हैं। उनमें धार्मिक भेद-भावना नहीं है। सबको अपने देश का वासी समझते हैं। यह इलाका तो उन्हें अपने देश से भी अधिक प्यारा है। वह नवाब सिराजुद्दौला को शिवाजी के समान ही देशभक्त, वीर और पराक्रमी समझते हैं। अगर नवाब सिराजुद्दौला के जागीरदार गद्दारी न करते तो शायद हमारा देश गुलाम ही न होता। वह मुझसे बहुत प्यार करते हैं। वह बहुत ही दूरदर्शी हैं। कुछ साल हुए रावेल दादा मेरे पास आए और बोले, 'मुर्शिदाबाद और मुंगेर आग की लपटों में आने वाले हैं। मुहम्मद सईद, तुम्हारी रगों में नवाब सिराजुद्दौला का खून दौड़ रहा है। मुर्शिदाबाद और मुंगेर के गौरव की रक्षा करने का बीड़ा तुम्हें उठाना होगा। मैंने बारह पेंटिंग्स बनाई हैं, जो समय आने पर तुम्हें मिल जाएंगी। वे पेंटिंग्स तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगी।' मेरे आग्रह करने पर उन्होंने बारह पेंटिंग्स में से केवल नौ पेंटिंग्स के सम्बन्ध में मुझे बताया।

बाकी तीन पेंटिंग्स के विवरण बताने से इन्कार कर दिया। कहने लगे कि जब अप्रैल, १९७८ के बाद तुम या तुम्हारा कोई साथी इन्हें खोलेगा तो तुम्हें सारी बातें मालूम हो जाएंगी।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"उन्होंने नौ पेंटिंग्स के विवरण क्या बताए थे ?" मेजर ने पूछा।

"उन्होंने बताया था कि तीन पेंटिंग्स बड़ी उम्र के आदमियों की हैं, जो वर्दी पहने हुए हैं। उनके हाथों में कड़ाबीन हैं। तीन पेंटिंग्स नौजवानों की हैं। पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस वर्ष के नौजवान, जो सूट पहने हुए हैं। उनकी हथेलियों पर चांदी के खोल हैं। मोमबत्तियां हैं। तीनों नौजवान हज़रत ईसामसीह की मूर्ति के आगे सिर झुकाए खड़े हैं, जैसे कोई शपथ ले रहे हों। तीन पेंटिंग्स में उनसे अधिक कम उम्र के नौजवान हैं। बीस, इक्कीस और बाईस वर्ष के। वे मुक्का ताने हुए हैं। बाकी तीन पेंटिंग्स के बारे में उन्होंने कुछ नहीं बताया।"

"क्या रावेल दादा ने मानव की इन तीन पीढ़ियों के सम्बन्ध में कोई रहस्यपूर्ण बात नहीं बताई ?"

"उन्होंने कहा कि मेरा अनुमान है कि मार्च, १९७८ के मध्य में कोहराम मचेगा। एक रात में भटखण्डे परिवार के किले के दस से पन्द्रह आदमी मारे जाएंगे और यह सर्वनाश का श्रीगणेश होगा। इससे अधिक उन्होंने कुछ नहीं बताया।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"मुहम्मद सईद साहब, आज मार्च की पांच तारीख है। अगर १५ मार्च को रावेल दादा की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो गई तो समझ लो कि इस इलाके का सर्वनाश हो जाएगा।" मेजर ने कहा।

"कुछ रहस्यपूर्ण और संदिग्ध बातें तो अभी से होने लगी हैं।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"रहस्यपूर्ण और संदिग्ध बातें !" मेजर के मुंह से निकला।

"दादा रावेल ने कहा था कि इस इलाके पर तबाही आई

तो शायद मैं ही इस इलाके के गौरव की रक्षा कर सकूंगा। मैंने अपना काम पहले से ही शुरू कर दिया है। मैंने सात टोलियां बनाई हैं। उन टोलियों के जो नायक हैं, मेरे विश्वसनीय मित्र हैं। वे रात को शहर के खास-खास हिस्सों में बंट जाते हैं और अधिकत . भटखण्डे परिवार के किले की निगरानी करते हैं। तीनों किलों के पीछे उन्होंने झोंपड़ियां बना ली हैं। उसी ओर मछेरों के डेरे हैं। उनसे हटकर आदिवासियों की झोंपड़ियां हैं। कुछ आदिवासियों ने परसों बताया कि उन्होंने रात के तीन बजे तीन विचित्र आदमियों को किले के आसपास मण्डलाते हुए देखा। उनके कंधों पर कड़ाबीनें लटकी हुई थीं। यह सुनकर मैं चौंक पड़ा। मुझे रावेल दादा की वे पहली तीन पेंटिंग्स याद आ गईं, जिनमें तीन व्यक्ति वर्दियां पहने और हाथों में कड़ाबीन लिए खड़े हैं।"

"आप विचित्र बात सुना रहे हैं। रावेल दादा की तीन पेंटिंग्स में से वे तीन आदमी कैसे निकल आए ?" मेजर बोला।

"मेजर साहब, मैं आर्टिस्ट हूं। मैं अन्धविश्वासों को नहीं मानती। दादा रावेल की पेंटिंग्स पर जड़ी हुई प्लाईवुड पर लिखा है कि अगर एक अप्रैल से पहले कोई उन पेंटिंग्स को देखेगा तो वह चौबीस घण्टे के अंदर मर जाएगा। इस युग में ऐसी बातों पर विश्वास करना इस युग का अपमान करना है और अपने-आपको अज्ञान युग का व्यक्ति सिद्ध करना है। मैं कलाकार हूं। इन पेंटिंग्स के गोपनीय भावों और अर्थों को जान सकती हूं। मुझे अनुमति दीजिए कि मैं रावेल दादा की बनाई हुई पेंटिंग्स खोलकर देखूं।" अचपला ने कहा।

मेजर बलवन्त भी अन्धविश्वासी नहीं था।

मेजर ने अचपला की बात मान ली। उसने मुहम्मद सईद से कहा, "आपकी टोलियों में से किसीने आदिवासियों द्वारा बताए गए तीन विचित्र आदमी देखे थे ?"

"नहीं, लेकिन चौथी टोली के नायक खेमकरन का कहना है कि कल सारे दिन कोई उसका पीछा करता रहा।"

"खेमकरन का पीछा किसने किया ?" मेजर ने पूछा।

"एक आदिवासी ने। वह सीधे-सीधे तो उसका पीछा नहीं करता रहा, लेकिन जहां भी खेमकरन जाता, उसे वह आदिवासी अवश्य मिल जाता। खेमकरन का विचार है कि वह आदिवासी नहीं, कोई और है। और कल रात मेरा पीछा मेरे घर तक किया गया।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"आपका पीछा किसने किया ?" मेजर ने पूछा।

"एक मछेरिन ने। मैं शाम को आठ बजे दुकान बंद कर देता हूं। वह मछेरिन सिर पर टोकरी रखे मेरी दुकान के सामने आई। उसकी टोकरी में तीन-चार मछलियां पड़ी थीं। मेरी खुशामद करने लगी कि मैं उसकी बाकी मछलियां खरीद लूं। मुझे मालूम था कि घर के दिन-भर के खर्च के लिए गोश्त, मछली और सब्ज़ी सुबह को ही खरीद ली जाती है, लेकिन वह तो जैसे पंजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गई। उसने मेरे घर तक मेरा पीछा न छोड़ा, और जब मैं खाना खाने के बाद टहलने के लिए घर से निकला तो मैंने उस मछेरिन को अपने घर के आसपास मण्डलाते हुए पाया। मैं जानता हूं कि उसने ऐसा क्यों किया था।"

"उसने ऐसा क्यों किया था ?" मेजर ने पूछा।

"मेजर साहब, हमारी सात टोलियां, जो नियमित रूप से रात को शहर की निगरानी करती हैं, उनमें हर टोली में छ: सदस्य हैं। तीनों किलों के आगे बहने वाली नदी मुर्शिदाबाद तक जाती है। इस नदी के नीचे लोहे की एक सुरंग है। उस सुरंग के सम्बन्ध में मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। मेरे मकान से खेमकरन के मकान में होती हुई यह सुरंग पहले किले तक जाती है, जो वीरान पड़ा हुआ है। हम वहीं इकट्ठे होते हैं और अपनी योजना और अपना कार्यक्रम निर्धारित करते हैं। मुझे ऐसा संदेह है कि वे लोग यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि हम कहां इकट्ठे हुआ करते हैं। हम मछेरों और आदिवासियों के वेश में रहते हैं। हम लोग भटखण्डे कबीले के हथियारों के साथ-साथ कुछ आधुनिक हथियार भी इकट्ठे कर रहे हैं।"

"प्रश्न यह पदा होता है कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर पर किस प्रकार की तबाही आने वाली है ?" मालती बोली।

"इस तबाही की चर्चा रावेल दादा की पेंटिंग्स में है।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"आपको अत्यधिक सावधान रहना होगा।" मेजर ने कहा।

"हम बहुत सावधान हैं।" मुहम्मद सईद ने कहा।

८. भविष्यवाणी

मेजर अपने साथियों और अचपला के साथ मुहम्मद सईद की दुकान से चल पड़ा।

वे सब वहां से चलकर वेलापुर रोड के २२२ नम्बर मकान के सामने पहुंचे। उन्होंने डोरा और सुधीर को बड़ी मुस्तैदी से सर्वेश और सर्वीना की निगरानी करते हुए देखा।

सुधीर ने इशारा किया कि सर्वेश और सर्वीना अपने मकान में ही हैं। मेजर ने दरवाज़े पर दस्तक दी। सर्वेश ने दरवाज़ा खोला, "आप !"

"हां।"

"आइए।" सर्वेश ने कहा और दरवाज़े में से हट गया।

सर्वेश का मकान सामान्य रूप से सजा हुआ था। वे ड्राइंगरूम में जा बैठे।

"सर्वेश, तुम्हें मालूम है कि तुमने जो पेंटिंग्स स्टेनलेस स्टील के केस में बंद करके दो नम्बर किले की दीवार के नीचे गाड़ दी हैं, वे किसकी बनाई हुई हैं ?" मेजर ने पूछा।

"नहीं, मैं नहीं जानता।" सर्वेश ने कहा।

'वे पेंटिंग्स प्रसिद्ध आर्टिस्ट रावेलजी की सर्वश्रेष्ठ कृतियां हैं। मिस अचपला उनको खोलकर देखना चाहती हैं।" मेजर ने कहा।

"नहीं-नहीं। अगर एक अप्रैल से पहले किसीने उन पेंटिंग्स को खोलकर देखा तो वह चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर मर जाएगा। मैं मिस अचपला का खून अपनी गर्दन पर नहीं ले सकता।"

"मिस्टर सर्वेश, मैं अन्धविश्वासी और रूढ़िवादी नहीं हूं। अगर मेरी मृत्यु इसी प्रकार होनी निश्चित है तो हो जाए, लेकिन मैं उन पेंटिंग्स को देखूंगी ज़रूर।" अचपला ने दृढ़ता से कहा।

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं भी आधुनिक विचारों का हूं, लेकिन यह भी सच है कि कुछ चीज़ों के साथ श्राप जुड़े होते हैं। सारी ज़िम्मेदारी आपकी होगी। मैं स्टेनलेस स्टील का बक्स आपको किले की दीवार के नीचे से निकालकर दे दूंगा। आप अकेली उन पेंटिंग्स को देखेंगी। हम सब दूर रहेंगे।"

"तो चलिए, हम दूसरे किले में चलते हैं।" मेजर ने कहा।

"नहीं। यह समय उस ओर जाने का नहीं है। हमें कोई देख सकता है। उस किले में जाने का सबसे उचित समय शाम के सात बजे का है। शाम के बाद डर के मारे उधर कोई नहीं जाता।" सर्वेश बोला।

यह निश्चित हुआ कि शाम को वे लोग अलग-अलग नावों में सर करते हुए दूसरे किनारे पर चले जाएंगे। पहले अलग-अलग रहेंगे और फिर मिल जाएंगे।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वे अलग-अलग नावों में दो नम्बर किले के पीछे पहुंच गए। वह किला अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हो पाया था। उसके खम्भे और दीवारों की चमक-दमक अभी तक ज्यों की त्यों बनी हुई थी।

सर्वेश उनको एक महल के दूसरे कमरे में ले गया। उसने इसी कमरे की एक दीवार के नीचे स्टेनलेस स्टील का बक्स गाड़ा था।

"यह क्या ? इस कमरे के दो खम्भे गिरे पड़े हैं, और एक दीवार भी गिर पड़ी है !" सर्वेश ने आश्चर्य से कहा, "कल तक तो सारे खम्भे और दीवारें ठीकठाक थीं। खम्भे और दीवार गिराने का कोई औज़ार तक यहां नहीं है। यह मामला क्या है ?" सर्वेश के मुंह से निकला। उसके हाथ में टॉर्च थी, जिसकी रोशनी वह खम्भों और दीवारों पर डालर हा था।

मेजर ने सोनिया से टॉर्च ले ली और गिरे हुए खम्भों और दीवार पर रोशनी डालकर उन्हें ध्यान से देखने लगा। गिरे हुए खम्भों पर हथौड़े और छेनी का कहीं कोई निशान न था।

"ये इतने मोटे खम्भे इतनी जल्दी कैसे गिरा दिए गए? किले की दीवार भी कम से कम छः फुट चौड़ी है और पत्थर की है। ये पत्थर कैसे चकनाचूर हो गए?" मेजर बोला। फिर उसने सर्वेश से पूछा, "तुम कितने दिन पहले इस किले में आए थे?"

"परसों शाम को ही आया था। उस समय यह दीवारों और ये खम्भे बिलकुल ठीक हालत में थे। कल ही ये गिरे हैं।"

मेजर सोचने लगा। फिर मुस्कराया और उसके होंठ गोल हो गए। वह सीटी बजाने लगा।

"इस किले की यह दीवार और खम्भे लैसर से गिराए गए हैं।" मेजर ने कहा।

"लैसर?" सुधीर ने आश्चर्य से कहा।

"संगठित और केन्द्रित प्रकाश-किरणों द्वारा निर्मित लैसर से इस किले के इस हिस्से को गिरा दिया गया है। मेरा विचार है कि इस किले को या इन तीनों किलों को तोड़कर रावेल की पेंटिंग्स प्राप्त करने का निश्चय किया गया है।" मेजर ने कहा और फिर वह अचपला से बोला, "मिस अचपला, तुम सर्वेश के साथ जाओ। यह तुम्हें रावेल की पेंटिंग्स किले की दीवार के नीचे से निकालकर दे देंगे। तुम सारी पेंटिंग्स का अच्छी तरह अध्ययन करने के बाद उनके स्केच बना लो।"

अचपला सर्वेश के साथ चली गई। वह अपना स्केच बोर्ड साथ लेकर आई थी।

सर्वेश ने दीवार के नीचे से पेंटिंग्स निकालकर अचपला को दे दीं और पेंटिंग्स के ऊपर जड़ी प्लाईवुड उखाड़ने के लिए जम्बूर और प्लास भी दे दिए।

अचपला स्केच बनाने लगी और बाकी लोग निगरानी करते लगे। स्केच बनाने में अचपला को डेढ़ घण्टा लगा। उसने पेंटिंग्स के फ्रेमों पर फिर प्लाईवुड जड़ दी और सर्वेश को आवाज़ देकर

अपने पास बुला लिया।

सर्वेश ने पेंटिंग्स फिर स्टेनलेस स्टील के बक्स में बंद करके दीवार के नीचे गाड़ दीं।

सब लोग किले से निकल आए। और जब दिलाराम होटल में पहुंचे तो अचपला ने कहा, "मैंने पेंटिंग्स अच्छी तरह देख ली हैं और उनके स्केच भी बना लिए हैं। लोग इन पेंटिंग्स से जुड़े श्राप से डरते हैं, इसलिए मैं अकेली ही इनका गहराई से अध्ययन करूंगी। मैंने जो पेंटिंग्स देखी हैं, उनमें मैंने एक आश्चर्यजनक बात देखी है। पहली तीन पेंटिंग्स में फुंदनेदार टोपी, मखमली जाकेट और नीली पतलून पहने हुए तीन आदमी हैं, जो पैरों में सफेद चमड़े के बूट पहने हुए थे। उनके हाथों में कड़ाबीनें थीं, लेकिन मेरे स्केच बनाते-बनाते उनकी तस्वीर के स्थान पर केवल उनके खाके रह गए हैं और वे इन खाकों में से अपने चेहरे, अपनी वर्दी और कड़ाबीनों सहित गायब हो चुके हैं। यह बात मेरी समझ में बिलकुल नहीं आई।"

"मिस अचपला, आप अपने स्केच लेकर मेरे बेडरूम में चलिए। मैं आपके साथ मिलकर उन स्केचों को देखूंगा। मुझे कोई वहम नहीं है।" मेजर बोला।

"मेजर साहब !" सोनिया ने डरते हुए मेजर को रोकने की कोशिश की।

"डरने की कोई बात नहीं है सोनिया !" मेजर ने सोनिया को तसल्ली दी और अचपला के बनाए हुए स्केच उठाकर अपने बेडरूम में चला गया।

"समय से पहले पेंटिंग्स देख ली गईं और इनके स्केच भी बना लिए गए। यह अच्छा नहीं हुआ।" सर्वेश बोला।

सब लोग सर्वेश का मुंह तकने लगे।

मेजर के बेडरूम में पहुंचकर अचपला ने पेंटिंग्स के स्केच एक मेज़ पर क्रम से रख दिएं।

मेजर ने पहले तीन स्केचों की ओर देखा। उनमें सचमुच खाके रह गए थे। जिन लोगों की तस्वीरें थीं, वे उनमें नहीं थे।

"वे लोग इन खाकों में से क्यों निकल गए ? उनकी तस्वी स्वयं कैसे हट गईं ?" मेजर ने कहा और झुककर देखने लगा। उन तीनों स्केचों के नीचे सन् १७६१ से लेकर सन् १८३१ लिखा हुआ था।

मेजर ने पूछा, "मिस अचपला, जिस समय तुम इन पेंटिंग्स के स्केच बना रही थीं, क्या उस समय इन खाकों के अन्दर वास्तविक तस्वीरें थीं ?"

"जी हां, लेकिन मेरे स्केच बनाते-बनाते इन खाकों के अन्दर एक चिकना-सा पदार्थ उभर आया, जिसकी गंध स्पिरिट जैसी थी। वह पदार्थ खाकों पर फैलता चला गया और वे तस्वीरें गायब हो गईं।"

मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

फिर वह अगले स्केच देखने लगा। इन तीन स्केचों में ती नौजवान थे। उनकी हथेलियों पर चांदी के मोमबत्ती स्टैण्ड थे उनमें मोमबत्तियां जल रही थीं। वे तीनों नौजवान ईसामसी की मूर्ति के आगे सिर झुकाए खड़े थे, जैसे वे कोई शपथ ले र हों। तीनों तस्वीरें धुंधली-सी थीं।

"तुमने जब इन तीनों पेंटिंग्स के स्केच बनाए तो क्या उ तीनों पेंटिंग्स में भी इन तीनों नौजवानों की तस्वीरें धुंधली थीं?

"जी हां।" अचपला ने कहा।

उन तीनों स्केचों के नीचे १८३२ से १८६२ का सन् लिख हुआ था।

"इन स्केचों के नीचे जो ईस्वी सन् लिखे हुए हैं, क्या तु उनका अर्थ बता सकती हो ?"

"देखिए मेजर साहब, ये बारह की बारह पेंटिंग्स रावेल के हाथ की बनी हुई हैं। यह तो हो नहीं सकता कि उन्होंने पेंटिंग्स सन् १७६१ में बनाई हों, क्योंकि उनकी उम्र केवल ७ वर्ष थी। उन्होंने ये सन् किसी विशेष मतलब से लिखे हैं।"

मेजर आगे के स्केच देखने लगा। वे भी तीन नौजवानों स्केच थे। वे मुक्केबाज़ों की तरह मुक्का ताने खड़े थे। उन

नीचे सन् १९१७ लिखा हुआ था।

शेष तीन पेंटिंग्स के स्केच रेखाचित्र और छोटे जानवरों के चित्रों से भरे हुए थे।

"अचपला, ये तीन स्केच कैसे हैं?" मेजर ने पूछा।

"जहां तक मैं समझती हूं, इन तीनों पेंटिंग्स में लेटिन भाषा को रेखाचित्रों और जानवरों की सूरत में लिखा गया है। मेरे विचार से अगर इस भाषा के किसी विद्वान को ये स्केच दिखाए जाएं तो इनका अभिप्राय और अर्थ स्पष्ट हो सकता है। मैं रावेल दादा के मित्र ग्रेवाल के पास जाना चाहती हूं। लेटिन भाषा में रेखाचित्रों और जानवरों की सूरत में बनी पेंटिंग्स के स्केच लेकर। मिस्टर ग्रेवाल ने रावेल दादा के साथ दस वर्ष काम किया था। इसके बाद उन्होंने दूसरा व्यवसाय शुरू कर दिया था। आजकल वे रिटायर होकर वज़ीरगंज में आराम की ज़िन्दगी बिता रहे हैं। वे इन स्केचों में लेटिन भाषा के रेखाचित्रों और जानवरों की तस्वीरों को ज़रूर समझ लेंगे। आप सुधीर को मेरे साथ भेज दीजिए।"

मेजर ने सुधीर को अचपला के साथ भेज दिया।

वज़ीरगंज में मिस्टर ग्रेवाल का एक छोटा-सा बंगला था। उस बंगले के पास पहुंचकर अचपला ने कहा, "सुधीर, तुम बंगले के बाहर रहकर निगरानी करो। मैं अधिक देर नहीं लगाऊंगी।"

सुधीर बाहर रहकर बंगले की निगरानी करने लगा।

अचपला ने बंगले के सदर दरवाज़े पर दस्तक दी। एक मिनट बाद दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़े में सफेद बालों और सफेद मूंछों वाला एक आदमी दिखाई दिया, जिसने गाउन पहन रखा था। उसने अचपला को देखते ही उसे गले से लगा लिया और बोला, "कब आईं? रावेलजी कैसे हैं? अपना काम कर रहे हैं न?"

"उनका काम समाप्त हो चुका है।" अचपला बोली।

"उनका काम कैसे समाप्त हो सकता है! आर्टिस्ट तो अपनी

अन्तिम सांस तक अपना काम करता रहता है।"

"उनका काम उनकी अन्तिम सांस के साथ ही समाप्त हो गया।"

"मिस्टर रावेल चल बसे ?" ग्रेवाल ने दुःख और शोक-भरे स्वर में कहा। फिर एक पल रुककर बोले, "अंदर आ जाओ अचपला ! तुम बहुत दुखद समाचार लाई हो। मेरा एक ही तो मित्र था—अद्वितीय कलाकार।"

अचपला और ग्रेवाल अन्दर चले गए। दोनों ड्राइंगरूम में जा बैठे।

"अंकल, रावेल दादा की किसीने हत्या कर दी।" अचपला बोली।

"हत्या ?" ग्रेवाल के मुंह से निकला।

अचपला ने रावेल दादा की हत्या के सम्बन्ध में ग्रेवाल को विस्तार से बताया।

"वही होकर रहा, जिसकी आशंका आज से ढाई वर्ष पहले मेरे मित्र रावेल को हुई थी।"

"ढाई साल पहले उन्हें कोई आशंका हुई थी ?" अचपला ने पूछा।

"तुम्हें याद होगा अचपला, आज से ढाई साल पहले रावेल जी एक महीने के लिए लन्दन गए थे। वहां से वह एक भयानक अफवाह सुनकर आए थे। उन्होंने बस इतना ही इशारा किया था कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर को नष्ट करने की योजना बनाई जा रही है। इसके बाद उन्होंने अपनी जन्मभूमि को सर्वनाश से बचाने के लिए गोपनीय रूप से बारह पेंटिंग्स तैयार कीं। अचपला, तुम्हारे हाथ में क्या है ?"

"रावेल दादा की बनाई हुई तीन पेंटिंग्स के स्केच हैं। इनपर रेखाचित्रों और जानवरों की सूरत में लेटिन में कुछ लिखा है। आप रावेल दादा के साथ वर्षों रहे हैं। मुझे आशा है कि आप इन स्केचों को पढ़ सकेंगे। मैं इसीलिए आपके पास आई हूं।" अचपला ने कहा और अपनी अलबम में से तीनों स्केच निकालकर ग्रेवाल के

सामने रख दिए।

ग्रेवाल ने मेज़ पर से ऐनक उठाकर लगाई और रेखाचित्रों में लिखी हुई लेटिन भाषा पढ़ने लगे। उनके चेहरे के भाव बदल गए। कुछ मिनट के बाद ग्रेवाल ने कहा, "आने वाली एक भयानक घटना का विवरण है।"

"भयानक घटना ?" अचपला के मुंह से निकला।

"हां।"

सुधीर बाहर खड़ा था। अचानक उसकी नज़र ग्रेवाल के बंगले की छत पर पड़ी। उस छत पर एक बड़ा-सा पत्थर आकर गिरा। बंगले के अन्दर ज़ोरदार धमाका हुआ, जैसे बंगले की छत गिर पड़ी हो। इसके साथ ही दो चीखें सुनाई दीं।

सुधीर दो मिनट तो इस उलझन में पड़ा रहा कि वह बंगले के पीछे दौड़े और यह देखे कि छत पर पत्थर किसने फेंका है या बंगले के अन्दर जाए, अचपला और ग्रेवाल की जान बचाने के लिए। उसने अचपला और ग्रेवाल की चीखें सुनी थीं। अन्त में उसने यही निश्चय किया कि उसे पहले दो जानें बचानी चाहिए।

धमाके की आवाज़ सुनकर कुछ और लोग भी वहां पहुंच गए।

ग्रेवाल के बंगले के ड्राइंगरूम की छत का मलबा ड्राइंगरूम के दरवाज़े तक चला आया था। लोग आपस में बातें करने लगे, "अचानक छत कैसे गिर पड़ी ! ग्रेवालजी के बंगले की छतें तो लोहे और सीमेण्ट की बनी हुई थीं।"

सुधीर ने पूछा, "क्या किसीने छत पर पत्थर फेंकने वाले को देखा था ?"

"एक ट्रक पिछली गली से गुज़रा था। उसमें एक मज़दूर ने एक बड़ा-सा पत्थर उठा रखा था। उसीने उचककर वह पत्थर छत पर फेंका था।" एक आदमी बोला।

सुधीर दरवाज़े में पड़ा मलबा उठाकर फेंकने लगा तो और लोग भी उसकी सहायता करने लगे। पन्द्रह-बीस मिनट की कोशिश के बाद जब थोड़ा-सा मलबा हट गया तो एक कराह-सी सुनाई दी। यह अचपला की कराह थी। सुधीर ने जल्दी-जल्दी थोड़ा-सा

मलबा और हटाया। उसकी नज़र अचपला पर पड़ी। वह पिचक गई थी। उसकी नाक जैसे उसके मुंह में धंस गई थी। उसके होंठों से खून निकल रहा था। अचपला ने एक हिचकी ली और फिर उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

"अचपला! अचपला!" सुधीर चीख उठा।

अचपला तो इस दुनिया से दूर जा चुकी थी—बहुत दूर—जहां से कभी कोई लौटकर नहीं आता।

और मलबा हटाया गया तो लोगों ने देखा, ग्रेवाल कुर्सी पर बैठे थे। उनका सिर फटा हुआ था और गर्दन पिचककर कंधों में धंस गई थी। जीभ बाहर निकल आई थी और आंखें शीशे की तरह चमक रही थीं।

सुधीर ने मन ही मन कहा, 'रावेलजी की भविष्यवाणी सच निकली। उन्होंने सच ही कहा था कि एक अप्रैल से पहले जो भी इन पेंटिंग्स को देखेगा, वह चौबीस घण्टे के अन्दर मर जाएगा।'

अचपला के बनाए हुए स्केच मेज़ पर पड़े थे। वे फटे नहीं थे सुधीर ने स्केच उठा लिए।

९ सांवली औरत

सुधीर ने लोगों से पूछा, "क्या यहां पास में किसीके यहां फोन है? मैं पुलिस स्टेशन फोन करना चाहता हूं।"

"दो मकान छोड़कर तीसरा मकान डॉक्टर का है। उनके यहां फोन है।" एक आदमी ने कहा और सुधीर को साथ लेकर चल दिया।

सुधीर डॉक्टर के मकान में पहुंचा। डॉक्टर का क्लीनिक उसके घर में ही था।

"नमस्ते डॉक्टर साहब, मेरा नाम सुधीर है। मैं मेजर बलवन्त का असिस्टेण्ट हूं। शायद आपने उनका नाम सुना हो। हमारे देश के वह विख्यात जासूस है। आपके पड़ोस में मिस्टर ग्रेवाल के मकान की छत गिर पड़ी है। मिस्टर ग्रेवाल और मिस अचपला नामकी

एक लड़की की छत से दबकर मृत्यु हो गई है। मैं पुलिस स्टेशन और मेजर बलवन्त को फोन करना चाहता हूं।"

"मैंने मेजर बलवन्त का नाम सुना है। उनके कारनामे मैं बड़े शौक से पढ़ता हूं। आप बड़ी खुशी से फोन कीजिए। धमाका तो मैंने भी सुना था, लेकिन मैं उस समय एक मरीज़ को देख रहा था।"

सुधीर ने सबसे पहले मेजर बलवन्त का फोन-नम्बर मिलाया और ज़रा रुककर बोला, "मेजर साहब !"

"सुधीर, तुम ? क्या मिस्टर ग्रेवाल ने वह जटिल इबारत पढ़ ली ?"

"कहां मेजर साहब, कलाकार रावेलजी की भविष्यवाणी सत्य निकली।" सुधीर ने कहा।

"क्या मतलब ? भविष्यवाणियों पर आजकल कौन विश्वास करता है ?" मेजर बोला।

"यह भविष्यवाणी तो सच्ची निकली। मिस अचपला मिस्टर ग्रेवाल से मिलीं। वे उन तीन स्केचों की इबारत उनसे पढ़वा रही थीं कि मिस्टर ग्रेवाल के बंगले के ड्राइंगरूम की छत गिर पड़ी। छत के नीचे दबकर मिस अचपला और मिस्टर ग्रेवाल की मृत्यु हो गई। लेकिन छत गिरने की दुर्घटना में एक घटना और भी शामिल है।"

"वह क्या ?"

"मिस्टर ग्रेवाल के बंगले की पिछली गली से एक ट्रक गुज़रा था। लोगों ने बताया है कि उस ट्रक में से एक मज़दूर ने मिस्टर ग्रेवाल के बंगले की छत पर एक बड़ा-सा पत्थर फेंका और मिस्टर ग्रेवाल के ड्राइंगरूम की छत गिर पड़ी।"

"आखिर वह बड़ा-सा पत्थर कितना भारी होगा, जिसे छत पर फेंका जा सकता था और जिसके बोझ से छत गिर सकती थी ?"

"अधिक से अधिक बीस किलो का होगा।"

"पन्द्रह-बीस किलो वज़न के पत्थर से छत नहीं गिर सकती।

खैर, हम आ रहे हैं।"

"आप पुलिस स्टेशन को भी फोन कर दीजिए।"

"इंस्पेक्टर सक्सेना बम्बई से आ गए हैं। मैंने बिहार के आई० जी० से कहकर उन्हें डेपुटेशन पर यहां बुलवा लिया है। मैं उनको अभी फोन किए देता हूं।" मेजर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

आधे घण्टे में मेजर, उसके साथी, इंस्पेक्टर सक्सेना और उनका स्टाफ वज़ीरगंज में ग्रेवाल के बंगले में पहुंच गए। बंगले में और बंगले के बाहर लोगों की भीड़ लगी हुई थी।

बंगले में पहुंचकर मेजर ने इंस्पेक्टर सक्सेना से कहा, "सबसे पहले मलबे के नीचे से लाशें निकालनी होंगी। इसके बाद छत के साबुत टुकड़े सावधानी से निकालने होंगे, ताकि उनके और टुकड़े न होने पाएं।"

इंस्पेक्टर ने अपने दो आदमियों को आदेश दिया कि वे कहीं से चार मज़दूरों को ले आएं, जिनके पास फावड़े हों।

पन्द्रह-बीस मिनट में चार मज़दूर आ गए। उन्होंने बड़ी सावधानी से पहले लाशें निकालीं और फिर मेजर की हिदायत के अनुसार छत के बड़े-बड़े टुकड़े निकालकर एक ओर रख दिए।

मेजर ने मज़दूरों को चालीस रुपये दिए। मज़दूर खुश होकर चले गए।

दोनों लाशें बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गई थीं और पिचक गई थीं। उनका अच्छी तरह निरीक्षण करने के बाद मेजर छत के टुकड़ों को देखने लगा। सहसा उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"आपको क्या मालूम हुआ?" सोनिया ने पूछा।

"बहुत कुछ मालूम हो गया। मिस्टर ग्रेवाल के ड्राइंगरूम की छत चारों ओर से लैसर से काट दी गई थी। बस, अटकी हुई छोड़ दी गई थी। जैसे ही पन्द्रह-बीस किलो भारी पत्थर फेंका गया, छत नीचे आ गिरी।"

"इसका मतलब है कि कोई पहले ही छत को गिराने का इन्तज़ाम कर गया था !" सुधीर बोला।

"हां। जिस किसीने भी ऐसा किया, वह न केवल कलाकार रावेल की पेंटिंग्स के स्केच अचपला को बनाते हुए देख चुका था, वल्कि वह यह भी जानता था कि मिस्टर ग्रेवाल के सिवा उस जटिल इबारत को कोई और नहीं पढ़ सकेगा। उसे विश्वास था कि अचपला मिस्टर ग्रेवाल के पास ज़रूर आएगी। अचपला और सुधीर का बड़ी होशियारी से पीछा किया गया और ट्रक के किसी मज़दूर से मिस्टर ग्रेवाल के बंगले की छत पर पत्थर फिकवा दिया गया। इंस्पेक्टर सक्सेना, अपने दो सार्जेण्ट फौरन पिछली गली में भेजिए। वे यह पता करें कि वह ट्रक किस रंग का था। उसका नम्बर क्या था। किसी तरह भी हो, उस ट्रक की तलाश कराइए और अगर ट्रक मिल जाए तो उसके ड्राइवर और उन मज़दूरों को यहां बुलवाइए, जो ट्रक पर उस समय सवार थे।"

इंस्पेक्टर सक्सेना ने अपने दो सार्जेण्ट ट्रक की तलाश में भेज दिए। मेजर उन सार्जेण्टों के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर बाद मेजर ने कहा, "यह ठीक है कि आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी किसी तरह सही हो गई, लेकिन इस घटना ने दुश्मन की तत्परता और होशियारी का प्रमाण दे दिया। वह नहीं चाहता था कि उन तीन पेंटिंग्स पर लिखी सांकेतिक इबारत कोई पढ़ सके। इसलिए उसने उस इबारत को पढ़ने वाले और उस इबारत को पढ़वाने वाले दोनों को ही समाप्त कर दिया। मुझे आशंका है कि दूसरे किले की दीवार के नीचे गड़ी हुई रावेलजी की पेंटिंग्स निकाल ली गई हैं। हमें तत्काल इस बात की जांच करनी होगी। इंस्पेक्टर साहब, आप यहां सार्जेण्टों की प्रतीक्षा कीजिए। हम अभी घण्टे-भर में लौट आएंगे। आओ सुधीर, तुम मेरे साथ चलो।"

मेजर और सुधीर पन्द्रह मिनट में नदी के किनारे पहुंच गए। उन्होंने एक नाव किराये पर ले ली और नदी के पार दूसरे किले में पहुंच गए।

सुधीर और मेजर हैरान रह गए। किले की तीसरी दीवार भी गिरा दी गई थी और उसके नीचे गड़ी रावेलजी की पेंटिंग्स गायब थीं। वे उस स्थान पर झांककर देख रहे थे, जहां पेंटिंग्स गाड़ी गई थीं।

अचानक मेजर को एक तेज़ चमक दिखाई दी। उसने जल्दी से कहा, "सुधीर, सामने वाली पहाड़ी की ओर दौड़ो। लैसर की किरणें!" और फिर सुधीर का हाथ पकड़कर वह बगटुट भाग निकला। लैसर की किरणें उनका पीछा कर रही थीं, लेकिन वे उसकी पहुंच से दूर निकल गए थे।

"ओह, अगर एक मिनट की भी देर हो जाती तो लैसर की किरणें हम दोनों के बदन के टुकड़े-टुकड़े कर देतीं। दुश्मन बहुत ही भयंकर हथियार इस्तेमाल कर रहा है।"

सुधीर भी सहमा हुआ यही सोच रहा था।

वे पहाड़ी से उतरकर नदी के किनारे पहुंच गए और एक नाव में सवार होकर दूसरे किनारे पर आ गए और कार में बैठकर वज़ीरगंज की ओर चल पड़े।

जब वे वज़ीरगंज पहुंचे तो उन्होंने मिस्टर ग्रेवाल के बंगले के लॉन में पीले और हरे रंग का एक ट्रक खड़ा देखा। ट्रक का ड्राइवर और मज़दूर ट्रक के पास ही खड़े थे।

मेजर और सुधीर कार से निकलकर ट्रक की ओर चल दिए।

मेजर ने मज़दूरों से पूछा, "तुममें से इस बंगले की छत पर पत्थर किसने फेंका था?"

"दीनू ने।" एक मज़दूर ने बताया और दीनू की ओर इशारा कर दिया।

"दीनू, तुमने छत पर पत्थर क्यों फेंका?" मेजर ने पूछा।

"मज़दूर को तो मज़दूरी चाहिए साहब! और अगर मज़दूरी चोखी मिले तो मज़दूर कोई भी काम कर देता है।" दीनू ने कहा।

"तो तुम्हें पत्थर फेंकने की चोखी मज़दूरी मिली थी?"

"सौ का नोट।" दीनू बोला, "आज अपने दोस्तों को डटकर शराब पिलाऊंगा।"

"दीनू, क्या तुम जानते हो कि तुमने इस बंगले की छत पर पत्थर फेंककर दो आदमियों की जान ले ली है? तुमने छत गिरती हुई नहीं सुनी थी?"

"सुनी थी। मैंने समझा था, यह मकान खाली पड़ा है।"

"छत पर पत्थर फेंकने के लिए तुम्हें सौ रुपये किसने दिए थे?"

"एक औरत ने। लम्बी-तड़ंगी, सांवली-सलौनी। नाक-नक्श बहुत तीखे थे उसके। बाल घुंघराले थे। वह मद्रासी साड़ी पहने हुए थी। नाक में चांदी की लौंग थी। हाथ में सफेद हैण्डबैग था। हम ट्रक में पत्थर लाद रहे थे। वह औरत मेरे पास आई और बोली, 'ये पत्थर कहां ले जा रहे हो?' मैंने कहा, 'वज़ीरगंज।' यह सुनकर वह बहुत खुश हुई और बोली, 'एक काम कर दोगे तो तुम्हें सौ रुपये मिलेंगे, वह भी पेशगी, लेकिन अगर तुमने काम न किया तो सज़ा भी मिलेगी।' मैंने पूछा, 'सौ रुपये किस काम के मिलेंगे?' वह बोली, 'मैं तुम्हें वज़ीरगंज का नक्शा देती हूं। वज़ीरगंज की सातवीं गली का।' यह कहकर उसने अपने हैण्डबैग में से एक कागज़ निकालकर मुझे दिखाया। मैं वज़ीरगंज के इलाके को अच्छी तरह जानता हूं। मैंने कहा, 'हमें इस सातवीं गली से ही होकर ग्यारहवीं गली में पत्थर डालने के लिए जाना है।' उसने पूछा, 'तुम जब सातवीं गली में मुड़ोगे तो दूसरे मकान की छत पर कम से कम पन्द्रह सेर भारी एक पत्थर फेंक सकोगे?' मैंने कहा, 'ट्रक में खड़े होकर पन्द्रह सेर भारी पत्थर छत पर फेंकना कौन-सा मुश्किल काम है!' उस औरत ने मुझे सौ रुपये का नोट दे दिया और बोली, 'यह मत भूलना, हमारे आदमी तुम्हारी निगरानी करते रहेंगे।' मैंने कहा, 'आप फिकर मत कीजिए।' और मैंने उस औरत की इच्छा के अनुसार उसका काम कर दिया।"

"दीनू, तुमने हत्या में उस औरत की सहायता की है, इस-

लिए तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।" इंस्पेक्टर ने कहा।

सार्जेण्ट ने आगे बढ़कर दीनू को अपने कब्ज़े में ले लिया।

इंस्पेक्टर सक्सेना और उसका स्टाफ आवश्यक कार्रवाई करने में व्यस्त हो गया।

मेजर और उसके साथी अपने होटल की ओर चल पड़े।

"यह कैसा केस है ? लगता है, हत्यारा लहू का प्यासा है।" मालती ने कहा।

"हत्यारे के पास एक खतरनाक हथियार है। मैं और सुधीर बड़ी मुश्किल से बचे हैं।" मेजर बोला।

"हां, बस बाल-बाल बच गए। जिसके पास लैसर था, हम उसे देख नहीं पाए।" सुधीर बोला।

"हमें उस लैसर को नष्ट करना होगा, लेकिन अपनी जान खतरे में डालनी पड़ेगी। दो नम्बर किले की एक दीवार अभी साबुत खड़ी है। उसे भी गिराया जाएगा। शायद आज की रात को ही। हमारी पूरी टीम बुलेट-प्रूफ जाकेट पहनकर आज रात बड़ी सावधानी से उस किले के पास पहुंचेगी। दुश्मन के पास लैसर का सर्वनाशी हथियार है। वह सैकड़ों को पलक झपकते समाप्त कर सकता है। मुर्शिदाबाद और मुंगेर को तबाह कर सकता है। इस इलाके के सारे सौन्दर्य को धूल में मिला सकता है।"

"हमें क्या करना होगा ?" मालती ने पूछा।

"हमें हर सूरत में लैसर को नष्ट करना होगा। दो फावड़ों का इंतज़ाम करके हमें दो नम्बर किले की तीसरी दीवार के पीछे वाली पहाड़ी पर पहुंचना होगा। हम सब एकसाथ नहीं जाएंगे। हम पर्यटकों के मेकअप में जाएंगे और उस पहाड़ी पर इकट्ठे हो जाएंगे। उस पहाड़ी में खोह बनाकर मोर्चा लगा लेंगे। अपने साथ दो राइफलें और चार हथगोले ले चलेंगे, ताकि लैसर वाला किसी भी तरह बचकर न जा सके। अगर उसके साथी होंगे तो हम उन्हें संभाल लेंगे।" मेजर ने योजना बनाई।

शाम के पौने सात बजे थे। शाम काफी गहरी हो गई थी।

मेजर और उसके साथी पर्यटकों के मेकअप में दो नम्बर किले की ओर चल पड़े। सुधीर और सुनील के कंधों पर किट-बैग लटक रहे थे, जिनमें फावड़े थे।

नदी पार करके वे पहाड़ी पर पहुंच गए। उन्होंने एक घण्टे में मोर्चा जमा लिया।

उन्हें काफी देर इन्तज़ार करना पड़ा। फिर उन्होंने तीन साये देखे। वे दो नम्बर किले में पहुंच गए। उनमें से एक आदमी का कद काफी लम्बा था। वह लम्बा कोट और तंग पतलून पहने हुए था। उसकी दाढ़ी-मूंछें बहुत घनी थीं। उसके सिर पर ऐसी फैल्ट थी, जो उसकी आंखों तक पहुंच रही थी। उसके हाथ में लकड़ी का एक लम्बा बक्स था।

वह एक पत्थर पर बैठ गया और उसने अपने साथियों को इशारा किया। उसके दोनों साथी चौथी दीवार के पीछे चले गए। यह दीवार अभी तक खड़ी थी।

उस आदमी ने लकड़ी का लम्बा बक्स खोलकर उसमें से लम्बी दूरबीन जैसी कोई चीज़ निकाली। उसके बटन एडजस्ट किए और फिर दीवार की ओर कर दी। उस दूरबीन जैसी लम्बी चीज़ से तेज़ किरणें निकलने लगीं। वे किरणें जिस ओर पड़तीं, दीवार के पत्थर कटकर नीचे आ गिरते।

"इस समय वह अपने काम में व्यस्त है।" मेजर ने काना-फूसी के अंदाज़ में कहा और फिर डोरा और मालती से बोला, "तुम राइफलें संभाल लो। ज्योंही मैं और सुधीर उस आदमी पर हथगोले फेंकें, तुम अपनी राइफल से दो गोलियां चलाना। हम एक मिनट के बाद दो हथगोले और फेंकेंगे। तुम फिर दो गोलियां चलाना, लेकिन उस समय तुम्हें फायरिंग नहीं करनी होगी। हां, अगर उसके साथी दिखाई दें तो तुम उनपर गोलियां चला देना।" यह कहकर मेजर ने सुधीर को इशारा किया और दोनों रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे।

वे दोनों ऐसे स्थान पर पहुंच गए, जहां से उस आदमी पर हथगोले फेंक सकते थे। सुधीर और मेजर की बांहें लहराईं और मालती तथा डोरा ने राइफलें तान लीं। मेज़र और सुधीर ने जैसे ही उस आदमी पर हथगोले फेंके, डोरा और मालती की राइफलों से दो गोलियां निकलीं। एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी। मेजर और सुधीर ने तत्काल दो हथगोले और फेंके। दीवार के पीछे दो साये उभरे तो मालती और डोरा ने उनपर गोलियां चला दीं। एक साया दीवार के पीछे हट गया, लेकिन दूसरा ज़ोर से चीख उठा। मेजर और उसके साथी चौथी दीवार की ओर भाग छूटे।

सोनिया ने टॉर्च जलाई।

वह आदमी, जो लम्बा कोट पहने हुए था और जिसके हाथ में दूरबीन जैसा लैसर था, चित पड़ा हुआ था। उसका बदन छलनी हो गया था। सारे शरीर से खून के फव्वारे छूट रहे थे। लैसर उसके हाथ से छूट चुका था, लेकिन लैसर को बहुत कम नुकसान पहुंचा था। मेजर ने लैसर उठाकर बक्स में बन्द कर दिया। डोरा और मालती दीवार की उस दरार के पास पहुंच गईं, जहां उन्होंने एक साये को चीखकर गिरते हुए देखा था।

"अरे, यह तो कोई लम्बे कद की औरत है। सांवली-सलौनी!" मालती बोली, "वही औरत, जिसने दीनू को सौ रुपये देकर ग्रेवाल के बंगले की छत पर पत्थर फिंकवाया था। तीसरा साया कहीं दिखाई नहीं दे रहा। शायद वह भाग गया।"

मेजर ने कहा, "इन दोनों लाशों को घसीटकर हमें नावों तक ले जाना होगा। नावों को दूसरे किनारे पर ले जाकर इन लाशों को कारों में रखकर पुलिस स्टेशन पहुंचा देंगे। वह सर्वनाशी हथियार हमारे कब्ज़े में आ गया है।"

वे लाशें घसीटकर नदी के दूसरे किनारे पर ले गए। मेजर ने उस औरत की लाश देखी। राइफल की गोली उस औरत की गर्दन के नीचे छाती में लगी थी। छाती की कुछ खाल उधड़ गई थी, और उधड़ी हुई खाल बहुत ही सफेद थी।

"यह क्या? यह औरत सांवली नहीं है। यह तो यूरोपियन

है।" मेजर बोला।

यह सुनकर सब दंग रह गए।

लाशें कारों की पिछली सीटों पर डाल दी गईं और कारें पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़ीं।

१०. लाल सिपाही

"ये लाशें कहां से ले आए मेजर साहब ?" इंस्पेक्टर सक्सेना ने दो लाशें देखकर पूछा।

"इत्मीनान से बैठकर सारी कहानी सुनाएंगे इंस्पेक्टर साहब !" मेजर ने कहा।

सब लोग बैठ गए तो मेजर ने बताया कि उसे कैसे खयाल आया कि लैसर के द्वारा किले को गिराने वाले व्यक्ति को घेरा जा सकता है और फिर उसने विस्तार से सारी कहानी सुना दी।

"मेजर साहब, इसका मतलब है कि दुश्मन अब कुछ दिन खामोश रहेगा और नई कुमुक के पहुंचने की प्रतीक्षा करेगा या फिर बौखलाकर कोई हरकत कर बैठेगा।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"यह हमें देखना होगा।" मेजर बोला।

"एक बात समझ में नहीं आती। किलों को नष्ट करने का उद्देश्य क्या हो सकता है ?" इंस्पेक्टर ने कहा।

"अभी तक यह रहस्य बना हुआ है। आर्टिस्ट रावेल को यह रहस्य मालूम था और वह इस रहस्य को खोलने की स्थिति में आ गए थे, लेकिन उनकी ज़बान हमेशा के लिए बंद कर दी गई। रावेल के दो राज़दार साथी थे—अरविन्द दीक्षित और गायकवाड़। उन्हें भी मार डाला गया। यह कोई ऐसा ज़बर्दस्त रहस्य है, जिसे छिपाने के लिए दुश्मन पूरा ज़ोर लगा रहा है। अचपला को अधिक मालूम नहीं था, लेकिन ग्रेवाल इस रहस्य को पढ़ सकता था, लेकिन उन्हें भी समाप्त कर दिया गया। इंस्पेक्टर साहब, हमारे सामने इस समय सबसे आवश्यक काम यह है कि अचपला के बनाए हुए स्केच किसी तरह पढ़वाए जाएं। वे तीनों स्केच सुधीर

ने उठा लिए थे। मैं आपको भिजवा दूंगा। कलकत्ता, पटना या इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेज़ी का कोई अंग्रेज़ प्रोफेसर होगा। आप उससे इन स्केचों की इबारत पढ़वाइए। इन तीनों स्केचों को अत्यधिक गोपनीय रखा जाए।"

"अच्छी बात है। मैं वे स्केच आपसे ले जाऊंगा।" इंस्पेक्टर बोला।

"इंस्पेक्टर साहब, हम थोड़ी देर और बैठते हैं। आप जल्दी से इस सांवली औरत की लाश धुलवा दीजिए।"

इंस्पेक्टर ने सार्जेण्ट को बुलाकर कहा, "सार्जेण्ट, इस सांवली औरत की लाश फौरन मुर्दाघर में भिजवा दो और वहां के कर्मचारियों से कहो कि वे इस लाश को जल्द से जल्द धो डालें और फिर हमें सूचना दे दें।"

सार्जेण्ट चला गया।

मेजर और उसके साथियों को आधे घण्टे और रुकना पड़ा। आधे घण्टे के बाद सार्जेण्ट ने आकर सूचना दी कि लाश धो दी गई है।

मेजर और उसके साथी इंस्पेक्टर सक्सेना के साथ मुर्दाघर में चले गए।

एक धुली हुई लाश पत्थर की एक सिल पर रखी थी।

"अंग्रेज़ औरत!" सुधीर के मुंह से निकला।

"यह किस्सा क्या है? लैसर का प्रयोग करने वाला भी अंग्रेज़ है। मुर्शिदाबाद और मुंगेर को तबाह करने में इनका उद्देश्य क्या है?" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से कहा।

"मैं कह तो रहा हूं कि यह रहस्य आर्टिस्ट रावेल को मालूम था, जो उनकी अन्तिम तीन पेंटिंग्स के स्केचों में छिपा हुआ है।" मेजर बोला।

"मैं थोड़ी देर में आकर आपसे स्केच ले जाऊंगा।" इंस्पेक्टर ने कहा।

मेजर अपने साथियों के साथ दिलाराम होटल की ओर चल दिया। वह खुश था कि उसने तत्काल अस्थायी रूप से दुश्मन

की सरगर्मियों पर बांध लगा दिया है और दुश्मन का सबसे खतरनाक हथियार छीन लिया है।

दिलाराम होटल पहुंचकर मेजर ने कहा, "आज की सफलता की खुशी में व्हिस्की हो जाए।"

व्हिस्की पीते समय वे इस केस पर विचार-विनिमय करते रहे और फिर खाना खाने के बाद सोने के लिए चले गए।

सोनिया ने बेडरूम में पहुंचकर मेजर को पलंग पर बैठा लिया और उसके पास बैठकर अपना सिर उसकी गोद में रख दिया। फिर उसके गाल सहलाते हुए बोली, "आप विख्यात जासूस ही नहीं, बल्कि बहुत बड़े एडवेंचर-प्रेमी भी हैं।"

"थ्रिल और एडवेंचर जासूसी का अभिन्न अंग हैं सोनिया!" मेजर ने कहा और सोनिया के होंठों पर अपने होंठ रख दिए।

ठीक उसी समय मेजर के सूट के दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"मेरा विचार है, इंस्पेक्टर सक्सेना होगा। वह स्केच लेने आया होगा।" मेजर ने कहा और जाकर सूट का दरवाज़ा खोल दिया। दस्तक इंस्पेक्टर सक्सेना ने ही दी थी।

"क्षमा कीजिएगा, लूटपाट का एक केस आ गया था, इसलिए मुझे देर हो गई। आप सोने की तैयारी कर रहे थे शायद। असमय आपको डिस्टर्ब किया। वे स्केच मुझे दे दीजिए।" इंस्पेक्टर ने कहा।

मेजर ने जाकर सुधीर के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी। उस समय डोरा सुधीर की बांहों में थी।

"सुधीर, वे स्केच दे दो। इंस्पेक्टर साहब आए हैं।" मेजर ने दरवाज़े के बाहर से कहा।

सुधीर ने दो-तीन मिनट बाद दरवाज़ा खोला और स्केच मेजर को दे दिए। मेजर ने स्केच इंस्पेक्टर को दे दिए। इंस्पेक्टर नमस्ते करके चला गया।

सुबह की चाय पर मेजर और उसके साथी इकट्ठे हुए और अखबार पढ़ने लगे। एक समाचार पढ़ते-पढ़ते वे चौंक पड़े।

समाचार की हैड लाइन थी—'तीन लाल सिपाही आदिवासी इलाके में ।' और फिर समाचार था :

'मुर्शिदाबाद, ११ मार्च—

कुछ दिन हुए आदिवासियों और मछेरों ने यह बात फैलाई थी कि उन्होंने अपने इलाके में तीन अजीब-से साये घूमते हुए देखे हैं। इस बात को आदिवासियों और मछेरों का वहम समझा गया था, लेकिन कल रात हवलदार शुभकरन ने, जो आदिवासियों के वहम की सच्चाई जानने के लिए उस इलाके में तैनात किया गया था, इस बात की पुष्टि कर दी है कि उसने कल रात पौने नौ बजे झाड़ियों में फौज का मार्चिंग गीत सुना, और उसे झाड़ियों में तीन साये दिखाई दिए। हवलदार शुभकरन साहसी है। पहले उसने सोचा कि शायद वह दूर से आने वाला मछेरों का गीत होगा, जिसे उसने फौज का मार्चिंग गीत समझा था। चांदनी छिटकी हुई थी। हवलदार शुभकरन उन झाड़ियों के पास पहुंचा तो उसने तीन सायों के बजाय तीन लाल सिपाही देखे, जिनके सिर पर फुंदनेदार टोपियां थीं और हाथों में कड़ाबीनें थीं। हवलदार शुभकरन ने झाड़ियों की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाए, लेकिन जब वह झाड़ियों के पास पहुंचा तो वहां एक भी लाल सिपाही नहीं था। फौज का मार्चिंग गीत बंद हो चुका था। हवलदार शुभकरन ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बार-बार कसम खाकर कहा कि उसकी आंखों को कोई धोखा नहीं हुआ। आदिवासियों के इलाके में भय और घबराहट फैल गई है। पुलिस आज रात उस इलाके में अधिक गश्ती कांस्टेबल भेजकर इस बात की पुष्टि करना चाहती है।'

"यह एक नई घटना हुई है।" मालती बोली, "मेरे विचार से हमें भी आज रात उस इलाके की निगरानी के लिए चलना चाहिए।"

"ज़रूर चलेंगे।" मेजर ने कहा।

"लेकिन मेजर साहब, मैं कुछ और ही सोच रही हूं।" डोरा बोली।

"तुम क्या सोच रही हो डोरा ?" मेजर ने पूछा।

"मैं आपको आर्टिस्ट रावेल की पेंटिंग्स की याद दिलाना चाहती हूं। मिस्टर रावेल ने पहली तीन पेंटिंग्स में तीन लाल सिपाही दिखाए थे, जिनके हाथों में कड़ाबीनें थीं, लेकिन जब अचपला ने उन पहली तीन पेंटिंग्स को देखा तो उनमें लाल सिपाहियों के केवल खाके रह गए थे और लाल सिपाही उन पेंटिंग्स में से निकल गए थे। और मेजर साहब, आपका कहना है कि उन सिपाहियों के खाकों के अन्दर चिकनाहट-सी उभर आई थी।"

"क्या तुम इसका कोई कारण बता सकती हो ?"

"मेरा विचार है कि मिस्टर रावेल के तीन लाल सिपाहियों के चित्रों में कोई रहस्य था। उन चित्रों के रोगन में कोई लोशन मिला हुआ था। उन चित्रों के बने रहने की एक अवधि निश्चित थी। यह भी सम्भव है कि रावेल ने उन चित्रों के हट जाने का एक विशेष निश्चित समय सोच रखा हो। मिस्टर रावेल ने यह समय किसी खास हिसाब से सोचा था कि जिन लाल सिपाहियों के उन्होंने चित्र बनाए हैं, उनके साक्षात् प्रकट हो जाने पर उनकी बनाई हुई पेंटिंग्स में से तीनों सिपाही हट जाएंगे।"

डोरा की विवेचना सुनकर मेजर दंग रह गया। उसके मुंह से निकला, "ओह डोरा, तुम्हारी दलील में वज़न ज़रूर है, लेकिन विश्वास नहीं होता; क्योंकि रावेल न तो ज्योतिषी थे, न देवता थे, न अवतार थे। वैसे लाल सिपाहियों के चित्रों का स्वयं हट जाना आश्चर्यजनक अवश्य है।"

"मेजर साहब, एक बात और याद कीजिए। आर्टिस्ट रावेल को अपनी जन्मभूमि मुर्शिदाबाद और मुंगेर से बहुत प्यार था। जब वह लन्दन में थे तो उन्होंने यह अफवाह सुनी कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर को नष्ट करने की योजना बनाई जा रही है, तो उन्होंने इससे पहले ही मुंगेर और मुर्शिदाबाद को सर्वनाश से सुर-

क्षित रखने की योजना बनाई, लेकिन उनका विचार था कि उस समय तक वह जीवित रहेंगे और सर्वनाश को रोकने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे, लेकिन ऐसा मालूम होता है कि षड्यन्त्रकारियों को उनकी सुरक्षात्मक कार्रवाई का पता चल गया और उन्होंने उन्हें अपने रास्ते से हटा दिया।"

"हम अगर अब तक की घटनाओं पर नज़र डालें तो जो दुश्मन हमारे सामने आ चुके हैं, वे ये हैं—सबसे पहले मुर्शिदाबाद के सरताज होटल के सामने सोज़ीन की हत्या की गई। हत्या करने वाला व्यक्ति टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाला था। उसे निर्देश देने वाला व्यक्ति कोई और था, जो दिखाई नहीं दिया। सोज़ीन की हत्या करने के फौरन बाद टेढ़ी-मेढ़ी टांगों वाला आदमी बम्बई चला आया और उसने श्रीधर गायकवाड़ की हत्या करने की कोशिश की, लेकिन वह स्वयं मारा गया। जब हम गायकवाड़ से होटल में मिलने जा रहे थे तो हमें गायकवाड़ से मिलने से रोकने की कोशिश की गई। किसी मकान की छत से गोलियां चलाकर हमारी कारों के टायर बर्स्ट कर दिए गए। ये गोलियां एक नहीं, दो आदमियों ने चलाई होंगी; लेकिन जिन्होंने गोलियां चलाईं, वे हमारे सामने नहीं आए। इसके बाद अरविन्द दीक्षित की हत्या की वारदात हुई। अरविन्द दीक्षित को एक सुन्दर स्त्री और गुरिल्ला जैसे शक्तिशाली उसके साथी ने इतना पीटा कि वह मर गया। मिस अचपला और अरविन्द दीक्षित के नौकर के बयान के अनुसार वे मॉडल गर्ल अंगदा और उसका साथी थे, लेकिन यह बात अभी निश्चित रूप से नहीं कही जा सकती। अब गायकवाड़ की बारी आती है। लम्बे कद की एक सांवली-सलौनी औरत गायकवाड़ को अपने साथ ले गई और उसने गायकवाड़ को गोली मार दी। वह औरत मद्रासिन नहीं, अंग्रेज़ औरत थी। उस औरत ने अपने साथी से लैसर के द्वारा ग्रेवाल की छत कटवाकर और फिर दीनू मज़दूर से कटी हुई छत पर पत्थर डलवाकर मिस अचपला और ग्रेवाल को मार डाला, ताकि ग्रेवाल अचपला को आर्टिस्ट रावेल की अन्तिम तीन पेंटिंग्स की संकेतात्मक इबारत के सम्बन्ध

में बता न सकें। लैसर वाला आदमी और सांवली-सलौनी औरत हमारी चौकसी के दौरान मारे गए। इस प्रकार दुश्मन के तीन आदमी मौत की नींद सो चुके हैं—टेढ़ी टांगों वाला आदमी, लैसर वाला आदमी और सांवली-सलौनी औरत। दुश्मन की संख्या कितनी है, अनुमान लगाना कठिन है। वे मुर्शिदाबाद और मुंगेर को नष्ट कर देना चाहते हैं, लेकिन क्यों? इन तीन पुराने किलों के नष्ट करने से किसीको क्या लाभ? अब एक नई घटना प्रकाश में आई है। पुलिस हवलदार की बात पर विश्वास किया जाए, तो उसने सचमुच आदिवासियों के इलाके की झाड़ियों में फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन सुनी और तीन लाल सिपाही देखे, जिनके हाथों में कड़ाबीनें थीं। फौज़ी बैण्ड की मार्चिंग धुन कहां से सुनाई दी और लाल सिपाही कहां से आए और वे चाहते क्या हैं?" मालती बोली।

"मालती, तुमने इस केस की बहुत ही सुन्दर विवेचना की है। आज की रात हमारी व्यस्तता की रात है। अगर पुलिस हवलदार की बात पर विश्वास किया जाए तो शायद आज रात भी फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन सुनाई दे और वे तीन लाल सिपाही भी दिखाई दें।" मेजर ने कहा।

रात होने पर पुलिस ने भी कड़े पहरे की भारी व्यवस्था की और मेजर तथा उसके साथी भी निगरानी करने के लिए वहां पहुंच गए।

सारी रात बीत गई, न फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन सुनाई दी और न वे तीन लाल सिपाही ही कहीं दिखाई दिए।

सुबह होने पर यह मान लिया गया कि फौजी बैण्ड की धुन कानों का और लाल सिपाही आंखों का धोखा थे। कभी-कभी अन्ध-विश्वास मानव की अवचेतना में वास्तविकता का रूप धारण कर लेता है।

'आज के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि यह सब आदि-वासियों और मछेरों का वहम था और हवलदार भी वहम का

शिकार हो गया था। लेकिन हमें एक बात पर विचार अवश्य करना पड़ेगा।" मेजर बोला।

"आप देख चुके हैं कि आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी संयोग से या स्वाभाविक रूप से सच सिद्ध हो चुकी है। आर्टिस्ट रावेल ने चेतावनी दी थी कि अगर एक अप्रैल से पहले किसीने उन पेंटिंग्स को देखा तो वह चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर मर जाएगा। अचपला की मृत्यु हमारे सामने है।" डोरा बोली।

"लेकिन डोरा, मैंने भी तो आर्टिस्ट रावेल की पेंटिंग्स अचपला के साथ देखी थीं, लेकिन चौबीस घण्टे बीत चुके हैं और मैं अभी तक जीवित हूं। भविष्यवाणी भी तीर या तुक्का होती है। निशाने पर लग जाए तो तीर वरना तुक्का। हां डोरा, तुम कह रही थीं कि हमें एक बात पर ध्यान देना चाहिए।"

"आर्टिस्ट रावेल की दूसरी भविष्यवाणी यह है कि जब मुंगेर और मुर्शिदाबाद के सर्वनाश का प्रारम्भ होगा तो १५ मार्च की रात को भटखण्डे कबीले के दस-पन्द्रह आदमी मारे जाएंगे। आज दो दिन से दुश्मन चुप है। तीन दिन के बाद १५ मार्च है। हमें १५ मार्च को भी इसी तरह निगरानी करनी होगी।" डोरा ने कहा।

"१५ मार्च को देख लिया जाएगा कि आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी कहां तक सही होती है।"

वे रात-भर के जागे हुए थे। होटल में आकर वे दो घण्टे तक आराम से सोए रहे। इसके बाद वे जागे। चाय पी और तैयार हो गए।

मेजर ने कहा, "मैं ज़रा बेलापुर जा रहा हूं, सर्वेश और सर्वीना से मिलने। जल्दी ही वापस आ जाऊंगा।"

मेजर कार में बेलापुर की ओर चल पड़ा।

बेलापुर में २२२ नम्बर मकान के सामने पहुंचकर मेजर ने कार रोक दी। मकान का दरवाज़ा बन्द था। मेजर ने कार से निकलकर दरवाज़े पर दस्तक दी। सर्वीना ने दरवाज़ा खोला। मेजर ने देखा, सर्वीना के चेहरे पर खुशी फूटी पड़ रही थी।

मेजर ने अन्दर आकर देखा, सवश कमरे में बैठा था। उसकी गोद में एक रजिस्टर्ड लेटर रखा था।

"आप! आइए, आइए!" सर्वेश ने कहा, "आज कैसे भूल पड़े मेजर साहब!"

"मैं आपसे मिलने चला आया, लेकिन आप हैरान-परेशान क्यों हैं? क्या इस पत्र में ऐसी कोई बात है?"

"बैठिए।" सर्वेश ने कुर्सी की ओर इशारा किया।

मेजर बैठ गया।

"विचित्र-सा पत्र है।" सर्वेश ने कहा।

"किसका पत्र है?" मेजर ने पूछा।

"बम्बई के वकील हीरानन्द जोशी का पत्र है। उन्होंने मुझे बधाई देते हुए लिखा है कि स्वर्गीय कलाकार रावेल मेरे नाम डेढ़ लाख रुपया नकद, दो लाख रुपये के कम्पनियों के शेयर और एक लाख रुपये के जे़वर छोड़ गए हैं। कलाकार रावेल से मेरा कोई रिश्ता नहीं था। उन्होंने अपनी धन-सम्पत्ति मुझे क्यों दी? मैंने उनपर कोई अहसान भी नहीं किया था। वकील जोशी ने लिखा है कि उन्होंने सारी कार्रवाई पूरी कर ली है। मृत्यु-कर भी दे दिया है। अब मुझे केवल बम्बई जाकर सारी सम्पत्ति अपने नाम ट्रांसफर करानी है। मेरा जी नहीं मानता कि मैं अकारण किसीसे दान लूं। न जाने आर्टिस्ट रावेल ने किसका हक मारकर मुझे यह दान दिया है!"

मेजर मुस्कराने लगा।

"मेजर साहब, यह एक गम्भीर मामला है और आप मुस्करा रहे हैं। मैं सोच रहा हूं कि मुझे आर्टिस्ट रावेल के वास्तविक उत्तराधिकारियों की तलाश करनी चाहिए।"

"मिस्टर सर्वेश, आर्टिस्ट रावेल के आप एकमात्र उत्तराधिकारी हैं।" मेजर ने नाटकीय मुद्रा में कहा।

"मैं आर्टिस्ट रावेल का एकमात्र उत्तराधिकारी हूं? यह कैसे? उनसे मेरा कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा। न मेरा उनसे कोई रिश्ता ही था।"

"आर्टिस्ट रावेल आपके सबसे निकटतम, घनिष्ठ और प्रिय रिश्तेदार थे। आप आर्टिस्ट रावेल के इकलौते बेटे हैं मिस्टर सर्वेश !"

"मैं आर्टिस्ट रावेल का इकलौता बेटा हूं ! यह आप क्या कह रहे हैं ? न मैं कभी उनके पास रहा, न वह कभी मेरे पास आए, न उन्होंने मेरी परवरिश की और न मैं कभी उनके घर में रहा। मेरे पिता तो शायद कोई जुगल आनन्द थे, जिन्होंने मुझे पढ़ाया-लिखाया। मुझे सुख-सुविधा-भरा जीवन दिया।"

"जुगल आनन्द ही आर्टिस्ट रावेल थे। एक बहुत बड़ी विवशता के कारण और आपको सकुशल और जीवित देखने के लिए वह अपने होंठों पर इस सत्य और यथार्थ को नहीं ला सकते थे कि आप उनके बेटे हैं और वह आपके पिता हैं। कभी-कभी इंसान को ज़िन्दगी में बहुत ही भयानक मजबूरियों का सामना करना पड़ता है।"

"कैसी ही विवशता क्यों न हो, क्या एक बाप अपने बेटे को बेटा भी नहीं कह सकता ? उसे अपने सीने से भी नहीं लगा सकता ? यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही मेजर साहब !"

अब मेजर बलवन्त को बताना पड़ा कि आर्टिस्ट रावेल के सामने वह विवशता क्या थी, जिसके कारण उन्हें अपने दिल पर पत्थर रखना पड़ा। अपने हाथों अपनी ममता और स्नेह का गला घोंटना पड़ा।

सर्वेश की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई।

कुछ देर बाद उसने अपने-आपको संभालते हुए कहा, "मैं इतने महान पिता का पुत्र हूं। आज मैं उछल-उछलकर कह सकता हूं कि मैं महान कलाकार रावेल का बेटा हूं; लेकिन काश, मैं आज से पहले इस बात पर गर्व कर पाता !"

"सर्वेश, इस तरह सोचो कि तुम एक महान कलाकार के ही नहीं, एक ऐसे महान बाप के बेटे हो, जिसने अपने बेटे को ज़िन्दा रखने के लिए अपने सीने पर छुरियां चलनी स्वीकार कीं।"

सर्वेश गहरे सोच में डूब गया।

सर्वीना के हर्ष की कोई सीमा न रही थी। रजिस्टर्ड पत्र मिलने पर वह प्रसन्न हुई थी कि सर्वेश को इतनी बड़ी सम्पत्ति मिल रही है। उसने सर्वेश को समझाया था कि उसपर यदि आर्टिस्ट रावेल ने इतनी कृपा की है तो उसे ठुकराना नहीं चाहिए; लेकिन अब वह सम्पत्ति किसीकी कृपा या दान नहीं रही थी। वह तो पिता की सम्पत्ति थी, जो पिता की मृत्यु के बाद बेटे को मिल रही थी।

कुछ मिनट के बाद दुःख, शोक और आश्चर्य की घड़ियां समाप्त हुईं तो मेजर ने सर्वीना से कहा, "मिस सर्वीना, आप मुंगेर के किले में कितने दिन रही होंगी ?"

"दो महीने और बीस दिन। मेरी बहन मर्जीना ने रुपया लेकर यह बन्दिश लगा दी थी कि चार महीने सात दिन से पहले मेरी शादी किसीसे न की जाए। जब अवधि समाप्त होने में दस दिन रह गए तो मेरा भय और बढ़ गया। मेरे लिए बस एक ही चारा रह गया था कि किसी तरह सर्वेश को सूचना देकर उस कैद से छुटकारा प्राप्त करूं। मैंने एक दिन एक पत्र लिखा और मौका पाकर किले के परकोटे से नीचे नदी में सैर करने वालों की नाव में फेंक दिया। मैंने उन लोगों से प्रार्थना की कि वे कृपा करके मेरा पत्र पत्र में लिखे पते पर पहुंचा दें। और इस प्रकार सर्वेश तक मेरा पत्र पहुंच गया। सर्वेश ने मुझे उस किले की कैद और भय से मुक्ति दिला दी।" सर्वीना ने कहा और प्यार-भरी नज़रों से सर्वेश की ओर देखने लगी।

११. पन्द्रह मार्च की रात

मेजर ने सर्वीना से पूछा, "क्या आपको किले में अलग-अलग रखा जाता था ?"

"जी हां।"

"क्या आपसे मिलने के लिए भी कोई नहीं आता था ?"

"बस, दिन में एक बार चन्द्रभान आता था, जिससे मेरी शादी

होने वाली थी। वह मेरे लिए ज़ेवर और साड़ियां लाता। वह मेरा दिल ज़ेवरों से जीतना चाहता था, लेकिन मैं उसके साथ बहुत ही रूखा व्यवहार करती थी। वह मुझे दिन गिनाने लगता कि इतने दिनों के बाद मैं उसकी पत्नी बन जाऊंगी।"

"क्या चन्द्रभान के अतिरिक्त और भी कोई आता था ?"

"एक नटखट बांदी आया करती थी। किले के भोग-विलास-भरे जीवन की बातें किया करती थी। सब्ज़बाग दिखाया करती थी और चन्द्रभान का गुणगान किया करती थी। वही मेरे लिए सुबह की चाय, नाश्ता, दोपहर का खाना, शाम की चाय और रात का खाना लाती थी। सुहाग के गीत सुनाया करती थी।"

"खूब!" मेजर के मुंह से निकला, "किले में रहने वाली औरतों को क्या दूसरी औरतों से मिलने नहीं दिया जाता था ?"

"बिलकुल नहीं। सोज़ीन का कमरा मेरे कमरे के पास था। वह कभी-कभी दिखाई दे जाया करती थी, लेकिन हम दोनों एक-दूसरे से बात नहीं कर सकती थीं।"

"विचित्र किला है!" मेजर बोला, "यह किला तो नवाब सिराज़ुद्दौला के उत्तराधिकारियों का था। भटखण्डे खानदान के हाथ कैसे लगा ?"

"नवाब सिराज़ुद्दौला के उत्तराधिकारी ऐयाश थे। सारा धन भोग-विलास में उड़ा दिया। भटखण्डे सरदारों ने अनगिनत रुपया देकर किला उनसे खरीद लिया।"

"भटखण्डे सरदारों के पास इतना रुपया कहां से आया ?" मेजर ने पूछा।

"यह तो किसीको मालूम नहीं। वर्षों पहले एक काफिला लूटा गया था। काफिले के अधिकांश पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया गया था और उनकी सुन्दर स्त्रियों को आक्रमणकारियों ने अपने घर में डाल लिया था। इस काफिले पर आक्रमण किसने किया, कोई नहीं जानता, लेकिन अफवाह यही फैली कि काफिला लूटने वाले आदिवासी थे, क्योंकि काफिले की गाड़ियां आदिवासियों के इलाके में मिली थीं। आदिवासियों पर

तत्कालीन अधिकारियों ने बड़े अत्याचार किए थे। हज़ारों आदि-वासियों को गोलियों से भून दिया गया था।"

'मिस सर्वीना, आपने आश्चर्यजनक बातें बताई हैं। क्या आप एक बात बता सकती हैं ?"

"फर्माइए !" सर्वीना बोली।

"क्या भटखण्डे खानदान के किले में कोई खुफिया सुरंग या रास्ता है ?"

"सुना है, एक सुरंग है, जो किले के पीछे वाले एक जोहड़ में से किले के अंदर जाती है। उस सुरंग में दस-पन्द्रह पहरेदार हर समय रहते हैं।"

"क्या वे पहरेदार वर्दी पहनते हैं या सादा कपड़े ?"

"वे भटखण्डे खानदान के युद्ध की पोशाक में होते हैं।"

"क्या सुरंग के पहरेदार अदले-बदले जाते हैं ?"

"सुना है कि दो दर्जन पहरेदार सुबह पांच बजे से शाम के पांच बजे तक पहरा देते हैं। फिर दो दर्जन पहरेदार शाम के पांच बजे से सुबह के पांच बजे तक उनके स्थान पर सुरंग में पहरा देते हैं। इसी तरह उनकी शिफ्ट चलती रहती है।"

"धन्यवाद मिस सर्वीना ! अब मैं चलूंगा।" मेजर ने उठते हुए कहा।

सर्वेश अभी तक घुटनों में सिर दिए सोच में डूबा हुआ था। उससे मेजर ने कहा, "मिस्टर सर्वेश, अब आप अपने महान पिता की स्मृति अपने मन में दीपक की ज्योति की तरह आलोकित रखिए।"

इतनी जानकारी प्राप्त करने के बाद मेजर जब अपने होटल में पहुंचा तो वह अभी तक इस केस का ओर-छोर नहीं ढूंढ़ पाया था।

दो दिन और बिना किसी अप्रिय घटना के बीत गए।

और फिर पन्द्रह मार्च की रात आ गई।

पुलिस की कई टुकड़ियां आदिवासियों और मछेरों के इलाके

में तैनात कर दी गईं। मेजर और उसके साथी भी आज पूरी तरह लैस होकर आए थे। उनकी जेबों में दो-दो रिवॉल्वर थे। उन्होंने मोर्चा बांध रखा था।

आधी रात बीत गई।

भटखण्डे कबीले के लोग भी चौकस थे, क्योंकि सबसे अधिक खतरा उन्हींको था। वे अलाव के पास बैठे जाग रहे थे, बर्छे और भाले लिए।

उनके लगभग बीस आदमी रण-बाना पहने किले के चक्कर काट रहे थे। वे अपने कबीले के सबसे वीर और साहसी नौजवान थे। उन्हें देखकर भटखण्डे कबीले के लोगों का भय कम हो गया था। अभी ऐसे ही दस नौजवान और आने वाले थे। सुरंग के पहरेदारों से कहा गया था कि सुरंग में दो दर्जन पहरेदारों की ज़रूरत नहीं है। जैसे ही खतरा महसूस हो, उनमें से बारह आदमी सुरंग से निकलकर किले में पहुंच जाएं।

रात के डेढ़ बजे मार्चिंग गीत फिर सुनाई देने लगा। कड़ाबीनों की आवाज़ें आने लगीं। मेजर और उसके साथी चौंक पड़े। पुलिस के हवलदार और आदिवासियों का वहम सत्य में परिवर्तित हो गया। मेजर और उसके साथी भी इस सत्य को स्वीकार करने पर विवश हो गए।

सबके कान उस ओर थे, जिस ओर से फौज के मार्चिंग गीत और कड़ाबीनों की गोलियों की आवाज़ें आ रही थीं। मेजर ने अनुमान लगाया कि ये आवाज़ें मछेरों की बस्ती के पास वाली झाड़ियों से आ रही हैं। बहुत-से पुलिस कर्मचारी मेजर और उसके साथियों के साथ उन झाड़ियों की ओर चल पड़े।

फौज का मार्चिंग गीत और कड़ाबीनों की गोलियों की आवाज़ सुनकर कबीले के रण-बाना पहने दस पहरेदार निकल आए। लोग झाड़ियों के पास पहुंचे तो मार्चिंग गीत और भी तेज़ हो गया, लेकिन कड़ाबीनों की गोलियों की आवाज़ें आनी बंद हो गईं। सब बड़ी सावधानी से आगे बढ़ रहे थे। मार्चिंग गीत कुछ और तेज हुआ, लेकिन कोई भी यह अनुमान नहीं लगा

पाया कि मार्चिंग गीत की आवाज़ कहां से आ रही है। मेजर, उसके साथी और कांस्टेबल झाड़ियों में दूर तक चले गए।

सहसा उन्होंने अपने पीछे गोलियां चलने की आवाज़ें और चीखें तथा कराहें सुनीं।

मेजर और कांस्टेबल पीछे की ओर दौड़े। उन्होंने भटखण्डे परिवार के किले में शोरगुल की आवाज़ें सुनीं। जब वे सब किले में पहुंचे तो हैरान रह गए। ज़मीन पर पन्द्रह लाशें पड़ी थीं और दस घायल चीख रहे थे। भटखण्डे परिवार के सरदार भी वहां पहुंच गए थे।

"गद्दार—ऐसा कभी नहीं हुआ। अपने आदमियों ने ही इनको मार डाला और गोलियां चलाते हुए भाग गए।" एक पहरेदार ने कहा।

"किन गद्दारों की चर्चा कर रहे हो ?" एक भटखण्डे सरदार ने पूछा।

"वे, जो सुरंग से आए थे।"

"लेकिन यहां तो गोलियां चली था। हमारे पहरेदारों के पास न तो रिवॉल्वर हैं, न बन्दूकें। ये आवाज़ें रिवॉल्वरों की थीं। मामला कुछ और ही मालूम होता है। चलो, सुरंग में चलकर देखें।" भटखण्डे सरदार ने कहा।

मेजर, उसके साथी और पुलिस कांस्टेबल भी उस सरदार के पीछे हो लिए। तालाब के एक किनारे सीढ़ियां थीं, जिनसे उतरकर सुरंग का रास्ता मिलता था।

सुरंग में दो लालटेनें जल रही थीं। अंदर पूरे दो दर्जन पहरेदार बेसुध पड़े हुए थे। उनके बदन पर उनके रण-बाने नहीं थे। सुरंग के एक कोने में एक बर्नर पडा था।

"यह कहां से आया ?" भटखण्डे सरदार ने पूछा।

मेजर बर्नर को बड़े ध्यान से देख रहा था। वह बोल उठा, "यह ज़हरीली गैस छोड़ने वाला बर्नर है। पहरेदारों को ज़हरीली गैस से बेहोश कर दिया गया है। वे दस आदमी थे। उन्होंने इनके रण-बाने उतारकर पहन लिए। कबीले के लोगों ने समझा

कि उनके और दस आदमी उनकी सहायता के लिए आ गए हैं। उन लोगों ने कबीले के पन्द्रह बहादुर नौजवानों को मार डाला और दस-पन्द्रह आदमियों को घायल करके वे भाग गए। झाड़ियों की ओर मार्चिग धुन इसीलिए बजाई गई थी कि लोग उधर दौड़ पड़ें, ताकि वे अपना काम पूरा कर सकें।

मेजर की बात सुनकर सब दंग रह गए।

"आर्टिस्ट रावेल की दूसरी भविष्यवाणी भी सच निकली। इसे वहम कौन कहेगा!" मालती बोली।

मेजर गहरे सोच में डूबा हुआ था। यह मामला क्या है? आर्टिस्ट रावेल के कथनानुसार भटखण्डे कबीले के पन्द्रह आदमियों को मौत के घाट उतार दिया गया। उन्होंने कहा था, 'पन्द्रह मार्च की रात को जब भटखण्डे कबीले के दस-पन्द्रह आदमियों को मार डाला जाएगा तो वास्तविक संकट का सूत्रपात होगा।' रावेलजी ने भविष्य में क्या-क्या झांककर देखा था?

भटखण्डे कबीले के सरदार के बड़े बेटे चन्द्रभान ने कहा, "हमारे किले को ही निशाना क्यों बनाया गया? हम तो सबसे अलग-थलग रहने वाले लोग हैं। न किसीके लेन में, न देन में। नवाब सिराजुद्दौला के ऐयाश उत्तराधिकारी शायद इस किले को हमसे वापस लेना चाहते हैं, इसलिए हमें डराकर इस किले से भाग जाने पर विवश कर देना चाहते हैं।"

मेजर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

पुलिस कर्मचारी घायलों को अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था करने लगे।

मेजर और उसके साथी अपने होटल की ओर चल दिए।

दिलाराम होटल के अपने सूट में पहुंचकर मेजर ने देखा, रात के तीन बज चुके थे।

"आज की घटना आश्चर्य से कम नहीं है। आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी एक पहेली है। क्या सचमुच आज से इस इलाके में सर्वनाश का भयंकर और घातक नृत्य आरम्भ होने वाला है?"

मालती बोली, "मेजर साहब, एक शे'र सुनाइए, शायद दिमाग में कोई रोशनी पैदा हो जाए।"

मेजर मालती की ओर देखकर मुस्कराया और बोला, "हां, शायद शे'र कुछ सहायक सिद्ध हो सके। शे'र सुनिए :

हमारी चीनी, सब्ज़ी में पड़ोसिन का भी हिस्सा है,
जहां में अच्छा हमसाया भी होना एक घाटा है।"

"वाह-वाह! उन औरतों पर क्या व्यंग्य है, जिन्हें पड़ोसियों से चीज़ें मांगते हुए शर्म नहीं आती!" मालती ने दाद दी।

मेजर ने व्यंग्य से पूछा, "मालती, तुम्हारे दिमाग में कुछ रोशनी हुई?"

"रोशनी तो नहीं हुई, बस मुंह का ज़ायका बदला है।" मालती बोली।

"आज भी नींद पूरी नहीं हुई, लेकिन हमें सुबह सात बजे ही यहां से चल पड़ना होगा।" मेजर ने कहा।

"हमें कहां जाना होगा?" सोनिया ने पूछा।

"आदिवासियों के इलाके में। आज क्रोकोडायल को भी साथ ले चलेंगे।" मेजर ने उत्तर दिया।

अगले दिन वे सुबह सात बजे आदिवासी इलाके की झाड़ियों में पहुंच गए।

"यहां आने का उद्देश्य क्या है?" सुधीर ने पूछा।

"मैं यहां यह देखना चाहता हूं कि फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन अपने-आप कैसे शुरू होती है और फिर अपने-आप ही कैसे बंद हो जाती है। तुम सब बिखर जाओ और कोई ऐसा पेड़ तलाश करो, जिसका तना खोखला हो।"

आधे घण्टे की दौड़-धूप के बाद तीन ऐसे पेड़ मिल गए, जिनके तने खोखले थे। मेजर ने दो पेड़ तो रद्द कर दिए, तीसरे पेड़ का तना नीचे तक खोखला था और उसके तने के ऊपर एक छोटी-सी खोह थी।

मेजर ने खोखले तने में झांककर देखा। उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"क्या दिखाई दिया ?" सोनिया ने पूछा।

"यही पेड़ फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन बजाता है।" मेजर ने बताया।

"पेड़ बैण्ड की मार्चिंग धुन बजाता है ?" डोरा के मुंह से निकला।

"इस खोखले पेड़ के ऊपर के हिस्से से दो मोटे-मोटे तार नीचे तक लटक रहे हैं। यह पेड़ खोखला है। इस पेड़ पर आदमी का चढ़ना कठिन है। आदमी के बोझ से पेड़ टूट जाएगा और चढ़ने वाला नीचे आ गिरेगा।"

"लेकिन क्रोकोडायल का बोझ तो यह पेड़ बर्दाश्त कर लेगा। क्रोकोडायल को पेड़ पर चढ़ने की प्रैक्टिस है। उसीको चढ़ाइए।" डोरा बोली, "अगर पेड़ टूटने लगेगा तो क्रोकोडायल पेड़ से छलांग लगा देगा।"

मेजर ने क्रोकोडायल को अपने पास बुलाया और उसका मुंह उठाकर पेड़ के तने की ऊपरी खोह उसे दिखाई। इसके बाद उसने क्रोकोडायल को उठाकर पेड़ के तने से चिपका दिया। क्रोकोडायल ने अपने हाथ-पैरों के नाखून पेड़ के तने से गड़ा दिए और धीरे-धीरे ऊपर की ओर खिसकने लगा और पेड़ की ऊपर वाली खोह तक पहुंच गया। उसने खोह में मुंह डाल दिया, लेकिन उसे वहां कोई चीज़ नहीं मिली। वह उलटा होकर धीरे-धीरे पेड़ से उतर आया।

"वेल डन !" मेजर ने क्रोकोडायल की पीठ पर थपकी दी और मालती से बोला, "मालती, तुम अपने पर्स में चाकू रखा करती हो। चाकू निकालो।"

मालती ने अपने हैण्डबैग में से चाकू निकालकर मेजर को दे दिया। मेजर ने पेड़ के खोखले तने में लटके हुए दो तारों में से एक तार का छः इंच लम्बा टुकड़ा काट लिया।

मेजर ने तार का टुकड़ा क्रोकोडायल के मुंह में दे दिया। क्रोकोडायल तार के टुकड़े को फेंककर उसे सूंघने लगा। वह दो मिनट तक उसे सूंघता रहा और उसे फिर मुंह में दबाकर सामने

वाली झाड़ियों की ओर चल दिया।

मेजर और उसके साथी उसके पीछ-पीछे हो लिए।

क्रोकोडायल लगभग तीन फर्लांग चलने के बाद एक झाड़ी के पास पहुंच गया और फिर झाड़ी के पीछे जाकर भौंकने लगा। मेजर और उसके साथी भी उस झाड़ी के पास पहुंच गए। यह झाड़ी अन्य झाड़ियों की अपेक्षा बड़ी थी।

उस झाड़ी के पीछे ईंटों का एक छोटा-सा चबूतरा बना हुआ था। मेजर ने चबूतरे के चारों ओर ध्यान से देखा। उसे एकसाथ दो छोटी लकीरें दिखाई दीं। उसके होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"क्या दिखाई दिया ?" सोनिया ने पूछा।

"फौजी बैण्ड की मार्चिग धुन का भेद खुल गया। उस पेड़ के खोखले तने में हमने दो तार लटके हुए देखे थे। उस पेड़ के तने की ऊपरी खोह में एक छोटा-सा शक्तिशाली लाउडस्पीकर छिपा दिया जाता है। उसमें तने के अंदर लटके हुए तार फिट कर दिए जाते हैं। इस चबूतरे पर रिकॉर्डप्लेयर रखकर यहां से दो मोटे-मोटे तार ले जाकर पेड़ के तने में लटके तारों से जोड़ दिए जाते हैं। रिकॉर्डप्लेयर पर मार्चिग धुन का रिकॉर्ड बजाया जाता है। उसकी आवाज़ लाउडस्पीकर से निकलती है और मार्चिग धुन सुनकर जब लोग झाड़ियों की ओर दौड़ते हैं तो रिकॉर्डप्लेयर बंद कर दिया जाता है और उसके तार पेड़ के तने में लटके तारों के प्लगों से अलग कर दिए जाते हैं और रिकॉर्ड-प्लेयर उठाकर उसे बजाने वाले गायब हो जाते हैं।"

"मेजर साहब, आप ही थे, जिसने इस भेद को जान लिया।" सुनील बोला।

"अब एक काम और करना होगा। हम इस पेड़ के तने में लटके हुए तारों को नहीं छेड़ेंगे। मार्चिग धुन बजाने वालों में से कोई न कोई उस पेड़ के पास ज़रूर आएगा। जब वह तार को कटा हुआ देखेगा तो चौंक पड़ेगा और उन तारों को निकालकर ले जाने की कोशिश करेगा। मैं चाहता हूं कि आज डोरा और

मालती आदिवासी स्त्रियों के वेश में इन झाड़ियों में सूखी लकड़ियां और पत्ते बीनने के बहाने इस पेड़ की निगरानी करें और देखें कि इस पेड़ की ओर कौन आता है। आओ, वापस चलें। पौन घण्टे बाद तुम यहां लौट आना।"

वे दिलाराम होटल में लौट आए।

आधे घण्टे के बाद डोरा और मालती आदिवासी स्त्रियों की वेशभूषा और मेकअप में होटल से चल पड़ीं। मेजर ने उनसे कहा कि वे दरांती और टोकरी आदिवासी स्त्रियों से मांग लें।

१२. नवविवाहित ईसाई पति-पत्नी

मेजर को अचानक मुहम्मद सईद का खयाल आ गया, जिसे आर्टिस्ट रावेल ने मुर्शिदाबाद और मुंगेर की सुरक्षा का काम सौंपा था। मेजर को आशा थी कि कल रात की घटना का पता मुहम्मद सईद को चल गया होगा। मुहम्मद सईद मुंगेर के आसफगंज मुहल्ले में रहता था।

मेजर कार से घण्टे-भर में आसफगंज पहुंच गया।

मेजर की कार मुहम्मद सईद की दुकान के सामने पहुंचकर रुकी तो उसे देखते ही मुहम्मद सईद दौड़ता हुआ आया, "आइए मेजर साहब, कल मुंगेर में क्या करा दिया! रावेल दादा की बात सच्ची निकली। दुश्मन ने धावा बोल दिया है। मुझे आज सवेरे ही खबर मिल गई थी कि भटखण्डे कबीले के किले में पन्द्रह बहादुर नौजवानों को मौत के घाट उतार दिया गया।"

मेजर कार से निकलकर बोला, "आइए, दुकान के अंदर चलें।"

मेजर और मुहम्मद सईद दुकान में आ गए।

"क्या आपके आदमी गश्त पर नहीं थे?" मेजर ने पूछा।

"गश्त पर तो थे, लेकिन दुश्मन उन्हें गच्चा दे गया। भटखण्डे कबीले के पहरेदारों के रूप में उसने आक्रमण किया और लोगों का ध्यान हटाने के लिए फौजी बैण्ड पर मार्चिंग धुन

बजाई और गोलियां चलाईं।"

"हां, हम लोग भी धोखे में आ गए। मैं आपसे यह पूछने आया हूं कि क्या अब भी आपका पीछा किया जाता है ?"

"नहीं। तीन-चार दिन से मेरा कोई पीछा नहीं कर रहा। शायद दुश्मन को अब संदेह नहीं रहा कि हम उसका विरोध और सामना करने की तैयारियां कर रहे हैं। मैंने अपनी टोलियों को आज पूरी तरह चौकस कर दिया है। उनको अलग-अलग वेशों में दूर-दूर तक फैला दिया है और उनसे कहा है कि वे इस बात का पता लगाने की कोशिश करें कि संदिग्ध व्यक्ति कौन हैं और उनका ठिकाना कहां है।"

"हां, आज से बहुत सावधान रहने की जरूरत है। मैं आपको सावधान करने ही आया हूं। अगर कोई असाधारण घटना हो तो मुझे होटल में फोन कर देना।"

"जरूर कर दूंगा।"

"अच्छा, एक बात और बताइए। कई साल हुए, एक काफिला लूट लिया गया था। वह काफिला किन लोगों का था और किन लोगों ने लूटा था ?"

"वह काफिला अंग्रेजों का था और अंग्रेजों ने ही आदिवासियों के वेश बदलकर उस काफिले को लूटा था, जिसका दण्ड बेचारे आदिवासियों को भुगतना पड़ा था। उनकी आधी आबादी तहस-नहस कर दी गई थी।"

"धन्यवाद !" मेजर ने कहा।

फोटोग्राफर मुहम्मद सईद से मिलकर मेजर इंस्पेक्टर सक्सेना के ऑफिस में जा पहुंचा।

"आइए मेजर साहब, मैं आपको याद ही कर रहा था।" इंस्पेक्टर बोला।

"यह बताइए कि क्या आपने अचपला के बनाए हुए स्केच पढ़वाने के लिए भेज दिए ?"

"अपने दो विश्वस्त आदमियों के हाथ मैंने वे स्केच भेज दिए हैं। उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मेजर साहब,

कल रात तो गज़ब ही हो गया। आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो गई। आपका क्या विचार है ? क्या सर्वनाश का श्रीगणेश होने वाला है ? पुलिस के उच्च अधिकारियों ने आधे से अधिक पुलिस फोर्स आदिवासियों और मछेरों के इलाके में झोंक दी है। दुश्मन की बड़ी सरगर्मी से तलाश की जा रही है।"

"हां, हमें सावधान रहने की ज़रूरत है। कल की घटना के बाद दो-तीन दिन या एक हफ्ते तक दुश्मन सिर छिपाए रहेगा, ताकि हंगामा शान्त हो जाए। लोगों का ध्यान हटाने के लिए वह फिर कोई नई शरारत शुरू कर देगा।" मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर सक्सेना से विदा लेकर मेजर अपने होटल में पहुंच गया।

वह डोरा और मालती की प्रतीक्षा करने लगा कि देखें, वे झाड़ियों में घूमकर क्या खबर लाती हैं।

मालती और डोरा शाम को वापस आईं।

मालती ने बताया कि खोखले तने वाले पेड़ के पास कोई नहीं आया। शायद दुश्मन को पता चल गया कि उसके मार्चिंग गीत का भेद खुल गया है।

"समझ में नहीं आता कि दुश्मन को इस बात का कैसे पता चला है !" डोरा बोली।

"हमारी गलती से ही दुश्मन को पता चला है।" मेजर बोला।

"हमसे क्या गलती हुई ?" सुधीर ने पूछा।

"हमने तार का जो टुकड़ा काटकर क्रोकोडायल के मुंह में दिया था, क्रोकोडायल उस टुकड़े को उस चबूतरे पर फेंक आया था, जिसपर रखकर रिकॉर्डप्लेयर बजाया जाता था। दुश्मन उस चबूतरे पर आया होगा तो वह लाउडस्पीकर के तार का टुकड़ा देखकर समझ गया होगा कि किसीने उसके चबूतरे का पीछा किया है। इसलिए वह सिर छिपाकर बैठ गया।"

"ओह, आपका अनुमान बिलकुल ठीक है।" मालती बोली।

"दुश्मन का ठिकाना आसानी से नहीं मिलेगा। उनके गिरोह

अनगिनत आदमी हैं। दुश्मन ने अपना ठिकाना ज़रूर बदल लिया होगा।" मेजर ने कहा, "अच्छा मालती, तुम व्हिस्की का इन्तज़ाम करो। देखते हैं, अगले दो-तीन दिनों में क्या कुछ होता है।"

मालती व्हिस्की की व्यवस्था करने लगी।

रात के नौ बजे थे। फोटोग्राफर मुहम्मद सईद अपनी दुकान रात के साढ़े नौ बजे बंद किया करता था, लेकिन दुकान पर काम करने वाले कर्मचारियों को नौ बजे ही छुट्टी दे देता था। नौकरों के जाने के बाद वह दिन-भर के खिंचे हुए पोस्ट-कार्ड साइज़, क्वार्टर पासपोर्ट साइज़ और केबिनेट साइज़ के फोटुओं को लिफाफों में डालकर लिफाफों पर डेवलप और प्रिण्ट करने की तारीख और ग्राहकों को डिलीवरी करने की तारीख डाल देता था।

वह अपना काम नियमित रूप से और बड़े सलीके के साथ किया करता था। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह समय पर काम दिया करता था। इसलिए ग्राहक उससे बहुत खुश रहते थे।

अभी नौ बजकर पांच ही मिनट हुए थे कि एक टैक्सी उसकी दुकान के सामने आकर रुकी। उसमें से एक सुन्दर क्रिश्चियन युवती शादी का सफेद जोड़ा पहने और हाथ में गुलदस्ता लिए उतरी। उसके साथ एक नौजवान था, जिसने काला सूट पहन रखा था और लाल टाई लगा रखी थी। उसके कोट के बटन-होल में गुलाब का फूल था। ऐसा मालूम होता था, जैसे वे वेडिंग रिंग बदलकर चर्च में शादी करके सीधे यहीं चले आ रहे हैं।

दुल्हन ने आगे बढ़कर कहा, "गुड ईवनिंग ! क्या आप हमें पन्द्रह मिनट दे सकते हैं ? कल हम हनीमून पर कलकत्ता जा रहे हैं। आप हमारा एक फोटो खींच दीजिए। ऐसे पोज़ में, जैसे हम दोनों एक हो गए हैं। हम अपना फोटो एक-दूसरे को बांहों

में लेकर खिचवाना चाहते हैं।"

"समय बहुत कम है। मुझे साढ़े नौ बजे एक ज़रूरी काम से कहीं पहुंचना है।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"प्लीज़, आपको पन्द्रह मिनट से ज़्यादा नहीं लगेंगे। हम कल ग्यारह-बारह बजे आकर फोटो ले जाएंगे। पैसे एडवांस दिए देते हैं। क्या आप नवविवाहित जोड़े की इच्छा पूरी न करेंगे? प्लीज़, इट इज़ ए हम्बुल रिक्वेस्ट!" दुल्हन ने कहा।

मुहम्मद सईद एक शरीफ घराने का युवक था। नई-नई दुल्हन की बात मान गया।

"फोटो केबिनेट साइज़ का होना चाहिए। हमें सिर्फ तीन कॉपियां चाहिए।" दुल्हन ने कहा और अपना पर्स खोलकर सौ रुपये का एक नोट निकाला और मुहम्मद सईद की ओर बढ़ाकर बोली, "अगर इसमें से कुछ बचा तो हम कल वापस ले जाएंगे।"

मुहम्मद सईद ने सौ रुपये का नोट जेब में रख लिया और बोला, "आप स्टुडियो में चलिए। सोफे पर बैठिए। मैं डार्क रूम में प्लेट भरकर लाता हूं।"

दूल्हा-दुल्हन स्टुडियो में चले गए। मुहम्मद सईद पांच मिनट में प्लेट फ्रेम में भर लाया। उसने कैमरे पर ब्लैक नैट डाली और उसमें फ्रेम लगाकर कैमरे को एडजस्ट करते हुए बोला, "आप जैसा पोज़ चाहते हैं, वह बनाकर दिखाइए ताकि मैं यह अंदाज़ा लगा सकूं कि वह ठीक रहेगा या नहीं।"

दूल्हा-दुल्हन परदे के आगे जा खड़े हुए। परदे पर एक शानदार बंगले का दृश्य बना हुआ था। दूल्हा-दुल्हन एक-दूसरे से लिपट गए और उन्होंने अपने होंठ एक-दूसरे के होंठों से सटा लिए।

"चेहरों को थोड़ा-सा स्लाण्टिग कीजिए, ताकि चेहरे साफ दिखाई दें।" मुहम्मद सईद ने कहा।

"आप आकर हमारे चेहरे एडजस्ट कर दीजिए।" दुल्हन ने कहा।

मुहम्मद सईद आगे बढ़ा। उसने दुल्हन का चेहरा अपने

हाथों में लेकर ज़रा-सा घुमा दिया। दूल्हे का एक हाथ उसकी पतलून की जेब में था। जब मुहम्मद सईद दुल्हन के चेहरे को थोड़ा-सा टेढ़ा कर रहा था, दूल्हा ने जेब से हाथ निकाला। उसके हाथ में कोई चीज़ थी। दूल्हा ने वह चीज़ मुहम्मद सईद के सिर के नीचे और गर्दन के ऊपर ज़ोर से दे मारी। मुहम्मद सईद दुल्हन की ओर गिरा। दुल्हन तेज़ी से एक ओर हट गई। मुहम्मद सईद औंधे मुंह गलीचे पर जा गिरा। दुल्हन दबे पांव दुकान के दरवाज़े पर गई और दरवाज़ा बंद कर आई।

उस समय आसफगंज में बिलकुल भीड़भाड़ नहीं थी। लगभग सभी दुकानें बन्द हो चुकी थीं। मुहम्मद सईद की दुकान की ओर किसीका ध्यान ही नहीं गया।

मुहम्मद सईद गलीचे पर औंधे मुंह बेहोश पड़ा था।

"अपने पर्स में से स्पंज निकालो।" दूल्हा ने दुल्हन से कहा और अपनी जेब में से टेप की रील निकालकर मुहम्मद सईद के हाथ-पांव बांध दिए। दुल्हन ने स्पंज दूल्हा को दे दिया। स्पंज में पानी था। दूल्हा मुहम्मद सईद के चेहरे पर स्पंज फेरने लगा।

कुछ मिनट के बाद एक कराह के साथ मुहम्मद सईद ने आंख खोल दीं।

"इसका क्या मतलब है?" मुहम्मद सईद ने उठकर बैठने की कोशिश करते हुए कहा।

"मतलब तो तुम अच्छी तरह जानते हो। बताओ, तुम्हारी कितनी टोलियां हैं और कहां-कहां हैं? और अब तक तुमने क्या-क्या मालूम किया है?" दूल्हा ने पूछा।

"मेरी कोई टोली नहीं है।" मुहम्मद सईद ने कहा।

दूल्हा ने बड़े ज़ोर से मुहम्मद सईद के होंठों पर मुक्का मारा। उसके होंठ फट गए और उनसे खून बहने लगा।

"तुम कहां जाने वाले थे? क्या अपनी टोली की मीटिंग में? तुम्हारी टोली की मीटिंग कहां होने वाली है?"

"मेरी कोई टोली नहीं है, और न मुझे किसी मीटिंग में जाना था।" मुहम्मद सईद ने कहा।

दूल्हा ने एक मुक्का मुहम्मद सईद के कान पर मारा। उसका कान फट गया और कान से खून बहने लगा।

"तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने हमारा विरोध करने के लिए टोलियां बना रखी हैं। तुम एक अन्याय पर परदा डाल रहे हो। तुम अन्याय का पक्ष ले रहे हो।" यह कहकर दूल्हा ने अपनी हथेली मुहम्मद सईद की नाक पर मारी। मुहम्मद सईद की नाक फट गई और खून का फव्वारा फूट पड़ा। मुहम्मद सईद सिर से पांव तक दर्द और पीड़ा बन गया था।

"मैं तुमसे अन्तिम प्रश्न करूंगा। बताओ, तुम्हारी टोलियां कितनी हैं और कहां-कहां हैं ? नई घटनाओं के बारे में तुम क्या जानते हो ?"

"मैं कुछ नहीं जानता।"

"तुम बहुत कुछ जानते हो। उत्तर दो।"

मुहम्मद सईद चुप रहा तो दूल्हा अपनी कमर से बंधी चमड़े की लम्बी बैल्ट निकालकर उसे कोड़े की तरह मुहम्मद सईद पर मारने लगा। जब वह मारते-मारते पसीना-पसीना हो गया तो उसने बैल्ट फिर कमर में बांध ली।

"आओ, चलें। अब यह न कुछ कर सकेगा, न बोल सकेगा।"

मुहम्मद सईद फिर बेहोश हो गया था।

दूल्हा-दुल्हन मुहम्मद सईद की दुकान से निकले। उनकी टैक्सी बाहर खड़ी थी।

"चलो, मुर्शिदाबाद वापस चलें।"

टैक्सी मुर्शिदाबाद की ओर चल पड़ी। उस समय रात के पौने दस बजे थे।

दूल्हा-दुल्हन जाते हुए मुहम्मद सईद की दुकान का दरवाज़ा बाहर से भेड़ गए थे।

दिलाराम होटल में मेजर और उसके साथी सो चुके थे।

सुबह के साढ़े नौ बजे थे। मेजर और उसके साथी नाश्ता कर

रहे थे।

इंस्पेक्टर सक्सेना ने सूट में कदम रखा। उसका चेहरा बहुत गम्भीर था।

"क्यों इंस्पेक्टर साहब, आप कुछ उदास-से मालूम हो रहे हैं!" मेजर बोला।

"फोटोग्राफर मुहम्मद सईद की लाश इतनी भयानक, बीभत्स और भोंड़ी है कि देखने के बाद उसका प्रभाव मुझपर अभी तक है। मैंने ऐसी भयानक लाश कभी नहीं देखी। न जाने उसे किस-किस चीज़ से पीटा गया है। कान फटे हुए, होंठ फटे हुए, नाक फटी हुई, आंखें सूजकर अखरोट जैसी हो रही हैं। सारे चेहरे और गर्दन पर चौड़े-चौड़े लाल निशान हैं। उसे पीट-पीटकर मार डाला गया है।"

"ओह!" मेजर बोला। फिर उसे याद आ गया कि आर्टिस्ट रावेल के मित्र अरविन्द दीक्षित की भी इसी तरह पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी। मुहम्मद सईद को पीट-पीटकर मार डालने का उद्देश्य भी वही हो सकता है कि उससे यही पूछा गया होगा कि उसकी टोलियां क्या कर रही हैं।

"क्या यह पता चला कि हत्या की वारदात कब हुई?" मेजर ने पूछा।

"पुलिस डॉक्टर का बयान है कि हत्या रात के सवा नौ बजे से पौने दस बजे के बीच हुई।"

"मुहम्मद सईद रात को अपनी दुकान कितने बजे बन्द किया करता था?"

"साढ़े नौ बजे।"

"इसका मतलब है कि उसके पास पौने नौ बजे या नौ बजकर पांच मिनट पर कोई आया। कुछ पता लगा कि उस समय उसकी दुकान में कौन आया था?"

"एक आदमी ने बताया है कि एक टैक्सी में एक ईसाई दूल्हा-दुल्हन उसकी दुकान पर आए थे।"

"खूब! वे दोनों दूल्हा-दुलहन के मेकअप में आए, ताकि

मुहम्मद सईद उनका फोटो खींचने पर विवश हो जाए।" मेजर बोला, "नाश्ता कीजिएगा इंस्पेक्टर साहब ?"

"ज़रूर करूंगा। सुबह से निकला हुआ हूं।"

मालती ने टोस्ट पर मक्खन लगाया और प्लेट में दो हाफ ब्रॉयल अण्डे तोड़कर इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा दिए। सॉस की बोतल भी इंस्पेक्टर के सामने रख दी।

नाश्ता करने के बाद मेजर, उसके साथी और इंस्पेक्टर आसफगंज की ओर चल दिए, जहां मुहम्मद सईद की दुकान थी।

१३. नवीन उत्तराधिकारी

मुहम्मद सईद की दुकान के आगे भीड़ लगी हुई थी। बुर्कापोश औरतें, जिनके मरमरी हाथ उनके बुर्कों से बाहर निकले हुए थे, छाती पीट रही थीं। कुछ नौजवान फूट-फूटकर रो रहे थे। बूढ़े एक ओर दरी पर उदास बैठे हत्या की वारदात पर विचार-विमर्श कर रहे थे और मुहम्मद सईद के देश-प्रेम की प्रशंसा कर रहे थे।

मेजर ने उन लोगों में कुछ वे लोग भी देखे, जो मुहम्मद सईद की टोलियों के सदस्य थे। सबसे ज़्यादा उन्हीं लोगों को दु:ख हुआ था। उनका नेता उनसे छीन लिया गया था।

दुकान के अन्दर इंस्पेक्टर का स्टाफ अपने काम में व्यस्त था। इंस्पेक्टर लोगों से पूछताछ कर रहा था।

मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा, "मैंने आपको बताया था कि दुश्मन कुछ दिनों तक अपने वास्तविक उद्देश्य को छिपाए रखेगा और कोई न कोई शरारत ज़रूर करेगा, ताकि लोगों का ध्यान दुश्मन के वास्तविक उद्देश्य की ओर से हट जाए। यह उसका पहला कारनामा तो है, लेकिन इससे उसका उद्देश्य और आगे बढ़ जाता है।"

"हां।"

मेजर इंस्पेक्टर के साथ दुकान के अन्दर चला गया।

मुहम्मद सईद सुन्दर और आकर्षक युवक था। लम्बा कद। शंगरफी रंग। वह अचकन और पतलून पहना करता था। भेड़ की खाल की टोपी पहनता था। उसकी कमीज़ हमेशा टसर की होती थी। टाई भी टसर की ही होती थी।

मुहम्मद सईद की टसर की कमीज़ का कॉलर मसका हुआ था और उस कमीज़ पर खून के धब्बे जमे हुए थे। उसका कुचला हुआ सुन्दर चेहरा खून और फटे हुए गोश्त का मिश्रण बन गया था। पतलून की क्रीज़ बिगड़ी हुई थी। गालों और गर्दन पर चौड़े-चौड़े निशान थे।

मेजर ने उन निशानों को देखकर कहा, "ऐसा मालूम होता है कि हत्यारे ने मुहम्मद सईद की जान लेने में बैल्ट की भी सहायता ली थी। मानवीय क्रूरता का ऐसा उदाहरण शायद ही कहीं मिले।"

मेजर लाश पर झुक गया। उसने लाश की गर्दन ऊपर उठाई तो उसे सिर के नीचे एक बहुत बड़ा गूमड़ दिखाई दिया। उसने ज़रा गर्दन घुमाई तो उसे गूमड़ पर कुछ ऊन चिपकी हुई दिखाई दी।

"ऊन? यह कहां से आई?" मेजर बोला, "शायद ऊनी टोपी से ऊन टूटकर गूमड़ से चिपट गई।"

मेजर मुहम्मद सईद की नाक के फटे हुए नथुनों को देखने लगा। उसे नाक के अन्दर जमे हुए खून के साथ कोई चमकीली-सी चीज़ भी दिखाई दी। मेजर ने इशारे से इंस्पेक्टर को अपने पास बुलाया और बोला, "इंस्पेक्टर साहब, ज़रा झुककर देखिए कि नाक के नथुनों के अन्दर क्या चीज़ चमक रही है?"

इंस्पेक्टर ने झुककर देखते हुए कहा, "कोई चीज़ चमक तो ज़रूर रही है।"

"मुझे यह वार्निश दिखाई देती है इंस्पेक्टर साहब!" मेजर बोला।

"नाक के नथुनों में वार्निश का क्या मतलब हो सकता है?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"आपने ऊन देखी और नाक के नथुनों में वार्निश देखी। फोटोग्राफर के यहां रुई भी होती है और फ्रेम चमकाने के लिए वार्निश भी होती है। हत्यारा बहुत होशियार था। उसने जब टेप से मुहम्मद सईद को बांधा तो कलाइयों और टखनों पर रुई रखकर टेप बांधा, ताकि कलाइयों और टखनों पर टेप के निशान न पड़ें और किसीको यह मालूम न हो कि वह किस किस्म का टेप था। और अब रहा वार्निश का प्रश्न, हत्यारा जानता था कि उसने मुहम्मद सईद को मारा-पीटा है। कभी-कभी मार-पीट से आदमी की जान नहीं निकलती। हत्यारे ने मुहम्मद सईद की नाक के नथुनों में वार्निश भर दी, ताकि जब वार्निश सूखकर लुगदी-सी बन जाए तो सांस लेना कठिन हो जाए और मुहम्मद सईद के बच रहने की संभावना न रहे।"

"ओह!" इंस्पेक्टर ने कहा।

"देखिए इंस्पेक्टर साहब, हत्यारे ने एक नया हथकण्डा इस्तेमाल किया है, ताकि वह यह बता सके कि इस हत्या का अन्य हत्याओं से कोई सम्बन्ध नहीं है; लेकिन हत्यारा एकब ात भूल गया। वह उन लोगों को शिकार बना रहा है, जिनके नाम उसकी लिस्ट में हैं।" मेजर ने कहा, "आप आवश्यक कार्रवाई कीजिए और यह पता लगाने की कोशिश कीजिए कि वह दूल्हा-दुल्हन का जोड़ा जिस टैक्सी में आया था, उस टैक्सी का नम्बर क्या था और वह टैक्सी कहां की थी। मेरा विचार है कि हत्यारा एक नया कारनामा बहुत जल्द करेगा।"

मेजर और उसके साथी अपने होटल में लौट आए।

उस रात मुहम्मद सईद की टोलियों के लोग दो नम्बर किले की सुरंग में इकट्ठे हुए। इस किले को दुश्मन ने लैसर से काफी तोड़ डाला था।

मुहम्मद सईद के स्थान पर नया नेता चुनने के लिए वे लोग इकट्ठे हुए थे। लोग जानते थे कि मुहम्मद सईद का स्थान कौन ले सकता है। वे यह निश्चय करके आए थे कि सर्वसम्मति से

शहरयार को मुहम्मद सईद का उत्तराधिकारी बनाएंगे।

शहरयार को जब मुहम्मद सईद का उत्तराधिकारी चुन लिया गया तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने अपने साथियों को धन्यवाद दिया और बोला, "आपने मुझपर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डाल दी है। मैं स्वर्गीय मुहम्मद सईद की तरह शायद योग्य सिद्ध न हो सकूं, लेकिन मैं अपने कर्तव्य-पालन में कुछ उठा न रखूंगा।"

लोगों ने जोश-भरी तालियां बजाईं।

"साथियो, आज रात सोचूंगा कि हमें कौन-सा नया उपाय अपनाना चाहिए। उस नये उपाय के सम्बन्ध में मैं आप लोगों को कल बताऊंगा।"

सभा विसर्जित हो गई।

शहरयार नौजवान था। उसकी प्रेमिका सिद्दीका उसपर जान छिड़कती थी। वह एक अनाथ लड़की थी, लेकिन उसका रूप-सौन्दर्य अप्सराओं को भी लजाता था। शहरयार धन-सम्पन्न युवक था। उसने सिद्दीका के लिए बेगम बाज़ार की तीसरी गली में एक मकान खरीद दिया था। उसने अपनी बिरादरी के सामने कसम खाकर कहा था कि सिद्दीका उसकी पत्नी बन चुकी है, लेकिन उनकी शादी तब होगी, जब वह आने वाले सर्वनाश को रोकने में सफल हो जाएगा। उसकी बिरादरी ने उसके त्याग की प्रशंसा की थी और सिद्दीका और उसके सम्बन्धों पर कोई आपत्ति नहीं की थी।

सुरंग में आयोजित चुनाव की मीटिंग रात के साढ़े नौ बजे समाप्त हो गई। शहरयार बेगम बाज़ार की तीसरी गली में पहुंचा। उसने अपने मकान पर दस्तक दी। सिद्दीका ने दरवाज़ा खोला। वह सिर से पांव तक मुस्कान बनी हुई थी। शहरयार ने मकान के अन्दर आकर दरवाजा बंद किया तो सिद्दीका अपने झांझन झनकारकर शहरयार से लिपट गई। शहरयार ने सिद्दीका को मुहम्मद सईद की हत्या की सूचना दोपहर को ही दे दी थी। सिद्दीका बहुत रोई थी। वह भी मुहम्मद सईद को अपना प्यारा लीडर समझती थी।

शहरयार ने उसे यह खुशखबरी सुनाई कि उसे मुहम्मद सईद के स्थान पर नेता चुन लिया गया है तो सिद्दीका ने उसके गालों को चूमकर कहा, "शहरयार, तुम्हें जान लड़ानी पड़े तो लड़ा देना। मैं तुम्हारे साथ कुर्बान होने के लिए तैयार हूं। यह बिरादरी का नहीं, वतन का सवाल है।"

शहरयार को सिद्दीका पर प्यार आ गया और वह उसे देर तक चूमता रहा।

सहसा दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"कौन ?" शहरयार ने पूछा।

"सलीमा बेगम।"

"कौन सलीमा बेगम ?" शहरयार ने पूछा।

"मुहम्मद सईद की अभागिन बीवी।" बाहर से किसीने उत्तर दिया।

"ओह, आप ?" शहरयार ने अन्दर से कहा।

"हां शहरयार, आज से तुम मेरे खाविन्द के जांनशीन हो। मैं तुम्हें वह तावीज़ देने आई हूं, जो मेरे शौहर के गले में बंधा रहता था। जिसपर एक दरवेश बुढ़िया का खोदा हुआ अलफ है कि तुम वतन पर जान निछावर करोगे तो सीधे जन्नत में जाओगे। यह तावीज़ तुम्हें हर तरह से आखिरी दम तक मुसीबतों से बचाएगा। मैं उस दरवेश बुढ़िया को भी अपने साथ लाई हूं, जो आयत पढ़कर तुम्हें नये सिरे से दुआ देगी।"

शहरयार ने दरवाज़ा खोल दिया। उसने सलीमा बेगम की ओर देखा। आज से पहले मुहम्मद सईद की पत्नी उसके सामने बेपरदा कभी नहीं आई थी, लेकिन वह उसके बुर्के में से झांकते सुन्दर हाथों से परिचित था।

"आइए भाभीजान ! और आप भी आइए। यह मेरी खुशनसीबी है कि एक बुज़ुर्ग दरवेश खातून मेरे लिए दुआ करने आई हैं।" यह कहकर शहरयार ने दरवेश बुढ़िया के कदमों पर सिजदा किया। दरवेश औरत ने दुआ के लिए दोनों हाथ आसमान की ओर उठा दिए। सिद्दीका ने भी दरवेश बुढ़िया के कदम चूमे।

सलीमा बेगम का बायां हाथ बुर्के से बाहर था, जिसमें एक तावीज था। शहरयार ने वह तावीज़ मुहम्मद सईद के गले में अक्सर देखा था।

दरवेश औरत के दोनों हाथों पर पुराने चमड़े के दस्ताने थे। उसका लिबास भी चमड़े का ही था। उसकी झुर्रियां लटक रही थीं। उसके पीले और सफेद बालों की लटें कंधों पर झूल रही थीं।

"ऐ खुदा रसीदा खातून, अपने हाथ से यह तावीज़ शहरयार के गले में बांध दीजिए।" सलीमा बेगम ने दरवेश बुढ़िया से कहा और रेशमी डोरी में बंधा तावीज़ उसके हाथ में दे दिया।

दरवेश बुढ़िया ने होंठों ही होंठों में एक आयत पढ़ी और तावीज़ पर फूंक मारी। फिर उसने सिद्दीका की ओर इशारा करके पूछा, "यह खातून कौन है ?"

"यह मेरी होने वाली बीवी है।" शहरयार ने उत्तर दिया।

"शहरयार, तुम दाईं ओर खड़े हो जाओ और सिद्दीका तुम्हारे साथ वाईं ओर खड़ी हो जाए। सिद्दीका, तुम अपना बायां पांव शहरयार के दायें पांव से जोड़ दो और दीवार की ओर मुंह करके खड़ी हो जाओ।"

सिद्दीका ने अपना बायां पांव शहरयार के पांव से जोड़ दिया।

दरवेश औरत ने चमड़े के दस्तानों में से अपने हाथ निकाले। उसके दायें हाथ की उंगलियों के गट्टों पर पीतल के मोटे-मोटे छल्ले मढ़े हुए थे। उसने पीछे की ओर जाकर शहरयार के गले में तावीज़ बांध दिया। तावीज़ बांधते हुए वह कोई आयत पढ़ती रही।

औरत ने तावीज़ बांधने के बाद कहा, "मैं जो कुछ कहूं, तुम दोनों उसे दोहराना।"

"अच्छी बात है।" शहरयार और सिद्दीका ने एकसाथ कहा।

दरवेश औरत ने कहा, "इंसान को ज़िन्दगी सिर्फ अपनी गर्ज़ पूरी करने के लिए नहीं दी जाती।"

शहरयार और सिद्दीका ने दरवेश औरत के शब्द दोहराए, "इंसान को ज़िन्दगी सिर्फ अपनी गर्ज़ पूरी करने के लिए नहीं दी

जाती।"

दरवेश औरत ने दूसरा वाक्य बोला, "किसीका भला करना सबसे बड़ा सबाब है। किसीको नुकसान पहुंचाना सबसे बड़ा गुनाह है।"

शहरयार और सिद्दीका ने दरवेश औरत का दूसरा वाक्य दोहराया, "किसीका भला करना सबसे बड़ा सबाब है। किसीको नुकसाना पहुंचाना सबसे बड़ा गुनाह है।"

दरवेश औरत ने तीसरा वाक्य कहा, "वतन पर कुर्बान होना खुदा से जा मिलना है।"

शहरयार और सिद्दीका ने दरवेश औरत का तीसरा वाक्य दोहराया, "वतन पर कुर्बान होना खुदा से जा मिलना है।"

दरवेश औरत ने अन्तिम वाक्य कहा, "ऐ खुदा, मुझे ताकत दे कि चाहे मेरा बंद-बंद कट जाए, मैं मैदान न छोड़ूं।"

शहरयार और सिद्दीका ने दरवेश औरत का चौथा और अन्तिम वाक्य दोहराया, "ऐ खुदा, मुझे ताकत दे कि चाहे मेरा बंद-बंद कट जाए, मैं मैदान न छोड़ूं।"

"आमीन!" दरवेश औरत के मुंह से निकला और उसके साथ ही उसकी पीतल के छल्लों वाली मुट्ठी कसकर शहरयार की गर्दन के पीछे पड़ी। उस समय तक बुर्कापोश औरत भी अपना दायां हाथ बुर्के से निकाल चुकी थी। उसकी उंगलियों के गट्टों पर भी मोटे-मोटे पीतल के छल्ले थे। उसने भी मुट्ठी कसकर सिद्दीका के सिर के पीछे दे मारी।

शहरयार और सिद्दीका एकसाथ सामने की ओर गिरे और उनके चेहरे दीवारों से टकराए। वे गिरते ही बेहोश हो गए।

दरवेश औरत और बुर्कापोश औरत ने शहरयार और सिद्दीका को चित लिटा दिया। दरवेश औरत ने अपने कंधे से लटके हुए झोले में से सफेद द्रव पदार्थ से भरी एक बड़ी शीशी निकाली और शहरयार तथा सिद्दीका के पास बैठ गई। उसने आधी शीशी उन दोनों की नाक के नथुनों में उड़ेल दी और आधी शीशी उन दोनों के मुंह में उड़ेल दी और खाली शीशी अपने झोले में डाल ली।

दोनों औरतें तेज़ी से मकान से निकलीं और दरवाज़े की कुण्डी लगाकर अंधेरे में गायब हो गईं।

एक घण्टे बाद मुहम्मद सईद की टोली का सदस्य बाबूलाल शहरयार के मकान के दरवाज़े पर पहुंचा। वह आज रात की चुनाव सभा में सम्मिलित नहीं हो पाया था। वह शहरयार को अपना नया नेता चुने जाने पर बधाई देने आया था। उसने दरवाज़े में बाहर से कुण्डी लगी देखी तो सोचा कि शायद शहरयार और सिद्दीका सात-आठ मिनट के लिए इधर-उधर चले गए होंगे। वह दरवाज़े से बाहर खड़ा पन्द्रह मिनट तक उनका इंतज़ार करता रहा।

'घर खुला छोड़कर इतनी देर इन लोगों को लगानी नहीं चाहिए थी।' बाबूलाल ने मन ही मन कहा।

वह शहरयार के घनिष्ठ और बेतकल्लुफ दोस्तों में से था। उसने दरवाज़े की बाहर से कुण्डी खोली और मकान के अन्दर कदम रखा, लेकिन अन्दर कदम रखते ही उसके मुंह से हलकी-सी चीख निकल गई। सिद्दीका और शहरयार साथ-साथ लेटे हुए थे। उनके मुंह से सफेद-सा मवाद निकल रहा था और दम घोंट देने वाली बदबू आ रही थी। सिद्दीका और शहरयार की सांस उनका साथ छोड़ चुकी थी। उनकी आंखें अधखुली थीं, जो शीशे की तरह चमक रही थीं। यह चमक मौत की चमक थी।

'हे भगवान, आज ही शहरयार को मुहम्मद सईद के स्थान पर नेता चुना गया था और आज ही किसीने इसे मौत की नींद सुला दिया। हमारी टोली में खलबली मच जाएगी। अब नेता बनने की हिम्मत कौन करेगा! मैं टोली के बुज़ुर्गों के पास जाता हूं। एक आपत्कालीन मीटिंग बुलाना ज़रूरी है।'

बाबूलाल मकान से निकला। उसने मकान के बाहर कुण्डी लगा दी और एक टैक्सी लेकर टोली के बुज़ुर्गों के पास पहुंच गया।

टोली के बुज़ुर्गों ने बाबूलाल की कहानी सुनी तो वे अवाक् रह गए।

१४. लकड़ी की घोड़ी

बुज़ुर्गों ने बाबूलाल की कहानी सुनी तो वे दुःख और उदासी में डू बगए।

एक बुज़ुर्ग ने सोचते हुए कहा, "आज ही शहरयार को मुहम्मद सईद की जगह नेता चुना गया था और डेढ़ घण्टे के बाद ही उसे और उसकी होने वाली पत्नी को मौत के मुंह में धकेल दिया गया। हत्यारे ने हमारी टोली पर एक ज़बर्दस्त चोट की है। इस बात से हमारी हिम्मत टूट सकती है। हमारे हौसले तोड़ने की कोशिश की गई है।"

"हमारे हौसले पस्त नहीं हो सकते।" दो नौजवान बोल उठे।

"लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि इतनी जल्दी दुश्मन को कैसे पता चल गया कि शहरयार को मुहम्मद सईद का उत्तराधिकारी चुना गया है?" एक बुज़ुर्ग ने कहा।

कुछ लोगों ने अलग होकर सलाह की, और वे बहुत जल्द एक-दूसरे से सहमत हो गए।

उन्होंने बाकी सदस्यों के पास आकर कहा, "मुहम्मद सईद ने प्रसिद्ध जासूस मेजर बलवन्त की चर्चा की थी कि वह हमारी सहायता के लिए यहां आया हुआ है। वह हमारा एक ताकतवर बाज़ू है। बाबूलाल, तुम टैक्सी लेकर दिलाराम होटल में जाओ और मेजर बलवंत को ले आओ। तब तक हम आपत्कालीन बैठक की व्यवस्था करते हैं।"

बाबूलाल चला गया। बुज़ुर्गों ने अपने कई आदमी टोली के मेम्बरों के पास दौड़ा दिए।

बाबूलाल टैक्सी लेकर दिलाराम होटल में पहुंचा।

मेजर और उसके साथी उस समय खाना खा रहे थे। दरवाज़े पर दस्तक सुनकर मालती ने पूछा, "कौन?"

"मेजर साहब, मैं मुहम्मद सईद की टोली का सदस्य बाबूलाल हूं। एक ज़रूरी काम से आया हूं।"

मालती ने सावधानी के नाते रिवॉल्वर उठा लिया और जाकर दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़े में एक नौजवान खड़ा था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। मालती समझ गई कि यह नौजवान किसी बुरी भावना से उनके पास नहीं आया।

"आइए!" मालती ने दरवाज़े में से हटते हुए कहा और मेजर की ओर इशारा करके बोली, "यह आपसे मिलना चाहते हैं।"

"मेजर साहब, मेजर साहब! एक और अंधेर हो गया। आपको शायद मालूम नहीं कि हमने अपने लीडर मुहम्मद सईद की मृत्यु के बाद नया लीडर चुनने के लिये एक मीटिंग बुलाई थी। उस मीटिंग में सर्वसम्मति से शहरयार को नया लीडर चुन लिया गया था, लेकिन घण्टे-भर बाद ही शहरयार और उसकी होने वाली पत्नी को किसीने मौत के घाट उतार दिया।" बाबूलाल ने दुःख और पीड़ा-भरे स्वर में कहा।

"बैठ जाओ बाबूलाल! बहुत घबराए हुए हो।" मेजर ने उसे तसल्ली देते हुए कहा।

"मैं ही नहीं, हमारी सारी टोली में घबराहट फैली हुई है। हमारी तो कमर ही टूट गई है।" बाबूलाल ने कहा।

"आज जब टोलियों की आपत्कालीन बैठक हुई तो उसमें कोई अजनबी आदमी तो नहीं था?" मेजर ने पूछा।

"मेजर साहब, हमारा एक कोडवर्ड है। हर सदस्य के पास एक कार्ड है, जिसपर उसका फोटो होता है। बाहरी आदमी तो आ ही नहीं सकता।" बाबूलाल ने बताया, "हमारी टोली के बुज़ुर्गों ने सभी टोलियों की आपत्कालीन बैठक बुलाई है। दुश्मन ने इस नये कदम से हमारे हौसले पस्त करने की कोशिश की है। हम चाहते हैं कि आज की आपत्कालीन बैठक में आप भाग लें और यह बताएं कि नेता चुने जाने के घण्टे-डेढ़ घण्टे बाद ही शहरयार की हत्या कैसे कर दी गई।"

"मैं तुम्हारे साथ चलता हूं बाबूलाल! खाना खाओगे?"

मेजर ने पूछा।

"मेजर साहब, इस समय खाना किसे सूझ रहा है?"

मेजर और उसके साथियों ने भी खाना बीच में ही छोड़ दिया।

मेजर ने मालती से कहा, "मालती, फौरन इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन करो कि वह सारे काम छोड़कर फ़ौरन दिलाराम होटल में पहुंच जाए।"

मालती फोन करने चली गई तो मेजर ने डोरा से कहा, "डोरा, जासूसी के सामान वाले बक्स में से चाकमिट्टी का एक डिब्बा निकालकर ले आओ।"

डोरा उठकर पीछे वाले कमरे में चली गई।

बाबूलाल हैरान था कि मेजर चाकमिट्टी क्यों मंगा रहा है।

डोरा चाकमिट्टी का डिब्बा ले आई। मालती भी फोन करके आ गई।

मेजर इंस्पेक्टर सक्सेना की प्रतीक्षा करने लगा।

पन्द्रह-बीस मिनट के बाद इंस्पेक्टर सक्सेना वहां पहुंच गया।

"क्यों, कैसे याद किया मेजर साहब?" इंस्पेक्टर सक्सेना ने आते ही पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, दुश्मन ने मुहम्मद सईद की हत्या करने के फौरन बाद ही एक नया कारनामा कर डाला। आज रात मुहम्मद सईद के स्थान पर शहरयार को टोली का नेता चुना गया था, लेकिन एक घण्टे के बाद ही उसे भी मार डाला गया।"

"ओह!"

"मुहम्मद सईद की टोली के प्रमुख सदस्यों ने अपनी आपत्कालीन बैठक में मुझे बुलाया है। वे यह जानना चाहते हैं कि जब किसीको कानोंकान पता न था कि मुहम्मद सईद के स्थान पर किसे नेता चुना गया है तो शहरयार को मीटिंग के फौरन बाद कैसे मार डाला गया? मैं चाहता हूं कि आप भी मुहम्मद सईद की टोली की आपत्कालीन बैठक में मेरे साथ चलें।"

"चलिए।"

बाबूलाल उन सबको दूसरे किले की सुरंग में ले आया। टोलियों के सदस्य वहां पहले ही पहुंच चुके थे।

'मेजर बलवन्त आ गए! मेजर बलवन्त आ गए!' लोगों में उत्साह की एक लहर दौड़ गई और लोग सम्मानपूर्वक मेजर को रास्ता देने लगे। मेजर सबका अभिवादन करता हुआ आगे बढ़ा। प्रमुख सदस्य उसे प्लेटफॉर्म पर ले आए। मेजर प्लेटफॉर्म पर जा खड़ा हुआ। उसने सिगार सुलगाया और एक लम्बा कश लगाकर बोला, "दोस्तो! साथियो! मैं बाबूलाल से आज की कहानी सुन चुका हूं। यह बहुत ही आश्चर्यजनक और साथ ही साथ घृणास्पद घटना है। आप देशभक्त हैं, देश के लिए प्राण निछावर करने वाले देश के सपूत हैं। आपपर संदेह करना पाप है, लेकिन वास्तविकता को कोई भी बदल नहीं सकता। सबसे पहले मैं एक प्रश्न करूंगा। क्या इस टोली के सभी सदस्य विश्वस्त और विश्वसनीय हैं?"

चारों ओर से आवाज़ आई, "जी हां, सभी लोग विश्वस्त हैं।"

"दोस्तो, सचाई को कोई नहीं झुठला सकता। मुझे यह कहते हुए शर्मिन्दगी महसूस हो रही है कि आपमें कोई काली भेड़ ज़रूर है, वरना आप खुद ही सोचिए, ऐसी खुफिया मीटिंग हो और दुश्मन को एक पल बाद ही नये लीडर का नाम और पता मिल जाए! यह कभी नहीं हो सकता। मैं किसीपर उंगली नहीं रखना चाहता। मैं सभीको विश्वास के योग्य समझता हूं, लेकिन खुदा की कसौटी को कोई धोखा नहीं दे सकता। खुदा की कसौटी पर नेक नेक उतरता है और बुरा बुरा उतरता है। मैं खुदा की कसौटी को आज़माना चाहता हूं। साथ ही दुआ करता हूं कि हमारे बीच कोई काली भेड़ न निकले, लेकिन आखिरी फैसला तो खुदा की कसौटी ही करेगी। मैं आपके सामने खुदा की कसौटी प्रस्तुत करता हूं। आप दो लाइनें बना लीजिए। सुरंग की दोनों दीवारों के साथ लगकर खड़े हो जाइए।"

मेजर का आदेश सबने मान लिया। सदस्यों ने दो लाइनें बना लीं और वे सुरंग की दीवारों के साथ लगकर खड़े हो गए। सब हैरान थे कि मेजर खुदा की कैसी कसौटी प्रस्तुत कर रहा है।

मेजर ने डोरा से चाकमिट्टी का डिब्बा ले लिया और प्लेट-फॉर्म से उतर गया। उसने प्लेटफॉर्म से चार गज़ की दूरी पर फर्श पर चाकमिट्टी बिखेर दी।

फिर उसने टोली के सबसे बड़ी उम्र के सदस्य से कहा, "आप आगे आइए चाकमिट्टी के पास। क़लमा पढ़िए और फिर कुरान शरीफ की कोई ऐसी आयत पढ़िए, जिसका भाव यह हो—'गद्दारों को जहन्नुम की आग में झोंका जाएगा।' "

वह बुज़ुर्ग जूतियां उतारकर और हाथ बांधकर खड़े हो गए। उन्होंने पहले हुकुम पढ़ा। फिर एक आयत पढ़ी। इसके बाद पीछे हटते हुए अपनी कतार में जा खड़े हुए।

मेजर प्लेटफॉर्म पर जा खड़ा हुआ।

"दोस्तो, यह चाकमिट्टी है। यह तीन फुट की चौड़ाई में बिखरी हुई है। दाईं कतार का जो मेम्बर सबसे पीछे है, सबसे पहले इस चाकमिट्टी से गुज़रकर प्लेटफॉर्म तक आएगा। चाक की इस मिट्टी पर आयत नक्श हो चुकी है। खुदा की कसौटी इन्साफ करेगी। वफादार और देशभक्त चाकमिट्टी पर से गुज़रते हुए लड़खड़ाएगा नहीं, लेकिन जो गद्दार और देश का दुश्मन होगा, वह चाकमिट्टी पर से गुज़रते हुए लड़खड़ाकर गिर जाएगा। पिछले सिरे से आप एक-एक करके चाकमिट्टी पर से गुज़रकर प्लेटफॉर्म तक आएं और प्लेटफॉर्म छूकर वापस अपनी जगह पर जा खड़े हों।"

कुल तीस सदस्य थे। दाईं कतार के सदस्य पीछे से एक-एक करके चाकमिट्टी पर से गुज़रने लगे। दाईं कतार के सभी सदस्य चाकमिट्टी पर से गुज़रकर अपने-अपने स्थान पर जा खड़े हुए।

अब बाईं कतार के सदस्यों की बारी शुरू हुई। बाईं कतार के नौ सदस्य चाकमिट्टी पर से सकुशल गुज़र गए।

दसवां सदस्य आगे बढ़ा। वह एक भारी-भरकम आदमी था

और लुहार मालूम होता था। वह चाकमिट्टी के पास पहुंचा तो उसके माथे पर पसीना छलक आया और फिर जैसे ही वह चाकमिट्टी पर से गुज़रा, लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

"दोस्तो, यह रही आपकी काली भेड़।" मेजर ने मुस्कराकर कहा।

"सदरू—!"

चारों ओर से आवाज़ें आईं। सदरू में उठने की हिम्मत नहीं रही थी।

"हरामज़ादे, कमीने, रज़ील, दोज़खी!"

सदरू पर चारों ओर से लानतें बरसने लगीं।

"उठ सदरू, तूने ईमान बेच दिया, वतन बेच दिया और अपने लीडर का गला कटवा दिया।" एक बुज़ुर्ग सदस्य ने कहा।

"पत्थर मार-मारकर इसे जान से मार डालो।"

"इसे दीवार में चिन दो।"

"इसकी बोटी-बोटी उड़ा दो।"

"इसे बकरे की तरह हलाल कर दो।"

हर ओर से भांति-भांति की आवाज़ें आने लगीं।

वह बुज़ुर्ग, जिन्होंने कलमा और आयत पढ़ी थी, आगे बढ़कर बोले, "सदरू को मार डालना इसके लिए निजात (मुक्ति) साबित होगा। इसे भयानक से भयानक सज़ा मिलनी चाहिए। यह तरस-तरसकर मरे। एक-एक निवाले के लिए तड़पे। कोई इसे भीख तक न दे। जो भी इसके पास से गुज़रे, इसके मुंह पर थूके। वह सामने लकड़ी की घोड़ी पड़ी है। उससे एक रस्सा बंधा हुआ है और रस्से से हथौड़ा बंधा हुआ है। लकड़ी की उस घोड़ी को घसीटकर ले आओ। लकड़ी की घोड़ी की पीठ पर रस्से से इसके दोनों हाथ बांध दो और हथौड़ा खोलकर मुझे पकड़ा दो।"

दो सदस्य लकड़ी की घोड़ी की ओर दौड़ पड़े और उसे घसीटकर ले आए। चार आदमियों ने सदरू को पकड़ लिया और रस्से से उसके दोनों हाथ लकड़ी की घोड़ी की पीठ से बांध

दिए और हथौड़ा बुज़ुर्ग को दे दिया ।

"सदरू, तुम्हें अपने इन हाथों पर बहुत घमण्ड था कि तुम छेनी और हथौड़ा लेकर गुलदानों, उगालदानों और बर्तनों को फूलों जैसी सुन्दर सूरतें दे सकते हो। इन्हीं हाथों से तुम अपनी रोज़ी कमाते थे। आज मैं तुम्हारे ये दोनों हाथ तोड़ दूंगा, ताकि तुम्हें उम्र-भर यह सज़ा याद रहे और यह दुनिया तुम्हारे लिए जहन्नुम बन जाए।"

"रहम···रहम···करीम मियां···रहम···मुझे जान से मार डालो। मैंने चांदी के चंद टुकड़ों के लिए गद्दारी की···मुझे पत्थर मार-मारकर मार डालो···मगर मेरे हाथ···।" सदरू गिड़गिड़ाया।

लेकिन करीम मियां ने उसके हाथों पर ताबड़तोड़ हथौड़े बरसाने शुरू कर दिए। उंगलियों की हड्डियों और फिर हाथों की हड्डियों के टूटने की आवाज़ें सुरंग में गूंज उठीं। सदरू बेहोश हो गया।

करीम मियां ने दो-तीन सदस्यों की ओर मुड़कर कहा, "जाओ, इसे सुरंग से बाहर फेंक आओ।"

चार आदमी सदरू को उठाकर ले गए और सुरंग से बाहर फेंक आए।

मेजर, उसके साथी और इंस्पेक्टर इस कड़ी सज़ा पर बहुत हैरान थे।

एक बड़ी उम्र के बुज़ुर्ग ने पूछा, "मेजर साहब, आपको कैसे पता चला कि हमारे मेम्बरों में एक काली भेड़ भी है?"

"आप खुद ही सोचिए कि आप खुफिया मीटिंग में अपना नया नेता चुनते हैं और उस लीडर को दुश्मन एक घण्टे के अंदर ही मार डालता है। दुश्मन को भविष्यवाणी या इलहाम तो हुआ नहीं होगा। आपके साथियों में से ही किसीने उसे खबर दी होगी कि मुहम्मद सईद के स्थान पर किसे नया नेता चुना गया है। उसने दुश्मन को अपने लीडर के घर का पता भी बता दिया होगा, और अब आप पूछेंगे कि मैंने खुदा की कसौटी का नाटक

क्यों रचाया।"

"आपने तो गज़ब कर दिया।" दूसरे सदस्य ने कहा।

"खुदा की कसौटी एक मनोवैज्ञानिक चाल थी। मैं चाक-मिट्टी लेकर आया। करीम मियां से उसपर कलमा पढ़वाया। आयत पढ़वाई। खुदा के कोप का डर सबसे ज़्यादा होता है। मुझे मालूम था कि इन सदस्यों में कोई न कोई गद्दार ज़रूर है। उसके मन का चोर उसे कमज़ोर कर देगा। वह चाहे जितनी हिम्मत करे, लेकिन कलमा और आयत से लिपटी हुई चाकमिट्टी पर से गुज़रते समय लाख कोशिश करने पर भी लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा। अगर आपने ध्यान दिया हो तो आपको याद आ जाएगा कि जब सदरू चाकमिट्टी के पास पहुंचा था तो उसके माथे पर पसीने की बूंदें छलक आई थीं। मैं तभी समझ गया था कि सदरू चाकमिट्टी पर से गुज़रते हुए ज़रूर लड़खड़ाकर गिर पड़ेगा।"

सब लोग प्रशंसा-भरी नज़रों से मेजर की ओर देखने लगे।

एक बुज़ुर्ग ने कहा, "मैं चाहता हूं कि मेजर बलवन्त को अपना लीडर चुना जाए।"

"ठीक है। इनसे अच्छा लीडर हमें कोई नहीं मिल सकता।" एकसाथ कई आवाज़ें आईं।

"दोस्तो! आपको अपना लीडर अपने में से ही किसीको चुनना होगा। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह आपकी कम-ज़ोरी की दलील होगी। मुझे इस बात का डर नहीं है कि अगर मैं आपका लीडर बना तो मुझे भी मार डाला जाएगा। मैं तो दुश्मन की नज़रों में पहले से ही हूं, लेकिन अभी तक मुझसे टक-राने की हिम्मत दुश्मन में नहीं हुई है। मैं हर तरह से आपको रास्ता बताता रहूंगा।"

"मेजर साहब ठीक कह रहे हैं।" करीम मियां ने कहा, "हमारे मेम्बर मुहम्मद सईद और शहरयार की हत्या से डर तो नहीं गए? नहीं। हमारी टोली का हर मेम्बर लीडर बनने के काबिल है। जिनको जान की परवाह नहीं, वे आगे आएं।"

सबसे पहले बाबूलाल और उसके पीछे पांच-छः नौजवान आगे आ गए।

"आज से बाबूलाल हमारा लीडर है।" करीम मियां ने घोषणा की।

टोली के सभी सदस्यों ने खुश होकर तालियां बजाईं और सभीने करीम मियां के निर्णय का समर्थन किया।

"अब हमें चलकर शहरयार के जनाज़े पर फातिहा पढ़ना चाहिए और यह दुआ करनी चाहिए कि खुदा उसे अपनी रहमत के साये में जगह दे।" करीम मियां ने कहा।

"मेरा विचार है कि अगर हम सब इकट्ठे होकर जाएंगे तो अपनी टोली को दुश्मन की नज़रों में उजागर कर देंगे। आप अपने-अपने घर जाइए। इंस्पेक्टर साहब, मैं और मेरे साथी शहरयार के घर जाते हैं। शहरयार का घर कहां है ?"

"बेगम बाज़ार की तीसरी गली में। उसके मकान का नम्बर अठारह है।" करीम मियां ने बताया।

सबने मेजर की सलाह मान ली और अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

१५. अमोनिया

मेजर अपने साथियों और इंस्पेक्टर सक्सेना के साथ बेगम बाज़ार की तीसरी गली के १८ नम्बर मकान में पहुंचा।

शहरयार और सिद्दीका को बराबर-बराबर लेटे देखकर वह ठिठक गया। पहली नज़र में ही उनकी मौत मेजर की आंखों के आगे तस्वीर बनकर घूम गई। उन दोनों के मुंह और नाक से निकला हुआ सफेद मवाद देखकर सब चौंक पड़े। कमरे में दम घोंट देने वाली बदबू की तेज़ लहरें थीं।

"अमोनिया के तेज़ बुलबुले !" मेजर ने कहा और लाशों के पास चला गया। उसने देखा, हत्यारे ने इस बार अपना पुराना ढंग नहीं अपनाया था। सिद्दीका और शहरयार को मारा-पीटा नहीं

गया था।

मेजर को एक खयाल आया। उसने शहरयार की गर्दन उठाकर देखी। उसके सिर के नीचे चार मुंह वाला गूमड़ दिखाई दिया। उसने सिद्दीका की गर्दन भी उठाकर देखी। उसके सिर के नीचे भी चार मुंह वाला गूमड़ उभरा हुआ था।

"इसका अर्थ क्या हो सकता है ?" मेजर के मुंह से निकला और फिर वह होंठ गोल करके सीटी बजाने लगा।

"कुछ पता चला ?" सोनिया ने पूछा।

मेजर लाशों के पास से उठकर खड़ा हो गया और बोला, "सोनिया, दुश्मन को मुक्केबाज़ी का बहुत शौक है। हत्या की दो वारदातों यानी अरविन्द दीक्षित और मुहम्मद सईद की हत्या से स्पष्ट मालूम होता है कि दोनों पर भयानक और घातक रूप से मुक्केबाज़ी का प्रयोग किया गया और फिर दम घोंटने के तरीके अपनाए गए। शहरयार और सिद्दीका की हत्या और पहली दोनों हत्याओं में केवल इतना अन्तर है कि इन हत्याओं में मुक्केबाज़ी का प्रयोग नहीं किया गया, और इनका दम घोंटने के लिए इनकी नाक के नथुनों और हलक में तेज़ किस्म का अमोनिया उड़ेल दिया गया, ताकि दम घुटने में ज़्यादा देर न लगे।" मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर सक्सेना हैरान था कि मृत्यु का कारण जानने में मेजर को रत्तीभर देर नहीं लगती।

"एक तीसरी बात भी विचारणीय है। जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं, हत्यारों को मुक्केबाज़ी का शौक है। वे अपने शिकार को बेहोश करने के लिए अपनी उंगलियों में फौलाद के छल्ले चढ़ाकर शिकार की गर्दन के नीचे वार करते हैं और अपने शिकार को बेहोश कर देते हैं। आप हैरान होंगे कि मैंने मुक्केबाज़ी की चर्चा क्यों की। आर्टिस्ट रावेल की पेंटिंग्स याद कीजिए। आर्टिस्ट रावेल की कुल बारह पेंटिंग्स थीं। उन पेंटिंग्स के तीन-तीन पेंटिंग्स के चार सेट थे। पहली तीन पेंटिंग्स में पुराने तीन फौजी थे, जो लाल जाकेट और फुंदने वाली लाल टोपी पहने हुए थे। उनके हाथों में कड़ाबीनें थीं। तीन पेंटिंग्स के दूसरे सेट में तीन नौजवान दिखाए

गए थे, जिनकी हथेलियों पर चांदी के शमादानों में मोमबत्तियां जल रही थीं और वे हज़रत ईसामसीह की मूर्ति के आगे इस तरह सिर झुकाकर खड़े थे, जैसे कोई प्रतिज्ञा कर रहे हों। अब अगली तीन पेंटिंग्स के सेट की ओर चलिए। उसमें तीन नौजवान मुक्केबाज़ी के अंदाज़ में मुक्के ताने खड़े हुए थे, और बाकी तीन पेंटिंग्स के सेट में लेटिन भाषा को फूलों, रेखाचित्रों और जानवरों के रेखाचित्रों में लिखा गया है। यह आर्टिस्ट रावेल की अपनी उपज थी। वह इस इबारत को छिपाना चाहते थे। उन पेंटिंग्स की सांकेतिक भाषा को मिस्टर ग्रेवाल पढ़ सकते थे, लेकिन आप देख ही चुके हैं कि ग्रेवाल और अचपला को कितनी चालाकी से मार डाला गया।"

"आपने मुक्केबाज़ों की पेंटिंग्स का उल्लेख किया। क्या पेंटिंग्स वाले नौजवान यहां मौजूद हैं?" सुधीर ने पूछा।

"मैं अपनी बात फिर दोहराऊंगा कि मैं अन्धविश्वासी और रूढ़िवादी नहीं हूं, लेकिन यह भी एक ठोस सचाई है कि बहुत-से लोगों ने पेंटिंग्स के पहले सेट वाले तीन सिपाहियों को देखा है, जो लाल जाकेट और फुंदने वाली लाल टोपी पहने तथा हाथों में कड़ाबीनें लिए हुए थे। बहुत-से लोगों ने फौजी बैण्ड पर मार्चिंग गीत की धुन भी सुनी है। अब आप मुक्केबाज़ी का कारनामा भी देख रहे हैं। इसका अर्थ है कि वे मुक्केबाज़ नौजवान भी यहां मौजूद हैं।"

"अगर तीन लाल सिपाही और तीन मुक्केबाज़ यहां मौजूद हैं तो वे तीन नौजवान भी मौजूद होंगे, जो हाथों में जलती हुई मोमबत्तियां लिए हज़रत ईसामसीह की मूर्ति के आगे सिर झुकाए खड़े हैं।" डोरा बोली।

"सम्भव है।" मेजर बोला और फिर उसने इंस्पेक्टर सक्सेना से कहा, "क्या उन तीनों स्केचों की इबारत किसीने पढ़ ली? आपके पास कोई रिपोर्ट आई?"

"अभी नहीं। कलकत्ता और पटना में तो वे स्केच पढ़े नहीं जा सके। मेरे आदमी इलाहाबाद गए हैं। पता नहीं वहां उन्हें सफ-

लता मिलेगी या नहीं।"

"इंस्पेक्टर साहब, अगर वहां भी सफलता न मिले तो आप अपने आदमियों को देश के विभिन्न गिरजाघरों में भेजिए। शायद वहां कोई पादरी या चर्च में काम करने वाला उनको पढ़ पाने में सफल हो जाए। अब आप आवश्यक कार्रवाई कीजिए और यह बताइए कि मद्रासिन के वेश में जो अंग्रेज़ औरत मारी गई थी और जो लैसर वाला आदमी मारा गया था, क्या उन्हें कोई शिनाख्त करने आया ?"

"कोई नहीं।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"उनको शिनाख्त करने कोई आएगा भी नहीं।" मेजर ने कहा और इंस्पेक्टर सक्सेना को वहीं छोड़कर अपने साथियों के साथ वहां से चल पड़ा।

मेजर और उसके साथी होटल में पहुंचे तो मालती बोली, "अब इस सचाई को झुठलाया नहीं जा सकता कि आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी के अनुसार दुश्मन ने लड़ाई छेड़ दी है।"

"हत्यारों को लहू की कितनी प्यास है ! उन्होंने अपने षड्यंत्र की सफलता के लिए सबसे पहले मुर्शिदाबाद में सोज़ीन की हत्या की। सोज़ीन शायद बहुत-से भेद जानती थी। फिर हत्यारों ने बम्बई पर धावा बोलकर वहां उन लोगों को समाप्त कर डाला, जो रावेल के निकट थे और रावेल के रहस्य से परिचित थे। सोज़ीन के बाद रावेल को रास्ते से हटा दिया गया। सोज़ीन और रावेल सारे रहस्यों को भली भांति जानते थे। उनकी ओर से निश्चिन्त हो जाने के बाद उन्होंने अरविन्द दीक्षित और गायकवाड़ को भी ठिकाने लगा दिया और फिर मुर्शिदाबाद और मुंगेर में आकर उनके रहस्य को जानने वालों को समाप्त करना शुरू कर दिया, जो उनके रास्ते में रुकावट बन सकते थे। मुहम्मद सईद और शहरयार को उनकी टोली को कमज़ोर करने के लिए मार डाला गया। दुश्मन अपना रास्ता साफ करके अपनी ताकत बढ़ाता जा रहा है।"

"हत्यारे का उद्देश्य क्या है ?"

"उसके उद्देश्य का पता तो तभी चलेगा, जब उन तीन स्केचों को पढ़ पाने में सफलता मिल जाएगी। इस समय तो हत्यारे के उद्देश्य का कुछ पता नहीं चल रहा।" मेजर ने कहा।

"हत्यारे से कोई चूक होनी चाहिए, जो उसके उद्देश्य पर प्रकाश डाल सके। अभी तक तो हम हत्यारे की सूरत तक नहीं देख पाए हैं। केवल उसके कुछ मददगार हमारे सामने आए हैं—टेढ़ी टांगों वाला आदमी, जिसने सोज़ीन की हत्या की, और जब वह गायकवाड़ की हत्या करने गया तो स्वयं मारा गया। उसकी शिनाख्त भी नहीं हो सकी। इसके बाद दुश्मन के दो और मददगार सामने आए, जिन्होंने हमारे गायकवाड़ तक पहुंचने में रुकावट डाली। इसके बादए क औरत और एक गुरिल्ला जैसा आदमी आता है, जिसने अरविन्द दीक्षित को पीट-पीटकर मार डाला। इसके बाद मद्रासिन के वेश में एक औरत हमारे सामने आती है, जिसने गायकवाड़ की हत्या की और एक मज़दूर से सौ रुपये देकर ग्रेवाल के बंगले की छत पर पत्थर फिकवाकर ग्रेवाल और अचपला को छत के नीचे कुचलकर मार डाला। वह दो नम्बर किले में मारी गई। सांवली मद्रासिन एक अंग्रेज़ औरत निकली। उसका लैसर वाला साथी भी मारा गया। इसके बाद दुश्मन के दो मददगार और सामने आए, ईसाई नव-विवाहित जोड़े के रूप में, जिन्होंने मुहम्मद सईद की हत्या की। मुहम्मद सईद की नाक में वार्निश भरकर उसका दम घोंटा गया। हत्या की अन्तिम वारदात कल रात हुई। शहरयार और उसकी होने वाली पत्नी को मार डाला गया। उनकी हत्या किसने की, इस सम्बन्ध में हमने अभी तक पूछताछ नहीं की है। मालती, तुम बेगम बाज़ार की तीसरी गली में चली जाओ। इंस्पेक्टर सक्सेना वहां होंगे। उनसे मिलकर पूछताछ करो कि किसीने शहरयार के मकान में किसी-को आते-जाते तो नहीं देखा। जाओ और जल्दी से पता करके आओ।"

"चलो मालती, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं।" सुनील बोला।

मालती और सुनील चले गए ।

होटल से निकलकर वे दोनों कार में आ बैठें । सुनील ने ड्राइविंग सीट संभाल ली । मालती उसके बराबर वाली सीट पर बैठी हुई थी ।

सुनील ने कार स्टार्ट कर दी ।

सुनील की कार मीर कासिम रोड से गुज़र रही थी कि एक कार तेज़ी से उनके पास से गुज़री । उस कार की ड्राईविंग सीट पर समूरदार टोपी और कोट पहने कोई बैठा था । उसने अपनी जेब में हाथ डाला तो मालती चौंक पड़ी । उसने बड़ी तेज़ी से अपने पर्स में से रिवॉल्वर निकाल लिया । समूरदार टोपी और समूरदार कोट पहने हुए आदमी ने ज़रा-सा चेहरा टेढ़ा किया और सुनील की कार के दरवाज़े की ओर कोई चीज़ फेंकी । मालती ने गोली चला दी, जो उस चीज़ में लगी । मालती ने दूसरी गोली चलाई, जो तेज़ी से जाती हुई कार में लगी ।

एक ज़ोरदार धमाका सुनकर लोग इकट्ठे होने लगे । सड़क पर गिरी हुई चीज़ में से धुआं निकल रहा था और वह टुकड़े-टुकड़े हो चुकी थी । संयोग से उस समय सड़क पर कोई राहगीर नहीं था, वरना उस हथगोले की किरचों से वह घायल हो जाता ।

"धन्यवाद मालती, तुम सावधान थीं, वरना···" सुनील ने मालती की ओर प्यार से देखते हुए कहा ।

"आपको कुछ हो जाता तो मैं कहां की रहती ?" मालती बोली, "आपने उस कार का नम्बर नोट किया था ?"

"कार का नम्बर छिपा हुआ था, इसलिए मैं देख नहीं पाया। वह बॉक्स वैगन थी । रंग फीरोज़ी था ।"

लोग सुनील और मालती की कार के पास आकर इकट्ठे हो गए और उनसे पूछताछ करने लगे । मालती ने उन्हें बताया कि किसीने हथगोला फेंककर उनकी कार को नष्ट करने की कोशिश की थी ।

'आओ सुनील, चलें । मेजर साहब ने जल्द रिपोर्ट मांगी

है।" मालती बोली।

अब उनकी कार मोती बाज़ार से गुज़र रही थी। मोती बाज़ार की सड़क में खड्डे बहुत थे।

"सुनील, इन खड्डों से बचकर निकलना। लगता है, दुश्मन को मालूम था कि हम किस रास्ते से बेगम बाज़ार जाने वाले हैं। हो सकता है, उसने इन खड्डों में भी कोई ऐसी चीज़ छिपाकर रख दी हो, जो हमारी कार को भक से उड़ा सकती हो। ठहरो सुनील ! मैं कार से उतर जाती हूं। मैं आगे-आगे चलती हूं। सड़क पर कुल तीन बड़े-बड़े खड्डे हैं। तुम कार धीरे-धीरे मेरे पीछे लाओ। जब मैं इशारा कर दूं कि खड्डे में कोई चीज नहीं है तो तुम खड्डे में से कार निकाल ले जाना।" यह कहकर मालती कार से उतर पड़ी और कार के आगे-आगे चलने लगी। पहले खड्डे में उसे कोई चीज़ दिखाई न दी। दूसरे खड्डे में भी कुछ नहीं था। वह सुनील को इशारा करती रही। सुनील ने दोनों खड्डे पार कर लिए। तीसरे खड्डे पर पहुंचकर मालती रुक गई। उस खड्डे में तिनकों की एक पुरानी टोपी पड़ी थी। टोपी उभरी हुई थी। इसका मतलब था कि उस टोपी के नीचे कोई चीज़ थी। मालती ने सुनील को कार रोकने का इशारा किया और अपने पर्स में से रिवॉल्वर निकालकर और खड्डे से दूर हटकर तिनकों की उस टोपी पर रिवॉल्वर से दो फायर किए। एक ज़ोर का धमाका हुआ। धुआं और आग की लपटें निकलीं और मालती औंधे मुंह दूर जा गिरी।

लोग दौड़ पड़े। जब धमाके की आवाज़ थम गई तो मालती कपड़े झाड़ती हुई उठी।

"यह धमाका कैसा था ?" किसीने पूछा।

"इस खड्डे में बारूद वाली सुरंग बिछी हुई थी। अगर कोई कार या ट्रक इस खड्डे में से गुज़रता तो उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ जाते।" मालती ने बताया।

धमाके की आवाज़ सुनकर सुनील भी मालती के पास चला आया। उसने कहा, "क्या था मालती ?"

"बारूदी सुरंग।" मालती ने उत्तर दिया, "मेरे विचार से वह बॉक्स वैगन वाला ड्राइवर ही यहां से जाते हुए बारूदी सुरंग इस खड्डे में रख गया था।"

"हां, थोड़ी देर पहले एक कार इस खड्डे के पास आकर रुकी थी। फीरोज़ी रंग की कार थी। कार वाला समूरदार टोपी और समूरदार कोट पहने हुए था।" एक आदमी बोला।

"वह आदमी था या औरत थी?" मालती ने पूछा।

"बस, यही अंदाज़ा लगाना कठिन है।" वह आदमी बोला।

मालती ने सुनील से कहा, "अब तुम बेखटके इस खड्डे को पार करके चौथे खड्डे की ओर आ जाओ। मैं जाकर उस खड्डे को देखती हूं।"

चौथे खड्डे में कुछ नहीं था।

सुनील ने चौथा खड्डा पार कर लिया तो मालती उसके बराबर सीट पर आ बैठी।

सुनील ने कार आगे बढ़ा दी और अपनी एक बांह मालती की कमर में डालकर उसका दायां गाल चूम लिया, "तुम्हें भी दुश्मन की चालबाज़ियों का बहुत अंदाज़ा है मालती!"

सुनील की कार बेगम बाज़ार की तीसरी गली में शहरयार के मकान के सामने पहुंचकर रुक गई।

इंस्पेक्टर सक्सेना अपने स्टाफ के साथ आवश्यक कार्रवाई में व्यस्त था। उसने मालती और सुनील को देखा तो हैरान रह गया।

मालती ने कहा, "इंस्पेक्टर साहब, मेजर साहब आपको एक मशवरा देना भूल गए थे, इसलिए उन्होंने हमें आपके पास भेजा है। आस-पड़ोस में यह पूछिए कि कल रात किसीने शहरयार के मकान में किसीको आते-जाते तो नहीं देखा था?"

"मैं पूछ चुका हूं। एक पड़ोसिन ने बताया है कि उसने एक बूढ़ी दरवेश औरत को देखा था। वह चमड़े का लिबास पहने हुए थी। उसकी कलाइयों और गर्दन में कौड़ियों की मालाएं थीं। उसके साथ एक बुर्कापोश औरत थी। मेरे विचार से उन्हीं औरतों ने शहरयार और सिद्दीका की हत्या की है। उनके बाद बाबूलाल

आया था।"

"धन्यवाद इंस्पेक्टर साहब, हमें जल्दी जाकर मेजर साहब को रिपोर्ट देनी है।"

सुनील और मालती वहां से चल दिए।

मालती ने कहा, "सुनील, तुम भी अपना रिवॉल्वर निकालकर अपनी सीट पर रख लो। हो सकता है, वापसी पर भी दुश्मन हमपर आक्रमण कर बैठे।"

"मैं सोच रहा हूं कि हमें इस बार किसी दूसरे रास्ते से चलना चाहिए।" सुनील बोला।

मालती ने सुनील का मशवरा मान लिया।

वे दूसरे रास्ते से दिलाराम होटल में पहुंच गए। रास्ते में कोई अप्रिय घटना नहीं हुई।

मेजर ने उनको देखते ही पूछा, "क्या रिपोर्ट लाए ?"

"सबसे पहली रिपोर्ट तो यह है कि बेगम बाज़ार जाते हुए हमपर दो बार आक्रमण करने की कोशिश की गई।"

"तुमपर दो बार आक्रमण करने की कोशिश की गई!" मेजर और सोनिया के मुंह से निकला।

"आक्रमण किसने किया ?" डोरा ने पूछा।

मालती ने आक्रमण का हाल विस्तार से बता दिया।

"समूरदार लिबास वाला व्यक्ति ?" मेजर के मुंह से निकला।

"जी हां, लेकिन यह कोई नहीं बता सका कि वह स्त्री थी या पुरुष।"

"दुश्मन ने अपना ध्यान हमपर केन्द्रित कर दिया है। मेरा विचार है कि वह मुहम्मद सईद की टोली को किसी सीमा तक अपंग बना चुका है। अब हम ही उसके सबसे बड़े और ताकतवर दुश्मन रह जाते हैं। वह हमें अपने रास्ते से हटाने के लिए पूरा ज़ोर लगा देगा। अब हमें उसके विरुद्ध छुटपुट कार्रवाई न करके पूरी तैयारी से और खुलकर उसके विरुद्ध कार्रवाई करनी पड़ेगी। हमें हर समय पूरी तरह से लैस होकर रहना होगा। ट्रांसमीटर घड़ी और रास्ता बताने वाले ट्रांसमीटर के साथ। अभी अच्छी

बात यह है कि दुश्मन को अभी तक यह मालूम नहीं है कि सर्वेश आर्टिस्ट राबेल का बेटा है। हम सर्वेश को अलग रखकर उससे काम ले सकते हैं। मेरा यह विचार भी है कि दुश्मन अब दो मोर्चों पर कार्रवाई रोककर अपना पूरा ध्यान हमारी ओर केन्द्रित करते हुए अपने वास्तविक उद्देश्य को पूरा करने के लिए संघर्ष आरम्भ कर देगा। बहुत सम्भव है, वह कल से ही अपना काम शुरू कर दे।"

"हमें भी अपनी सरगर्मियां तेज़ कर देनी चाहिए।" मालती बोली।

"हां, इंस्पेक्टर सक्सेना को यहां बुलाना होगा।" मेजर ने कहा।

एक घण्टे के बाद मेजर ने इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन किया, "हैलो! इंस्पेक्टर साहब हैं?"

"फर्माइए! मुझे बेगम बाज़ार से आए अभी आधा घण्टा ही हुआ है। डॉक्टर की रिपोर्ट है कि शहरयार और सिद्दीका की मृत्यु गर्दन के पीछे की चोट से नहीं हुई, बल्कि अमोनिया के बहुत अधिक डोज़ के कारण हुई है।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"इंस्पेक्टर साहब, क्या आपको आधे घण्टे की फुर्सत है?"

"क्यों नहीं!"

"तो फिर आप मेरे पास चले आइए, क्योंकि अब दुश्मन ने हमारे विरुद्ध मोर्चा लगा लिया है। अगर ईंट का उत्तर पत्थर से न दिया गया तो उसके हौसले बढ़ जाएंगे।"

"मैं आ रहा हूं।" इंस्पेक्टर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

१६. लाल वर्दियां

इंस्पेक्टर सक्सेना बीस-पच्चीस मिनट के बाद दिलाराम होटल में पहुंच गया। उसने मेजर के सामने बैठते हुए कहा, "आपके विरुद्ध दुश्मन ने क्या सरगर्मियां शुरू कर दी हैं?"

मेजर ने सुनील और मालती पर हुए आक्रमणों के सम्बन्ध में बताया।

"इसका मतलब तो यही है कि दुश्मन के हौसले बढ़ते जा रहे हैं।" इंस्पेक्टर बोला।

"इंस्पेक्टर साहब, आपको दो काम तत्काल करने होंगे। म्यूज़ियम में जाकर आपको यह मालूम करना होगा कि प्लासी की लड़ाई के समय अंग्रेज़ सैनिकों की वर्दियां कैसी थीं। आपको लाल जाकेट और लाल फुंदने वाली टोपी की एक वर्दी चुननी होगी और म्यूज़ियम से मांगकर लानी होगी। अगर म्यूज़ियम से तीन कड़ाबीनें मिल जाएं तो लेते आइए। वर्दी का नमूना लेकर वैसी ही तीन वर्दियां किसी दर्ज़ी से जल्द से जल्द सिलवानी होंगी। दर्ज़ी से कहिए कि भले ही उसे चार कारीगर लगाने पड़ें, तीनों वर्दियां कल शाम तक मिल जाएं।"

"मैं यह काम अभी किए देता हूं।" इंस्पेक्टर ने कहा और उठकर खड़ा हो गया, "मैं शाम तक आपको सूचना दे दूंगा कि मुझे कहां तक सफलता मिली है।"

शाम को मेजर अपने साथियों के साथ चाय पी रहा था कि टेलीफोन की घण्टी बज उठी। मेजर लपककर टेलीफोन की मेज़ के पास पहुंच गया।

"हैलो मेजर साहब, इंस्पेक्टर दिस एण्ड। आपने जो काम बताया था, मैंने कर दिया है। वर्दी का नमूना और तीन कड़ाबीनें मुझे मिल गई हैं। वैसी ही तीन वर्दियां कल शाम तक आपके पास पहुंच जाएंगी। लेकिन मेजर साहब, वर्दियों और कड़ाबीनों की पहेली मेरी समझ में नहीं आई।"

"चिन्ता मत कीजिए। इस पहेली को आप बहुत जल्द समझ जाएंगे। कल शाम तक। अब आप एक काम और कर दीजिए।"

"फर्माइए!" इंस्पेक्टर सक्सेना ने कहा।

"किसी साउण्ड और म्यूज़िक की दुकान पर चले जाइए और वहां से एक छोटा-सा लेकिन शक्तिशाली लाउडस्पीकर

फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन का एक रिकॉर्ड, रिकॉर्डप्लेयर और दो लम्बे तार ले आइए। कम से कम दो सौ गज़ लम्बे तार।"

"यह काम भी मुश्किल नहीं है। शाम तक हो जाएगा।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"अगर शाम तक यह काम पूरा हो जाए तो मेरे पास आ जाइएगा। आपसे कुछ सलाह-मशवरा करना है। हमें शायद आज सारी रात व्यस्त रहना पड़े।"

"मैं शाम को आ जाऊंगा।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"शाम को मेरे साथ बीयर पीजिएगा।" मेजर ने कहा और रिसीवर रख दिया।

शाम को मेजर और उसके साथी बीयर पी रहे थे कि इंस्पेक्टर सक्सेना सादे कपड़ों में वहां पहुंच गया।

"मैंने रिकॉर्डप्लेयर, लाउडस्पीकर, तारों और स्विचों का प्रबन्ध कर दिया है। फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन का डबल रिकॉर्ड भी ले आया हूं।"

"अच्छा, यह बताइए कि आपने आजकल भी आदिवासियों और मछेरों के इलाके में पहरा उतना ही कड़ा कर रखा है या नर्म कर दिया है?"

मालती ने इंस्पेक्टर के लिए एक गिलास में बीयर दी।

इंस्पेक्टर ने बीयर पीते हुए कहा, "पहरा काफी नर्म कर दिया है।"

"इंस्पेक्टर साहब, हम आज रात आदिवासियों के इलाके में नहीं, मछेरों के इलाके में चलेंगे और आदिवासियों का इलाका बिलकुल खाली छोड़ देंगे। आज रात को साढ़े दस बजे आप सिर्फ लाउडस्पीकर लेकर आ जाइए। लम्बे तार और स्विच भी लेते आइए। पहरे पर तैनात कांस्टेबलों को हिदायत कर दीजिए कि अगर वे हमें कोई काम करते देखें तो कन्नी काटकर चले जाएं और चुप रहें। आज हम मछेरों के इलाके में कोई उपयुक्त पेड़ देखकर उसमें लाउडस्पीकर लगा आएंगे। लाउडस्पीकर

में तार जोड़कर धरती के नीचे-नीचे दूर ले जाएंगे । हो सके तो किसी आदमी को भेजकर किसी मछेरे की झोंपड़ी खाली करवा दीजिए ।''

''आप क्या करना चाहते हैं ?''

''यह तो मैं आपको कल ही बताऊंगा ।''

''मैं अपने आदमियों को हिदायत देकर रात को सवा दस बजे आपके पास पहुंच जाऊंगा । एक मैकेनिक भी अपने साथ लेता आऊंगा ।''

इंस्पेक्टर बीयर पीकर चला गया ।

रात के सवा दस बजे इंस्पेक्टर मेजर के पास पहुंच गया।

मेजर और उसके साथी इंस्पेक्टर के साथ मछेरों के इलाके की ओर चल पड़े । मेजर की हिदायत पर डोरा और सोनिया ने बहुत शक्तिशाली टॉर्चें अपने साथ ले ली थीं ।

थोड़ी देर में वे मछेरों के इलाके में पहुंच गए । इंस्पेक्टर ने पहरे पर तैनात कांस्टेबलों को पहले ही हिदायत दे दी थी कि वे चुप रहें और तमाशा देखते रहें ।

उन्होंने अपनी जीप और कारें मछेरों की झोंपड़ियों के पास रोक दीं और लाउडस्पीकर तथा तार लेकर झाड़ियों में चले गए। उनके साथ इंस्पेक्टर का लाया हुआ मैकेनिक भी था ।

उपयुक्त पेड़ की तलाश शुरू हो गई ।

आधे घण्टे के बाद उन्हें एक खोखला पेड़ मिल गया, जिसके ऊपरी हिस्से में एक खोह भी थी । मैकेनिक के पास फोल्डिंग सीढ़ी थी । इस्पात की सीढ़ी। उसने पेड़ से फोल्डिंग सीढ़ी लगाकर देखी और ज़रा-सा दबाव डालकर देखा कि उसके बोझ से पेड़ टूटेगा या नहीं ।

''पेड़ खोखला ज़रूर है, लेकिन मज़बूत है । मेरा बोझ संभाल लेगा ।''

उसने तार और लाउडस्पीकर बगल में दबा लिए और दांतों में पेचकश दबाकर सीढ़ी पर चढ़ने लगा । पेड़ की ऊपरी खोह में

उसने लाउडस्पीकर छिपाकर फिट कर दिया। पेचकश से उसमें तार जोड़कर पेड़ के खोखले तने में निकाल दिए। सीढ़ी से उतरकर उसने लटके हुए तारों में प्लग लगाकर स्विचों में फंसा दिए।

मेजर ने हिदायत की कि इन तारों को खींचकर मछेरे की खाली झोंपड़ी के अन्दर ले जाना चाहिए और फिर रेत-मिट्टी से तारों को ढक देना चाहिए।

सारा काम पौन घण्टे में पूरा हो गया।

वे वहां से वापस चल दिए।

रास्ते में मेजर ने कहा, "कल का काम जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही जोखिमभरा भी है। इंस्पेक्टर साहब, कल आपको आदिवासियों और मछेरों के इलाकों में पहरा देने वाले कांस्टेबलों की भारी संख्या एक विशेष क्रम से तैनात करनी होगी। वह क्रम मैं आपको बता दूंगा।"

"कल का काम जान-जोखिम का काम है?" सुधीर ने पूछा।

"हां सुधीर! क्रोकोडायल भी हमारा एक साथी होगा। मुझे सुबह उठते ही क्रोकोडायल को एक घण्टे की ट्रेनिंग देनी होगी। इंस्पेक्टर साहब, कल शाम की चाय आप मेरे साथ पीजिए। मैं आपको आवश्यक निर्देश नोट करा दूंगा। हमारी कल की साधारण-सी भी चूक बहुत खतरनाक सिद्ध हो सकती है।"

"मैं कल शाम को साढ़े चार बजे आपके पास पहुंच जाऊंगा।"

अगली सुबह मेजर बेड-टी पीकर क्रोकोडायल के दड़बे की ओर चला गया।

एक घण्टे तक वह क्रोकोडायल को अपने विशेष इशारों से सिखाता रहा। जब उसे इत्मीनान हो गया कि क्रोकोडायल उसके इशारों को समझ गया है तो उसने डोरा को आवाज़ दी।

डोरा आ गई तो मेजर ने उससे कहा, "डोरा, आज क्रोकोडायल को बहुत बढ़िया खाना दो।"

डोरा होटल के किचन में चली गई।

"आज आप कौन-से मोर्चे पर जाना चाहते हैं और उस मोर्चे का उद्देश्य क्या है ?" सोनिया ने पूछा ।

"शाम को साढ़े चार बजे इंस्पेक्टर सक्सेना के आने पर हमारी कॉन्फ्रेंस होगी। मैं उस कॉन्फ्रेंस में ही बताऊंगा कि मेरे इस मोर्चे का उद्देश्य क्या है। यह लड़ाई बहुत ही खतरनाक है। तुम सबको पूरी तरह सावधान रहना होगा और पूरी तरह लैस होकर चलना होगा।"

इंस्पेक्टर सक्सेना शाम को ठीक साढ़े चार बजे वहां पहुंच गया। चाय मंगवाई गई।

"अब कॉन्फ्रेंस शुरू होती है।" मेजर ने कहा और चाय का एक घूंट भरकर बोला, "इंस्पेक्टर साहब, आपने कल पूछा था कि लाल वर्दियों, कड़ाबीनों, लाउडस्पीकर और रिकॉर्डप्लेयर इकट्ठे करने का उद्देश्य क्या है। मैं आज जो काम करना चाहता हूं, उसका एक विशेष उद्देश्य है।"

"आपका वह विशेष उद्देश्य क्या है ?"

"इंस्पेक्टर साहब, आप देख रहे हैं कि दुश्मन कुछ दिनों से शान्त है। उसने छुटपुट वारदातें अवश्य की हैं। मुहम्मद सईद को बड़ी क्रूरता से मार डाला, फिर नये लीडर शहरयार और उसकी होने वाली पत्नी की हत्या कर दी गई। दुश्मन के दो और आदमी हमारे सामने आए हैं—दरवेश औरत और बुर्कापोश औरत। ऐसा मालूम होता है कि दुश्मन के पास आदमियों की कमी नहीं है। इतने आदमी इकट्ठे करने से स्पष्ट है कि दुश्मन को कोई बहुत बड़ा कारनामा करना है।"

"जी हां, इससे तो यही प्रकट होता है, और आर्टिस्ट रावेल की भविष्यवाणी भी सत्य सिद्ध हो जाती है कि मुर्शिदाबाद और मुंगेर को नष्ट करने की तैयारी की जा रही है।" डोरा बोली।

"हमें आज की रात यही देखना है कि इसके पीछे कोई राजनैतिक उद्देश्य है या व्यक्तिगत उद्देश्य है। आज हम दुश्मन को भयभीत करने के लिए एक चाल चलेंगे। हम यह प्रकट करेंगे कि

उनके प्रतिद्वंद्वी भी मैदान में आ गए हैं। यदि दुश्मन का कोई व्यक्तिगत उद्देश्य होगा तो वह ज़रूर बौखला उठेगा।"

"खूब, आपने बहुत अच्छी योजना सोची है।"

"लेकिन इसमें खतरा भी है। दोनों पार्टियों में जमकर युद्ध भी हो सकता है, लेकिन हम लड़ने से बचेंगे। हम तो केवल दुश्मन को डराना चाहते हैं कि उसके प्रतिद्वंद्वी भी आ गए हैं और अब उनका काम इतना आसान नहीं रहा है। फिर हम देखेंगे कि दुश्मन अपना काम करने का ढंग बदलता है या नहीं। अगर मुठभेड़ हुई तो हमारी यही कोशिश होगी कि दुश्मन का जानी नुकसान करने के बजाय हम उसके एक-दो आदमियों को पकड़ लें।"

"आपने इसका तरीका क्या सोचा है?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, आप आज अपने कांस्टेबलों को हिदायत देंगे कि वे मछेरों और आदिवासियों के इलाकों के बीच में न रहकर झाड़ियों के पीछे रहें। अगर दुश्मन फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन सुनकर वहां आए तो उनको पकड़ने की कोशिश करें। अगर उनके पास स्टेनगन या लाइट मशीनगन हो तो उनका मुकाबला न करें और दुश्मन को भाग जाने का मौका दें। इसमें भी हमारा लाभ है। आपके आदमी भी आक्रमण न करें। मैं बाबूलाल से सम्पर्क स्थापित करता हूं। मैं उससे मिलने जाऊंगा। वे भी इसी इलाके के रहने वाले हैं। फंसाने और भाग निकलने के रास्ते जानते हैं। वे आपके आदमियों का मार्गदर्शन करेंगे। इंस्पेक्टर साहब, आप सादा कपड़ों में अपने चार सादा वेशधारी आदमियों के साथ जीप की बजाय कार में मछेरों के इलाके में पहुंच जाइएगा। कड़ाबीन, लाल वर्दियां और रिकॉर्डप्लेयर अपने साथ लेते आइएगा। हम ठीक दस बजे मछेरे की उस झोंपड़ी में पहुंच जाएंगे, जो आपने खाली कराई है। हम वहीं कपड़े बदलेंगे। आपको भटखण्डे कबीले के लोगों, आदिवासियों और मछेरों को समझा देना होगा कि वे फौजी बैण्ड की मार्चिंग धुन और कड़ाबीन चलने की आवाज़ें सुनकर बिलकुल न डरें।"

इंस्पेक्टर ने मेजर की सारी हिदायतें नोट कर लीं और वहां

से चल दिया।

रात के पौने दस बजे मेजर और उसके साथी मछेरों के मेकअप में मछेरों के इलाके में पहुंच गए। जाने से पहले मेजर ने बाबूलाल को फोन कर दिया कि वह अपनी टोलियों को साथ लेकर आदिवासियों के झोंपड़ों के पीछे या जहां इंस्पेक्टर के आदमी हों, पहुंच जाए।

इंस्पेक्टर सक्सेना ठीक सवा नौ बजे वहां पहुंच चुका था। मेजर ने उससे लाल वर्दियां और कड़ाबीनें ले लीं और सुधीर तथा सुनील से बोला, "तुम दोनों मेरे साथ मछेरे की खाली झोंपड़ी में चलो। वहां हम लाल सिपाहियों का मेकअप बनाएंगे।"

मेजर, सुधीर और सुनील मछेरे की खाली झोंपड़ी में जाकर लाल सिपाही बन गए। उनके हाथों में कड़ाबीनें थीं।

मेजर ने इंस्पेक्टर को आवाज़ दी कि रिकॉर्डप्लेयर लेकर झोंपड़ी में आ जाए।

इंस्पेक्टर रिकॉर्डप्लेयर लेकर झोंपड़ी में आ गया। फौजी बैण्ड की मार्चिग धुन वाला रिकॉर्ड उसके साथ था। मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा कि वह जाकर लम्बे तारों के प्लग लाउडस्पीकर के नीचे लटके हुए तारों से जोड़ आए।

इंस्पेक्टर उस पेड़ के पास चला गया, जिसके ऊपर लाउडस्पीकर लगा हुआ था। उसने लाउडस्पीकर के लटके हुए तारों के स्विचों में प्लग जोड़ दिए और झोंपड़ी में वापस आ गया।

मेजर ने रिकॉर्डप्लेयर ऑन कर दिया।

फौजी बैण्ड की मार्चिग धुन रात के सन्नाटे में गूंज उठी।

१७. भूचाल

फौजी बैण्ड की मार्चिग धुन आधे घण्टे तक बजती रही। सोनिया, डोरा और मालती ने झाड़ियों में कोई हलचल नहीं देखी।

लाल सिपाहियों के वेश में मेजर, सुधीर और सुनील हाथों में कड़ाबीन लिए आदिवासियों के इलाके की ओर की झाड़ियों की ओर गोलियां चलाने लगे।

कुछ मिनट के बाद मार्चिंग धुन की आवाज़ ऊंची कर दी गई।

मेजर, सुधीर और सुनील को अधिक प्रतीक्षा न करनी पड़ी।

दूर से मार्चिंग धुन बजने की हलकी-सी आवाज़ आने लगी और फिर कड़ाबीनों की धीमी आवाज़ आई।

कुछ देर बाद दूर से आने वाली मार्चिंग धुन और कड़ाबीनों की आवाज़ें कुछ तेज़ हो गईं। झाड़ियों के पीछे छिपे इंस्पेक्टर के आदमी शायद जोश में आ गए और उनकी राइफलों से गोलियां बरसने लगीं।

दूसरी ओर से तड़तड़ की आवाज़ आई। यह लाइट मशीनगनों की गोलियों की आवाज़ थी।

बाबूलाल इंस्पेक्टर के आदमियों की ओर दौड़ा और बोला, "यह आप क्या कर रहे हैं? क्या आप सैंकड़ों आदमियों का खून कराना चाहते हैं? दुश्मन की फायर पावर के सामने आप कुछ भी नहीं हैं। आप लोगों ने मेजर साहब की हिदायत की उपेक्षा कर दी है।"

मेजर ने जब राइफलों की गोलियों और तड़तड़ चलने वाली लाइट मशीनगनों की गोलियों की आवाज़ें सुनीं तो वह आदिवासियों की झोंपड़ियों की ओर भाग छूटा। इंस्पेक्टर उसके पीछे था। इंस्पेक्टर को बहुत गुस्सा आ रहा था। उसने अपने आदमियों से कहा, "तुम्हें क्या हिदायत की गई थी, फौरन यहां से चले जाओ।"

"मैं आपको यहां से निकलने का रास्ता बताता हूं।" बाबूलाल ने कहा और शर्मिन्दा कांस्टेबलों को रास्ता बताने लगा।

लेकिन अफरा-तफरी तो मच ही चुकी थी। इंस्पेक्टर के जो आदमी आदिवासियों की झोंपड़ियों की दूसरी ओर थे, उन्होंने जब अपने साथियों को गोलियां चलाते देखा तो उन्होंने भी गोलियां चलानी शुरू कर दीं। झाड़ियों की दाईं ओर इंस्पेक्टर के जो आदमी थे, वे दुश्मन के अधिक निकट थे। उनमें से आठ आदमी घायल

होकर गिर गए। बाकी आदमी उन्हें वहीं तड़पता छोड़कर भाग गए।

जब इंस्पेक्टर के आदमी झाड़ियों के अन्दर इकट्ठे हो गए तो इंस्पेक्टर ने उनको खूब डांटा।

अचानक आकाश में धुआं छोड़ते हुए दो गोले दिखाई दिए।

"दुश्मन के पास हाउज़र गन भी है, जो गोला उछालकर फेंकती है।" मेजर ने कहा, "सब लोग औंधे मुंह ज़मीन पर लेट जाएं।"

सभी औंधे मुंह ज़मीन पर लेट गए और गोलों की पहुंच से बच गए।

दूर से आती मार्चिंग धुन बंद हो गई।

फिर कड़ाबीनों की गोलियों की आवाज़ें आनी भी बंद हो गईं।

"इंस्पेक्टर साहब, आपके आदमियों ने सारे किए-धरे पर पानी फेर दिया। हम दुश्मन की पूरी तादाद का अंदाज़ा नहीं लगा सके और न यह देख पाए कि उसके गिरोह में कैसे-कैसे लोग हैं। बस, इतना लाभ अवश्य हुआ कि हमें यह पता चल गया कि दुश्मन के पास हथियारों की कमी नहीं है। उसका मुकाबला आसान नहीं होगा। इसके साथ ही एक बात और मालूम हो गई। दुश्मन आदिवासियों के इलाके की झाड़ियों के पीछे से आया था। इसका मतलब है कि उसका ठिकाना उन झाड़ियों के पीछे है। अब एक ही तरीका है, कल मालती को एक कुबड़ी बुढ़िया के मेकअप में उस ओर भेजा जाए। वह वहां जाकर लकड़ियां बीनेगी। मुंगेर का यह इलाका बहुत विचित्र है। इसमें चट्टानें भी हैं और छोटी-छोटी झाड़ियां भी हैं। खन्दकें भी हैं और शायद छिपने के बहुत-से स्थान और रास्ते भी हैं।"

"मैं कल चली जाऊंगी।" मालती बोली।

"दुश्मन को और धोखा देने के लिए इंस्पेक्टर साहब, आपको एक तेज़-तर्रार दस-ग्यारह वर्ष की आदिवासी लड़की तलाश करनी होगी, जिससे यह प्रकट हो कि वह अपनी बूढ़ी दादी की मदद कर रही है।"

"कल यह प्रबन्ध भी हो जाएगा।" इस्पेक्टर ने कहा और फिर कुछ सोचकर बोला, "आपका क्या विचार है, क्या दुश्मन ने यह सोचा था कि उसका प्रतिद्वंद्वी आ गया है या उसने यह समझा कि उसके साथ चाल चली गई है ?"

"इसका पता तो दो-तीन दिन में चलेगा। अगर दुश्मन दो-तीन दिन शान्त रहे तो समझ लीजिए कि उसे अपने प्रतिद्वंद्वी का डर पैदा हो गया है और अगर उसकी हलचलें जारी रहें तो समझिए कि वह यह समझा है कि मैंने उसे सामने लाने के लिए चाल चली थी। मेरा विचार है कि दुश्मन को यही डर पैदा हुआ है कि उसका प्रतिद्वंद्वी आ पहुंचा है। अगर उसे यह संदेह होता कि हमने कोई नाटक रचाया है तो वह पूरी तरह शस्त्र-सज्जित होकर न आता। दूर से तमाशा देखता रहता। इंस्पेक्टर साहब, यह रिकॉर्ड, रिकॉर्डप्लेयर और लाउडस्पीकर वापस ले चलिए। हम झोंपड़ी में चलकर ये लाल वर्दियां उतार देना चाहते हैं। अगर दुश्मन ने हमारी लाल वर्दियां और कड़ाबीनों को देख लिया है तो वह निश्चय ही यही समझेगा कि उसका प्रतिद्वंद्वी आ पहुंचा है।"

दूसरे दिन मालती के साथ दस-ग्यारह वर्ष की आदिवासी लड़की को आदिवासियों के इलाके के पीछे वाले इलाके में भेजने का निर्णय कर लिया गया।

इंस्पेक्टर चला गया।

"आज की योजना असफल अधिक और सफल कम रही।" मेजर बोला।

"बहुत दिनों से आपने शे'र नहीं सुनाया, इसलिए दिमाग में ताज़गी कम हो गई है।" मालती बोली।

"व्हिस्की की व्यवस्था करो, फिर शे'र सुनाता हूं।"

मालती ने व्हिस्की का इन्तज़ाम कर दिया।

मेजर ने पहला पैग पीने के बाद कहा, "ज़रा ध्यान दीजिए :
"पहले बीवी मर्द से पिटती थी अब मर्दों को पीटें बीवियां,
अमरीकी शौहर खाते हैं हर रोज़ अपनी बीवियों से जूतियां।"

"क्या शे'र कहा है ! अमेरिका में बारह करोड़ पुरुष अपनी पत्नियों से थप्पड़ और लातें खाते हैं, लेकिन चूं नहीं करते।" डोरा बोली।

रात के साढ़े ग्यारह बजे वे सोने के लिए चले गए।

रात के ढाई बजे थे।

मुंगेर के एक नम्बर किले के पीछे सूखे पत्तों पर कदमों की आहट सुनाई दी। आने वाले पेड़ों की आड़ में थे। किले के पिछले भाग की खन्दक के पास आकर पेड़ खत्म हो जाते थे। आने वाले इन पेड़ों के पीछे ही रहे।

तभी किसी भारी चीज़ के धम्म से गिरने की आवाज़ आई। किले की पिछली खाई सूखी पड़ी थी। एक आदमी, जिसने स्याह काला लिबास पहन रखा था, एक मोटा पाइप लिए और कंधे पर कोई चीज़ रखे खाई में उतरा और खाई पार करके किले की पिछली दीवार के पास बैठ गया। उसने अपने कंधे पर रखी दो गज़ लम्बी रॉड उतारी और किले की दीवार से लगा दी। उस रॉड के पीछे एक चर्खी थी। वह उसे घुमाने लगा। उस रॉड के आगे से एक पेचदार सलाख-सी निकलने लगी, जो बड़ी आसानी से किले की दीवार में घुस गई। ज्यों-ज्यों रॉड की चर्खी घूमती रही, पेचदार सलाख किले की दीवार में घुसती चली गई। वह बीस-पच्चीस मिनट तक चर्खी घुमाता रहा और फिर उसने चर्खी उलटी घुमानी शुरू कर दी। पेचदार सलाख रॉड के अन्दर मुड़ने लगी। जब वह रॉड दो गज़ रह गई तो उस आदमी ने रॉड जमीन पर रख दी। उसने रबड़ का मोटा पाइप दीवार के छेद में अंदर तीस गज़ तक घुसेड़ दिया और फिर वह उठकर खड़ा हो गया। उसने रॉड उठाकर अपने कंधे पर रख ली और खाई पार करके पेड़ों की ओट में चला गया। पेड़ों की ओट में तीन साये और खड़े थे। उनके पैरों के पास एक फौलादी बक्स रखा था, जिसका हैण्डल पीतल का था। हैण्डल की दो मुट्ठियां थीं।

एक आदमी ने हैण्डल की दोनों मुट्ठियां हाथ में ले लीं और अपने साथियों से बोला, "पांच मिनट और इंतज़ार करूं या हैण्डल घुमा दूं ?"

"अब और इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं। हैण्डल को ज़ोर से घुमा दो।" दूसरे आदमी ने कहा।

पहले आदमी ने पूरा ज़ोर लगाकर हैण्डल को दोबारा घुमाया और फिर छोड़ दिया। फौलादी बक्स के अंदर से जो रॉड किले की दीवार तक पहुंचा दी गई थी, उसपर तेज़ी से एक शोला तैरता हुआ दौड़ने लगा। पांच मिनट के बाद वह शोला रॉड के साथ किले की दीवार में गायब हो गया।

दो मिनट के बाद इतना ज़ोरदार धमाका हुआ कि किले से दो-दो किलोमीटर दूर तक के मकानों के दरवाज़ों और खिड़कियों के शीशे बज उठे और दीवारें हिल गईं। सोए हुए लोग हड़बड़ाकर उठे और चीखते हुए मकानों से बाहर भागे। औरतें बच्चों को सीने से चिपकाकर ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगीं। कुहराम मच गया। सबको यही लगा कि भूचाल आ गया।

दिलाराम होटल में मेजर ने भी धमाका सुना। लोग सड़कों पर दौड़ते हुए सुनाई दिए।

मेजर और उसके साथी भी होटल से बाहर आ गए। उन्होंने एक नम्बर किले के एक पिछले हिस्से में सफेद धुएं का बादल आकाश की ओर बढ़ते हुए देखा।

जब एक नम्बर किले के पत्थर उड़ने बंद हो गए तो पेड़ों की ओट में से निकलकर दो आदमी खाई में पहुंचे। पहले उन्होंने किसीको खाई में धम से गिरते हुए देखा और फिर उन्होंने किले की ऊपर की मंज़िल से सफेद-सी एक चीज़ खाई में गिरती हुई देखी। दोनों आदमी आगे बढ़े। घुटनों पर बल देकर और पंजों पर सारा ज़ोर डालकर उन्होंने उस सफेद चीज़ को दबोच लिया और पेड़ों की ओर दौड़े। उनमें से एक के कंधे पर वह सफेद चीज़ थी। वह सफेद चीज़ सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की संगमरमर में ढली गोरी-चिट्टी और बहुत ही सुन्दर एक जवान औरत थी।

बाकी दो आदमियों ने फौलादी डिटोनेटर बक्स उठा लिया और बड़ी तेज़ी से पेड़ों के पीछे लपके और सूखे पत्तों को रौंदते हुए गायब हो गए। वह डिटोनेटर बक्स पलीतों में आग लगाने के काम आता था। मुंगेर का कोई निवासी ऐसा नहीं था, जो घर से बाहर नहीं था।

इंस्पेक्टर सक्सेना की जीप चौक में आकर रुकी। चौक के ठीक सामने ही एक नम्बर किला था। थोड़ी देर पहले किले में जो चीख-पुकार मची हुई थी, अब सुनाई नहीं दे रही थी।

अचानक इंस्पेक्टर सक्सेना की नज़र मेजर पर पड़ी, जो गाउन पहने होटल से बाहर सड़क पर खड़ा था। इंस्पेक्टर जीप से कूदकर उसके पास चला गया और बोला, "मेजर साहब, क्या यह भूचाल था ?"

"नहीं इंस्पेक्टर साहब, यह मानव-निर्मित भूचाल था। आप सामने एक नम्बर किले के पिछले हिस्से में धुएं का बादल उठता हुआ देख रहे हैं। किले की पिछली मज़बूत दीवार को शक्तिशाली बारूद से उड़ा दिया गया है।"

"आइए, नावों से उस किले के पास चलें।" इंस्पेक्टर बोला।

"क्या हमें किले के अंदर जाने की अनुमति मिल जाएगी ?" मेजर ने पूछा।

"हम कानून का सहारा लेंगे।" इंस्पेक्टर ने कहा।

इंस्पेक्टर, मेजर और उसके साथी एक नाव में बैठकर किले की ओर चल दिए। बहुत-से और लोग भी नाव में चढ़ आए।

मेजर ने इंस्पेक्टर के साथ नाव खेते हुए कहा, "पहले हम किले के पिछले हिस्से की ओर चलगे।"

नदी के दूसरे किनारे पर पहुंचकर पहाड़ी पर चढ़कर वे एक नम्बर किले के पिछले हिस्से में पहुंच गए। उन्होंने किले की मोटी दीवारों के पार स्त्रियों और पुरुषों के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनीं।

मेजर ने किले के पिछले हिस्से की दो बढ़ी हुई दीवारों पर

टॉर्च की रोशनी डाली और फिर उन्होंने किले के पिछले दरवाजे में से एक बूढ़े आदमी को हाथ में गैस लिए खाई में उतरकर कुछ ढूंढ़ते हुए देखा।

अचानक वह बूढ़ा एक लाश देखकर चीख उठा।

"सुन्दरभान!" और फिर उस बूढ़े ने आंखें मूंद लीं। उससे अपने छोटे भाई की लाश देखी नहीं जा रही थी।

मेजर और इंस्पेक्टर उसके पास चले गए, "क्या हुआ?"

"डाइनामाइट से किले का यह पिछला हिस्सा उड़ा दिया गया। इस हिस्से में मेरा छोटा भाई सुन्दरभान अपनी पत्नी चन्द्रिका और अपने चार वर्ष के बेटे सूरजभान के साथ रहता था। सुन्दरभान की लाश तो मिल गई, लेकिन चन्द्रिका का कुछ पता नहीं।"

"और चन्द्रिका का बेटा सूरजभान?" मेजर ने पूछा।

"सूरजभान कल रात अपनी दादी के पास सो रहा था। उसके कान में दर्द था। उसकी दादी उसके कान में दवा डालकर उसे अपने बिस्तर में ले गई थी। उसने चन्द्रिका से कहा था कि दूध गर्म करके बोतल में डालकर ले आए। चन्द्रिका अपने किचन में दूध गर्म कर रही थी कि कानों के परदे फाड़ देने वाला धमाका हुआ। सूरजभान और चन्द्रिका का कुछ पता न चला। सुन्दरभान तो खाई में मिल गया, लेकिन भगवान को प्यारा हो गया। चन्द्रिका का कुछ पता नहीं चल रहा। ऊपर किचन में भी नहीं है। मेरा विचार है कि वह भी किले की पिछली दीवारों के उड़ने के साथ कहीं दूर जा गिरी है। जिन्दा है या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता।"

मेजर की निगाह एक पाइप पर गई। मोटा रबड़ का पाइप, जो किले के अन्दर जा रहा था। वह पाइप ऊपर से जला हुआ था। मेजर ने पाइप की पिछली ओर देखा, जो खाई को पार करके पेड़ों में चला गया था।

मेजर, उसके साथी और इंस्पेक्टर पाइप के साथ-साथ चल पड़े। वे पेड़ों की ओट में पहुंचे। वहां घास और पत्ते कुचले

पड़े थे। साफ पता चल रहा था कि यह घास और पत्ते कदमों के नीचे कुचले हुए हैं।

"यहां कुछ लोगों ने डिटोनेटर रखकर किले की पिछली दीवारें उड़ाईं, लेकिन चन्द्रिका का न मिलना अचम्भे की बात है। किले के पत्थर उड़कर दूर-दूर तक गए हैं, लेकिन चन्द्रिका उड़कर इतनी दूर नहीं जा सकती थी।" मेजर बोला।

उन्होंने चारों ओर दूर-दूर तक चन्द्रिका को खोजा, लेकिन वह उन्हें कहीं भी दिखाई न दी।

वे निराश होकर लौट आए और किले के धमाके के सम्बन्ध में बातें करने लगे।

मेजर गहरे सोच में डूबा हुआ था।

इंस्पेक्टर ने बूढ़े राजभान से कहा, "मुझे इस धमाके के बारे में रिपोर्ट तैयार करनी होगी। मुझे किले के अंदर जाकर देखना होगा।"

"इंस्पेक्टर साहब, यह किले के मुआयने का मौका नहीं है। औरतें छाती पीट रही हैं, बाल नोच रही हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप किले की टूटी दीवारों और सुन्दरभान वाले हिस्से का मुआयना बाद में कर लीजिएगा। मुझे फोन कर दीजिएगा, मैं आपको बुला लूंगा।"

इंस्पेक्टर ने राजभान की बात मान ली।

इंस्पेक्टर, मेजर और उसके साथी नाव में सवार होकर नदी के दूसरे किनारे पर पहुंचे तो पौ फट रही थी। लोगों का भय दूर हो चुका था कि वह भूचाल नहीं था, इसलिए वे निश्चिन्त होकर सो रहे थे।

मेजर और उसके साथियों ने भी तीन घण्टे तक आराम किया। फिर बेड-टी पीकर तैयार हो गए।

वे नाश्ता कर रहे थे कि इंस्पेक्टर दस-ग्यारह वर्ष की एक तेज-तर्रार आदिवासी लड़की को लेकर आ गया। उस लड़की के हाथ में एक टोकरी थी। लड़की के घर वालों को दस रुपये

देकर वह उसे ले आया था।

"मेजर साहब, मैं वह लड़की ले आया हूं, जिसके बारे में आपने कहा था।" इंस्पेक्टर बोला, "और जिसे आप मालती के साथ भेजना चाहते हैं।"

"क्या नाम है तुम्हारा बेटी? आओ, बैठो।" मेजर बोला।

"मेरा नाम पुबुली है। मैं लकड़ियां बीनने का काम करती हूं।" लड़की ने उत्तर दिया।

"तुम अपने इलाके को अच्छी तरह जानती हो?"

"मैं चार साल से उधर ही लकड़ियां बीनने जाती हूं।" पुबुली ने कहा।

मालती ने दो-दो टोस्टों पर मक्खन लगाया और उनमें पतले-पतले टमाटर भरकर पुबुली को दे दिए। पुबुली टोस्ट लेते हुए शरमाई।

"खा लो बेटी, तुम्हें मेरे साथ तीन-चार घण्टे तक वहां रहना पड़ेगा।" मालती ने कहा और चाय का एक प्याला पुबुली की ओर बढ़ा दिया।

पुबुली ने चाय के इतने सुन्दर प्याले में पहले कभी चाय नहीं पी थी। वह दो-तीन मिनट में टोस्ट खा गई और चाय पी गई।

मालती ने सोचा, यह लड़की भूखी है और नई-नई स्वादिष्ट चीज़ें खाने से इसकी भूख और बढ़ गई होगी। उसने एक पनीर सैण्डविच बनाकर उसे दे दिया। इस बार पुबुली नहीं शरमाई और उसने पनीर सण्डविच ले लिया। मालती ने उसे चाय का एक प्याला और दे दिया।

मालती उठकर पिछले कमरे में चली गई और पन्द्रह-बीस मिनट के बाद वह एक आदिवासी कुबड़ी बुढ़िया बनकर लौट आई।

सुनील मालती और पुबुली को उस इलाके में छोड़ आने के लिए तैयार हो गया, "मैं नीचे जाकर कार के दरवाज़ों पर परदे गिराता हूं। तुम दस मिनट में आ जाना।" सुनील ने मालती

से कहा और नीचे चला गया ।

"पुबुली, तुम जिस इलाके में लकड़ियां बीना करती हो, वहां तुमने पिछले दिनों में कुछ देखा है ?"

"मैंने कुछ गोरे देखे थे, जिनके साथ दो-तीन औरतें थीं । वे जांघिए पहने चट्टान पर लेटे धूप ताप रहे थे ।" पुबुली ने बताया।

मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा ।

"क्या वे गोरे देर तक वहीं रहे थे ?"

"नहीं जी । वे अपने कैम्प लेकर आए थे । एक घण्टे बाद अपने कैम्प समेटकर सड़क की ओर चले गए और कारों में बैठकर रवाना हो गए । वे शायद पिकनिक मनाने आए थे ।"

मेजर को कुछ निराशा हुई ।

"पुबुली, तुम जिस इलाके में लकड़ियां बीनती हो, वहां क्या-क्या है ?" मेजर ने पूछा ।

"खाइयां हैं, खन्दकें हैं, छोटी-छोटी घाटियां हैं, सुरंगें हैं, गुफाएं हैं । इनके सिवा वहां और कुछ नहीं देखा मैंने । लोग उधर बहुत कम जाते हैं ।"

"मालती, तुम पुबुली को लेकर जाओ ।"

मालती और पुबुली टोकरियां लेकर सुनील की कार में जा बैठीं । सुनील उनको एक वीरान जगह पर छोड़ आया ।

मालती और पुबुली लकड़ियां बीनने लगीं । पुबुली मालती को रास्ता दिखाती रही । वह उसे घाटियां, खन्दकें, तंग रास्ते, सुरंगें और पहाड़ियों के अंदर खुदी हुई गुफाएं दिखाती रही। उनमें कुछ भी नहीं था ।

दो घण्टे के बाद वे ऊंचे टीले पर पहुंच गईं, जहां धूप खूब खिल रही थी । वे धूप तापने और सुस्ताने के लिए बैठ गईं । हलकी-हलकी हवा चल रही थी ।

उसी समय मालती को ऐसा सुनाई दिया, जैसे किसी औरत के बिलख-बिलखकर रोने की आवाज़ हवा के साथ कहीं से आ रही है । उसने मुट्ठी में मिट्टी भरकर उड़ा दी । मिट्टी पच्छिम

की ओर उड़ी। मालती उठकर पच्छिम की ओर चल दी। वह ज़रा और आगे बढ़ी तो उसे औरत के रोने की आवाज़ ज़रा और ऊंची सुनाई दी।

वह कुछ और आगे बढ़ी।

लेकिन मालती जान न सकी कि आवाज़ कहां से आ रही है।

कोई औरत सिसकियां भरती हुई कह रही थी, "नहीं-नहीं, मैं उस धरती पर नहीं रह पाऊंगी, जहां पति पत्नी के साथ और पत्नी पति के साथ बेवफाई करती है। जहां औरत को अपने बच्चों से कोई ममता नहीं होती। जहां बारह-तेरह वर्ष की लड़कियां सेक्स का पाठ पढ़ लेती हैं। जहां हज़ारों बच्चों को पैदा होने से पहले ही मार डाला जाता है। औरत जहां घर में दिन-भर और रात-भर की ऐयाशी के बाद सिर्फ सोने के लिए आती है। उसके लिए अपना घर घर नहीं होता। मैं वहां नहीं जाऊंगी।" और फिर औरत दर्दभरे स्वर में रोने लगी।

अब किसी आदमी की आवाज़ आई, "तुम्हें वहीं जाना होगा, जहां की तुम थीं। तुम अपने देश की एक कहावत भूल चुकी हो। मैं तुम्हें याद दिलाता हूं। 'अपमान से पहले मर जाना कहीं अच्छा होता है।' तुम अपमान का जीवन बिताती रही हो। तुम्हें मर जाना चाहिए था। अब तुम यहां क्या करोगी! तुम्हारे पति की मृत्यु हो चुकी है।"

"लेकिन वह मुझे अपना बच्चा दे गया है। जिस जगह की तुम बात करते हो, वहां औरत मां नहीं होती। वह बच्चों से घृणा करती है। पति को तलाक देकर उसे एक तरह से मार डालती है। एक शादी, दूसरी शादी, तीसरी शादी—आए दिन पति बदलती रहती है। और यहां औरत पति के मर जाने पर सब्र किए बैठी रहती है। अपने बच्चे में अपने पति की छवि देखती है। कितनी शान्ति, सुख और चैन मिलता है। और तुम मुझे जहां ले जाना चाहते हो, वहां न सुख है, न शान्ति है, न चैन है। मैं नारियों के नरक में नहीं जाऊंगी। मुझे मार डालो, कत्ल कर दो, ताकि मैं इसी धरती में दफन हो जाऊं, या चिता में जलकर इस देश की मिट्टी

और हवा में मिल जाऊं।"

"खैर, कुछ दिनों में तुम्हारा नशा उतर जाएगा। जब तुम्हारे साथ की औरतें तुमसे आ मिलेंगी तो निश्चय ही तुम्हारा इरादा बदल जाएगा। आखिर तुम्हारी रगों में इस कौम का खून नहीं है। जाओ, आराम करो।"

आवाज़ें आनी बन्द हो गईं।

"यह बातचीत कैसी थी? और वह औरत कौन थी, जो इतनी बुद्धिमान थी?" मालती ने कहा और उसे एक खयाल सूझा। उसने टोकरी में से दो मज़बूत लकड़ियां निकालीं। एक पत्थर उठाकर दो लकड़ियां टीले में पास-पास गाड़ दीं। मालती ने टोकरी उठाई और टोकरी में से लकड़ियां निकालकर वह एक-एक गज़ की दूरी पर फेंकती रही और फिर उसने पुबुली को साथ लिया और वापस चल पड़ी।

अब मालती लकड़ियां नहीं बीन रही थी। वह तेज़-तेज़ कदम उठाने लगी। पुबुली अपनी झोंपड़ी की ओर चली गई। मालती सुनील की कार की ओर बढ़ी, जो तीन घंटे से मालती की प्रतीक्षा कर रहा था।

१८. रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़

मेजर बड़ी व्यग्रता से मालती की प्रतीक्षा कर रहा था।

मालती ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

रिपोर्ट सुनकर मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"आप किस परिणाम पर पहुंचे हैं?" सोनिया ने कहा।

"मेरा विचार है कि मालती ने जिस औरत के रोने की आवाज़ सुनी थी, वह चन्द्रिका है।"

"चन्द्रिका?" डोरा ने पूछा।

"हां, और कुछ लोग चन्द्रिका को कहीं ले जाना चाहते हैं। चन्द्रिका और उस आदमी की बात से ऐसा मालूम होता था कि

कुछ लोग चन्द्रिका को पश्चिमी देशों में ले जाना चाहते हैं। और चन्द्रिका ने पश्चिमी जीवन का सही नक्शा खींचा है। सही विवेचना की है। भारतीय सभ्यता आज भी इतने संघर्षों से गुज़रने और पश्चिम से प्रभावित होने के बावजूद भी उतनी ही पवित्र और निष्कलुष है। अभी भारतीय विवाहित जीवन और सामाजिक जीवन इतना घृणित और अपवित्र नहीं हुआ है।" मेजर बोला।

"हां।" सुधीर ने कहा।

"हम शाम के धुंधलके में उस जगह चलेंगे, जहां मालती दो लकड़ियां टीले में गाड़ आई है और एक फर्लांग तक लकड़ियां फेंककर आई है। हम मालूम करेंगे कि वे आवाज़ें कहां से आ रही थीं।" मेजर ने कहा।

इतने में कदमों की आहट सुनाई दी। इंस्पेक्टर सक्सेना ने मेजर के सूट में कदम रखा।

"आइए इंस्पेक्टर साहब !" मेजर ने कहा।

"मैंने अपने जिन दो विश्वस्त आदमियों को मिस अचपला के बनाए हुए तीन स्केच देकर भेजा था, उन्होंने लुधियाना से सूचना दी है कि उन्हें अभी तक सफलता नहीं मिली है। अब उनको लुधियाना से पता चला है कि जालन्धर के पुराने बेपटिस्ट चर्च का एक पादरी एण्ड्रयूज़, जिसकी उम्र १२१ वर्ष की है, किसी ज़माने में कैम्ब्रिज कॉलेज में लेटिन भाषा का प्रोफेसर था। वह पिछले साठ वर्ष से जालन्धर के बेपटिस्ट चर्च में है। लुधियाना के पादरियों ने विश्वास दिलाया है कि एण्ड्रयूज़ अचपला के बनाए हुए स्केच ज़रूर पढ़ लेगा। मेरे दोनों विश्वस्त आदमी जालन्धर रवाना हो गए हैं। उनका विचार है कि वे उन स्केचों को पढ़वाकर आज ही पटना के लिए रवाना हो जाएंगे। उनके यहां पहुंचने पर मैं उन्हें आपके पास ले आऊंगा।"

इंस्पेक्टर के विश्वस्त आदमी सुखदेव और रामदेव लुधियाना से एक बजे जालंधर की ओर रवाना हुए। वे ढाई बजे जालन्धर पहुंच गए। उन्होंने बेपटिस्ट चर्च का पता मालूम किया। यह चर्च

जालन्धर छावनी के मछली मुहल्ले में था। मछली मुहल्ले में अधिकतर ईसाई रहते थे।

उनको बेपटिस्ट चर्च के गेट पर एक नौजवान पादरी मिला। सुखदेव ने उससे कहा, "गुड इवनिंग फादर, क्या इस समय रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ से भेंट हो सकती है ?"

"वह इस समय सो रहे हैं। पन्द्रह मिनट बाद उठेंगे। बहुत बूढ़े हैं। दोपहर को आराम करना उनके लिए बहुत ज़रूरी है, लेकिन वह समय के पाबन्द हैं। ठीक चार बजे उनकी आंख खुल जाएगी। मैं उनको चाय दूंगा। आप भी चाय पीजिएगा। आपको पहले तो यहां कभी नहीं देखा। आप कहीं बाहर से आए हैं ?"

"फादर, हम मुंगेर से आ रहे हैं। बड़ी मुश्किल से रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ का पता चला है, जो लेटिन भाषा के विद्वान हैं। हम उनसे लेटिन भाषा की एक इबारत पढ़वाने आए हैं।"

"रेवरेण्ड उस इबारत को ज़रूर पढ़ देंगे।"

इंस्पेक्टर के दोनों आदमी खुश हो गए।

"आइए, अन्दर रिसेप्शन रूम में बैठिए। जैसे ही रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ जागेंगे, मैं आपको उनके स्टडी रूम में ले चलूंगा, और उनको बता दूंगा कि आप उनके पास किसलिए आए हैं। क्या मैं आपके नाम जान सकता हूं ?"

"सुखदेव—रामदेव !" सुखदेव ने कहा।

"थैंक्यू।" यह कहकर नौजवान पादरी अंदर चला गया।

वे रिसेप्शन रूम में बैठकर रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ के जागने की प्रतीक्षा करने लगे।

ठीक चार बजकर पांच मिनट पर वह नौजवान पादरी रिसेप्शन रूम में आया। उसने कहा, "रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ चाय पर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

सुखदेव और रामदेव बड़े सम्मान से सिर झुकाए हुए रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ के स्टडी रूम में पहुंचे। उन्होंने सिर झुकाकर रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ का अभिवादन किया।

रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ महोगनी की एक बड़ी मेज़ के पीछे एक ऊंची

कुर्सी पर बैठे हुए थे। मेज़ पर चाय के चार प्याले, दूधदानी, चीनी-दानी और एक प्लेट में बिस्कुट रखे थे।

रेवरेण्ड एण्ड्रयूज ने कांपते हाथों से सुखदेव और रामदेव को बैठने का इशारा किया और फिर कमज़ोर आवाज़ में नौजवान पादरी से बोले, "फादर वेकफील्ड, चाय बनाओ।"

सुखदेव और रामदेव ने रेवरेण्ड एण्ड्रयूज को ध्यान से देखा। चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ था। भौंहों के बाल बहुत सफेद थे और गुच्छों की तरह उनकी आंखों पर लटके हुए थे। उनके सिर पर बाल बहुत कम थे। उनकी चांद चमक रही थी। आंखों पर बहुत ही मोटे शीशों की ऐनक थी।

चाय समाप्त होने के बाद रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने कहा, "आप किस प्रकार की लेटिन इबारत मुझसे पढ़वाना चाहते हैं?"

"हमारे पास तीन स्केच हैं, जिनपर लेटिन भाषा फूलों और जानवरों के रेखाचित्रों के रूप में लिखी हुई है। जिसने यह इबारत लिखी है, उसने कोशिश की है कि इसे कोई आसानी से न पढ़ सके। हमने पटना, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद में इस इबारत को पढ़वाने की कोशिश की। फादर, यह लेटिन इबारत बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हम केवल यह जानते हैं कि यह इबारत एक तबाही की ओर इशारा करती है। हम उस तबाही को रोकना चाहते हैं। हम आपसे कुछ छिपाना नहीं चाहते। हम मुंगेर के पुलिस अफसर हैं, और यह इबारत मुंगेर की तबाही की ओर ही इशारा करती है। हम आप जैसे पवित्र बुज़ुर्ग से आशा करते हैं कि आप इस तबाही को रोकने में हमारी सहायता कर सकेंगे।" सुखदेव ने कहा।

"मैं दुनिया को तबाही और बर्बादी से बचाने के लिए ही रात-दिन दुआ करता हूं। आप कहते हैं कि लेटिन इबारत फूलों और जानवरों के रेखाचित्रों के रूप में लिखी हुई है। मेरी नज़र बहुत कमज़ोर है, लेकिन मैं इस इबारत को पढ़ने की पूरी-पूरी कोशिश करूंगा। लाइए, वे स्केच कहां हैं?"

रामदेव ने तीनों स्केच लिफाफे में से निकालकर मेज़ पर

रखदिए। रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने मेज़ की ए कदराज खोली और उसमें से मेग्नीफाइंग ग्लास निकालकर आंखों से लगा लिया और पहले स्केच का अध्ययन करने लगे। वह बीस मिनट तक उस स्केच को देखते रहे।

"यह सचमुच गोपनीय लेटिन इबारत है। मैं इस पहले स्केच को कहीं-कहीं से पढ़ सका हूं। कुछ वाक्य मैं पढ़ नहीं सका, लेकिन मैंने जितना कुछ पढ़ा है, आप उसे नोट कर लीजिए।"

सुखदेव ने नोटबुक और फाउण्टेनपेन निकाल लिया।

"'मैं आज से डेढ़ वर्ष पहले लन्दन के मिल्टन होटल के हॉल में खाना खा रहा था और लोगों के चेहरों का अध्ययन कर रहा था, क्योंकि मैं आर्टिस्ट हूं और मेरा नाम रावेल है—' अगले दो वाक्य पढ़े नहीं जा रहे। इसके बाद लिखा है—'मेरी टेबल पर तीन नौजवान दो औरतों के साथ बैठे हैं। मैं उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा हूं—हमने अपने बुज़ुर्गों की बात पूरी नहीं की। हमारे खानदान की दूसरी बुआ अक्सर बीमार रहती थी। वह बुज़ुर्गों की अन्तिम इच्छा को पूरा न कर सकी थी। हालांकि वह हर रोज़ खुदावन्द ईसामसीह के सामने प्रतिज्ञा करती थी कि वह अपने बुज़ुर्गों की बात पूरी करेगी। बीमारी उसको ले गई। अब यह कर्तव्य हमपर आ पड़ा है। हमें नींद नहीं आती। हमारे बुज़ुर्ग सपने में आकर हमसे कहते हैं कि हमारे अपमान और हमारी स्त्रियों की लूटी गई आबरू का बदला लेने वाला हमारे खानदान में कोई नहीं रहा। क्या सबकी आंखों से गैरत का पानी ढल गया? क्या उन लोगों की औलाद मुर्दा हो गई है, जो अपमान से पहले अपनी जान निछावर कर दिया करते थे?' इससे आगे के चार वाक्य पढ़े नहीं जा रहे।" रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ दम लेने के लिए रुक गए।

दो मिनट के बाद वह बोले, "आर्टिस्ट रावेल लिखता है कि उसकी मेज़ के पास तीन नौजवान और दो औरतें तेज़-तेज़ बोलने लगीं। वे एक-दूसरे की भर्त्सना करने लगीं। एक औरत बोली, 'हमारे माथे पर वर्षों से कलंक लगा हुआ है। समय आ गया

है कि उसे मिटा दिया जाए और उस अपमान का बदला लिया जाए। खानदान को आपस में मिलाया जाए। अगर ऐसा करने में सारा खानदान नष्ट हो जाए तो परवाह नहीं।'

"दूसरे नौजवान ने कहा, 'हमें आज से ही तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। मुंगेर की ईंट से ईंट बजा दी जाएगी।' बस, पहले स्केच में यही लिखा है।"

"यह दूसरा स्केच देखिए।" सुखदेव ने दूसरा स्केच रेवरेण्ड एण्ड्र्यूज़ की ओर बढ़ाते हुए कहा।

रेवरेण्ड एण्ड्र्यूज़ बीस-पच्चीस मिनट तक उस स्केच को देखते रहे, फिर बोले, "मैं इस स्केच को भी पूरी तरह नहीं पढ़ पाया हूं। जितना पढ़ सका हूं, उसे नोट कर लीजिए। इस स्केच में आर्टिस्ट रावेल ने अपनी ओर से कुछ लिखा है—'यह घटना प्लासी के युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला की पराजय के बाद हुई। अंग्रेज़ सिपाहियों को लूटमार की छूट दे दी गई। मारकाट शुरू हो गई। किसी भी घर में कोई कीमती चीज़ अंग्रेज़ सिपाहियों ने नहीं छोड़ी। कुछ सिपाहियों के हाथ ज़्यादा माल लगा। वे घोड़ागाड़ियों में लूट का माल और औरतों को उठाकर फरार होने लगे। अब वे युद्ध से उकता चुके थे और किसी न किसी तरह लूट का माल और औरतों को लेकर वापस चले जाना चाहते थे। उनमें से एक काफिला, जिसके पास बहुत अधिक माल था, अपनी गाड़ियों को सरपट दौड़ाए लिए जा रहा था, लेकिन जिस काफिले के हाथ कम माल लगा था, उसने अपने ही सिपाहियों के काफिले को लूटने का निश्चय कर लिया। आपस में लूटमार शुरू हो गई। जिस काफिले के पास माल कम था, उसके पास आदमी भी कम थे। उन्होंने स्थानीय लोगों की सहायता ली। स्थानीय लोगों के पास सरपट दौड़ाने के लिए घोड़े थे। उन्हें हथियार दे दिए गए।' यहां से आगे की सात-आठ लाइनें पढ़ी नहीं जातीं। अन्तिम दो-तीन लाइनें पढ़ी जाती हैं। लिखा है—'किसीको पता न चला कि आक्रमणकारियों का साथ किन स्थानीय लोगों ने दिया। ज़्यादा लूटमार करने वाले काफिले

को तहस-नहस कर दिया गया। उनके केवल तीन सिपाही बचे, जो अपनी औरतों को छोड़कर भाग गए।' " रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने बताया। अब वह थक गए थे। उन्होंने कहा, "फादर वेकफील्ड, मेरे लिए चाय का एक प्याला और बनाओ।"

फादर वेकफील्ड ने सबके लिए चाय बना दी।

रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने चाय पीने के बाद कहा, "लाइए, तीसरा स्केच दीजिए।"

वह पच्चीस-तीस मिनट तक उस स्केच को देखते रहे, फिर बोले, "यह तीसरा स्केच बहुत कम पढ़ा जा रहा है। इसमें कोई प्लान लिखा है। मुंगेर पर आक्रमण होगा। खून-खराबे की संभावना है। दुश्मन भारी तैयारी के साथ आएगा। उसने अपने काम करने का ढंग निश्चित कर रखा है। भागने का रास्ता क्या है, यह पढ़ा नहीं जाता। अन्त में लिखा है—'औरतें छीनी जाएंगी। दौलत लूटी जाएगी। इस रक्तपात को रोकने के लिए विशेष प्रबन्ध करना होगा।' वह विशेष प्रबन्ध क्या होगा, यह पढ़ा नहीं जा रहा। अगर आप ये तीनों स्केच मेरे पास छोड़ जाएं और कुछ दिन बाद आएं तो मैं आपको पूरी इबारत अंग्रेज़ी में लिखवा दूंगा।"

पहले तो सुखदेव ने सोचा कि तीनों स्केच रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ के पास छोड़ जाए, लेकिन रामदेव ने कहा, "फादर, हमें फौरन जाकर रिपोर्ट देनी है। आपने जितना कुछ पढ़कर सुनाया है, अगर हमारे एक्सपर्ट इससे अधिक अनुमान न लगा सके तो हम ये स्केच लेकर आपके पास फिर आ जाएंगे। हम अभी पौने पांच बजे की फ्लाइट से पटना रवाना हो जाएंगे और कल सुबह मुंगेर पहुंच जाएंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। गुड इवनिंग फादर!"

सुखदेव और रामदेव ने रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ और फादर वेकफील्ड से विदा ली और चल पड़े।

१९. मेहमान

सुखदेव और रामदेव को रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ के यहां से गए हुए अभी तीन ही घंटे हुए थे कि अधेड़ उम्र का एक पादरी बेपटिस्ट चर्च में आया।

उस समय भी फादर वेकफील्ड गेट के बाहर टहलते हुए एक पुस्तक पढ़ रहा था।

"गुड इवनिंग फादर!" आगन्तुक ने फादर वेकफील्ड का अभिवादन किया।

वेकफील्ड ने किताब पर से नज़र हटाकर कहा, "गुड इवनिंग।"

"मैं सेण्ट निकोलस चर्च, लुधियाना से आ रहा हूं और रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ से मिलना चाहता हूं। क्या दो आदमी यहां रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ से लेटिन भाषा की कोई इबारत पढ़वाने आए थे?"

"जी हां।"

"वे कब आए थे?" आगन्तुक पादरी ने पूछा।

"उनको यहां से गए हुए तीन घंटे हो चुके हैं। वे पौने पांच बजे की फ्लाइट से पटना जा चुके होंगे। मैं अपना परिचय दूं—मैं फादर वेकफील्ड हूं।"

"मैं राइकार स्टीफन।"

"आइए फादर! रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ इस समय कुछ लिख रहे होंगे, लेकिन आपसे मिलकर ज़रूर खुश होंगे।" फादर वेकफील्ड ने कहा और राइकार स्टीफन को चर्च के अंदर ले गया।

स्टडी रूम में पहुंचकर राइकार ने सिर से टोपी उतारकर सिर झुकाया और फिर सीने पर सलीब का निशान बनाकर बोला, "मदर मरियम आपके ज्ञान में वृद्धि करें।"

रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने हाथ उठाकर राइकार स्टीफन के लिए दुआ की।

फादर वेकफील्ड ने कहा, "रेवरेण्ड, यह लुधियाना के सेंट

निकोलस चर्च के राइकार स्टीफन आपसे मिलना चाहते हैं।"

"बैठिए।" रेवरेण्ड ने कहा और वेकफील्ड को चाय लाने के लिए कहा।

"रेवरेण्ड, तीन घंटे हुए दो आदमी आपसे तीन स्केचों की लेटिन इबारत पढ़वाने के लिए आए थे। क्या आपने वह इबारत पढ़ दी ?"

"पूरी तो मैं नहीं पढ़ पाया। जितनी पढ़ सका, पढ़कर सुना दी। राइकार, आप उस इबारत में क्यों दिलचस्पी रखते हैं?" रेवरेण्ड ने पूछा।

"वे दोनों आदमी लुधियाना गए थे। संयोग से मैं एक निकाह पढ़ाने जा रहा था। मैंने उनसे वायदा किया था कि लौटने पर मैं उस इबारत को पढ़ दूंगा, लेकिन उन्होंने मेरा इन्तज़ार नहीं किया। वे इबारत पढ़वाने के बाद सेंट निकोलस चर्च को ईस्टर मनाने के लिए एक हज़ार रुपये चंदा देना चाहते थे। मैं उनके पीछे आया कि शायद वे आपके पास हों। अगर आप इबारत नहीं पढ़ पाएंगे तो मैं पढ़ दूंगा।"

"उनको तो यहां से गए हुए लगभग तीन घंटे हो गए। इस समय तो वे पटना के आधे रास्ते में होंगे।" रेवरेण्ड ने कहा।

"आपने उनको जो कुछ पढ़कर सुनाया था, वह आपको याद है ?"

"जी हां।" रेवरेण्ड ने कहा और फिर राइकार स्टीफन को इबारत के बहुत-से हिस्से सुना दिए।

राइकार स्टीफन कुछ उदास हो गया और उसके मन में कुछ डर भी पैदा हो गया।

"क्यों, आप कुछ उदास हो गए ?" रेवरेण्ड ने पूछा।

"मैं उनको पूरी इबारत पढ़कर सुना सकता था। हमारे चर्च का ईस्टर मेला उनके रुपयों से शायद और ढंग से मना लिया जाता।"

फादर वेकफील्ड चाय की ट्रे उठाकर ले गया और किचन में चाय बनाने लगा।

"रेवरेण्ड, आप हमारे सेण्ट निकोलस चर्च की एक विशेष चीज से परिचित नहीं हैं। मैं आपको वह चीज प्रेजेंट करना चाहता हूं।"

"वह चीज क्या है?" रेवरेण्ड ने पूछा।

"चांदी की अंगूठी। इसमें सफेद नग है। अगर आप पास से इस नग को देखें तो आपको इस नग में मदर मरियम की तस्वीर दिखाई देगी। तस्वीर दिखाई देने से पहले इस नग से थोड़ी-सी भाप निकलेगी। भाप हटते ही नग में मदर मरियम मुस्कराती हुई दिखाई देगी। साथ ही आपको गुलाब की खुशबू भी महसूस होगी।"

"बहुत ही सुन्दर चीज है।" रेवरेण्ड ने कहा।

"यह लीजिए और इसे आज़माइए," राइकार स्टीफन ने चांदी की एक अंगूठी रेवरेण्ड को देने से पहले पूछा, "क्या आपने उन आदमियों से वायदा किया है कि अगर वे स्केच लेकर फ़िर आएं तो आप उनकी पूरी इबारत पढ़ देंगे?"

"हां, मैंने उनसे कहा था।"

राइकार स्टीफन ने चांदी की अंगूठी रेवरेण्ड को दे दी, लेकिन अंगूठी के गोल वाले हिस्से के नीचे का एक छोटा-सा बटन दबा दिया। रेवरेण्ड अंगूठी की ओर देखने लगे।

नग से सचमुच भाप-सी निकली और रेवरेण्ड की आंखें फौरन ही बंद हो गईं। राइकार तेज़ी से उठा। उसने अपने कोट की भीतरी जेब में से एक सिरिंज निकाली और रेवरेण्ड की बांह में इंजेक्शन लगाकर पीछे हट गया। उसने सिरिंज फिर कोट की भीतरी जेब में रख ली।

उसने पिछले कमरे में झांककर देखा। किचन में बर्तनों के खनकने की आवाज़ आ रही थी।

राइकार स्टीफन तेज़ी से बेपटिस्ट चर्च से बाहर आ गया। वह मुस्करा रहा था। सड़क पर पहुंचकर उसने स्टेशन के लिए टैक्सी ले ली।

स्टेशन पर उतरकर उसने टैक्सी ड्राइवर को किराया दिया और टिकट लेकर लुधियाना जाने वाली ट्रेन में जा बैठा। वह

लुधियाना के एयरपोर्ट से पटना जाने वाला प्लेन पकड़ना चाहता था, जो रात के सवा नौ बजे जाता था।

वेकफील्ड किचन में बर्तन साफ करके स्टडी रूम में आया और बोला, "रेवरेण्ड, आपके दलिये का टाइम हो गया। क्या ले आऊं ?" इतना कहते ही वह ठिठक गया, "रेवरेण्ड···! रेव-रेण्ड···!! क्या आपको नींद आ गई ?"

रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने कोई उत्तर न दिया।

उनके मुंह से झाग निकल रहे थे। झागों में थोड़ा-सा खून भी मिला हुआ था और उनका रंग गहरा नीला पड़ गया था।

फादर वेकफील्ड के मुंह से चीख निकल गई और फिर उसने मेज़ पर रखी चांदी की एक विचित्र-सी अंगूठी देखी। उसने वह अंगूठी उठा ली। संयोग से अंगूठी के गोल हिस्से पर उसकी उंगली दब गई। अंगूठी के नग में से भाप निकली। उस भाप के नाक में जाते ही फादर वेकफील्ड मेज़ पर जा गिरा।

शाम को चर्च की सर्विस शुरू होने वाली थी। श्रद्धालु स्त्री-पुरुष आने शुरू हो गए थे।

जब लोग चर्च में पहुंचे तो उन्होंने रेवरेण्ड को कुर्सी में पड़े देखा। उनका बदन नीला पड़ गया था और अकड़ गया था।

"रेवरेण्ड खुदा को प्यारे हो गए। उम्र भी तो बहुत थी। बैठे-बैठे हार्ट फेल हो गया, लेकिन उनका रंग इतना नीला क्यों पड़ा हुआ है ? और उनके कोट पर सफेद झाग और खून क्यों जमा हुआ है ?"

श्रद्धालु स्त्री-पुरुष आपस में बातें करने लगे।

"और यह फादर वेकफील्ड मेज़ पर क्यों गिरे हुए हैं ?" एक आदमी ने कहा।

उसने आगे बढ़कर फादर वेकफील्ड को मेज़ पर चित लिटा दिया। फादर वेकफील्ड ने एक कराह ली और कुछ मिनट के बाद उन्होंने आंखें खोल दीं। उन्होंने अपने आसपास शाम की सर्विस में भाग लेने वालों को देखा। वह मेज़ से उतर आए और बोले,

"मुझे बहुत अफसोस से आप लोगों को यह दु:खद समाचार सुनाना पड़ रहा है कि आसमानी बाप ने रेवरेण्ड को अपने पास बुला लिया, लेकिन ऐसे पवित्र और नेक व्यक्ति को एक पादरी ने ज़हर देकर मार डाला।"

लोग हक्का-बक्का रह गए।

लुधियाना जाते हुए राइकार स्टीफन भयानक सपना देख रहा था। वह अपने मिशन में असफल रहा था। उसे अफसोस हो रहा था कि उसने सुखदेव और रामदेव को इतनी ढील क्यों दी और अपने लीडर मेकडानेल्ड की सलाह के अनुसार काम क्यों नहीं किया। वह वापस जाकर क्या मुंह दिखाएगा? उसने सिर्फ एक ही काम अपनी समझ से अच्छा किया था कि उसने रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ को मार डाला था, ताकि वह पूरी इबारत पढ़कर सुखदेव और रामदेव को न सुना सकें। लेकिन वह अपने-आपसे पूछ रहा था कि उसने सुखदेव और रामदेव को रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ तक पहुंचने ही क्यों दिया? असल में वह अपने-आपपर सीमा से अधिक विश्वास कर बैठा था कि आर्टिस्ट रावेल की फूलों और जानवरों के रूप में लिखी लेटिन भाषा कोई पढ़ ही नहीं सकेगा। वह बहुत दिनों से सुखदेव और रामदेव का पीछा कर रहा था। ऐसे बहुत-से अवसर मिले थे, जब वह बड़ी आसानी से उन लोगों को गोली का निशाना बना सकता था। वह सोच रहा था कि मेकडानेल्ड उसकी ओर से दी जाने वाली सफाई को स्वीकार करेगा या नहीं।

लुधियाना स्टेशन पर ट्रेन से उतरकर वह सीधा एअरपोर्ट चला गया और हवाई जहाज़ में बैठकर पटना रवाना हो गया। उसकी यात्रा उसकी परेशानियों का कारण बनती जा रही थी।

सुखदेव और रामदेव अगले दिन सुबह सात बजे पटना से मुंगेर पहुंच चुके थे। वे सीधे इंस्पेक्टर सक्सेना के पास पहुंचे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इंस्पेक्टर की समझ में कुछ नहीं आया। उसने उन दोनों को अपने साथ लिया और दिलाराम

होटल की ओर चल दिया।

आधे घंटे के बाद वे दिलाराम होटल के उस रूम में पहुंच गए, जिसमें मेजर और उसके साथी ठहरे हुए थे।

"अख्खाह, मैं आप ही को याद कर रहा था। इंस्पेक्टर साहब, दुश्मन छिपकर बैठ गया है। उसे संदेह हो गया है कि उसके प्रतिद्वंद्वी मुंगेर आ पहुंचे हैं। अब वह कोई नई चाल सोच रहा है।" यह कहकर उसने सुखदेव और रामदेव की ओर देखा।

सुखदेव और रामदेव ने मेजर और उसके साथियों को नमस्ते की।

इंस्पेक्टर ने उनका परिचय देते हुए कहा, "ये मेरे वे विश्वस्त आदमी सब-इंस्पेक्टर सुखदेव और रामदेव हैं, जिनको मैंने लेटिन इबारत पढ़वाने के लिए भेजा था। ये जालन्धर के बेपटिस्ट चर्च के रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ से इबारत पढ़वाकर लाए हैं। उसे नोट कर लाए हैं। लेकिन मेरी समझ में तो कुछ आया नहीं। रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ पूरी इबारत नहीं पढ़ सके।

"बेपटिस्ट चर्च जालन्धर के रेवरेण्ड एण्ड्रयूज ! इंस्पेक्टर साहब, शायद आपने आज का अखबार नहीं पढ़ा। एक पादरी ने रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ को ज़हर देकर मार डाला।" मेजर बोला।

"ओह !" इंस्पेक्टर सक्सेना, सुखदेव और रामदेव के मुंह से निकला।

"कोई सुखदेव और रामदेव का शुरू से ही पीछा कर रहा था। जब उसे मालूम हुआ कि रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने लेटिन इबारत पढ़ दी है और हो सकता है कि वह बाकी इबारत भी पढ़ दें तो उस पादरी ने रेवरेण्ड की हत्या कर दी। वह पादरी कौन हो सकता है ? मेरे विचार से वह पादरी नहीं था। वह दुश्मन का आदमी था। आश्चर्य की बात तो यह है कि उसने रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ की बजाय पहले ही सुखदेव और रामदेव को मारकर इनसे वे स्केच क्यों नहीं छीन लिए ?"

सुखदेव और रामदेव हतप्रभ रह गए।

"अच्छा, आप बैठिए। आपको रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने लेटिन

इबारत का जो हिन्दी अनुवाद लिखवाया है, मुझे सुनाइए।" मेजर ने सुखदेव और रामदेव से कहा।

सुखदेव ने अपनी नोटबुक खोलकर रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ का लिखवाया हुआ अनुवाद पढ़कर सुना दिया।

मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा। फिर बोला, "आप जितना कुछ लिखकर लाए हैं, उसी से बहुत कुछ पता चल जाता है। अब ज़्यादा दौड़-धूप करने की ज़रूरत नहीं है।"

"इस इबारत का अर्थ क्या है?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"यह इंसान की पुरानी और सदियों से दृढ़ होती चली आ रही भावनाओं की कहानी है। ज़माना बदल गया। सभ्यताएं बदल गईं। रहन-सहन के तरीके बदल गए। शिक्षा ने इंसान को संवारा, लेकिन इंसान की कुछ बुनियादी भावनाएं बिलकुल परिवर्तित नहीं हुई हैं, जो आज भी सामाजिक बुराइयों का कारण बनी हुई हैं। ख़ैर, अब हमें दुश्मन के अगले कदम की प्रतीक्षा करनी होगी। इंस्पेक्टर साहब, आपने एक महत्त्वपूर्ण काम पूरा कराया। अब आप मेरे फोन की प्रतीक्षा कीजिएगा।"

इंस्पेक्टर, सुखदेव और रामदेव चले गए।

राइकार स्टीफन अगले दिन डेढ़ बजे मुंगेर पहुंचा। उस समय वह पादरी के वेश में नहीं था। उसने एक नाव ली और नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच गया और लोगों की नज़रों से बचता हुआ आदिवासियों के इलाके की झाड़ियों के पीछे उस इलाके में पहुंच गया, जहां मालती और पुबुली लकड़ियां बीनती रही थीं।

पिछली रात मेजर और उसके साथी उस जगह गए थे, जहां मालती ने चन्द्रिका के रोने की आवाज़ सुनी थी और जहां वह दो लकड़ियां गाड़ आई थी और एक फर्लांग तक लकड़ियां फेंकती हुई आई थी, लेकिन उन्हें न वे दो गाड़ी गई लकड़ियां मिली थीं और न मालती द्वारा एक फर्लांग तक फेंकी हुई लकड़ियां मिली थीं। कोई उन लकड़ियों को उठाकर ले गया था। उन्होंने देर तक आवाज़ें सुनने की कोशिश की थी, मगर निराश होकर लौट आए थे।

राइकार शानदार सूट पहने हुए था। झाड़ियों के पीछे पहुंचकर वह एक खन्दक में गायब हो गया। कुछ मिनट के बाद वह एक बड़ी चट्टान के सामने पहुंच गया।

उसने जेब में से सीटी निकालकर बजाई। कुछ मिनट के बाद चट्टान दो हिस्सों में बंट गई और चट्टान के अन्दर संगमरमर की सीढ़ियां निकल आईं। उस चट्टान के अंदर छोटा-सा आलीशान महल था।

एक आदमी आगे आया। वह मेकडानेल्ड था। उसने कहा, "स्टीफन, इतने दिनों के बाद आए हो। कुछ करके भी आए हो?"

यह प्रश्न सुनकर स्टीफन भयभीत हो उठा।

"अंदर चलिए। आराम से बातें होंगी। बहुत थका हुआ हूं। थोड़ी-सी व्हिस्की पीऊंगा।" स्टीफन ने कहा।

मेकडानेल्ड स्टीफन को लेकर महल के दीवानखाने में आ गया। वहां तीन स्त्रियां और ग्यारह पुरुष बैठे हुए थे।

"जोनेफर, स्टीफन के लिए व्हिस्की लाओ।" मेकडानेल्ड ने आदेश दिया।

जोनेफर व्हिस्की की बोतल और गिलास ले आई। उसने एक बड़ा पैग गिलास में उंडेलकर स्टीफन की ओर बढ़ा दिया। स्टीफन ने नीट पैग ही पी लिया।

"अब अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करो।" मेकडानेल्ड ने कहा।

सब लोग एकाग्र होकर सुनने लगे।

"इंस्पेक्टर सक्सेना के आदमी सुखदेव और रामदेव पहले पटना पहुंचे। वहां लेटिन भाषा जानने वाला कोई प्रोफेसर नहीं था। वे पटना से इलाहाबाद पहुंचे। वहां एक अंग्रेज़ प्रोफेसर था, लेकिन वह लेटिन अधिक नहीं जानता था। वह आर्टिस्ट रावेल की फूलों और जानवरों के रूप में लिखी लेटिन को नहीं पढ़ सका। मैं खुश था कि उन दोनों को सफलता नहीं मिलेगी। इसलिए मैंने उनको मार देने की कोशिश नहीं की। इलाहाबाद से सुखदेव और रामदेव लुधियाना के मिशन कॉलेज में पहुंचे। मैं पहली बस मिस कर गया, लेकिन मुझे मालूम था कि वे लुधियाना के मिशन कॉलेज

में जाएंगे। रास्ते में मेरी बस खराब हो गई और मैं लुधियाना तीन घंटे लेट पहुंचा। वहां पहुंचकर मुझे पता चला कि लेटिन जानने वाला कोई भी प्रोफेसर आर्टिस्ट रावल की लिखी हुई लेटिन इबारत नहीं पढ़ सका। मुझे प्रसन्नता हुई। लुधियाना में मुझे पता चला कि मिशन कॉलेज के प्रोफेसरों ने उनको जालन्धर के बेपटिस्ट मिशन चर्च के रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ के पास जाने की सलाह दी है। वे मेरे लुधियाना पहुंचने से तीन घंटे पहले ही जा चुके थे। मैं जालन्धर के बेपटिस्ट चर्च में पहुंचा। रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ ने मुझे बताया कि वह आर्टिस्ट रावेल की फूलों और जानवरों के रेखाचित्रों के रूप में लिखी हुई लेटिन इबारत पढ़कर सुखदेव और रामदेव को उसका अनुवाद लिखवा चुके हैं और उन्होंने उनसे वायदा किया है कि अगर वे दोबारा उन तीनों स्केचों को लेकर आएंगे तो वह पूरी इबारत पढ़कर सुना देंगे। मुझे बहुत अफसोस हुआ। मैंने सोचा कि कहीं रेवरेण्ड एण्ड्रयूज़ दूसरी बार में उन्हें पूरी इबारत पढ़कर न सुना दें, इसलिए मैंने उनको मार डाला।"

"यह तुमने बहुत अच्छा किया; लेकिन तुमने यह काम तब किया, जब तीर हाथ से निकल चुका था। स्टीफन, क्या तुम जानते हो कि तुमने हमारे मिशन को कितनी बड़ी हानि पहुंचाई है। हम अपने उद्देश्य में पूरी तरह असफल हो सकते हैं, और इस असफलता की ज़िम्मेदारी तुमपर होगी। मैंने तुमसे कहा था और स्पष्ट शब्दों में कहा था कि सुखदेव और रामदेव की हत्या करके उनसे तीनों स्केच छीन लिए जाएं। तुमने ऐसा क्यों नहीं किया? तुम ही सोचो, क्या इतनी बड़ी गलती के लिए तुम्हें क्षमा किया जा सकता है?"

सब एकसाथ बोल उठे, "नहीं, स्टीफन को क्षमा नहीं किया जा सकता। इसने हमारा सारा प्रोग्राम चौपट कर दिया है। अब हमारा जानी नुकसान बहुत ज़्यादा होगा।"

"स्टीफन गोली का हकदार है।" एक औरत बोली।

एक मनचला दीवानखाने में एक बड़ी सलीब उठा लाया। उसने वह सलीब दीवानखाने के एक कोने में लटका दी। उसके

बाजुओं में रस्सियां बंधी हुई थीं । सलीब को देखते ही स्टीफन के बदन का सारा लहू सूख गया ।

एक आदमी ने स्टीफन की बगलों में हाथ डालकर उसे उठा लिया और सलीब के पास ले आया । कुछ आदमियों ने स्टीफन के हाथ सलीब के बाजुओं से बांधकर उसे लटका दिया ।

एक नौजवान के हाथ में पिस्तौल था । वह स्टीफन के पास आकर बोला, "स्टीफन, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारी आंखों पर रूमाल बांध दिया जाए ?"

"नहीं ।"

पिस्तौल वाला नौजवान चार कदम पीछे हटा और उसने स्टीफन के सीने का निशाना लेकर ट्रैगर दबा दिया । स्टीफन के सीने से खून की धार उबल पड़ी । उसकी गर्दन ढुलक गई ।

मेकडानेल्ड ने कहा, "स्टीफन को सलीब पर से उतारकर दूर किसी खन्दक में फेंक आओ । दो दिन में वहां इसकी हड्डियों का ढांचा मात्र रह जाएगा ।"

स्टीफन को सलीब पर से उतारकर फर्श पर लिटा दिया गया। जब उसके सीने से खून बहना बन्द हो गया तो दो आदमियों ने उसे उठाया और दूर ले जाकर एक खन्दक में फेंक आए ।

चट्टान पूर्ववत् बन्द हो गई ।

२०. एक नम्बर किला

मेजर बलवन्त सुखदेव और रामदेव के लाए हुए अनुवाद का अध्ययन कर रहा था । वह वास्तविक रहस्य को किसी सीमा तक जान गया था ।

मेजर उठकर फोन की मेज़ के पास चला गया और उसने इंस्पेक्टर सक्सेना का फोन नम्बर मिलाकर कहा, "इंस्पेक्टर साहब !"

"ओह मेजर साहब, आप !" इंस्पेक्टर ने दूसरी ओर से कहा।

"इंस्पेक्टर साहब, थोड़ी देर के लिए मेरे पास आ जाइए।

म लोग राजभान से मिलने चलेंगे। उसके किले के पिछले हिस्से का मुआयना करेंगे। आज उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"मैं आ रहा हूं।" इंस्पेक्टर ने कहा और रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

आधे घंटे के बाद इंस्पेक्टर सक्सेना आ गया। मेजर उसके साथ नदी की ओर चल पड़ा। उन्होंने एक नाव ली और उसमें बैठकर एक नम्बर किले के पिछले हिस्से में पहुंच गए। टूटी हुई दीवार के साथ एक सीढ़ी अभी तक ठीक हालत में थी। उसपर बारूद का कोई असर नहीं हुआ था।

इंस्पेक्टर उस सीढ़ी पर चढ़ गया। मेजर भी उसके पीछे-पीछे ऊपर पहुंच गया।

सीढ़ी के ऊपर एक मजबूत दरवाज़ा था। इंस्पेक्टर ने उस दरवाज़े पर दस्तक दी। अंदर से एक भारी-भरकम आवाज़ सुनाई दी, "कौन ?"

"इंस्पेक्टर सक्सेना।"

दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़े में राजभान खड़ा था। वह बहुत उदास था।

"नमस्ते। आपको याद होगा कि मैंने आपसे कहा था कि हमें किले के इस हिस्से का मुआयना करना है और किले को बारूद से पहुंचने वाले नुकसान का अनुमान लगाना है, ताकि हम यह देख सकें कि कितना शक्तिशाली डाइनामाइट इस्तेमाल किया गया था। ऐसा डाइनामाइट कौन इस्तेमाल कर सकता है। इससे आक्रमणकारी का पता चल सकेगा। हम आपको काफी मोहलत देकर आए हैं।" इंस्पेक्टर ने कहा।

"आइए, लेकिन मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप हमारी प्राइवेसी में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।"

"हम ऐसा हरगिज़ नहीं करेंगे।" मेजर बोला।

"आप दो-तीन मिनट यहीं रुकिए। मैं अभी आता हूं।" राजभान ने कहा और वापस चला गया।

"मेरे विचार से राजभान घर की स्त्रियों को परदे में चले जाने का आदेश देने गया है।" मेजर बोला।

"ऐसा ही लगता है।" इंस्पेक्टर ने कहा।

पांच मिनट के बाद राजभान लौट आया।

"आइए।" राजभान ने कहा और किले के उस पिछले हिस्से को दिखाने लगा, जो बारूद से उड़ गया था। उस हिस्से में कोई नहीं था।

राजभान ने एक टूटा-फूटा कमरा दिखाते हुए कहा, "इस कमरे में सुन्दरभान और उसकी पत्नी चन्द्रिका रहा करते थे। इस कमरे का एक-एक पत्थर उड़ गया। मेरे विचार से डाइनामाइट एक हज़ार टन शक्ति का था।"

मेजर किले के बाकी हिस्से को देखने लगा। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस किले में ओटे ही ओटे बने हुए थे। अगर कोई आगे बढ़कर देखता तो एक ओटे के सामने दूसरा ओटा आ जाता और किले के भीतरी भाग पर उसकी नज़र ही न पड़ पाती।

"हम आपके किले के पिछले हिस्से का मुआयना कर चुके हैं और आपके विचार से सहमत हैं। वह एक हज़ार टन बारूद की शक्ति रखने वाला डाइनामाइट था।" मेजर ने कहा।

"हमारा घराना तीन सुन्दर स्त्रियों से वंचित हो गया है। सात लाख रुपये के नुकसान के साथ घर का सौन्दर्य कम हो गया।" राजभान ने उदास स्वर में कहा।

"आपके पास इतनी दौलत है कि आप बड़ी आसानी से इस कमी को पूरा कर सकते हैं। बहुत-सी स्त्रियों को सुखी और वैभवसम्पन्न जीवन से प्यार होता है। इसके लिए तो वे जेलखाने में रहने के लिए भी तैयार हो जाती हैं। धन्यवाद, हम चलते हैं।" मेजर ने कहा।

"नमस्ते।" राजभान ने कहा।

किले से निकलकर जब इंस्पेक्टर सक्सेना और मेजर एक नाव में आ बैठे तो इंस्पेक्टर ने पूछा, "आपका किले के पिछले

हिस्से में जाने का उद्देश्य क्या था ?"

"मैं किले की बनावट देखना चाहता था।"

"क्या किले की बनावट में कोई विशेष रहस्य है ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"जी हां।"

थोड़ी देर बाद वे नदी पार करके सड़क पर आ गए।

मेजर इंस्पेक्टर की जीप में न बैठकर बोला, "आप चलिए इंस्पेक्टर साहब ! मुझे एक-दो जगह जाना है। फिर मिलेंगे।"

इंस्पेक्टर जीप लेकर चला गया।

मेजर सड़क पर खड़ा टैक्सी की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ मिनट बाद एक टैक्सी उधर से गुज़री तो मेजर ने रुकवा ली और टैक्सी में बैठकर बोला, "बेलापुर चलो।"

पौन घंटे के बाद टैक्सी बेलापुर में पहुंच गई। मेजर ने टैक्सी ड्राइवर से कहा कि वह पहली गली में २२२ नम्बर मकान के सामने टैक्सी रोक दे।

कुछ देर बाद टैक्सी पहली गली के २२२ नम्बर मकान के सामने पहुंचकर रुक गई।

टैक्सी की आवाज़ होते ही २२२ नम्बर मकान का दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़ा सर्वेश ने खोला था।

मेजर को देखकर वह मुस्कराया और हाथ जोड़कर मेजर को नमस्ते की। उसके पीछे मेजर को सर्वीना का फूल-सा चेहरा नज़र आया। उसने खुशी से उछलकर मेजर को नमस्ते की।

मेजर उन दोनों के प्रेम से बहुत प्रभावित हुआ। उसने टैक्सी ड्राइवर को किराया चुकाया और घर के दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

सर्वीना और सर्वेश मेजर के बाज़ू थामकर उसे अन्दर ले गए।

"कहिए, कैसे आना हुआ ?" सर्वेश ने पूछा।

"काम के बिना कौन किसीके पास आता है। मैं बस एक खयाल लेकर आया हूं। वह गलत भी हो सकता है।" मेजर ने कहा।

तीनों आमने-सामने बैठ गए।

"आप क्या विचार लेकर आए हैं ?" सर्वेश ने पूछा।

"सर्वेश, तुम बहुत दिनों से मुंगेर में रह रहे हो। तुमने यहीं शिक्षा प्राप्त की है। यह बताओ कि क्या किला नम्बर एक में रहने वाले अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलाते ?"

"छोटी लड़कियों को सिर्फ छठे स्टैण्डर्ड तक शिक्षा दिलाई जाती है। वे बन्द गाड़ियों में स्कूल आती-जाती हैं। बड़ी लड़कियों को शिक्षा बिलकुल नहीं दिलाई जाती। उनका विचार है कि औरत का बस थोड़ा-सा पढ़ा-लिखा होना ही काफी है। लेकिन लड़के पूरी शिक्षा प्राप्त करते हैं, पर वे नौकरी या कोई कारोबार नहीं करते। उनके मनबहलाव के सभी साधन किले में जुटा दिए गए हैं—टेनिस कोर्ट, ताश, कैरम, पिंगपांग और सिनेमा प्रोजेक्टर। वे फिल्में खरीद लेते हैं।" सर्वेश ने बताया।

"आपको इन बातों का कैसे पता चला मिस्टर सर्वेश ?"

"बात यह है कि चन्द्रभान, जिसने शादी के लिए सर्वीना को खरीदा था, मेरे साथ कॉण्वेण्ट में पढ़ता था। वह मेरे बहुत निकट था। उसीने मुझे ये सारी बातें बताई थीं।"

"क्या चन्द्रभान आपसे कभी-कभी मिलता है ?"

"बहुत कम। बाजार में आता है तो इधर भी आ जाता है। अब तो छः महीने से उसे देखा नहीं।"

"अगर आप उससे मिलना चाहते हैं तो कैसे मिलते हैं ?"

"मैं किले के पिछले हिस्से की ओर जाता हूं। पहरेदार मुझे जानते हैं। मैं पहरेदार के हाथ चन्द्रभान के नाम चिट भिजवा देता हूं। हम पेड़ों के झुरमुट में घूमते हुए पन्द्रह-बीस मिनट बातें करते रहते हैं। असल में चन्द्रभान का मुझपर एक अहसान है।"

"वह क्या ?"

"हमारे कॉण्वेण्ट स्कूल में पोलो के मैच हुआ करते थे। मैं और चन्द्रभान एक ही टीम में खेला करते थे और साथ-साथ पास देते हुए आगे बढ़ा करते थे। एक बार प्रतिद्वन्द्वी टीम के खिलाड़ी ने गेंद उछालकर मारी तो वह मेरे माथे की ओर आई। मैं कुछ असावधान था, लेकिन चन्द्रभान सतर्क था। उसने अपनी

स्टिक से गेंद रोक दी और मेरे माथे में लगने से बचा ली। एक दिन मैंने चन्द्रभान से कहा था कि मेरे दोस्त, किसी दिन तुम्हारे इस अहसान का बदला ज़रूर चुकाऊंगा।"

मेजर मुस्कराया और बोला, "मिस्टर सर्वेश, अगर आप मेरी सलाह के अनुसार काम करें तो आप चन्द्रभान के अहसान का बदला चुका सकते हैं।"

"मैं आपकी हर सलाह को मानूंगा।" सर्वेश ने कहा।

"आप थोड़ी देर के लिए मेरे साथ मकान से बाहर चलिए। थोड़ी-सी सैर करेंगे।"

सर्वेश मेजर के साथ मकान से बाहर आ गया। वे गली में ही चहलकदमी करने लगे।

मेजर सर्वेश को कुछ समझाता रहा और सर्वेश स्वीकृति में सिर हिलाता रहा।

अन्त में मेजर ने पूछा, "आप मेरा मतलब समझ गए न ?"

"बिलकुल समझ गया।" सर्वेश ने कहा।

"अभी सर्वीना से इस सम्बन्ध में ज़िक्र न करना। आप आधे घण्टे के बाद सूट पहनकर घर से निकलिएगा। घड़ी बांधकर और अंगूठी पहनकर। यहां से गुलदस्ता रोड पहुंच जाइए। वहां सुधीर आपको मॉडर्न जवान के वेश में मिलेगा।" मेजर ने कहा और वहां से चल दिया।

बेलापुर से निकलकर मेजर ने सड़क पर से टैक्सी ले ली और टैक्सी ड्राइवर को दिलाराम होटल चलने का आदेश दिया। होटल पहुंचकर उसने टैक्सी ड्राइवर को किराया दिया और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपने सूट में पहुंच गया।

उसने सुधीर से कहा, "सुधीर, तुम एक फैशनेबल नौजवान का मेकअप बना लो। शानदार सूट पहन लो। जल्दी करो। तब तक मैं इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन करता हूं।"

यह कहकर मेजर टेलीफोन की मेज़ के पास चला गया। उसने इंस्पेक्टर का नम्बर मिलाया और बोला, "हैलो इंस्पेक्टर !"

"मेजर साहब—?"

"जी हां। इंस्पेक्टर साहब, क्या दस-पन्द्रह मिनट में आप एक खाली कमरे की व्यवस्था कर सकते हैं? और उस खाली कमरे के दरवाज़े पर आप एक गुंडे के मेकअप में होने चाहिए।"

"आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं?" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से पूछा।

"पहले कमरे का प्रबन्ध कीजिए। फिर मैं आपको बता दूंगा।"

"आजकल हमारा क्लब खाली पड़ा है। उसकी चाबियां मेरे पास हैं। मैं पच्चीस-तीस मिनट में एक गुंडे के मेकअप में वहां पहुंच जाऊंगा। क्लब हज़ारी बाग रोड पर है।"

"धन्यवाद इंस्पेक्टर साहब!" मेजर ने कहा और रिसीवर रख दिया।

सुधीर तैयार होकर कमरे से बाहर आ गया।

"सुधीर, तुम सुनील की कार ले जाओ और कलकत्ता रोड पर पहुंच जाओ। वहां तुम्हें सर्वेश मिलेगा। उसे अपनी कार में लेकर पुलिस क्लब चले जाना। पुलिस क्लब हज़ारी बाग रोड पर है। वहां तुम्हें इंस्पेक्टर सक्सेना गुंडे के रूप में मिलेंगे। तुम सर्वेश को इंस्पेक्टर के हवाले कर देना और उसकी घड़ी तथा अंगूठी लेकर यहां दिलाराम होटल में चले आना।"

मेजर के साथी बहुत हैरान थे कि मेजर सुधीर को कैसी हिदायत दे रहा है और उसने इंस्पेक्टर सक्सेना को गुंडे का मेक-अप बनाने के लिए क्यों कहा है।

सुधीर चला गया।

सुधीर के जाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, तुम जल्दी से एक नर्स का मेकअप बना लो, लेकिन तुम्हारी सूरत सोनिया जैसी दिखाई न दे। सफेद ब्लाउज में ब्रोच लगा लेना।"

सोनिया ने जल्दी-जल्दी नर्स का मेकअप बना लिया।

दस मिनट के बाद सुधीर सर्वेश की घड़ी और अंगूठी लेकर आ गया।

मेजर ने घड़ी और अंगूठी सोनिया के हवाले करके कहा,

सोनिया, तुम यह घड़ी और अंगूठी अपने साथ लेती जाओ। बेलापुर के २२२ नम्बर मकान में तुम्हें सर्वीना मिलेगी। उससे कहना कि कलकत्ता रोड पर सर्वेश की टैक्सी के साथ एक आती हुई टैक्सी की टक्कर हो गई है। सर्वेश के सिर में चोट आई है। वह अस्पताल में है। उसके माथे पर टांके लगे हैं और वह अभी तक बेहोश है। डॉक्टर ने दो-तीन दिन बिलकुल आराम करने की सलाह दी है। इसके बाद सर्वेश की घड़ी और अंगूठी सर्वीना को देकर पूछना कि क्या यह घड़ी और अंगूठी सर्वेश की हैं? सर्वीना घड़ी और अंगूठी देखकर विश्वास कर लेगी कि सचमुच सर्वेश के सिर में चोट आई है और वह अस्पताल में है। वह तुम्हारे साथ चल पड़ेगी। तुम उसे टैक्सी में बिठालकर वहां से चल पड़ना। सर्वीना सर्वेश को बहुत प्यार करती है। वह रास्ता-भर घबराती रहेगी। रास्ते में तुम उसे अपना वास्तविक परिचय देकर उसे बता देना कि सर्वेश बिलकुल ठीक है। तुम्हें इस तरह से इसलिए ले जाया जा रहा है कि लोग यह समझें कि बहाना बनाकर तुम्हारा अपहरण किया गया है।"

मेजर के साथी हैरान थे कि उसका उद्देश्य क्या है।

सोनिया चली गई।

आधे घंटे के बाद नर्स के वेश में सोनिया बेलापुर के २२२ नम्बर मकान के आगे टैक्सी में पहुंच गई। टैक्सी की आवाज सुनकर सर्वीना ने दरवाज़ा खोला। वह टैक्सी से एक नर्स को उतरते देखकर घबरा गई।

नर्स ने सर्वीना को नमस्ते करके पूछा, "क्या आपका ही नाम मिस सर्वीना है?"

"जी हां—क्या बात है?" सर्वीना ने घबराकर पूछा।

"आप मेरे साथ अन्दर चलिए और हिम्मत से काम लीजिए। घबराइए नहीं।" सोनिया बोली।

सर्वीना नर्स को अंदर ले गई, लेकिन उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था।

सोनिया ने अपने बैग में से एक रिस्टवाच और एक अंगूठी निकालकर सर्वीना को थमाते हुए पूछा, "क्या आप इस घड़ी और अंगूठी को पहचानती हैं ?"

"ये···ये तो सर्वेश की घड़ी और अंगूठी हैं ! क्या हुआ सर्वेश को ?" सर्वीना ने बदहवास होकर पूछा ।

"घबराइए नहीं मिस सर्वीना ! कलकत्ता रोड पर मिस्टर सर्वेश की टैक्सी से एक आती हुई टैक्सी टकरा गई थी। मिस्टर सर्वेश के माथे पर चोट लगी थी । उनको क्लीनिक में पहुंचा दिया गया है। मैं क्लीनिक से ही आ रही हूं । उनके माथे में टांके लगा दिए गए हैं । अब वह होश में हैं । डॉक्टरों ने उनको दो-तीन दिन तक पूरी तरह आराम करने का मशवरा दिया है । मिस्टर सर्वेश आपको याद कर रहे हैं । इसीलिए उन्होंने मुझे अपनी घड़ी और अंगूठी देकर आपके पास भेजा है, ताकि आप इसे कोई धोखा न समझें।"

"नर्स, मुझे जल्दी से सर्वेश के पास ले चलो। शायद मैं रात-भर उनके पास ही रहूं । अपना सूटकेस लिए चलती हूं।" सर्वीना ने घबराहट-भरे स्वर में कहा ।

"हां, ज़रूर ले चलिए।"

सर्वीना ने सूटकेस जल्दी से पैक किया और बाहर निकलकर दरवाज़े में ताला लगा दिया ।

वह सोनिया के साथ टैक्सी की पिछली सीट पर आ बैठी। वह सिसकियां भर रही थी । लम्बी-लम्बी आहें भर रही थी ।

जब टैक्सी थोड़ी दूर निकल गई तो सोनिया बोली, "मिस सर्वीना, आप सिसकियां मत भरिए । आपको दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं है । ठहरिए, मेरी ओर देखिए," यह कहकर सोनिया ने सिर पर से नर्स वाली टोपी उतार दी और फिर अपने पर्स में से पफ निकालकर अपने चेहरे पर से रूज़ और पाउडर पोंछ दिया, फिर लोशन की शीशी और रुई निकालकर अपनी आंखों का काजल साफ कर दिया ।

"मिस सोनिया ?—इस तरह मुझे डराकर लाने का मतलब ?"

सोनिया हंसने लगी और फिर बोली, "आपके सर्वेश बाबू को कुछ नहीं हुआ। आप उन्हींके पास जा रही हैं। तुम्हें इसलिए इस तरह लाया गया है, ताकि लोग यह समझें कि तुम्हारा अपहरण किया गया है।"

"क्यों ?"

"यह तो सर्वेश बाबू ही बताएंगे।"

आधे घंटे के बाद टैक्सी पुलिस क्लब के दरवाज़े पर पहुंचकर रुक गई। दरवाज़े पर इंस्पेक्टर सक्सेना को गुंडे के रूप में खड़ा देखकर सर्वीना भयभीत हो उठी।

वह सोनिया के साथ टैक्सी से उतर आई। सोनिया ने टैक्सी ड्राइवर को किराया दे दिया।

इंस्पेक्टर ने पास आकर कहा, "नमस्ते मिस सोनिया!"

सर्वीना इंस्पेक्टर सक्सेना की आवाज़ सुनकर चौंक पड़ी, "इंस्पेक्टर साहब, आप ?"

"जी हां। आइए, सर्वेश से मिलिए।" इंस्पेक्टर सर्वीना और सोनिया को क्लब के सुसज्जित कमरे में ले गया।

सर्वेश सोफे पर बैठा मुस्करा रहा था। सर्वेश को सकुशल देखकर सर्वीना दौड़कर उससे लिपट गई और उसके होंठों को बार-बार चूमने लगी।

जब सर्वीना सर्वेश से अलग हो गई तो सोनिया ने कहा, "आइए इंस्पेक्टर साहब, इन दोनों को यहीं रहने दीजिए। हम लोग दिलाराम होटल में चलें।"

सोनिया और इंस्पेक्टर पुलिस क्लब से बाहर आ गए।

२१. तीन अपहृत स्त्रियां

सोनिया और इंस्पेक्टर सक्सेना दिलाराम होटल में पहुंचे तो सब लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

सोनिया ने कहा, "सर्वीना को बिलकुल ठीक ढंग से सर्वेश के पास पुलिस क्लब में पहुंचा दिया गया है।"

"खूब," मेजर बोला, "अभी दो-ढाई घंटे का काम और रह गया है।" फिर उसने डोरा की ओर मुड़कर कहा, "डोरा, तुम जल्दी

से नई-नवेली दुल्हन का मेकअप बना लो। बहुत-से नकली गहने पहन लो और ज़रीदार साड़ी बांध लो और टैक्सी में बैठकर चली जाओ। आसनसोल रोड पर पहुंचकर तुम टैक्सी से उतर जाना। बहुत ही चंचल और शोख बनकर चलना। तुम्हारे पास एक कार आकर रुकेगी। उसमें से सुधीर और इंस्पेक्टर सक्सेना गुंडों के वेश में उतरेंगे। सुधीर लपककर तुम्हारे मुंह पर हाथ रखकर तुम्हें उठा लेगा। तुम खूब हाथ-पांव मारकर अपने-आपको छुड़ाने की कोशिश करना, लेकिन इंस्पेक्टर तुम्हारी टांगें पकड़कर तुम्हें कार में डाल लेगा। शायद कुछ लोग तुम्हारी सहायता के लिए दौड़ें, लेकिन सुधीर हवाई फायर करके उन्हें भगा देगा। इस तरह सुधीर और इंस्पेक्टर तुम्हारा अपहरण करके तुम्हें ले जाएंगे और सर्वेश तथा सर्वीना के पास पुलिस क्लब में पहुंचा देंगे।"

डोरा नई-नवेली दुल्हन का मेकअप बनाने के लिए चली गई। बीस मिनट के बाद वह मेकअप रूम से निकली तो उसके सौन्दर्य को देखकर आंखें चौंधिया गईं। वह बड़ी शोखी और चंचलता से चलती हुई सूट से निकल गई।

पांच-सात मिनट बाद इंस्पेक्टर सक्सेना और सुधीर भी सूट से चले गए।

आसनसोल रोड पर पहुंचकर डोरा टैक्सी से उतर गई और बड़े शोख अन्दाज़ में फुटपाथ पर चलने लगी। कुछ लोग आवाज़ें कसने लगे। एक बोला, "मुसीबत को खुद ही दावत दे रही है।"

राहगीर चलते-चलते रुक जाते और उसे देखने लगते।

कुछ मिनट बाद एक कार आसनसोल रोड पर आई और झटके के साथ डोरा के पास पहुंचकर रुक गई। उस कार में इंस्पेक्टर सक्सेना और सुधीर थे। सुधीर तेज़ी से कार में से निकलकर डोरा की ओर लपका। डोरा के मुंह से चीख निकली, लेकिन सुधीर ने जल्दी से उसके मुंह पर हाथ रख दिया और उसकी टांगों में बांह डालकर उसे उठा लिया। डोरा ज़ोर-ज़ोर से हाथ-पांव मारने लगी। कुछ लोग जाते-जाते रुक गए और सोचने लगे कि इस गुंडे के हाथ से डोरा को कैसे बचाया जाए; लेकिन जब इंस्पेक्टर सक्सेना गुंडे के वेश में कार से उतरा तो लोग डर गए। इंस्पेक्टर ने डोरा की टांगें पकड़ लीं और दोनों ने

लकर डोरा को कार की पिछली सीट पर डाल दिया और स्पेक्टर सक्सेना ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया।

लोग कार की ओर दौड़ने लगे। अचानक सुधीर ने तेज़ी से वॉल्वर निकालकर हवाई फायर कर दिया। लोग तितर-बितर गए।

सुधीर ने कार स्टार्ट की और फौरन उसकी रफ्तार तेज़ कर दी।

लोग आपस में बातें करने लगे, "न जाने ये औरतें इतने हने पहनकर घर से क्यों निकलती हैं!"

दूसरा बोला, "भई, अपना सौन्दर्य दिखाना है तो अपने रवाले को दिखाओ। अब गहने तो जाएंगे सो जाएंगे ही, आबरू भी चली जाएगी। इसे कहते हैं, 'आ बैल, मुझे मार'।"

सुधीर और इंस्पेक्टर डोरा को सर्वेश और सर्वीना के पास लिस क्लब में छोड़कर होटल में पहुंच गए।

"इंस्पेक्टर साहब और सुधीर, जाइए और गुंडों का मेकअप तारकर अपनी यूनीफॉर्म पहनकर फौरन लौट आइए। अभी क काम और करना है।" मेजर ने कहा।

इंस्पेक्टर के जाने के बाद मेजर ने सोनिया से कहा, "सोनिया, म एक मध्यम परिवार की गृहिणी का मेकअप बना लो। अच्छी ाड़ी पहन लो। उसपर कोट पहन लेना, लेकिन तुम्हारा कअप ऐसा होना चाहिए, जैसे तुम बहुत ही खिलंडरी औरत ो। दुकानदार से छेड़छाड़ भी कर सकती हो। तुम यह मेकअप नाकर नागपुर रोड पर चली जाना। वहां औरतों के बनाव-शृंगार की चीज़ें बेचने वाली किसी दुकान में चली जाना और इत्र, पाउडर, क्रीम और रूज़ खरीदना।

"तुम्हारे पहुंचने के बाद उस दुकान में मालती और सुनील एक धनवान जोड़े के मेकअप में पहुंचेंगे। मालती भी कुछ चीज़ें खरीदेगी और अपना पर्स चुपचाप तुम्हारे कोट की जेब में डाल देगी और जब दुकानदार का बिल पेमेंट करने लगेगी तो चीख उठेगी, 'मेरा पर्स···मेरा पर्स···अभी-अभी किसीने उड़ा लिया है।' और फिर मालती तुम्हारी ओर इशारा करके कहेगी, 'यह औरत···यह औरत मेरे पास खड़ी थी।' सुनील लपककर तुम्हारी तलाशी लेगा और तुम्हारे कोट की जेब में से पर्स निकाल

लेगा। तुम मुंहफट औरतों की तरह झगड़ने लगोगी। इतने में इंस्पेक्टर सक्सेना उस दुकान में पहुंचेगा। मालती और सुनील उससे शिकायत करेंगे कि इस औरत ने उसकी पत्नी का पर्स निकाल लिया है। क्योंकि पर्स तुम्हारी जेब से निकला था, इसलिए दुकान में खड़े सब लोग गवाही देंगे कि मालती का पर्स तुम्हींने चुराया था। इंस्पेक्टर तुम्हें हिरासत में ले लेगा और दुकान से निकल आएगा। तुम्हारे और इंस्पेक्टर के जाने के बाद एक ग्राहक कहेगा कि उसने मालती को तुम्हारे कोट की जेब में पर्स डालते हुए देखा था। यह इंस्पेक्टर कोई नकली इंस्पेक्टर था, और यह चाल उस औरत का यानी तुम्हारा अपहरण करने की एक चाल थी। दुकान से बाहर आकर सुनील, मालती और इंस्पेक्टर तुम्हें सर्वेश, सर्वीना और डोरा के पास पुलिस क्लब में छोड़ आएंगे।"

सोनिया मेकअप रूम में चली गई। कुछ मिनट के बाद वह मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री के वेश में होटल के सूट में चली गई। दस मिनट के बाद मालती और सुनील भी चले गए।

इंस्पेक्टर ने मेजर से पूछा, "यह सब कुछ क्यों किया जा रहा है ?"

"एक महत्त्वपूर्ण रहस्य जानने के लिए ऐसा किया जा रहा है। बस, देखते जाइए।" मेजर ने उत्तर दिया।

सोनिया नागपुर रोड पर पहुंची। वह कास्मेटिक्स की एक ऐसी दुकान में चली गई, जिसमें काफी भीड़भाड़ थी। उसके पीछे-पीछे सुनील और मालती भी उस दुकान में पहुंच गए। मालती योजना के अनुसार सोनिया के पास जा खड़ी हुई।

सोनिया ने सेंट की शीशी, रूज़, लिपस्टिक और हेयर ऑयल मांगा।

दुकान के सेल्समैन ने ये चीज़ें कई मेल की निकालकर सोनिया के आगे रख दीं और सोनिया को ध्यान से देखने लगा। वह यह समझ रहा था कि सोनिया सामान खरीदने नहीं, सिर्फ देखने के लिए आई है।

"इत्र ऐसा हो कि दूसरे के कपड़े से भी दो दिन तक उसकी खुशबू न जाए। लिपस्टिक वह हो कि होंठ बीरबहूटी बन जाएं। हेयर ऑयल ऐसा चाहिए, जिससे सारा मुहल्ला महक उठे।"

सेल्समैन हंसने लगा। उसने सोनिया के लिए तीन चीज़ें त दीं।

इसी बीच मालती ने अपना पर्स सोनिया के कोट की जेब डाल दिया और सेल्समैन से बोली, "दूसरे ग्राहक भी खड़े ।"

"फर्माइए, आपको क्या चाहिए ?"

"मुझे लोशन, वेनिर्शिंग क्रीम और शेम्पू चाहिए। बढ़िया हो।"

सेल्समैन ने तीनों चीज़ें निकालकर मालती के आगे रख दीं।

"इनकी कीमत ?"

"सत्ताईस रुपये अट्ठाईस पैसे।" सेल्समैन ने बताया।

मालती ने कोट की जेब में हाथ डाला और ज़ोर से चिल्ला उठी, "मेरा पर्स···मेरा पर्स···यह औरत···यह औरत मेरे पास खड़ी थी। मेरा पर्स इसीने चुराया है।" मालती ने सोनिया की ओर इशारा किया।

"तुम्हें शर्म नहीं आती, एक शरीफ औरत पर इल्ज़ाम लगा रही हो ? क्या मेरे पास पर्स नहीं है ?" यह कहकर सोनिया ने अपने कोट की भीतरी ज़ेब में हाथ डालकर एक काला पर्स निकाला, "बोलो, यह तुम्हारा पर्स है ?"

"नहीं, मेरा पर्स हिरन की खाल का था।" मालती बोली।

सुनील आगे बढ़ा और सोनिया के कोट की जेबों पर हाथ मारने लगा, फिर बोला, "पर्स इस जेब में है।"

उसने सोनिया के कोट की जेब में हाथ डालकर एक पर्स निकाल लिया। वह हिरन की खाल का था।

"चोट्टी !" एक औरत बोल उठी, "ऐसी औरतें दुकानों में जेब काटने के लिए आती हैं।"

"बहनजी, अपने सामान के दाम दीजिए। फिर हमारी दुकान में कभी पांव न रखना।" दुकान के मालिक ने कहा।

"मैं तुमसे कोई चीज़ खरीदना नहीं चाहती। तुम्हारी दुकान में शरीफ औरतों की बेइज़्ज़ती की जाती है।" सोनिया ने दरवाज़े की ओर मुड़ते हुए कहा।

"बड़ी सफाई से जाना चाहती है ! इसे पुलिस के हवाले कर देना चाहिए।" एक ग्राहक बोला।

इतने में इंस्पेक्टर सक्सेना उस दुकान में पहुंच गया।

"लीजिए, इंस्पेक्टर साहब भी संयोग से आ गए।" दूसरा ग्राहक बोला।

"इंस्पेक्टर साहब, इस औरत ने इन देवीजी का पर्स निकाल लिया था।" एक आदमी बोला।

"मेरे पर्स में साढ़े सात सौ रुपये थे। इसकी तो आज की दिहाड़ी बन जाती।" मालती बोली।

"मैंने किसीका पर्स नहीं लिया।" सोनिया बोली।

"क्यों, क्या सारे आदमी झूठ बोल रहे हैं? सीधी तरह थाने चलो।" इंस्पेक्टर ने सोनिया से कहा।

सोनिया हक्की-बक्की रह गई।

इंस्पेक्टर ने सुनील और मालती से कहा, "आप भी अपना बयान देने के लिए मेरे साथ चलिए।"

इंस्पेक्टर सोनिया, मालती और सुनील को साथ लेकर दुकान से निकल गया।

उनके जाने के बाद एक नौजवान, जो कुछ सामान खरीदने आया था, बोला, "मेरा विचार है कि उस बेचारी औरत के साथ यह चाल चली गई है। मैंने उन देवीजी को उस औरत के कोट की जेब में पर्स डालते हुए देखा था। मुझे तो ऐसा लगता है कि जो इंस्पेक्टर आया था, नकली इंस्पेक्टर था। यह चाल उस औरत का अपहरण करने के लिए चली गई है।"

वह नौजवान सुधीर था।

दुकान में मौजूद ग्राहक हैरान रह गए।

इंस्पेक्टर, मालती, सुनील और सोनिया पुलिस क्लब में पहुंच गए। मेजर वहां पहले से ही मौजूद था।

"सारा काम बड़ी कुशलता से पूरा हो गया। इंस्पेक्टर साहब, अब आपको स्थानीय अखबारों में तीन स्त्रियों के अपहरण की कहानी प्रकाशित करानी होगी। मैटर मैं तैयार किए देता हूं।" मेजर ने कहा।

मेजर ने फाउण्टेन पेन और पैड निकाला और एक ही हैडिंग के अन्तर्गत तीनों समाचार लिख दिए। उन समाचारों का हैडिंग था—'मुंगेर में एक ही दिन में तीन स्त्रियों का अपहरण।'

मेजर का लिखा हुआ समाचार विभिन्न अखबारों में प्रकाशित कराने के लिए इंस्पेक्टर मैटर लेकर चला गया।

"मेरा विश्वास है कि हमारा यह कदम चोखा रंग लाएगा।" मेजर बोला।

"तब तो एक शे'र इनायत कर दीजिए।" मालती बोली।

"इस समय तो जी चाहता है कि अपना सारा दीवान ही सुना डालूं। शे'र सुनिए :

पार्टी में लोग हफ्ते भर की पीके,
सात दिन का खाके करते हैं गिला।
मीट कच्चा, हलवा फीका, नान चमड़ा,
व्हिस्की घटिया, उसमें भी पानी मिला।"

"बहुत-से लोगों की आदत होती है कि खूब चटखारे लेकर खाते हैं। मछली की तरह शराब पी जाते हैं, लेकिन पार्टी देने वाले की बाद में बुराई करते हैं। अच्छा व्यंग्य है ऐसे लोगों की मनोवृत्ति पर।" मालती ने दाद दी।

सुबह सभी अखबारों में तीन स्त्रियों के अपहरण का समाचार विशिष्ट समाचार के रूप में प्रकाशित हो गया :

'एक ही दिन में तीन सुन्दर स्त्रियों का अपहरण'

'मुंगेर, २६ मार्च,

स्वाधीनता क्या मिली, चोरों, लुटेरों, उचक्कों, उठाईगीरों और स्त्रियों का अपहरण करने वालों को स्वतंत्रता मिल गई है। सड़क पर चलने, ज़ेवर पहनने, जेब में रुपये लेकर चलने और रात को घर में सोने की स्वतन्त्रता समाप्त हो गई है। एक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और दूसरी छिन गई। ऐसी स्वतन्त्रता मिली है कि शान्तिप्रिय नागरिक यह सोचने लगे हैं कि अब तो जेलों में रहकर अधिक सुरक्षित रहा जा सकता है।

कल एक बहुत ही सुन्दर लड़की को धोखा दिया गया कि उसके प्रेमी के साथ एक्सीडेंट हो गया है, एक नकली नर्स उसे घर से ले गई। नर्स का कोई साथी भी था। उस लड़की का अपहरण कर लिया गया। अभी तक न तो लड़की का पता चला है, न अपहरण करने वाले ही गिरफ्तार

किए गए हैं। लड़की का नाम सर्वीना बताया जाता है।

उसी दिन दोपहर को एक नई-नवेली दुल्हन को आसनसोल रोड पर दो गुंडे ज़बरदस्ती कार में डालकर फरार हो गए। लोग उस लड़की को बचा न सके, क्योंकि एक गुंडे ने फायर किया था। गुंडे जिस कार में थे, उसपर नम्बर-प्लेट नहीं थी। जिस लड़की का अपहरण किया गया है, उसका नाम मंजुला बताया जाता है। उसका पति रमेश बहुत परेशान है। मंजुला का अभी तक कुछ पता नहीं मिला है। लोगों का कहना है कि मंजुला अपूर्व रूपवती युवती थी।

इसी दिन शाम को नागपुर रोड की कास्मेटिक्स की एक दुकान में अपहरण की एक अनोखी ही घटना हुई। वहां एक मध्यम वर्ग के परिवार की लड़की, जिसके रूप-सौंदर्य का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता, एक धोखेबाज़ गिरोह के हत्थे चढ़ गई। एक फैशनेबल औरत ने, जिसके साथ एक आदमी भी था, उस औरत पर पर्स की चोरी का आरोप लगाया। संयोग से वहां एक इंस्पेक्टर भी आ गया। वह मध्यम वर्ग परिवार की उस लड़की को चोरी के इल्ज़ाम में गिरफ्तार करके ले गया और उस फैशनेबल औरत और उसके साथी आदमी को भी गवाही और बयान देने के बहाने अपने साथ ले गया। लोगों का खयाल है कि वह इंस्पेक्टर नकली था और यह सब उस मध्यम वर्ग परिवार की लड़की का अपहरण करने की एक चाल थी।

तीन स्त्रियों का एक ही दिन में अपहरण किया गया है। यही हाल रहा तो इस शहर में एक भी सुन्दर स्त्री न बच पाएगी। मध्यम वर्ग परिवार की लड़की का नाम चन्द्रकला था। तीनों लड़कियां न जाने इस समय किस हालत में होंगी। उनकी हत्या भी की जा सकती है।'

इस समाचार के प्रकाशित होते ही सारे शहर में अशान्ति, भय और असन्तोष की लहर दौड़ गई।

नाश्ते के बाद मेजर सुधीर, सुनील और मालती के साथ पुलिस क्लब में पहुंचा। वह अपने साथ एक सूटकेस ले गया था। जाने से पहले उसने इंस्पेक्टर सक्सेना को फोन कर दिया था कि

वह पुलिस क्लब में पहुंच जाए।

इंस्पेक्टर सक्सेना भी मेजर के पुलिस क्लब में पहुंचने के बाद वहां पहुंच गया।

मेजर ने सिगार सुलगाकर लम्बा कश लगाने के बाद एक प्रोफेसर की मुद्रा बनाते हुए कहा, "तीन स्त्रियों के अपहरण का नाटक एक विशेष उद्देश्य के लिए रचाया गया है। आप जानते हैं कि एक नम्बर किले का भटखंडे परिवार अपने परिवार की तीन सुन्दर स्त्रियों से हाथ धो बैठा है। सर्वीना, जो किले से फरार हुई; सोज़ीन, जो सर्वीना की तलाश में किले से निकली और फरार होने की कोशिश में मुर्शिदाबाद के सरताज होटल के सामने गोली से उड़ा दी गई। तीसरी औरत चन्द्रिका थी, जो किले की दीवार उड़ने से गायब हुई। मर गई या दुश्मन के हत्थे चढ़ गई, कुछ कहा नहीं जा सकता। फिर भी मेरा अनुमान है कि वह दुश्मन के कब्ज़े में ही है। भटखंडे परिवार तीन सुन्दर स्त्रियों की हानि किसी भी दशा में सहन नहीं कर सकता। वह उन स्त्रियों के रिक्त स्थान ज़रूर भरेगा। मैं भटखंडे परिवार के कान में यह बात पहले ही डाल चुका हूं कि मैं भटखंडे परिवार की इस मामले में सहायता कर सकता हूं।

"इस सिलसिले में सर्वेश हमारी सहायता कर सकता है। मैं सर्वेश को दो मिनट के लिए बाहर ले जा रहा हूं। भटखंडे परिवार का नौजवान चन्द्रभान सर्वेश का क्लासफेलो रहा है। सर्वेश पर चन्द्रभान का अहसान भी है। सर्वेश ने एक बार चन्द्रभान से कहा था कि वह उसके अहसान का बदला एक दिन अवश्य चुका देगा। आओ सर्वेश, चार-पांच मिनट के लिए मेरे साथ बाहर चलो।"

सर्वेश और मेजर उस कमरे से बाहर निकल आए। मेजर टहलते हुए सर्वेश से बातें करने लगा। फिर उसने कहा, "तुम आधे घंटे या पौन घंटे तक वापस आ जाओ। मैं इंस्पेक्टर से कहता हूं कि वह एक ऐसे मकान की तलाश करे, जिसे देखकर यही समझा जाए कि ऐसे ही मकान में अपहृत स्त्रियों को रखा जा सकता है।"

सर्वेश तैयार होकर चला गया।

मेजर ने कमरे में आकर इंस्पेक्टर सक्सेना से कहा, "सर्वेश

पौन घंटे तक आ जाएगा। क्या आप किसी बदनाम मुहल्ले में ऐसे मकान का प्रबन्ध कर सकते हैं, जो रहस्यपूर्ण दिखाई देता हो ? सम्भव हो तो उस मकान को दो-तीन घंटे के लिए खाली करा लीजिए। उस मकान की चाबी ले आइए। यह काम अधिक से अधिक आधे घंटे में हो जाना चाहिए।"

इंस्पेक्टर को बादशाह गंज का खयाल आया, जहां गरीबों और मध्यम वर्ग के लोगों की मिलीजुली आबादी रहती थी। वह उस इलाके में एक ऐसे मकान का प्रबन्ध कर सकता है। वह उठा और बादशाह गंज की ओर चल पड़ा।

सर्वेश उस समय किला नम्बर एक के पिछले हिस्से में पहुंच चुका था। उसने पहरेदार के हाथ एक चिट किले के अन्दर चन्द्रभान के पास भिजवा दी थी।

कुछ मिनट के बाद चन्द्रभान आ गया। उसके हाथ में अखबार था।

"कहो सर्वेश, कैसे आए ?"

"तुम्हींसे मिलने आया हूं।"

"तुमने आज का अखबार पढ़ा सर्वेश ? शहर की तीन बहुत ही सुन्दर स्त्रियों का अपहरण कर लिया गया है।"

सर्वेश मुस्कराने लगा।

"तुम मुस्करा क्यों रहे हो सर्वेश ?" चन्द्रभान ने पूछा।

"चन्द्रभान, मैंने ही इन तीनों स्त्रियों का अपहरण कराया है।"

"क्यों ?"

'चन्द्रभान, तुम्हें याद होगा कि मैंने एक दिन तुमसे कहा था कि तुमने मुझपर जो अहसान किया है, उसका किसी दिन बदला ज़रूर चुका दूंगा। और आज वह अवसर मुझे मिल गया है। तुम्हारे परिवार की तीन सुन्दर स्त्रियां लापता हो गई हैं। मैं उनका रिक्त स्थान इन तीन स्त्रियों से भरना चाहता हूं। यह सब कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया है। वे औरतें किले में आने के लिए तैयार हो गई हैं। उनमें से दो तो बस इतना ही चाहती हैं कि उनके माता-पिता को पचास-पचास हज़ार रुपये दे दिए जाएं। वे अपना जीवन किले में ही बिता देंगी। चन्द्रभान, अगर तुमने

उन औरतों की एक झलक भी देख ली तो तुम उन्हें जीवन-भर न भुला पाओगे। उन्हें हाथ लगा दोगे तो वे मैली हो जाएंगी। ऐसी सुन्दर स्त्रियां तो शाही महलों में भी ढूंढ़े से नहीं मिलेंगी। तुम चाहो तो मैं उन्हें तुमको दिखा सकता हूं। अगर तुम्हें पसंद आ जाएं तो तुम्हारा केवल एक लाख रुपया ही खर्च होगा।"

चन्द्रभान सोच में डूब गया। फिर बोला, "रकम तो मामूली-सी है। मेरे दादा की यही सबसे बड़ी आकांक्षा है कि उनके परिवार का सौन्दर्य किसी भी दशा में कम न होने पाए। मैं उनसे सलाह कर लूं। लेकिन वह तीसरी औरत कुछ भी क्यों नहीं मांग रही?"

सर्वेश फिर मुस्कराया और बोला, "तीसरी लड़की सर्वीना है, जिसकी बहन अभी तक तुम्हारी रकम लौटाने की व्यवस्था नहीं कर पाई है। सर्वीना अपनी बहन के लिए हर तरह से बलिदान के लिए तैयार है।"

"अच्छा, मैं दादा से सलाह करता हूं। तुम यहीं ठहरो।" यह कहकर चन्द्रभान चला गया।

पन्द्रह मिनट बाद उसने लौटकर सर्वेश से कहा, "तुमने मित्र का कर्तव्य निभा दिया सर्वेश! मेरे दादा मान गए हैं; लेकिन पहले मुझे उन लड़कियों को देखना होगा। मैं बन्द कार में आऊंगा। बताओ, तुम कहां मिलोगे?"

"मैं मोती बाज़ार के मोती रेस्तरां के सामने मिलूंगा। तुम कब तक आओगे?"

"मैं एक घंटे में पहुंच जाऊंगा।" चन्द्रभान ने कहा।

"अच्छी बात है, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।" सर्वेश ने कहा और किले के पिछले दरवाज़े से निकलकर नदी के किनारे पहुंच गया और फिर एक बजरे पर बैठकर नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच गया। सड़क पर आकर उसने टैक्सी ली और पुलिस क्लब पहुंच गया।

सर्वेश के चेहरे की चमक देखकर ही मेजर समझ गया कि सर्वेश को अपने काम में सफलता मिल गई है।

"सब तय हो गया। चन्द्रभान एक घंटे तक तीनों लड़कियों को देखने के लिए आएगा। पसन्द आ जाने पर वह एक लाख

रुपये देकर तीनों लड़कियों को ले जाएगा। मैंने एक लाख रुपया इसलिए मांगा है कि उसे कोई सन्देह न हो।" सर्वेश बोला।

"तुमने अच्छा किया।" मेजर बोला।

इतने में इंस्पेक्टर सक्सेना आ गया। उसने बताया, "मैंने बादशाह गंज में एक रहस्यमय दिखाई देने वाले मकान का प्रबन्ध कर लिया है। यह उस मकान की चाबी है। बादशाह गंज की तीसरी गली में उस मकान का नम्बर ३८ है। उसका माथा पीली मिट्टी से पुता हुआ है।"

"सर्वेश, उस मकान की चाबी ले लो।" मेजर ने कहा और फिर उसने रुककर पूछा, "चन्द्रभान तुमसे कहां मिलेगा?"

"मोती बाज़ार के मोती रेस्तरां में।"

"अच्छा, तुम मोती रेस्तरां में चले जाओ। हम सर्वीना, डोरा और सोनिया को वहां पहुंचा आते हैं। मैं मास्टर चाबी से ताला खोल लूंगा और फिर आते समय बाहर से बन्द भी करता आऊंगा।"

सर्वेश मकान की चाबी लेकर चला गया।

मेजर ने सूटकेस उठाकर खोला, "सर्वीना, डोरा और सोनिया, मैं तुम्हें दो चीज़ें दे रहा हूं। ये तीन लाइफ बेल्ट हैं, जो बहुत ही हलकी हैं। इनको पेट पर बांधने से पता भी नहीं चलेगा कि पेट पर कुछ बंधा हुआ है। इन लाइफ बेल्टों में छोटा-सा पम्प है, जिससे लाइफ बेल्टों में हवा भरी जा सकती है। जब तुम किले की दीवार से नदी में कूदोगी तो तुम्हारे बिलकुल चोट नहीं लगेगी। हम नीचे नदी में बजरे में होंगे। तुमको फौरन बजरे पर चढ़ा लेंगे। तुम्हें किले में पहुंचकर अपना काम रात के आठ बजे तक खत्म कर लेना होगा। तुम्हें किले में पहुंचकर चन्द्रभान से अनुरोध करना होगा कि हमें अब इसी किले में जीवन बिताना है। हमारा परिचय किले की स्त्रियों से करा दिया जाए। तुम्हें देखना होगा कि किले में कौन-कौन स्त्रियां रहती हैं। उनका हुलिया याद करके आना। अब मैं तुम तीनों को दूसरी चीज़ देता हूं।"

यह कहकर मेजर ने सूटकेस में से प्लास्टिक के छः बल्ब निकाले और डोरा, सोनिया और सर्वीना को दे दिए। "इन प्लास्टिक के बल्बों में तेज़ गैस है। किले के हर बुर्ज पर एक बंदूकची पहरेदार होता है। तुम्हें गैस से भरे हुए प्लास्टिक के तीन बल्ब उन पहरेदारों पर फेंकने होंगे। वे फौरन बेहोश हो जाएंगे। इसके

ाद तुम नदी में कूद पड़ना। मगर पहले पेट की लाइफ बेल्ट में वा भर लेना। हम तुम्हें संभाल लेंगे।"

"हमने सब कुछ समझ लिया।" सोनिया, डोरा और सर्वीना कहा।

"आइए इंस्पेक्टर साहब, अब हम तीनों को बादशाह गंज के उस मकान में छोड़ आएं।"

इंस्पेक्टर, मेजर, सर्वीना, डोरा और सोनिया एक टैक्सी में बैठकर बादशाह गंज की ओर चल पड़े। मेजर और इंस्पेक्टर डोरा, सोनिया और सर्वीना को छोड़कर और बाहर से ताला लगाकर लौट आए।

सर्वेश काफी देर से मोती रेस्तरां के सामने खड़ा चन्द्रभान की प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ मिनट के बाद एक बन्द कार दिखाई दी। उस कार की ड्राइविंग सीट पर चन्द्रभान बैठा था।

सर्वेश ने हाथ हिलाकर उसका स्वागत किया। चन्द्रभान ने उसके पास आकर कार रोक दी और अपने बराबर वाला दरवाज़ा खोल दिया।

"कहां चलना होगा?" चन्द्रभान ने पूछा।

"बादशाह गंज।" सर्वेश ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर के बाद चन्द्रभान की कार बादशाह गंज के ३८ नम्बर मकान के आगे पहुंच गई। चन्द्रभान ने कार रोक दी और हैंडबैग उठाकर कार से निकल आया। सर्वेश भी कार से उतर आया। उसने आगे बढ़कर मकान का ताला खोला और चन्द्रभान को साथ लेकर अन्दर चला गया।

"इस मकान में तो कोई भी नहीं है सर्वेश!" चन्द्रभान ने पहला कमरा खाली देखकर कहा।

"आप बैठिए तो। मैं एक-एक करके उनको आपके सामने ले आता हूं, ताकि आप उनको अच्छी तरह देख लें।" यह कहकर सर्वेश अंदर चला गया और सर्वीना को साथ लिए हुए आ गया।

"नमस्ते!" सर्वीना ने कहा।

"नमस्ते सर्वीना! क्या तुमने अब अपना इरादा बदल दिया है? अब तुम फिर फरार तो नहीं हो जाओगी?" चन्द्रभान ने कहा। सर्वीना उसे पहले ही बहुत पसन्द थी।

"अब तो फरार होने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं अब जान गई हूं कि नारी के लिए उसका घर ही स्वर्ग होता है।"

"तो तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो?"

"हां।" सर्वीना ने कहा और नमस्ते करके पिछले कमरे में चली गई।

सर्वेश भी पिछले कमरे में चला गया। इस बार वह डोरा को लेकर आया।

चन्द्रभान उसकी ओर फटी-फटी आंखों से देखता रह गया। डोरा का रूप-सौन्दर्य कुछ और ही था। चन्द्रभान को डोरा बहुत अच्छी लगी।

डोरा ने लजाकर नमस्ते की और पिछले कमरे में चली गई।

इसके बाद सर्वेश सोनिया को ले आया। सोनिया ने हाथ जोड़कर बड़े रसीले अंदाज़ में नमस्ते की। सोनिया का रूप-सौन्दर्य अद्वितीय था। चन्द्रभान अपनी आंखें झपकता रह गया। सोनिया के चेहरे पर से उसकी नज़रें हट नहीं पा रही थीं। सोनिया ने कमर लचकाकर और लजाकर नमस्ते की और वापस पिछले कमरे में चली गई।

सर्वेश ने चन्द्रभान की ओर प्रश्नभरी नज़रों से देखा। चन्द्रभान ने कहा, "मेरे दोस्त, मैं अगर चिराग लेकर भी निकलता तो ऐसी सुन्दर औरतों को खोज न पाता। तुमने अहसान का बदला चुकाकर मुझपर और अहसान का बोझ लाद दिया है।" यह कहकर चन्द्रभान ने हैंडबैग खोला, "जी चाहता है कि एक लाख नहीं, दो लाख दे दूं।"

"मुझे शर्मिन्दा न करो मित्र! मेरी मित्रता को कलंकित न करो। मैं औरतों को बेचने का धन्धा नहीं करता। मैं अपने लिए कुछ नहीं मांग रहा। उन दोनों लड़कियों ने जो कुछ अपने मां-बाप के लिए मांगा है, वही तुम दे देना।" सर्वेश ने कहा।

चन्द्रभान ने एक लाख रुपये निकालकर सर्वेश को दे दिए और बोला, "तीनों लड़कियों को बन्द गाड़ी में बैठा दो। तुम अगर कहीं चलना चाहो तो मैं तुम्हें रास्ते में छोड़ दूंगा।" चन्द्रभान बोला।

"नहीं। मुझे यह रुपया मंजुला और चन्द्रकला नाम की इन दोनों लड़कियों के माता-पिता को पहुंचाना है।" सर्वेश ने कहा

और फिर उसने डोरा, सोनिया और सर्वीना को चन्द्रभान की बंद गाड़ी में बैठा दिया।

चन्द्रभान बहुत खुश था। उसने कार स्टार्ट कर दी।

कुछ देर बाद उसकी कार किले के पिछले द्वार पर पहुंच गई।

किले की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सोनिया ने कहा, "मिस्टर चन्द्रभान, हम आपके किले में बिलकुल अपरिचित स्त्रियां हैं। अब हमें अपना जीवन इसी किले में बिताना है। हम चाहती हैं कि किले की अन्य स्त्रियों से हमारा परिचय आप करा दें। इससे हमारे रिश्तों में अपनत्व की भावना पैदा हो जाएगी।"

"चाय पर आप सबको मिला दूंगा।" चन्द्रभान ने कहा।

शाम को चाय पर किले में रहने वाली सभी स्त्रिया इकट्ठी हो गईं। सर्वीना, डोरा और सोनिया बड़े ध्यान से हर स्त्री का निरीक्षण करती रहीं। उनसे घुल-मिलकर बातें करती रहीं। किसी-किसी स्त्री के सौन्दर्य की प्रशंसा करती रहीं। उनसे मिल-कर सभी स्त्रियों को बड़ी प्रसन्नता हुई।

स्त्रियों के चले जाने के बाद सर्वीना, सोनिया और डोरा को चन्द्रभान ने वे कमरे दिखाए, जिनमें उनके रहने की व्यवस्था की गई थी।

सोनिया, सर्वीना और डोरा का काम पूरा हो चुका था। वे दिन ढलने की प्रतीक्षा करने लगीं। उन्होंने अपने पेट पर बंधी लाइफ बेल्टों में हवा भर ली।

उनके कमरों के सामने ही तीन बुर्ज थे, जिनपर तीन पहरे-दार बंदूकें लिए पहरा दे रहे थे।

शाम के पौने आठ बजे इंस्पेक्टर, सर्वेश, मालती, सुधीर, सुनील और मेजर एक बजरा लेकर किले के नीचे पहुंच गए।

सर्वीना, सोनिया और डोरा दबे पांव अपने कमरे से निकलीं। बुर्जों पर खड़े तीनों पहरेदारों की पीठ उनकी ओर थीं। वे नदी में फानूसों से जगमगाते बजरों का मोहक दृश्य देख रहे थे। सोनिया, सर्वीना और डोरा दबे पांव उनके पीछे पहुंच गईं और गैस के बल्ब उनके सिर पर दे मारे। तीनों पहरेदार बेहोश होकर गिर पड़े।

बल्बों की गैस का उनपर तत्काल प्रभाव पड़ा था।

पहरेदारों के बेहोश होते ही सोनिया, डोरा और सर्वीना ने बुर्जों पर से नदी में छलांग लगा दी।

मेजर बलवन्त का बजरा तैयार खड़ा था। सोनिया, डोरा और सर्वीना एक-दूसरे को सहारा देती हुई बजरे तक पहुंच गईं। मेजर, सुनील और इंस्पेक्टर ने उनको बजरे पर चढ़ा लिया। बजरा नदी के दूसरे किनारे की ओर तेज़ी से चल पड़ा।

दूसरे किनारे पर पहुंचकर उन्होंने दो टैक्सियां ले लीं और दिलाराम होटल की ओर चल दिए।

होटल के सूट में पहुंचकर मेजर ने पूछा, "तुमने किले में क्या-क्या देखा? किन औरतों से तुम्हारी मुलाकात हुई?"

"किले में कुल ग्यारह औरतें थीं। उनमें एक गुजरात की, दूसरी राजस्थान की, तीसरी बंगाल की, चौथी पंजाब की और पांचवीं उत्तरप्रदेश की थी। सभी सुन्दर थीं, लेकिन शेष छ: औरतें अपने रंग, रूप और सौन्दर्य के कारण अप्सरा जैसी दिखाई देती थीं। उनमें एक बुढ़िया थी। उसके गले में चांदी की सलीब थी। वह राजभान की पत्नी थी। दो औरतें पचास-पचपन वर्ष के बीच की आयु की थीं। गोरी, दूध की तरह सफेद। वे यूरोपियन मालूम होती थीं। तीन नौजवान लड़कियां थीं। खुलता हुआ रंग, सुनहरे बाल। वे भी यूरोपियन मालूम होती थीं। उनकी उम्र बाईस-चौबीस वर्ष ही होगी। हर औरत के एक-एक, दो-दो बच्चे थे।"

मेजर के होंठ गोल हो गए और वह सीटी बजाने लगा।

"हमें यह भी मालूम हुआ कि तीन गोरी औरतें अपनी उम्र पर पहुंचकर मर गई हैं। तीनों लड़कियां उन्हींकी बेटियां थीं। सभी औरतें खुश दिखाई देती थीं।" सोनिया ने कहा।

"आज की स्कीम बहुत सफल रही। वैसे किले में तीन नई औरतों को गायब पाकर खलबली मच जाएगी। मैं सर्वेश को सलाह दूंगा कि वह सर्वीना के साथ कुछ दिन इसी पुलिस क्लब में रहे।" मेजर ने कहा।

"आपके मशवरे के बिना तो हम एक कदम भी नहीं उठा सकते।" सर्वेश बोला।

मेजर ने इंस्पेक्टर सक्सेना से कहा, "इंस्पेक्टर साहब, आप मेरे थ अपने ऑफिस में चलिए।"

सर्वेश और सर्वीना पुलिस क्लब चले गए।

मेजर ने इंस्पेक्टर सक्सेना के ऑफिस में पहुंचकर कहा, इंस्पेक्टर साहब, आपको एक बहुत ही कठिन काम करना होगा। अगर आपने यह काम कर दिया तो हमें बहुत शीघ्र सफलता मिल जाएगी।"

"बताइए तो सही। वह कठिन काम क्या है ?"

"पहले आप चाय मंगवाइए।" मेजर बोला।

इंस्पेक्टर ने सार्जेण्ट को बुलाकर चाय लाने का आदेश दिया। सार्जेण्ट चाय लेने चला गया।

२३. भूमिगत महल

चाय पीने के बाद मेजर बोला, "क्या आप अपने डी० आई० जी० से यह अनुरोध कर सकते हैं कि वह हमें सेना से एक हाउज़र गन दिला दें। हाउज़र गन ऊपर से ज़मीन पर गोला फेंकती है। हम उस हाउज़र गन से एक घंटे तक बमबारी करेंगे।"

"मेजर साहब, सेना पुलिस को सहयोग देने के लिए हमेशा तैयार रहती है। मैं डी० आई० जी० के पास अभी चला जाता हूं, लेकिन उन्हें यह बताना पड़ेगा कि हमें हाउज़र गन क्यों चाहिए।"

"आप उनसे कहिएगा कि पहाड़ियों में बहुत-से नामालूम रास्ते हैं, छिपी हुई गुफाएं हैं, खन्दकें हैं। हम उनपर गोलाबारी करके यह देखना चाहते हैं कि इन पहाड़ियों में कुछ लोग छिपे हुए तो नहीं हैं। अगर होंगे तो बमबारी होने पर सामने आ जाएंगे। इस तरह हम मुंगेर को सर्वनाश से बचा सकेंगे।"

"आपको हाउज़र गन कब तक चाहिए ?"

"शाम के सात बजे तक मिल जाए तो अच्छा है। हम रात के आठ बजे तक एक घण्टे गोलाबारी कराएंगे।"

"मैं अभी डी० आई० जी० के पास जाता हूं। शायद वह मेरे

साथ आर्मी हैडक्वार्टर तक जाने के लिए तैयार हो जाएं। मैं तीन-चार घण्टे बाद आपको सूचना दे दूंगा कि सेना हमें सहयोग देने के लिए तैयार है या नहीं।"

"मैं आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।" मेजर ने उठते हुए कहा।

मेजर बलवन्त दिलाराम होटल में पहुंचा और सीधा टेलीफोन की मेज़ के पास चला गया। उसने मुहम्मद सईद की टोली के नये लीडर बाबूलाल का फोन नम्बर मिलाया। थोड़ी देर बाद उसने कहा, "हैलो बाबूलाल !"

"ओह, मेजर साहब, आप ! दुश्मन एक नम्बर किले की पिछली दीवार को डाइनामाइट से उड़ाकर फिर चुपचाप बैठ गया है। ज़रूर कोई नई चाल सोच रहा होगा। आप कहिए, कैसे याद किया ?"

"बाबूलाल, मैं चाहता हूं कि तुम अपने पांच-छः वफादार साथियों को लेकर शाम के छः बजे तक आदिवासियों के इलाके वाली झाड़ियों के पीछे पहुंच जाओ। तुम्हारा काम केवल निगरानी करना है। आक्रमण करना नहीं। तुम जानते हो कि दुश्मन के पास शक्तिशाली हथियार हैं। तुम उनका मुकाबला नहीं कर पाओगे। और सुनो, शाम के सात बजे से आठ बजे तक उस इलाके में ज़बरदस्त बमबारी होगी। तुम डरना मत। तुम अपने गुप्त स्थानों पर रहकर निगरानी करते रहना। गोलाबारी आठ बजे बन्द हो जाएगी। हम वहां से चले जाएंगे, लेकिन तुम्हें साढ़े नौ बजे तक निगरानी करनी पड़ेगी। उस ओर की तमाम गतिविधियों पर तुम्हें नज़र रखनी होगी। साढ़े नौ बजे मुझे दिलाराम होटल में सारी सूचना दे देना। बाबूलाल, मैंने जो कुछ कहा है, उसका दृढ़ता से पालन करना होगा। पिछली बार तुम्हारे आदमियों ने हड़बड़ी फैला दी थी, जिससे बना-बनाया काम बिगड़ गया। इस बार ऐसा नहीं होना चाहिए।"

"मैं इस बार अपने आदमियों को अपने काबू में रखूंगा।"

"अच्छी बात है। तुम छः बजे किसी छिपे हुए रास्ते से किसी सुरक्षित स्थान में पहुंच जाना, जहां से तुम अच्छी तरह निगरानी कर सको।"

"अच्छा मेजर साहब !" बाबूलाल ने कहा और फोन डिस्क-

नेक्ट कर दिया।

मेजर ने बाबूलाल को जो हिदायतें दी थीं, उन्हें सुनकर मेजर के साथी दंग रह गए।

मेजर इंस्पेक्टर के फोन की प्रतीक्षा करने लगा।

चार बजे मेजर ने चाय मंगवाई। अभी उसने चाय का आधा प्याला ही पिया था कि फोन की घण्टी बज उठी। वह लपककर फोन की मेज़ के पास पहुंच गया, "हैलो!"

"मेजर साहब, फील्ड कमांडर कहीं गया हुआ था, इसलिए देर हो गई। पहले तो वह हिचकिचाया, लेकिन डी० आई० जी० ने इस घटना का जब उसे महत्त्व बताया तो वह मान गया। हाउज़र गन के साथ चार तोपची आदिवासियों के इलाके में पहुंच जाएंगे। हम सब सात बजे तक वहां पहुंच ज़ाएंगे। डी० आई० जी० भी हमारे साथ होंगे और वही तोपचियों को आदेश देंगे।"

"वेल डन इंस्पेक्टर!" मेजर ने शाबाशी दी।

"मेजर साहब, अपने साथ ज़्यादा आदमियों को ले जाने की तो ज़रूरत नहीं है?"

"अपने साथ चार-छ: आदमी ले चलिए। बाकी हम लोग हैं ही।"

"अच्छी बात है।" इंस्पेक्टर ने कहा और फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

मेजर चाय की मेज़ पर आ गया। उसने चाय का नया प्याला बनाते हुए कहा, "मालती, तुमने आदिवासियों के इलाके में कुछ आवाज़ें सुनी थीं, जिनमें एक औरत ज़ो शायद चन्द्रिका थी, कह रही थी कि वह हरगिज़ वापस जाने के लिए तैयार नहीं है। उस जगह तुमने दो लकड़ियां गाड़ दी थीं और तुम एक फर्लांग तक लकड़ियां फेंकती हुई चली आई थीं, लेकिन किसीने दोनों लकड़ियां उखाड़ दी थीं और तुम्हारी फेंकी हुई लकड़ियां भी उठा ली थीं। क्या तुमने उस स्थान पर पत्थर या कंकड़ तो नहीं देखे थे? वापस आते हुए क्या तुमने कदमों से दूरी नापी थी?"

"वहां पत्थर और कंकड़ नहीं थे, लेकिन मैंने कदमों से दूरी ज़रूर नापी थी। आदिवासियों की बस्ती से उस स्थान की दूरी १८६० कदम थी।" मालती बोली।

"क्या तुम १८६० कदम गिनकर उस स्थान पर पहुंच जाओगी ?"

"मैं कोशिश करूंगी; लेकिन अगर इंस्पेक्टर साहब उस आदिवासी लड़की पुबुली को मेरे पास भेज दें तो शायद उस लड़की से मैं कुछ पता कर सकती हूं। शायद कोई बात उसने देखी हो। इस मौके पर वह लड़की बहुत काम आ सकती है।"

मेजर फिर फोन की मेज़ के पास चला गया। उसने इंस्पेक्टर सक्सेना का फोन नम्बर मिलाकर कहा, "हैलो इंस्पेक्टर साहब !"

"मेजर साहब, आपने फौरन कैसे याद कर लिया ?" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, क्या आप उस आदिवासी लड़की पुबुली को अपने साथ ला सकते हैं, जो उस दिन मालती के साथ लकड़ियां बीनने के लिए गई थी ?"

"ला सकता हूं।" इंस्पेक्टर ने कहा

"आप उसे लेते आइएगा।" मेजर ने कहा और रिसीवर रख दिया।

एक घण्टे के बाद इंस्पेक्टर पुबुली को साथ लेकर मेजर के पास पहुंच गया। पुबुली दोबारा उस वातावरण में पहुंचकर बहुत खुश हुई। मालती ने उसे चाय और बिस्कुट दिए। इसके बाद उसे दस रुपये का नोट देकर बोली, "पुबुली, आज तुम्हें फिर उसी जगह चलना होगा, जहां तुम मेरे साथ उस दिन गई थीं।"

"ज़रूर चलूंगी।" पुबुली बोली।

"क्या तुम्हें वह जगह याद है, जहां मैंने दो लकड़ियां गाड़ी थीं ?"

"बीबीजी, मैं उस जगह को ढूंढ़ लूंगी। आपको शायद मालूम नहीं, मैं वहां रेत में दो नुकीले पत्थर दबा आई थी।"

"तुम बहुत होशियार हो पुबुली।'

"बीबीजी, जब आपने दो लकड़ियां वहां गाड़ी थीं तो मैंने वहीं दो पत्थर रेत में दबा दिए थे।"

मेजर को प्रसन्नता हुई कि अब उस जगह को ढूंढ़ना कठिन न होगा।

"इंस्पेक्टर साहब, हमें अपने प्रोग्राम में परिवर्तन करना होगा। हम अब शाम को साढ़े छः बजे ही वहां पहुंच जाएंगे।"

"ठीक है। साढ़े छः बजे ही पहुंच जाएंगे। तब तक हाउज़र गन वाले भी वहां पहुंच जाएंगे।" इंस्पेक्टर ने कहा।

शाम को मेजर और उसके साथी पुबुली के साथ आदिवासियों के इलाके में पहुंचे। मेजर जानता था कि शाम को बाबूलाल अपने आदमियों के साथ छिपकर निगरानी करने के लिए पहुंच गया होगा।

हाउज़र गन वाले चाक-चौबन्द सिपाही गोला-बारूद की ट्रॉली लेकर आ गए। वह हाउज़र गन और गोला-बारूद की ट्रॉली को एक ट्रक से खींचकर लाए थे।

कुछ मिनट के बाद इंस्पेक्टर अपने डी० आई० जी० और चार हवलदारों के साथ वहां पहुंच गया। इंस्पेक्टर ने डी० आई० जी० का परिचय मेजर से कराया। डी० आई० जी० मेजर से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, "मेजर साहब, मेरी समझ में नहीं आता कि इस किस्म की पहाड़ी पर हाउज़र गन की बमबारी का क्या परिणाम होगा।"

"हुज़ूर, यह एक एक्सपेरीमेण्ट है। अगर सफल रहा तो हम भी सफल हो जाएंगे।" मेजर बोला। फिर उसने मालती और पुबुली से कहा, "तुम दोनों जाकर उस जगह को ढूंढ़ो।"

मालती पुबुली को लेकर पहाड़ी की ओर चल दी। पन्द्रह-बीस मिनट के बाद दोनों वापस आ गईं। मालती ने मुस्कराते हुए कहा, "पुबुली की तरकीब सफल रही।"

"अच्छा मालती, अब तुम और पुबुली हाउज़र गन वालों को उस जगह ले जाओ।"

शाम के सात बज चुके थे। हाउज़र गन मालती के बताए हुए स्थान पर फिट कर दी गई।

डी० आई० जी० ने गोलाबारी करने का आदेश दे दिया।

गोलाबारी शुरू हो गई। जैसे ही गोला पहाड़ी पर आकर गिरता, एक गज़ तक अंदर धंसा चला जाता।

सारे इलाके में हंगामा मच गया, लेकिन किसीको पास नहीं आने दिया गया।

एक घंटे की लगातार गोलाबारी के बाद गोलाबारी बन्द कर दी गई।

मेजर ने वापस चलने की सलाह दी। हाउज़र गन के साथ सब लोग वापस आ गए।

इंस्पेक्टर डी० आई० जी० को छोड़ने चला गया।

मेजर अपने साथियों के साथ दिलाराम होटल में पहुंचा।

उसने अपने सूट में पहुंचते ही कहा, "हमने एक एक्सपेरीमेंट तो कर लिया। अब इसका परिणाम देखना है। आशा है, बाबूलाल दस बजे रात तक अवश्य ही कोई समाचार लेकर आएगा।"

लेकिन बाबूलाल दस बजे नहीं आया। मेजर चिन्तित हो गया।

"मेरे विचार से हमें बाबूलाल की कुशलता जानने के लिए वहां चलना चाहिए। अच्छा हो कि इंस्पेक्टर और उसके साथियों को भी ले चलें। सावधान रहना बहुत ज़रूरी है।" मेजर ने कहा और इंस्पेक्टर सक्सेना का फोन नम्बर मिलाने लगा।

"हैलो, इंस्पेक्टर साहब!" मेजर ने कहा।

"कहिए मेजर साहब, गोलाबारी का कोई परिणाम निकला?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"अभी नहीं। मैंने बाबूलाल को उस इलाके की निगरानी के लिए नियुक्त किया था और उससे कह दिया था कि वह साढ़े नौ बजे तक निगरानी करने के बाद सीधा मेरे पास पहुंच जाए, लेकिन अब तो सवा दस बज रहे हैं। बाबूलाल का अभी तक पता नहीं है। आप पांच-छः आदमी लेकर मेरे पास आ जाइए। फिर हम लोग बाबूलाल की तलाश करने चलेंगे।"

"मैं जल्द पहुंच रहा हूं।" इंस्पेक्टर ने कहा।

थोड़ी देर के बाद मेजर और उसके साथी इंस्पेक्टर और उसके आदमियों के साथ आदिवासियों के इलाके की ओर चल दिए। वे अपने साथ टॉर्च भी ले गए।

आदिवासियों के इलाके में पहुंचकर उन्हें बाबूलाल का गुप्त ठिकाना ढूंढ़ने में बड़ी कठिनाई हुई।

वे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक पहाड़ी पर पहुंच गए। सहसा वे सब चौंक

ड़े। पहाड़ी पर सात लाशें बिखरी हुई पड़ी थीं। उन्होंने पास आकर जब टॉर्च की रोशनी उन लाशों पर डाली तो मेजर के मुंह से निकला, "बाबूलाल और उसके छः साथी—सभी मारे गए।" और फिर वह एक मिनट रुककर बोल उठा, "इनमें से चार आदमी तो लैसर से कटे पड़े हैं और तीन को गोलियों से उड़ा दिया गया है। इसका अर्थ है, दुश्मन दूसरा लैसर ले आया है।"

सहसा किसीके कराहने की आवाज़ सुनाई दी। एक आदमी कुछ हिला-डुला और फिर अपनी घायल टांग पकड़कर कराहने लगा।

मेजर दौड़कर उसके पास पहुंच गया। वह आदमी ज़िन्दा था। गोली उसकी टांग में लगी थी। मेजर को अफसोस हुआ कि वह फर्स्ट एड बक्स अपने साथ क्यों नहीं लाया।

मेजर ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"मैं छेदीलाल हूं।" उस आदमी ने दर्द से बिलबिलाते हुए उत्तर दिया।

"तुम बाबूलाल की टोली के सदस्य हो?"

"जी हां।"

"क्या हुआ था?"

"सरकार, जब गोलाबारी बन्द हो गई तो आधे घंटे के बाद शोर सुनाई दिया और फिर ऐसी आवाज़ें आईं, जैसे लोहे की गाड़ियों के पहिये चरचराकर चल रहे हों। हमें अपने छिपे ठिकाने से निकलकर देखना पड़ा कि ये आवाज़ें कैसी हैं। सरकार, हम लोग रेंगते हुए अपने गुप्त ठिकाने से निकलकर इस पहाड़ी पर पहुंच गए। इस पहाड़ी पर गोलों के गड्ढे अधिक हैं। इसके नीचे एक लम्बी खन्दक है। हमने उचककर देखा। तीन तो खाना-बदोशों यानी घुमक्कड़ों की गाड़ियों जैसी गाड़ियां थीं। उनमें घोड़े जुते हुए थे और उनके चारों ओर कनातें-सी लगी हुई थीं। उनके अलावा चार लोहे की गाड़ियां थीं, जिनको दो-दो खच्चर खींच रहे थे। लोहे की चारों गाड़ियों पर चार बजरे लदे हुए थे। दो रबड़ टायर वाली लम्बी गाड़ियां थीं। उनपर तख्ते लगे हुए थे। उनमें दो-दो घोड़े जुते हुए थे। उन गाड़ियों में लगभग बारह आदमी बैठे हुए थे। औरतें शायद कनातों वाली गाड़ियों में थीं। एक बहुत बड़ी ट्रॉली थी, जिसपर हथियार लदे हुए थे।

उसे भी दो घोड़े खींच रहे थे। न जाने वे लोग कहां से निकले थे और कहां जा रहे थे! फिर ऐसा लगा, जैसे दो आदमियों ने हमें पहाड़ी पर देख लिया। उनमें से दो आदमी उतर पड़े और तेज़ी से हमारी पहाड़ी की ओर दौड़ने लगे। इससे पहले कि हम उठकर भागते, एक तेज़ रोशनी हमारा पीछा करने लगी। हमारे चार आदमी गिरे पड़े। और फिर मशीनगन की तड़तड़ आवाज़ आई। हमारे दो साथी और गिर गए। मशीनगन की एक गोली मेरी टांग में आकर लगी और मैं भी गिर गया।"

"हमें बाबूलाल और उनके पांच साथियों की इस दुखद मृत्यु का बहुत दु:ख है; लेकिन हमारा एक्सपेरीमेंट सफल रहा। दुश्मन इन्हीं पहाड़ियों में छुपा हुआ था। हमें इस पहाड़ी के नीचे चलकर देखना चाहिए।" मेजर बोला।

दो कांस्टेबल घायल छेदीलाल को उठाकर आदिवासियों के इलाके की ओर ले गए, ताकि उसे अस्पताल पहुंचाया जा सके।

बाकी सब लोग पहाड़ी के नीचे खन्दक में उतर गए। उन्होंने देखा, एक टीला कुछ हटा हुआ था और उसके अंदर चट्टान जैसा दरवाज़ा था। चट्टान का दरवाज़ा खुला हुआ था।

वे सब उस दरवाज़े के अन्दर चले गए।

"अरे, यहां तो पहाड़ी के अंदर शानदार महल बना हुआ है!" इंस्पेक्टर ने आश्चर्य से कहा।

"दुश्मन ने अपने लिए यह बहुत अच्छा ठिकाना चुना था।" सुधीर बोला।

"न जाने वे लोग कहां चले गए! गाड़ियों के पहियों के निशानों से उनका रास्ता ढूंढ़ा जा सकता है।" मेजर ने कहा।

सब लोग खन्दक में उतर गए और गाड़ियों के पहियों के निशानों के साथ-साथ आगे बढ़ने लगे।

लेकिन कुछ दूर जाकर निशान गायब हो गए। दूर तक जाने पर भी निशान कहीं दिखाई न दिए।

"यहां से दुश्मन ने कोई खुफिया रास्ता अपनाया है।" मेजर बोला, "आओ, वापस चलें। दुश्मन के रास्ते का पता लगाने की कोशिश सुबह करेंगे।"

सब लोग वापस चल दिए।

२४. जान की बाज़ी

अगले दिन वे दुश्मन के रास्ते का पता लगाने के लिए दिन निकलते ही होटल से चल पड़े। दो-तीन घंटों की दौड़-धूप के बाद भी वे दुश्मन के रास्ते का पता नहीं लगा पाए और ...र निराश होकर लौट आए।

मेजर ने अपने सूट में पहुंचकर कहा, "ऐसा मालूम होता है कि दुश्मन के पास कोई स्थानीय गाइड भी है, जो आदिवासियों और मछेरों के इलाकों के चप्पे-चप्पे से परिचित है। खैर, दुश्मन ने इतना रुपया खर्च किया है। इतना खून बहाया है। खून की अपनी प्यास बुझाई है। वह अपना उद्देश्य पूरा किए बिना यहां ...कभी नहीं जाएगा। कल की गोलाबारी से वह हतोत्साहित हो गया होगा, इसीलिए विवश होकर उसने यह भूमिगत महल छोड़ दिया है। अब वह अधिक देर तक चुपचाप नहीं बैठेगा, क्योंकि उसे मालूम हो चुका है कि उसके विरुद्ध संघर्ष और तेज़ कर दिया गया है। आज नहीं तो कल, वह मैदान में ज़रूर आएगा। और मैं जानता हूं कि उसका उद्देश्य क्या है।"

"ओह, आपको दुश्मन के उद्देश्य का पता चल गया?" मालती बोली।

"इतने दिनों से मेहनत कर रहा हूं। इतने दिनों से आदमियों को मरते हुए देख रहा हूं। दुश्मन अब जान की बाज़ी लगाएगा, और हमें भी जान की बाज़ी लगानी पड़ेगी। हम आज तक सामान्य अपराधियों से मुकाबला करते रहे थे, लेकिन इस बार का दुश्मन पिछली बार के दुश्मनों से भिन्न है। इस बार मुकाबला कड़ा होगा। इसके लिए हमें एक पूरी फोर्स की आवश्यकता होगी। मुझे तत्काल इंस्पेक्टर सक्सेना से मिलना चाहिए। और मैं तुम लोगों को भी कुछ निर्देश देता हूं। दुश्मन जहां कहीं भी आक्रमण करेगा, अपनी पूरी शक्ति से करेगा। यह आक्रमण बर्बरतापूर्ण आक्रमण होगा। अगर बर्बरतापूर्ण आक्रमण का प्रतिरोध किया जाए तो प्रतिरोध करने वालों को अधिक हानि उठानी पड़ती है। हम दुश्मन को धावा बोलने देंगे, ताकि उसकी ताकत कुछ कम हो जाए। इस समय हम रूस के विश्वविख्यात

सेनापति जनरल कोतोज़ोव का ढंग अपनाएंगे, जिसने मुट्ठी-भर सैनिकों की सहायता से नेपोलियन की असंख्य सेना का सफाया कर दिया था। हमारा उद्देश्य भी दुश्मन का सफाया करना है और अपना कम से कम नुकसान होने देना है।"

"दुश्मन कौन है और उसका क्या उद्देश्य है?" मालती ने फिर ज़ोर देकर पूछा।

"आपको जब दुश्मन और उसके उद्देश्य का पता चलेगा तो आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे। इस समय तो आप बस इतना ही समझ लीजिए कि इंसान के दिल में सदियों तक ज़हर उबलता रहता है। वह ज़हर उसे सोचने नहीं देता और उसे मृत्यु की सीमा पर पहुंचा देता है।" मेजर बोला और फिर इंस्पेक्टर सक्सेना से मिलने चला गया।

इंस्पेक्टर सक्सेना के साथ मेजर की आधे घंटे तक बातें होती रहीं। साथ-साथ उसे कुछ लिखवाता भी रहा। इसके बाद उसने इंस्पेक्टर से कहा, "कम से कम चालीस जीपों की व्यवस्था करनी होगी। दस जीप आपके और हमारे पास रहेंगी। बाकी तीस जाप आप अपने तीन दस्तों को दे देंगे। हर दस्ते में दो-दो सिपाहियों के पास ब्रेनगन रहेंगी। दुश्मन के पास एक बहुत ही खतरनाक हथियार है। मुझे अपनी जान पर खेलकर उसके इस हथियार को नाकारा बनाना होगा। मुझे कुछ देर हो जाए तो मेरी प्रतीक्षा करनी होगी। आपकी तीस जीपों में तीन दस्ते होंगे। वे तीन नाकों को दबाकर रखेंगे, ताकि दुश्मन को भाग निकलने का रास्ता न मिल सके। और इंस्पेक्टर साहब, आपको अपने आदमियों को अच्छी तरह समझा देना होगा कि वे दुश्मन के कम से कम आदमियों को मारने की कोशिश करें और औरतों को बचाने की पूरी-पूरी कोशिश करें।"

इंस्पेक्टर ने मेजर के सारे निर्देश नोट कर लिए।

मेजर सन्तुष्ट होकर होटल में वापस आ गया।

यह निश्चय किया गया कि वे रात के पौने दस बजे निश्चित स्थान पर पहुंच जाएंगे।

इंस्पेक्टर ने पांच बजे आकर बताया कि उसने सारी व्यवस्था

कर दी है, और किसीको भी यह पता नहीं चलने पाएगा कि पुलिस के चार दस्ते तैनात किए गए हैं। मैंने अपने दस्ते के लिए उपयुक्त स्थान ढूंढ़ लिया है। एक तरह से हम छिपे रहेंगे। मैंने मछेरों और आदिवासियों को अच्छी तरह समझा दिया है कि उन्हें जो भी दुश्मन की गतिविधि दिखाई दे, हमें फौरन सूचित कर दें।

मेजर अपने साथियों के साथ इंस्पेक्टर के बताए हुए स्थान पर नौ बजे पहुंच गया।

अभी तक चारों ओर शान्ति छाई हुई थी।

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि आज दुश्मन आक्रमण ही न करे!" इंस्पेक्टर ने कहा।

"ऐसा हो नहीं सकता। दुश्मन के पास अब कोई गुप्त ठिकाना नहीं रहा है। वह सिर छिपाए फिर रहा है। मुझे विश्वास है कि वह आज ही कोई न कोई कार्रवाई अवश्य करेगा।" मेजर बोला।

रात के पौने बारह बजे कुछ आदिवासी और मछेरे दौड़ते हुए आए और बोले, "यहां से दूर दक्षिण में कुछ हलचल सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है, जैसे किसी गहरी खन्दक में गाड़ियों के पहियों की आवाज़ें गूंज रही हों।"

मेजर ने मुस्कराकर अपना लम्बा हैंडबैग खोला और उसमें से बांसुरी जैसी लम्बी कोई चीज़ निकाली और इंस्पेक्टर से बोला, "मेरे सम्बन्ध में आप बिलकुल चिन्ता न करें। मैं आपसे आ मिलूंगा। अगर दुश्मन एक नम्बर किले पर आक्रमण करे तो उसे रोका न जाए। अगर दुश्मन किले में से कुछ लेकर अपने ठिकाने की ओर भागे तो उसके बहुत पीछे रहकर उसका धीरे-धीरे पीछा किया जाए। मैं भी आपसे आ मिलूंगा। मुझे दुश्मन के एक बहुत ही संहारक हथियार को समाप्त करना है।"

मेजर आवश्यक निर्देश देकर अंधेरे में गुम हो गया।

मेजर एक नम्बर किले की एक खन्दक पार करके किले की पिछली दीवार के पास पहुंच गया। डाइनामाइट से पिछली दीवार उड़ा दी गई थी। वहां एक खोह निकल आई थी। मेजर उस खोह में जा खड़ा हुआ।

उसे खोह में खड़े-खड़े एक घंटा बीत गया। फिर उसने तीन साये किले की पिछली खन्दक के अन्दर आते हुए देखे।

तीनों साये खाई में उतर आए। उनमें से एक खाई की दीवार से लगकर खड़ा हो गया। उसके दो साथी उसकी दाईं-बाईं ओर खड़े हो गए। उन दोनों ने अपनी स्टेनगनें खाई की मुंडेर पर रख दीं।

अचानक तीव्र प्रकाश की एक धार किले पर पड़ने लगी। प्रकाश की वह धार किले की भीतरी दीवारों पर घूमती रही।

तभी पन्द्रह और साये उनके पीछे आ खड़े हुए। किले की दीवारें टूट-टूटकर गिरने लगीं।

मेजर थोड़ा-सा खोह की दीवार की ओट से निकला। उसके हाथ में वह लैसर था, जो उसने दुश्मन से छीना था। दूसरे पल ही मेजर के लैसर का प्रकाश उस आदमी के सीने पर दायरा-सा बनाने लगा, जिसके हाथ में लैसर था। वह आदमी ज़ोर से चीख उठा और उसके शरीर के दो टुकड़े होकर खाई में जा गिरे।

खाई की दीवार पर रखे लैसर से अभी भी प्रकाश की किरणें निकल रही थीं। मेजर ने अपने लैसर की प्रकाश-किरणें उस लैसर पर केन्द्रित कर दीं। उस लैसर से प्रकाश-किरणें निकलनी बन्द हो गईं। वह अब बेकार हो चुका था।

अचानक मेजर की ओर स्टेनगन की गोलियां बरसने लगीं; लेकिन मेजर आड़ में था, इसलिए गोलियां उस तक नहीं पहुंच पाईं। वह दीवार की आड़ लेता हुआ किले की फसील पर चढ़ गया। किले के सारे बंदूकची उसी ओर इकट्ठे हो गए, जिस ओर से स्टेनगन की गोलियां आ रही थीं; लेकिन वे स्टेनगन की गोलियों का सामना न कर सके और सबके सब वहीं ढेर हो गए। मेजर फसील से दौड़ता हुआ किले के अन्तिम छोर पर पहुंचा और नदी में कूद पड़ा। वह उच्चकोटि का तैराक था।

मेजर तेज़ी से तैरने लगा। उसने किले के अन्दर कुहराम सुना। बहुत-सी स्त्रियों की हृदयबेधी चीखें सुनाई दीं। मेजर तेज़ी से तैरता हुआ नदी के उस किनारे पर पहुंच गया, जिस किनारे पर इंस्पेक्टर सक्सेना दस जीपों का दस्ता लिए खड़ा था।

मेजर इंस्पेक्टर सक्सेना के पास पहुंचा तो इंस्पेक्टर का चेहरा खुशी से चमक उठा।

"मैं जान पर खेलकर दुश्मन के भयंकर घातक और संहारक शस्त्र को नष्ट कर आया हूं।" मेजर ने लाइटर जलाया और अपने सीले हुए लैसर को सुखाने लगा।

"इंस्पेक्टर साहब, आपने क्या देखा ?" मेजर ने पूछा।

"अभी पन्द्रह-बीस आदमी चार औरतों को कंधों पर उठाए दक्षिण की ओर गए हैं।"

"आपमें से किसीने कोई रुकावट तो नहीं डाली ?"

"नहीं, आपने हिदायत की थी कि उनका प्रतिरोध न किया जाए।" इंस्पेक्टर बोला।

"आपने बहुत अच्छा किया। अगर हम इस समय उनका प्रतिरोध करते तो हम उनका उद्देश्य और उनका अपराध मालूम न कर सकते। उन लोगों को औरतों को ले जाते हुए कितनी देर हो चुकी ?" मेजर ने पूछा।

"बस, दस-बारह मिनट ही हुए हैं।"

"आपके सारे आदमी जीपों में मौजूद हैं न ?" मेजर ने पूछा।

"जी हां। सुनील, सुधीर, डोरा, मालती और सोनिया पांचवीं जीप में हैं। उनके आगे पत्थरों से भरी एक जीप है।" इंस्पेक्टर ने बताया।

"चलिए, हम अपनी जीप में चलें।" मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा।

इंस्पेक्टर सक्सेना मेजर बलवन्त को सबसे आगे की तीसरी जीप में ले गया। उस जीप में स्टेनगनें लिए तीन हवलदार बैठे थे। उस जीप के आगे जो दो जीपें थीं, उनमें पत्थर भरे हुए थे।

मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा कि वह जीपों को दक्षिण की ओर चलने का आदेश दे।

इंस्पेक्टर ने टॉर्च निकालकर अगली जीपों के ड्राइवरों को सिगनल दिए। अगली दोनों जीपें चल पड़ीं। उनके पीछे-पीछे बाकी आठ जीपें भी चल दीं।

मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा, "दुश्मन की गाड़ियां खन्दक में होंगी। जब खन्दक के अंदर गाड़ियों के पहियों की आवाज़ें सुनाई देने लगें, हम अपनी जीपें खन्दक से दूर कर लेंगे, ताकि जीपों की आवाज़ें खन्दक के अंदर न पहुंचने पाएं। जब दुश्मन की गाड़ियां खन्दक से बाहर निकलने लगें तो खन्दक में इक्का-दुक्का गोलियां

रह-रहकर चलाई जाएं, ताकि दुश्मन खन्दक से जल्द बाहर निकल आए। अगर गाड़ियां एक खन्दक से निकलकर दूसरी खन्दक में जाने लगेंगी तो हम अपनी जीपें उस खन्दक के किनारे ले जाएंगे और उनपर टूट पड़ेंगे।"

खन्दक में गाड़ियों के पहियों की आवाज़ें आती रहीं। मेजर ने स्टेनगन वाले हवलदारों को खन्दक के अंदर फायरिंग करने का आदेश दिया।

तीनों स्टेनगनों से खन्दक के अंदर गोलियों की बौछार छोड़ी गई।

खन्दक में गाड़ियां तेज़-तेज़ चलने लगीं।

दुश्मन की हिम्मत टूट चुकी थी। मेजर का यही उद्देश्य था।

अचानक खन्दक में से मशीनगनों की गोलियों की बाढ़ खन्दक के ऊपर आई। जीपें खन्दक से दूर थीं। गोलियां उन तक नहीं पहुंचीं।

मेजर ने पिछली जीपों को टॉर्च से सिगनल दिया कि वे खन्दक के अंदर फायरिंग करें।

पिछली जीपों से खन्दक के अंदर एक बाढ़ मारी गई।

अब खन्दक के अंदर गाड़ियों की रफ्तार पहले से भी तेज़ हो गई और दौड़ते हुए घोड़ों की टापें स्पष्ट सुनाई देने लगीं।

"क्यों न जीपों को खन्दक के किनारे ले जाकर दुश्मन पर एकसाथ हमला कर दिया जाए ?" इंस्पेक्टर सक्सेना ने मशवरा दिया।

"नहीं, इंस्पेक्टर साहब, मैं दुश्मन को इस तरह खदेड़कर उसका गोला-बारूद अधिक से अधिक खर्च करा देना चाहता हूं।" मेजर ने कहा।

पन्द्रह मिनट के बाद ऐसा लगा, जैसे गाड़ियां किसी ओर मुड़ रही हों।

"मेरे विचार में गाड़ियां दूसरी खन्दक में मुड़ गई हैं," मेजर बोला, "शायद दूसरी खन्दक शुरू होने से पहले मुड़ने के लिए समतल धरती होगी। जीपें उस समतल मैदान में उतारकर इनका पीछा किया जाए; लेकिन दुश्मन की गाड़ियों से अपनी जीपें दूर रखी जाएं, ताकि वे अपनी गाड़ियों को और तेज़ दौड़ाने लगे। इस भागदौड़ में उनके घोड़े थक जाएंगे और उनकी रफ्तार

सुस्त पड़ जाएगी। तब तक उनका गोला-बारूद भी काफी खत्म हो जाएगा।"

जीपें खन्दक के समाप्त होने पर छोटे-से समतल मैदान में उतार दी गईं।

दुश्मन की गाड़ियां काफी आगे निकल चुकी थीं।

मेजर ने टॉर्च से सिगनल दिया कि गोलियों की एक बाढ़ मारी जाए।

गोलियों की बाढ़ मारी गई। उत्तर में दुश्मन ने भी फायरिंग की, लेकिन मेजर ने गाड़ियों और जीपों के बीच इतनी दूरी रखी कि दुश्मन की गोलियां बेकार जा रही थीं।

अचानक औरतों के रोने की आवाज़ें सुनाई दीं।

"यह किन औरतों के रोने की आवाज़ें हैं ?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"वास्तविक मुठभेड़ होने पर ही यह रहस्य मालूम होगा।" मेजर ने उत्तर दिया।

२५. तीसरी पीढ़ी

कुछ मील तक जीपें दुश्मन की गाड़ियों का पीछा करती रहीं। आगे जाकर खन्दक समाप्त हो गई। यहां से रास्ता ऊपर एक चपटी पहाड़ी पर चढ़ता था। आगे की सारी गाड़ियां उस चपटी पहाड़ी पर चढ़ गईं।

मेजर ने जीपों की रफ्तार तेज़ करने का आदेश दिया।

जब जीपें उस चपटी पहाड़ी पर चढ़ने लगीं तो उन्होंने देखा, चपटी पहाड़ी पर लगभग दो सौ गज़ दूर सारी गाड़ियां उलट दी गई थीं और उनके मोर्चे बना लिए गए थे।

मेजर ने इंस्पेक्टर से कहा, "हमारी इन जीपों में से चार जीपों में पत्थर भरे हुए हैं। पत्थर वाली जीपों को लाकर आपस में जोड़ दिया जाए और इस तरह पत्थरों की दीवार बनाकर बाकी छः जीपें उनके पीछे खड़ी कर दी जाएं।"

"ओह, मैं अब समझा कि आपने चार जीपों में पत्थर क्यों भरवाए थे !" इंस्पेक्टर ने कहा।

इंस्पेक्टर और मेजर जीप से कूद पड़े और उन्होंने पत्थर वाली जीपों के ड्राइवरों को आदेश दिया कि वे चारों जीपों को आगे ले जाकर एक-दूसरी से जोड़कर पीछे आ जाएं।

जीपों और गाड़ियों के मोर्चे के बीच अब डेढ़ सौ गज़ की दूरी रह गई थी।

मेजर ने फार्यारंग का आदेश दिया।

उत्तर में दुश्मन ने भी गोलियां चलाईं, और फिर दोनों ओर से धुआंधार फार्यारंग शुरू हो गई।

मेजर ने देखा कि दुश्मन की फार्यारंग पावर अभी बहुत है। इसका अर्थ है कि उसके पास स्टेनगनें अधिक हैं।

मेजर को एक तरकीब सूझी। वह लैसर लेकर उस जीप के नीचे घुस गया, जिसमें पत्थर भरे हुए थे।

उसे एक गाड़ी के पीछे दो स्टेनगन वाले दिखाई दिए। उसने लैसर की प्रकाश-किरणें उन दोनों पर डालनी शुरू कर दीं। एक-साथ दो ज़ोरदार चीखें उभर उठीं। मेजर ने लैसर की प्रकाश-किरणें इस ढंग से छोड़ी थीं कि दोनों स्टेनगन वालों के केवल हाथ ही कटें। कटे हाथों के साथ स्टेनगनें भी धरती पर जा गिरीं।

दुश्मन के मोर्चे में अब स्टेनगन वाले केवल दो रह गए थे। वे पिछली जीपों के कुछ आदमियों को मार चुके थे और कुछ को घायल कर चुके थे।

मेजर जीपों के पीछे से रेंगता हुआ पिछली जीपों के पास पहुंचा और पत्थरों से भरी एक जीप के नीचे घुस गया। उसने लैसर की प्रकाश-किरणें उन दोनों स्टेनगनों वालों पर केन्द्रित कर दीं। प्रकाश-किरणें उनकी गर्दनों पर पड़ीं और उन दोनों की गर्दनें धड़ से अलग हो गईं।

दुश्मन की फार्यारंग पावर अब बहुत कम हो गई।

तभी तीन ओर से जीपों के दौड़ने और उनसे गोलियां चलने की आवाज़ें आने लगीं।

गाड़ियों के पीछे मोर्चा बांधकर बैठे हुए लोग बौखला गए। उनकी हिम्मत टूट गई। उन्होंने अपने हथियार फेंक दिए और अपने हाथ सिरों के ऊपर उठाए अपनी गाड़ियों के आगे आ खड़े हुए। परिस्थिति को देखकर उन्होंने मरने की अपेक्षा आत्मसमर्पण करना ही उचित समझा।

गाड़ियों के पीछे से औरतों के ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ें आने लगीं।

जो लोग निहत्थे होकर सामने आए थे, वे कुल सात थे। इंस्पेक्टर ने अपने आदमियों की गिनती की। उसके चार आदमी मारे गए थे और तीन घायल हो गए थे।

हथियार डालने वालों में तीन लाल सिपाही थे।

मेजर ने उन्हें आदेश दिया, "आगे आओ। तुमने आत्मसमर्पण कर दिया है और आत्मसमर्पण करने वाले पर हथियार नहीं उठाया जाता।"

वे लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। उनके हाथ सिरों की ओर उठे हुए थे।

मेजर ने लाल सिपाहियों से कहा, "तुम आज से ढाई सौ साल पुरानी पीढ़ी के सिपाही बने हुए हो। तुमने अपने पूर्वजों का वेश धारण कर रखा है, जैसे तुम्हारे रूप में तुम्हारे पूर्वज अपने अपमान का या अपनी बेईमानी का बदला लेने आए हों। तुम आज से पहले की तीन पीढ़ी के नहीं, बल्कि आज की पीढ़ी के नौजवान हो। तुम्हारे पूर्वज उस युग के सैनिक थे, जिस युग में पराजित शत्रु की धन-सम्पत्ति लूट ली जाती थी और उनकी स्त्रियों को बलात् अपनी अंकशायिनी बना लिया जाता था, और अपनी कामवासना की तृप्ति के बाद उन्हें मार डाला जाता था।"

तीनों लाल सैनिक हैरान रह गए।

मेजर ने कहा, "तुम अपनी ये लाल वर्दियां उतार दो। बनियान और अण्डरवीयर पहनकर खड़े हो जाओ। तुमने रूई से सफेद भौंहें और मूंछें लगा रखी हैं।"

तीनों लाल सैनिकों ने मेजर के आदेश का पालन किया। उन्होंने अपनी लाल वर्दियां उतार दीं और अपनी नकली भौंहें और मूंछें उतारकर फेंक दीं।

मेजर, उसके साथी और जीपों में सवार पुलिस कांस्टेबल उन्हें देखकर हैरान रह गए। वे तीनों नौजवान थे। उनमें से एक की उम्र बाईस-तेईस वर्ष की थी। दूसरे की पच्चीस-छब्बीस वर्ष की और तीसरा अट्ठाईस-उनतीस वर्ष का था। तीनों ही अंग्रेज़ थे।

इतने में तीनों ओर से दस-दस जीपों के तीन दस्ते वहां पहुंच गए। उन दस्तों के सिपाहियों ने जब देखा कि फायरिंग बंद हो चुकी है तो उन्होंने भी गोलियां चलानी बन्द कर दी थीं और वे इस ओर चल पड़े थे।

उन्होंने पास आकर सात अपरिचित व्यक्तियों को आत्म-समर्पण की मुद्रा में खड़े देखा।

मेजर ने कहा, "तुम्हारे पूर्वजों ने जो अत्याचार किए, स्थानीय स्त्रियों की आबरू लूटकर उन्हें मौत की नींद सुला दिया, उसकी ओर उनका ध्यान ही नहीं गया, क्योंकि कोई भी अपने पाप को पाप और अपराध नहीं समझता। तुम्हारे पूर्वजों को अपने अन्याय और पाप तो याद नहीं रहे, लेकिन जब उनकी स्त्रियों को स्थानीय लोग उठाकर ले गए तो अपना यह अपमान उन्हें याद रह गया। आदमी दूसरों का अपमान करके गर्व का अनुभव करता है, लेकिन जब उसके साथ वैसा ही व्यवहार होता है तो वह उसे अपना अपमान समझता है और फिर वह मुहावरों और कहावतों का सहारा ले लेता है। तुम्हारे पूर्वजों का कथन था कि 'अपमानित होने से पहले मर जाना कहीं अच्छा है।' वे उस समय क्यों नहीं मर गए, जब उन्होंने यह समझा कि उनका अपमान किया गया है? उन्हें बाद में यह खयाल क्यों आया कि अपमानित होने से पहले मर जाना अच्छा है? तुम्हारे पूर्वज चोर, लुटेरे और कायर थे। वे अपने ही सैनिक साथियों का दान लेकर भाग खड़े हुए थे, जिसे उन सैनिकों ने प्लासी के युद्ध के बाद लूटकर इकट्ठा किया था। वे बजरों द्वारा ढाका पहुंचकर अपनी पत्नियों के साथ अपने देश लौट जाना चाहते थे, लेकिन उनके कुछ प्रतिद्वन्द्वी भी थे। वे उनकी धन-दौलत स्वयं हथियाना चाहते थे। उन्होंने स्थानीय लोगों की सहायता ली। किसीको पता न चला कि वे स्थानीय लोग कौन थे, जिन्होंने तुम्हारे पूर्वजों के प्रतिद्वन्द्वियों की सहायता की। तुम्हारे पूर्वजों की सहायता करने वाले भटखंडे कबीले के सरदार थे।"

मेजर के इस रहस्योद्घाटन पर सब अवाक् रह गए।

मेजर ने आगे कहा, "तुम्हारे पूर्वज अपने प्रतिद्वन्द्वियों से बुरी तरह पराजित हुए। वे अपना धन ही नहीं, अपनी स्त्रियां भी गंवा बैठे। जब लूट के माल का बंटवारा हुआ तो भटखंडे परिवार के

कबीले के सरदार ने सबसे पहले उन चार अंग्रेज़ औरतों को मांग लिया, जिन्हें वे लूट के माल के साथ ले आए थे। इसलिए उन्हें कुछ कम धन मिला और तुम्हारे पूर्वजों के प्रतिद्वन्द्वियों को ज्यादा धन मिला। भटखंडे कबीले वाले उन स्त्रियों के सहयोग से अपने क़बीले की कुरूपता को समाप्त करके उसे सौन्दर्य प्रदान करना चाहते थे।"

"हां, हम भटखंडे खानदान से बदला लेने और अपने खानदान की स्त्रियों को वापस लेने के लिए आए थे। हम हर प्रकार के खून-खराबे के लिए तैयार थे।" सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष के एक युवक ने कहा।

"तुम्हारे पूर्वजों को अपने प्रतिद्वन्द्वियों के किसी शत्रु से पता चल गया कि उनकी स्त्रियां कहां हैं, लेकिन वे पराजित हो चुके थे, इसलिए उनकी हिम्मत टूट चुकी थी। उन्होंने अपनी अगली पीढ़ी से शपथ ली कि वे उनके स्थान पर काम करेंगे और अपनी मांओं को मुक्त कराके ले आएंगे। तुम्हारी दूसरी पीढ़ी के लोग हज़रत ईसामसीह के आगे प्रतिज्ञा तो दोहराते रहे, लेकिन इतना बड़ा संघर्ष छेड़ने का उनमें साहस नहीं था। लेकिन उन्होंने प्रतिज्ञा की थी, इसलिए वह प्रतिज्ञा उनके दिल में कांटा बनकर हर घड़ी चुभती रहती। उन्हें सोते हुए भयानक सपने दिखाई देते। अन्त में उन्हें तपेदिक हो गई। मरते समय वे अपना कर्तव्य तुम्हें सौंप गए। तुम्हारी रगों में जवानी का खून था। तुमने अपनी व दूसरी पीढ़ी के पूर्वजों द्वारा सौंपे गए कर्तव्य को पूरा करने का निश्चय कर लिया, लेकिन तुमने यह नहीं सोचा कि उस घटना को कितने वर्ष बीत चुके हैं। तुम्हारी दादियां और तुम्हारे पिता की माताएं अब कहां जीवित होंगी। एक युग बीत चुका था। मनुष्य के विचार बदल जाते हैं। उसको अपना वह वातावरण अच्छा लगने लगता है, जिसमें वह रहने लगता है। वह अपने बाल-बच्चों के बीच अपना अतीत भूल जाता है और उन्हीं के बीच सुख का अनुभव करने लगता है। लेकिन तुमने यह सब सोचा ही नहीं। तुमने घड़ी की सुइयां उलटी घुमानी शुरू कर दीं। तुम ढाई सौ वर्ष पहले के युग में पहुंच गए। अपने पूर्वजों की ओर।"

"हां, हमपर एक ही धुन सवार हो गई थी। हमने जो प्रतिज्ञा की थी, वह हमारे गले का सांप बन गई थी। हमारे पूर्वज

सपनों में आकर हमें धिक्कारते थे। अन्त में हमने इस संघर्ष को छेड़ने का निश्चय कर लिया।" चौबीस-पच्चीस वर्ष के युवक ने कहा।

"हम भटखंडे खानदान के किले की ईंट से ईंट बजाकर अपने परिवार की स्त्रियों को वापस ले जाना चाहते थे।"

"तुम समझ रहे थे कि तुम गोपनीयता से काम ले रहे हो, लेकिन तुम्हें पता न था कि आर्टिस्ट रावेल को तुम्हारे षड्यंत्र का पता चल चुका था। उसे अपनी जन्मभूमि मुंगेर और मुर्शिदाबाद से बहुत प्यार था। उसने तुम्हारे षड्यन्त्र की पेंटिंग्स बनाईं। उनमें से तीन पेंटिंग्स में फूलों और जानवरों के सांकेतिक रेखाचित्रों द्वारा तुम्हारे षड्यंत्र की सारी कहानी लेटिन अक्षरों में लिख दी। आर्टिस्ट रावेल की पहली तीन पेंटिंग्स तुम्हारे उन तीनों पूर्वजों की थीं, जो लाल सिपाही थे। आर्टिस्ट रावेल ने उनमें तीन लाल सिपाहियों के चित्र इस ढंग से बनाए थे कि एक निश्चित अवधि के बाद वे गायब हो गए। इसका अर्थ था कि उनका स्थान किसीने ले लिया। इनके बाद की तीन पेंटिंग्स तुम्हारे पिताओं की थीं, जो शपथ तो लेते रहे, लेकिन संघर्ष छेड़ने से डरते रहे। आर्टिस्ट रावेल ने यहां भी अपना कमाल दिखाया। तुम्हारे पिताओं के चित्र भी धुंधले पड़ गए। इसका अर्थ था कि वे तीनों भी न होने के बराबर थे। शेष तीन पेंटिंग्स तुम्हारी थीं, जिनमें तुम्हें मुक्के ताने हुए दिखाया गया था। वे पेंटिंग्स स्पष्ट हैं। तुम्हारे आक्रमण को रोकने के लिए आर्टिस्ट रावेल ने बहुत दौड़-धूप की।"

"हमें आर्टिस्ट रावेल के इरादों का पता लग गया था। हम यह भी जान गए थे कि उसके साथ कौन-कौन हैं। हमें यह रहस्य सोज़ीन के द्वारा मालूम हुआ था। वह आर्टिस्ट रावेल के साथ लन्दन गई थी। वहां वह एक अंग्रेज़ युवक से प्रेम करने लगी थी, लेकिन वह प्रेम अधूरा ही रह गया। सोज़ीन ने अपने प्रेमी को बताया था कि उसके धर्मपिता को सब कुछ मालूम हो चुका था। वह युवक हमारे खानदान का ही एक सदस्य था।"

"फिर भी तुमने सोज़ीन को सबसे पहले मार डाला?" मेजर बोला।

"हम विवश थे। हम निश्चय कर चुके थे कि हम सबसे

पहले सोज़ीन और आर्टिस्ट रावेल को ही अपना शिकार बनाएंगे। उसके बाद उसके मित्र अरविन्द दीक्षित और श्रीधर गायकवाड़ को। हमने अरविन्द दीक्षित की हत्या आर्टिस्ट रावेल की प्रेमिका अंगदा और उसके प्रेमी के हाथों कराई। अंगदा को आर्टिस्ट रावेल के स्टूडियो में भेजकर हमने आर्टिस्ट रावेल की अपने सम्बन्ध में बनाई गई पेंटिंग्स को प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन अंगदा को अपने इस काम में सफलता नहीं मिली। आर्टिस्ट रावेल ने पहले ही वे पेंटिंग्स किसी सुरक्षित स्थान में रख दीं। अंगदा और उसका प्रेमी रुपये के बहुत लालची थे। वे अधिक रुपयों के लालच में हमारा भेद खोल सकते थे। इसलिए हमने उन्हें बम्बई में ही ठिकाने लगा दिया था और उनकी लाशें उनके मकान के पास वाले गटर में ही फेंक दी थीं। फिर हमें आर्टिस्ट रावेल की शिष्या अचपला और ग्रेवाल से डर लगने लगा। उन दोनों को भी समाप्त करना आवश्यक हो गया। हमें मुहम्मद सईद का एक आदमी मिल गया, जो थोड़े से रुपयों के लालच में आकर अपनी टोली के साथ गद्दारी करने के लिए तैयार हो गया। उसीके द्वारा हमें पता चला कि मुहम्मद सईद और उसकी टोलियां हमारा सबसे अधिक विरोध करेंगी। हमने मुहम्मद सईद को रास्ते से हटा दिया। टोली के गद्दार ने हमें बताया कि मुहम्मद सईद के स्थान पर शहरयार को नया लीडर चुना गया है। शहरयार और उसकी होने वाली पत्नी सिद्दीका को हमने उसी रात मौत के घाट उतार दिया, ताकि मुहम्मद सईद की टोली कमज़ोर होकर और डरकर बिखर जाए।"

"तुम लोगों ने मेरी बिलकुल परवाह न की। तुमने सोचा कि तीन-चार आदमियों को साथ लेकर मैं तुम्हारा बिगाड़ ही क्या सकता हूं! और तुम जब चाहोगे, मुझे समाप्त कर दोगे। एक मामूली जासूस कर ही क्या सकता है!" मेजर ने कहा।

"हमें आपकी प्रसिद्धि और योग्यता तथा कुशलता का अंदाज़ा नहीं था। हमें चाहिए था कि हम सबसे पहले आपपर आक्रमण करते। हमें मालूम नहीं था कि आप इस प्रकार के युद्ध के विशेषज्ञ हैं। आपने तो बड़े-बड़े सेनापतियों को भी मात कर दिया।" उन युवकों में से एक बोला।

"तुम्हें अपने संघर्ष की असफलता का ज्ञान हो गया था?"

मेजर ने पूछा।

"हां, कुछ-कुछ अहसास हुआ है।" एक युवक बोला।

"तुम्हें अभी पूरा अहसास हुआ जाता है।" मेजर ने कहा और डोरा, मालती और सोनिया को सम्बोधित करके कहा, 'तुम तीनों गाड़ियों के इस मोर्चे के पीछे चली जाओ और भटखंडे परिवार की जिन स्त्रियों को ये लोग उठा लाए हैं, उन्हें ले आओ।"

डोरा, सोनिया और मालती गाड़ियों के मोर्चे के पीछे चली गईं और पांच औरतों को ले आईं, जिनमें से तीन अंग्रेज़ और दो यूरोपियन थीं।

उन औरतों की आंखें भीगी हुई थीं। वे दुःख और शोक में डूबी हुई थीं। उनमें चन्द्रिका भी थी।

आर्टिस्ट रावेल का बेटा सर्वेश भी इस आक्रमण में मेजर के साथ था। वह आश्चर्य से उन स्त्रियों को देखने लगा। भटखंडे परिवार ने सचमुच सुन्दर स्त्रियां इकट्ठी कर रखी थीं।

मेजर ने एक बूढ़ी औरत से पूछा, "आप तो काफी बुज़ुर्ग हैं। क्या आप अपने पुराने खानदान के लोगों के साथ जाना चाहती हैं ?"

"अब यह खानदान मेरा कहां है ! अपनी मान-मर्यादा का दावा करने वाले जब अपनी औरतों के सम्मान की रक्षा न कर सके और दुम दबाकर भाग गए—वे लड़ते हुए क्यों न मर गए ! अगर वे ऐसा करते तो हम उनका साथ देतीं। इस देश की सभ्यता और संस्कृति महान है, जहां राजपूत नारियां अपने पति के रणक्षेत्र के लिए प्रस्थान करने से पहले ही जौहर की रस्म पूरी कर देती थीं। इस देश में आकर ही मुझे नारी के वास्तविक स्थान का ज्ञान हुआ है। मैं पश्चिम की ओर मुंह भी नहीं करना चाहती।" उस बूढ़ी औरत ने कहा।

तीनों लाल सिपाही, जिन्होंने अपनी वर्दियां उतार दी थीं, आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें अपनी बूढ़ी दादी से ऐसी आशा न थी। मेजर ने चन्द्रिका से पूछा, "क्या आप इन लोगों के साथ जाना चाहती हैं ?"

"बिलकुल नहीं। मैं इनके देश में किसी भी दशा में पांव रखने के लिए तैयार नहीं हूं, जहां की न तो नारी नारी है और न

पुरुष पुरुष है। वहां की नारी को मां बनने से घृणा है। वह पति को इस तरह बदल डालती है, जिस तरह बच्चे खिलौनों को बदल देते हैं।"

मेजर ने शेष स्त्रियों से पूछा, "आपका क्या इरादा है ?"

उनमें से एक स्त्री ने कहा, "इस देश में आकर ही मुझे मालूम हुआ कि मां का स्थान क्या है, पति का प्रेम क्या है।"

"और मैंने यहां आकर देखा कि नारी के हृदय में भगवान निवास करते हैं, जिनके कारण उसके जीवन में सुख और शान्ति भरी रहती है।" दूसरी औरत बोली।

"यहां सहानुभूति है, अपनत्व है, स्नेह है, मेल-मिलाप है, एक-दूसरे के सुख-दुःख में समभागी बनने की भावना है। और वहां पड़ोसी पड़ोसी को नहीं देख सकता। लोगों के मन में न स्नेह है, न दया है। हममें से कोई भी वहां जाना नहीं चाहती।"

तीनों लाल सिपाहियों पर घड़ों पानी पड़ गया।

मेजर ने उनसे कहा, "इतना समय बीत जाने के बाद भी तुम वर्षों पीछे खड़े रहे। तुम्हारे देश के लोग हिप्पी और साधु बनकर यहां भागे चले आ रहे हैं। क्यों ? इसलिए कि इस देश में धर्म और मानवता की बुनियादी मान्यताएं आज भी शेष हैं। तुम्हारे यहां आदमी के बूढ़ा होते ही उसे ओल्ड होम में फेंक दिया जाता है। वह मरे या जिए, लेकिन यहां बूढ़ों को चाहे वे अपाहिज ही क्यों न हो जाएं, चारपाई पर बैठाकर खाना दिया जाता है। उसकी बहुएं उसकी सेवा करती हैं। घर में उसकी बात मानी जाती है। और आपके खानदान की ये औरतें क्या कह रही हैं ? यहां आकर ही उन्हें नारी के मूल्य का ज्ञान हुआ है। उन्हें अपने नारीत्व का पता चला है। अब ये औरतें तुम्हारी नहीं हैं। तुम्हारा यह वहम था कि हर पुरानी चीज़ तुम्हारी है। औरों की दौलत तुम्हारी है। औरों के आमदनी के साधन तुम्हारे हैं। और इसीलिए तुम लोगों को गुलाम बनाते रहे। उन लोगों के लहू से धरती को रंगते रहे, जो तुम्हारी अपेक्षा दुर्बल, साधनहीन और निर्धन थे। जिनके पास पुराने हथियार थे। तुमने यहां आकर फिर उसी तरह खून बहाया है। हमारे देश का खून तुमसे निबटेगा।"

"आपने बहुत-से अपराध गिनवा दिए हैं। क्या दूसरों का धन लूटना, दूसरों की स्त्रियों को बलात् अपने घर में डाल लेना

क्या अपराध नहीं है ?" एक लाल सिपाही ने पूछा।

"जिस घटना का तुम उल्लेख कर रहे हो, वह सदियों पुरानी है। लुटेरों को लुटेरों ने लूटा था। भटखंडे कबीले ने उनकी मदद की थी। सचमुच अपराध किया था उन्होंने; लेकिन जिन्होंने अपराध किया था, उन्हे दूसरी दुनिया में गए हुए वर्षों बीत चुके हैं। उनमें से केवल राजभान रह गया है। हमारे देश का कानून उसे दंड दे सकता है, लेकिन अन्य लोगों ने कोई अपराध नहीं किय है।" मेजर बोला।

पांचों औरतें दौड़कर मेजर के पीछे आ खड़ी हुईं।

इंस्पेक्टर के आदमियों ने उन सातों आदमियों को हिरासत में ले लिया। उन लोगों से कोई जवाब नहीं बन पड़ रहा था। उन्हें अपनी भूल का अहसास हो चुका था। उनके संघर्ष की असफलता ने उनका दिल तोड़ दिया था। उनके खानदान की स्त्रियों ने ही उनकी सभ्यता और संस्कृति की धज्जियां उड़ा दी थीं। उनके सिर झुक गए। उन्हें जीपों में बैठा दिया गया।

अगले दिन पिछली रात के हंगामे और मुंगेर को नष्ट करने का प्रयत्न करने वालों की गिरफ्तारी का समाचार सारे इलाके में फैल गया।

उस इलाके के रहने वालों ने मेजर बलवन्त, उसके साथियों तथा इंस्पेक्टर सक्सेना और उसके जवानों को जी खोलकर दुआएं दीं। पुलिस के जिन जवानों ने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने प्राण दे दिए थे, उनका पूरे सैनिक सम्मान के साथ अन्तिम संस्कार किया गया। इसके साथ ही उनके परिवारों को आर्थिक सहायता और उनके बच्चों को पुलिस विभाग में नौकरी देने की घोषणा भी की गई।

● ●

मुद्रक : नवयुग प्रिंटर्स, गांधीनगर, दिल्ली-११००३१ ११४८

बदले की आग

कर्नल रंजीत

"ओह ! अगर एक मिनट की भी देर हो जाती तो लेसर किरणें हम दोनों के बदन के टुकड़े-टुकड़े कर डालतीं। दुश्मन बहुत ही भयंकर हथियार इस्तेमाल कर रहा है।"

बदले की आग जितनी भयंकर, हथियार भी उतने ही भयंकर और उतनी ही भयंकर जासूसी के अद्भुत कारनामे।

कर्नल रंजीत का रोंगटे खड़े कर देने वाला जासूसी उपन्यास।

हिन्द पॉकेट बुक्स

PRICE : 4·00